MARJ-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

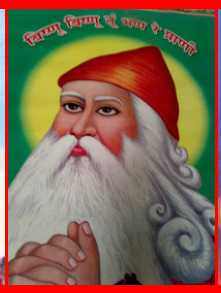

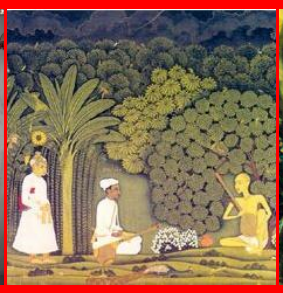
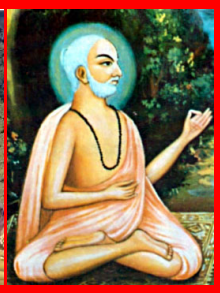

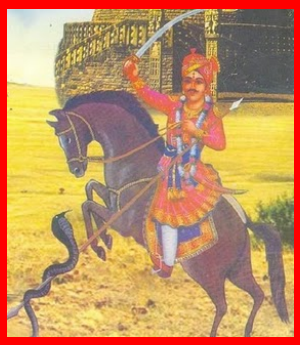

राजस्थानी भक्ति साहित्य

ISBN/978/81 - 8496 - 258 - 8

MARJ-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

राजस्थानी भक्ति साहित्य

पाठ्यक्रम अभिकल्प समिति

अध्यक्ष
प्रोफेसर (डॉ.) नरेश दाधीच
कुलपति
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

संयोजक / समन्वयक / सदस्यगण

संयोजक :
प्रो. (डॉ.) कल्याणसिंह शेखावत
परामर्शदाता, राजस्थानी कार्यक्रम
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

समन्वयक :
डॉ. मीता शर्मा
सहायक आचार्य, हिन्दी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

सदस्य

1. **डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**
   पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
2. **श्री रघुराजसिंह हाडा**
   वरिष्ठ कवि-साहित्यकार,
   झालावाड़ (राजस्थान)
3. **डॉ. गोरधनसिंह शेखावत**
   निदेशक, श्री कृष्ण सत्संग बालिका महाविद्यालय
   सीकर (राजस्थान)
4. **डॉ. अर्जुनदेव चारण**
   अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
   जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)

सम्पादन एवं इकाई – लेखन

सम्पादक
प्रो. (डॉ.) कल्याण सिंह शेखावत
पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, राजस्थानी विभाग
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

इकाई–लेखक	इकाई संख्या
1. डॉ. मंगत बादल पूर्व प्राध्यापक, हिंदी (सेवानि.) शहीद भगतसिंह स्नातकोतर महाविद्यालय रायसिंह, श्रीगंगानगर (राज.)	**1,2,3,5,6,7,8,13**
2. डॉ. चेतन स्वामी प्राध्यापक सेठ जी. आर. चमड़िया पीजी कॉलेज, फतेहपुर शेखावाटी (राज.)	**11**
3. डॉ. पृथ्वीराज (रतनू) कार्यवाहक सचिव राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर बीकानेर (राज.)	**14**
4. डॉ. रणजीत सिंह चौहान अंशकालिक शिक्षक राजस्थानी विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)	**4,9,10,12**

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

प्रो. (डॉ.) नरेश दाधीच	**प्रो. (डॉ.) एम. के. घड़ोलिया**	**योगेन्द्र गोयल**
कुलपति	निदेशक (अकादमिक)	प्रभारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा	**संकाय विभाग**	**पाठ्य सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग**

पाठ्यक्रम उत्पादन

योगेन्द्र गोयल
सहायक उत्पादन अधिकारी
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

उत्पादन : फरवरी, 2011 ISBN/978/81 - 8496 - 259 - 8

सर्वाधिकार सुरक्षित : इस सामग्री के किसी भी अंश की वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में 'मिमियाग्राफी' (चक्रमुद्रण) के द्वारा या अन्यथा पुन: प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
कुलसचिव, व.म.खु.विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा के लिये मुद्रित एवं प्रकाशित।
दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर द्वारा 500 प्रतियां मुद्रित।

MARJ-08

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

अनुक्रमणिका

राजस्थानी भक्ति साहित्य

इकाई सं.	इकाई–शीर्षक	पृष्ठ संख्या
	खण्ड – I	
1.	भगती साहित्य : उद्‌भव अर विकास	1–10
2.	भगती काव्य : परम्परा अर मूल स्त्रोत	11–19
	खण्ड – II	
3.	भगतीकाल अथवा मध्यकाल (वि.सं. 1450 सूं 1850 तक) : जुग रो दरसाव	20–26
4.	मध्यकालीन सगुण भगती रा वैष्णव सम्प्रदाय	27–37
5.	सगुण अर निरगुण भगती धारा	38–49
6.	भगती धारावां : प्रमुख रचनाकार अर रचनावां	50–61
	खण्ड – III	
7.	राजस्थानी साहित्य री धार्मिक अर दार्सनिक पूठभौम (पृष्ठभूमि)	62–71
8.	पूर्वी राजस्थान रा प्रमुख संत–सम्प्रदाय	72–82
9.	पश्चिम राजस्थान रा संत सम्प्रदाय	83–93
10.	दादू पंथ दादू दयाल उणा रा चेला – दादू वाणी अर संत साहित्य	94–100
11.	राजस्थान रा संत–सम्प्रदाय अरवारो साहित्य	101–109
	खण्ड – IV	
12.	राजस्थानी भासा रा भगती साहित्य री विसेसतावां	110–120
13.	राजस्थानी भासा नै भगती साहित्य री देन	121–130
	खण्ड – V	
14.	राजस्थान रा लोक देवी–देवता	131–156

खण्ड परिचै

खण्ड 1 — इण नै 14 इकाईयां अर 5 खण्डां में बांट्यौ गयौ है। पैला खण्ड में दो इकाईयां है। इकाई 1 में 'भगती साहित्य रो उद्‌भव अर विकास अर इकाई 2 में भगती काव्य परम्परा अर मूळ स्रोत दियौड़ा।

राजस्थानी भासा रो भगती साहित्य जुगां जूनो अर सम्रद्ध है। गद्य अर पद्य री मोकळी विधावां में अणपार भगती साहित्य री सिरजणा राजस्थानी रचनाकार करी है। आं दोनूं इकाईयां में इण भगती साहित्य री जाणकारी उदाहरणां सूं दी गई है। साथ ही भगती काव्य री परम्परा अर मूळ स्रोतां री जाणकारी भी कराई गई है।

खण्ड 2 — इणमें च्यार इकाईयां है। इकाई 3 में 'राजस्थानी साहित्य रा मध्यकाल' जिणनै भगती काल भी कयौ जावै उणरो सांगोपाग परिचै है। विक्रमी संवत 1450 सूं लैय'र 1850 तक–ओ दो सौ बरसां रो लेखो–जोखो जुगदरसाव रै रूप में आखरां ढळ्यौ है।

इकाई 4 में 'सगुण भगती धारा' री विगत मंडी है। इकाई 5 में 'मध्यकालीन सगुण वैष्णव सम्प्रदायां', उणारा आचार्यां, भगती साधना अर पद्धति, उणारा आराध्यदेव अर प्रमुख चेलां री जाणकारी कराई गई है। इकाई 6 में 'भगती री निरगुण अर सगुण धारावां, प्रमुख रचनाकारां अर रचनावां' रो परिचै दियौ गयौ है।

खण्ड 3 — इण इकाई रो ओ खण्ड राजस्थान रा भगती साहित्य री ओळखाण करावै। इकाई 7 में 'राजस्थानी साहित्य री धार्मिक अर दार्सनिक पूठभोम री जाणकारी दी गई है। इकाई 8 में राजस्थान रा प्रमुख संत सम्प्रदायां नै दो भागां में बाट्या गया है– एक अगूणै (पूर्वी) राजस्थान रा संत पंथ अर दूजो दिखणाद (पश्चिमी) राजस्थान रा संत पंथ। इकाई 9 में आथूणै राजस्थान रा प्रमुख संत सम्प्रदायां री जाणकारी है तो इकाई 2 में उगूणै राजस्थान रा संत पंथां री विगत है। इकाई 10 में 'दादूपंथ' अर उणरा संस्थापक दादूदयाल, उणारी साधना पद्धति, वां रा खास चेलां अर दादूपंथ रा साहित्य री जाणकारी कराई गई है।

खण्ड 4 — इण खण्ड री इकाई 12 में 'राजस्थानी भगती साहित्य री विसेसतावां' अर 13वीं इकाई में 'राजस्थानी भगती साहित्य री देन' री ओळखाण कराई गई है।

खण्ड 5 — ई खण्ड री 14 वीं इकाई में 'राजस्थान रा लोक देवी–देवतावां' अर उणा रा लोकरूप, लोकमानता, लोकआस्था, लोकहित नै दरसायौ गयौ है।

इकाई – 1

भगती साहित्य : उद्‌भव अर विकास

इकाई रो मंडाण

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 उपयोगिता

1.1.2 आवस्यकता

1.2 उद्‌भव अर विकास

1.2.1 भगती रो उद्‌भव

1.2.2 उद्‌भव रा कारण

1.2.3 वातावरण

1.2.3.1 राजनैतिक

1.2.3.2 सामाजिक

1.2.3.3 सांस्कृतिक

1.2.3.4 धार्मिक

1.3 भगती पद्धति

1.3.1 निरगुण भगती

1.3.1.1 ज्ञान मार्ग

1.3.1.2 प्रेम मार्ग

1.3.2 सगुण भगती

1.3.2.1 राम भगती

1.3.2.2 क्रिसन भगती

1.4 इकाई रो सार

1.5 अभ्यास रा प्रस्न

1.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1.0 उद्देस्य

भारतीय साहित्य में भगती काल घणो महताऊ है। उतराद सूं दिखणाद लग आखै भारत में ओ भगती आन्दोलन देसी भासावां रै माध्यम सूं हुयौ। इण इकाई में ओ जाणणो आपणो उद्देस्य है कै भगती रो उद्‌भव कद कर किण परिस्थितियाँ में हुयो ? कीकर इण रो विकास आखै भारत में हुयौ ? इण आन्दोलन रै विस्तार अर महत्त्व बाबत डॉ. रामविलाश शर्मा रौ कैवणो है, ''यह भगती आन्दोलन ब्रह्म देश अफगानिस्तान और ईरान की सीमाओं पर रूक जाता है। सिंध, कश्मीर, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्र, तमिलनाडु आदि प्रदेशों पर भगती आन्दोलन की धारा पूरे वेग से बहती है। भगत कवियों ने विभिन्न प्रदेशों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने में कितना बड़ा काम किया था, इसका मूल्य आंकना सहज नहीं है। इनण्के पास राजनीति शास्त्र के कोई ऐसे परिचित सूत्र नहीं थे, जिन्हें वे आए दिन दोहराते हुए जनता को एकताबद्ध करते। उन्होंने भावनात्मक रूप से जनता को एक

किया। इस भावात्कम एकता में मुख्य भाव था भगती का''। इण ऊपर लिखे आलेख मुजब आपां भगती साहित्य रो उद्‌भव खोजणै री कोसीस करांला अर इण आन्दोलन री विकास जातरा नै समझण री कोसीस करांला।

1.1 प्रस्तावना

भगती आन्दोलन अेक अैड़ो आन्दोलन हो जको भारतीय गाँवां रै अणपढ़ लोगां में फैल्यो। इण आन्दोलन रा सूत्रधार संत अर भगत हा जकां में ज्यादातर कम भण्या–लिख्या या अणभणेड़ा हा पण वांनै जिन्दगी रो अनुभव घणो गैहरो हो अर बै आम मिनख सूं जुड़ेडा हा। आज तक पूजा–पाठ रो अधिकार पुरोहितां अर बडै लोगां नै हो। तुलसीदास हुवै चाहै कबीर दोनुवां ई इणरी जड़ां हिलायदी। तुलसी रा राम, सबर, भील, किरात, बनवासी अर अन्त्यज रा सब सूं पैली हा अर निसाद नै भरत सम भ्राता' कयो अर सबरी रा झूठां बोर खाया। दूजै कानी संत कवियाँ 'जात–पांत पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि को होई।।' कैय'र भगत रो मार्ग 'सर्व सुलभ' करवा दियौ। इण भगती आन्दोलन सारू कैई विद्वानां रो कैवणो है कै इणरो उद्‌भव भारत में विदेसी सत्ता रै कब्जै रै कारण हुयौ पण बाद री खोज सूं आ बात सफा झूठ निकळी। विदेसी सत्ता रै कारण इण आन्दोलन में की तेजी जरूर आई पण इण री जड़ां तो भारतीय संस्कृति में ई विराजै। इण री विचार धारा अर दार्सनिक पृस्ठभूमि विसुद्ध भारतीय है। हाँ ! इत्तै लम्बै अरसै तक चालणै रै कारण इण पर दूजी विचार धारावां रो असर जरूर पड्‌यौ। ओ जरूरी भी हो क्यूं कै अलग–अलग जात–धरम रा लोग जद अेक–दूजै रै नेड़ै आवैला तो आदान–प्रदान हुवैलो ई। इणीज कारण इण आन्दोलन पर बौद्ध, जैन, इस्लाम आद दूजै धरमां अर सम्प्रदायां री विचार धारा रो असर पड्‌यौ।

1.1.1 उपयोगिता

भगती आन्दोलन रै उद्‌भव अर विकास नै जाणणै री पैली उपयोगिता तो आईज है कै इण सूं देस री भावात्मक अर रास्ट्रीय अेकता मजबूत हुई। इणरै अध्ययन सूं विद्यार्थी जाण सकैला कै रास्ट्रीय अेकता नै मजबूत करणवाळा तत्त्व कुणसा है ? जिणारी आज सबसूं जादा जरूरत है। इण आन्दोलन सूं भूखी, गरीब अर निरीह जनता नै नैतिक संबळ मिल्यौ। आज तक दब्या–कुचळ्या लोगां पैली बार ओ समझयो कै परमात्मा रै घर में कोई बडो–छोटो या ऊँचो–नीचो कोनी। सगळा भेद–भाव मिनख रा बणायोड़ा है। जुगां–जुगां सूं अंध विस्वासां में मिनख अर मिनखपणै नै उबारणै में भगती आन्दोलन रो महताऊ योगदान रैयो है। आज भी तुलसी, सूर, मीराँ, कबीर अर बीजै भगत कविगण रो साहित्य लोगां नै आपस में जोड़े। आज देस में जद प्रतिक्रियावादी अर साम्प्रदायवादी ताकता सक्रिय होय'र लोगां नै बरगळावै, इण देस नै खंडित करणै री कोसीस करै, तो भगती साहित्य रै उद्‌भव अर विकास री उपयोगिता सबसूं ज्यादा निगै आवै।

1.1.2 आवस्यकता

किणी देस या काल नै समझण तांई उण देस या काल रै साहित्य रो अनुसीलन जरूरी हुवै। इण देस में जद भगती आन्दोलन पूरी ऊँचाई पर हो बीं बखत विदेसी सत्ता ही। इण कारण कैई विद्वानां नै ओ भरम होग्यो कै भगती आन्दोलन री सरूआत विदेसी सत्ता रै कारण हुई है। कयो भी है 'हार्‌यै नै हरि नांव' पण आ बात कोनी। इण रो बिगसाव आप री परम्परा सूं ई हुयौ है। विदेसी सत्ता अगर अठै नी आवंती तो भी इण साहित्य धारा रो बिगसाव इणरै आसै पासै ई होंवतो। किणी देस रै साहित्य में बीं देस रै लोगां री हिड़दै री धड़कण हुया करै। आ बात भगती साहित्य पर भी लागू हुवै। इण नै ठीक–ठीक जाणण तांई भगती साहित्य रो उद्‌भव अर बिगसाव जाणणो जरूरी है।

1.2 उद्‌भव अर विकास

1.2.1 भगती रो उद्‌भव

आर्य लोग प्रकृति पूजक हा। उणां री जिन्दगी में करमकांड री प्रधानता ही। बै प्राकृतिक तत्वां, हवा, जळ, आग, चाँद, सूरज आद नै देवता मानता हा। बै इणा री वंदना करता अर इणसूं आप रै जीवन में सुख अर

सम्पन्नता री कामना भी करता हा। भौतिक सुखां कानी ध्यान होणै रै कारण आर्य अन्तःकरण री साधना रै बजाय बा'रलै विधानां कानी जादा ध्यान देंवता हा। बै हवन बड़ी श्रद्धा अर विस्वास रै साथै कर्‌या करता हा। अठै सूं ई 'श्रद्धा मूलक भगती' रो जलम हुयौ अर बहुदेववाद री जागां अेकदेव उपासना री सरूआत हुयी।

मोनियार विलियम मुजब भगती सबद री व्युत्पत्ति 'भज्' धातु सूं करी जा सकै। इण रै आधार पर आपां कैय सकां कै आर्यां रै दार्सनिक अर आध्यात्मिक विचारां रै कारण श्रद्धा, विस्वास, उपवास आद सूं विकसित होय'र उपास्य भगवान री महिमा रै व्यापक भाव में बदळगी। भगती भाव रो सबसूं पैलो लेख 'उपनिषद' में मिलै। गीता में भगवान क्रिसन भी भगती री मैहमा बताई है। सांडिल्य अर नारद रै 'भगती सूत्र' में भगवान री भगती रो खूब बखाण हुयौ है। सांडिल्य रै मुजब भगती सूं ईस में अटल, अणूंतो, अविभेद्य अर कदै नीं खत्म होवणाळो प्रेम जगायो जा सकै।

पौराणिक रो मूळ 'व्यक्ति परक श्रद्धा' में हुवै इणमें परमात्मा री कल्पना जरूरी है। 'विष्णु पुराणं' में विष्णु नै ई परमसत्त रो रूप बतायो गयो है। भगवान विष्णु आप री जोगमाया (लिछमी) साथै परम धाम बैकुण्ठ में जोग नींद में (योग निद्रा) तल्लीन रैवै। श्रद्धा, बिस्वास अर प्रेम ई इण भगती री तागत है। इणां रै माध्यम सूं भगत आखीर में आप रै इस्टदेव (भगवान) में लीन हो जावै। भगती तांई ओ जरूरी है कै बो तन, मन, धन आद सगळो कीं भगवान नै ई अरपण कर देवै। भगती रो पूरो रूप 'उपनिषद' पछै ई उभर'र साभी आवै। इण भांत आ बात कैयी जा सकै कै भगती री परम्परा भारत में घणी जूनी है। विदेसी सत्ता रै आगमन सूं इण में थोड़ी 'संवेदनात्मक रूप' सूं जरूर बढ़ोतरी हुयी वरना भगती रा बीज तो पैली सूं मौजूद हा।

1.2.2 उद्‌भव रा कारण

समाज में जद भी कोई आन्दोलन सरू व्है बीं रै पाछै कोई कारण जरूर हुवै। भगती आन्दोलन आखै भारत में फैल्यो इण रा भी कैई कारण हा, जकां रो अध्ययन इणा बिन्दुवां में कर्‌यो जावैला –

(1) पैलो कारण तो ओईज हो कै भारतीय समाज प्राचीन रूढ़ियां में इतरो जकड़ीज चुक्यौ हो कै बठै किणी सामाजिक न्याय री आस करणी बेकार ही। समाज री प्रगति थम चुकी ही। समाज री बागडोर कीं तथाकथित ऊँचै लोगां रै हाथां में ही जकां नै बदलाव रो डर इण कारण लागै हो कै सगळा हक छीन लिया जावैला। अैड़ी परिस्थितियाँ में उतरादै भारत में बौद्ध अर जैन धरमां रो उदय हुयौ। अे दोन्यूं धरम रूढ़ बणेड़ा हिन्दू या सनातन धरम रो विरोध करै हा। अेक बखत तो आखै भारत में जैन अर बौद्ध धरमां रो दबदबो होग्यौ पण बखत बीतणै रै साथै–साथै अै धरम भी रूढ़ियां में बंधग्या। नतीजो ओ हुयो कै इणा में विद्रोह होग्यो अर अै कैई साखावां में बंटग्या।

उतरादै भारत में सिद्धां रो आन्दोलन बौद्ध धरम री रूढ़िवादिता पर चोट कर सामाजिक न्याय री मांग करै हो। उतरादै भारत पर लगोलग विदेसी हमला होंवता रैया इण कारण सूं भी बदळाव आवै हो। यूनानी, सक, हूण, तुरक, मंगोल अफगान आद रा हमला उतरादै भारत नै बरोबर झेलणा पड़्या। इण में घणकरा विदेसी हमलावर अठै ई बसग्या। इणा में अठै रै पुराणै रैवणाळां साथै खूब सांस्कृतिक अर वैचारिक आदान–प्रदान होंवतो। मुसलमानां रै आणै तक आइज हालात रैई। हालांकै समाज में भेद–भाव तो हो पण इतरो गैहरो कोनी हो। अठै अेक बात आ ध्यान करण जोग है कै सामाजिक अन्याय रो विरोध पिछड़ी नीची जात रा लोग ई करै हा। सिद्धां में ओ विरोध कीं जादा हो।

(2) दिखणादै भारत री स्थिति उतरादै भारत सूं अलग ही। दिखणादै भारत नै विदेसी हमला कोनी झेलणा पड्या इण कारण बठै रो समाज ज्यादा रूढ़ हो। धरम री धज्जा सामन्त अर ब्राह्मण थाम राखी ही। ध ान रा सगळा स्रोत बां रै काबू में हा। बै जैड़ो भी काम करता धरम री ओट लैय'र करता। गरीब, पिछड़े अर नीचै तबकै रै लोगां नै बां मिनख समझणो ई छोड़ दियौ तो। भगवान रो नांव लैय'र अर करमां रो दंड बताय'र बे लोगां रो सोसण कर्‌या जांवता। अे हालात देख'र प्रबुद्ध अर संवेदनसील लोगां नै चिन्ता हुई। बे धरम री पुनरथापना रो बीड़ो उठा लियौ। इणमें सब सूं आगै शंकराचार्य हा। बै धरम री पुराणी व्याख्या करता थकां विद्रोह रा पैला

उद्घोसक हा। 'अहं बह्मास्मि' या 'एकोब्रह्मद्वितीयोनास्ति' कैय'र बां मिनख–मिनख नै बरोबर बतायौ। बां कैयो कै धरम पर किणी रो अेकाधिकार नीं हो सकै। शंकराचार्य पछै रामानुजाचार्य सगळै मिनखां नै भगती रा अधिकारी बताय'र इण सामाजिक अर सांस्कृतिक क्रान्ति नै अेक अेक मिनख तक पुगाई, जकी आगै चाल'र रास्ट्रीय अेकता अर समन्वय रो कारण बणी। दक्खणी भारत रै इण आन्दोलन, उतरादै भारत नै पूरी तरै प्रभावित कर्‌यौ। अठै बा बात भी देखणवाळी है कै पुराणै जुग में उतरादै अर दिखणादै भारत रा इतरा भेद कोनी हा, जितरा आज दीखै। बीं बखत सांस्कृतिक रूप सूं भारत अखण्ड हो। इणीज कारण दिक्खणी भारत में उठेड़ो अद्वैतवादी आन्दोलन आखै भारत रो आन्दोलन बणग्यौ।

1.2.3 वातावरण

किणी आन्दोलन रै उद्भव अर विकास रो इतिहास जाणणै तांई ओ भी जरूरी है कै उण देस अर काल री राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक परिस्थितियां रो अध्ययन करयौ जावै। इणसूं ई बेरो पड़ैलो कै बो आन्दोलन उण काल अर देस में कींकर उठ्यो अर पनप्यौ। भगती आन्दोलन री परिस्थितियां रो अध्ययन भी आं ही बिन्दुआं रै तहत करयौ जावैलो।

1.2.3.1 राजनैतिक

भगती साहित्य रै उद्भव रै बखत तांई भारत में मुस्लिम साम्राज्य री थापनां हो चुकी ही। इण सूं पै'ली वाळो संमै घोर अराजकता रो हो। हिन्दू राजा छोटी–छोटी बातां नै लैय'र आपस में लड़ता रैंवता। बां में 'अेक रास्ट्र' री भावना कोनी हीं। जितरो राज अर रकबो होंवतो बो ई देस होवतो। हिन्दू राजा खुद पर बिपदा रै बखत मुसलमानां सूं जुद्ध करता। आपस में अेकता रै अभाव रै कारण बै कदैई भेळा होय'र अेक साथै किणी मुसलमान सासक रो प्रतिरोध कोनी कर सक्या। आपस री फूट रै कारण सगळां री सत्ता बिखरियौड़ी रैंवती। प्रजा कदैई इण रै तो कदैई उण रै झंडै तळै रैय'र उदासीन भाव धारण कर लियौ। बा 'कोऊ नृप होय हमहुं का हानि' सोच'र जैड़ो राजा होवतो बीं रो हुकम बजावंती।

जद मुसलमानां रै राज री थापनां भली भांत होगी तो हिन्दू राजावां रो प्रतिरोध कम हुयग्यौ पण अब मुसलमान आपस में लड़णो सरू कर दियौ। नूवां मुसलमान अर पुराणां अफगानां में आपस में ठणगी इण कारण बांरो पूरो ध्यान आप री सत्ता जमाणै में लाग्यो रैयो। ओईज कारण हो कै बे इस्लाम रै प्रचार–प्रसार कानी ध्यान नीं दे सक्या। कूट नीति सूं काम लियौ। अठै रै राजावां अर प्रजा नै खुद कानी मिलाणो सरू कर्‌यौ इण खातर बे सहिस्णुता री नीति अपणाई। शेरशाह सूरि अर मुगल हुमायूं रो जुद्ध इण बात रो सबूत है कै शेरशाह आप री नीति अपणाई जिणमें बो सफल रैयो। इण रै पछै शेरशाह सूरि री मौत अर हुमायूं रो दुबारा भारत पर अधिकार करणो इणरो सबूत है। हुमांयू रै बेटै अकबर भी सहिस्णुता री नीति अपणाई अर सफल हुयौ पण इण रो ओ मतलब कोनी कै अराजकता जाबक खतम होगी हुवै। सत्ता री चाल तो सामन्ती ढंग री ही। ताकत सताधारी रै हाथां में ही इण कारण प्रजा चाये हिन्दू ही या मुसलमान, दुःखी अर परेसान रैंवती।

अठै आ बात भी ध्यान में राखणै जोग है कै देस रो पूरो विकास मुगल काल में ई हुयौ। अकबर सूं लैय'र शाहजहाँ तांई माहौल सांत हो। हालांकै अकबर सरीखी धार्मिक सहिस्णुता दूजै किणी बादसा में कोनी ही पण जहाँगीर आपरी न्याय प्रियता अर शाहजहाँ स्थापत्य कला रै रक्षण रै कारण नाम कमायौ। पैली वाळी सत्ता नै देखतां ओ बखत सुख–स्यांती रो हों इण कारण ओ कैवणो ठीक कोनी है कै भगती काल रो आविर्भाव विदेसी सत्ता रै कारण हुयौ। इण मुजब डॉ. राजनाथ शर्मा रो कैवणो है ''इसके लिए तो सैंकड़ों वर्षों से मेघखंड एकत्र हो रहे थे। हम भगती के इस चरमोत्कर्षकाल में एक नई बात और देखते हैं, जो यह सिद्ध कर देती है कि मुसलमानों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों की कल्पना कितनी थोथी और सारहीन है। इस युग में अवतार को मानने वाली दृस्टि में परिवर्तन हो चुका था।''

1.2.3.2 सामाजिक

सामाजिक खेतर (क्षेत्र) में हिन्दुआं में ऊँच–नीच अर छूआछूत री भावना पैली जिसी ई ही। ऊँची जात अर नईं छोटी जातां में भी उपजाति अर अेक–दूजै सूं नफरत करणै री प्रवृत्ति ही। ऊँच नीच अर छूआ–छूत री इणी भावना धार्मिक विद्रोह नै जलम दियौ। आ प्रवृत्ति अब मुसलमानां में भी आ चुकी ही। हिन्दुआं रो उच्च वर्ग अहंकारी हो तो मुसलमान सासक दमी हा। बै भी खुद नै कम कोनी समझता। दरअसल सामन्ती वैवस्था रो ओ दुरगुण ई'ज है कै बा मिनख–मिनख में भेद कर चालै। इणीज कारण कबीर जात पांत नै लैय'र हिन्दू अर मुसलमान दोनुवां नै ई लताड्या है –

जे तू बाम्हन, बाम्हनी जाया।
आन राह तें, क्यों नहिं आया।।
जेतू तुर्क, तुर्कनी जाया।
भीतर खतना क्योंन कराया।।

अमीर सदीव सूं गरीबां पर जुलम करता आया है पण अचम्भै री बात है कै कबीर जैड़ै प्रखर कवि भी इण रो चितराम कोनी खैंच्यौ। तुलसीदास जरूर कैयो है कै जकै राजा रै राज में प्रजा दुःखी हुवै बो सीधो नरक में जावै। कबीर री बजाय गुरू नानक देव तत्कालीन जुलम रो विरोध मुखर रूप सूं कर्‌यौ है। बांरी वाणी में विरोध रा सबूत मिल ज्यावै। कबीर अर बीजै संतां धारमिक ढोंग अर आडम्बरां पर जादा चोट करी है। इणसूं साबित हुवै कै बीं जमानै में ब्राह्मणा रो कितो दबदबो हो।

समाज में नारी री दसा ठीक कोनी ही। एक सूं ज्यादा ब्याव रो रिवाज हो। मुसलमान सत्ताधारियां में हरमां में हजारूं लुगायां राखणै रो रिवाज हो। इण कारण सोवणी लड़कियाँ रो अपहरण कर हरम भर्‌या जांवता। इण डर सूं हिन्दु आपरी कन्यावां रो ब्याव बाळपणै में ई करणो सरू कर दियौ। बां पर मुस्लिम हुकमरानां री बुरी नजर नीं पड़ ज्यावै इण कारण बां में भी पड़दै रो रिवाज सरू हुयग्यौ। हिन्दु मुसलमान में इणीजं कारण सामाजिक दूरियाँ बधी अर छुआ छूत घणी बढ़ी।

1.2.3.3 सांस्कृतिक

भगतीकाल दो संस्कृतियां रै टकराव रो जुग हो। हिन्दू संस्कृति आपरी प्राचीनता अर महानता रै दंभ में खुद रै बचाव में लागेड़ी ही। मुसलमान विजेता हा अर अठै रा नीं हा इण कारण बां री इस्लाम–संस्कृति अठै री संस्कृति नै दबाय'र हावी होणै ही कोसीस करै ही। इण काल में धरम साधनां री बाढ़ सी आयगी। गुह्य साधना रै कारण धरमाचार रै नांव पर अनाचार, मिथ्याचार अर व्यभिचार में बढ़ोतरी हुयी। ग्यान चर्चा री ओट में पाखंड हूवण लागग्यो। समाज में अेक भांत री अराजकता फैलगी। कालान्तर में बाहरी आडम्बरां पर व्यंग्य करीजण लागग्यौ। करम कांड अर बाहरी विधान नै ढोंग बतायो गयौ। अैड़ी परिस्थितियों में गुरू गोरखनाथ मन री सुद्धता अर आचारण री पवित्रता पर जोर दियो – ''अवधू मन चंगा तो कठौती में गंगा, बाँध्या मेल्हा तो जगत चेला।'' कैय'र मिनख रै आचारण अर मन री पवित्रता नै चोखी बतायी। इणीज भांत कबीर आद बीजै संतां भी मन री पावनता पर जोर दियो –

कहै कबीर कृपा भई, गुरुज्ञान कहा समझाई।
हृदय श्री हरि भेंटिये, जो मन अनतै नहिं जाई।।

बौद्ध धरम रै उत्थान साथै ई उच्च वरण री सामाजिक वैवस्था अर धार्मिक संकीर्णता रो विरोध सरू हो चुक्यो हो। विद्रोह री इण लहर नै मध्य युग में कबीर मजबूती दी अर उण नै संकीर्णता सूं मुगत करी। इण भांत विसुद्ध मानवता अर सामाजिक न्याय री भावना रै आधार पर अेक नुवीं संस्कृति रो जलम हुयो जिण में सगळै आडम्बरां नै दूर हटाय'र सगळां नै समेटणै री लालसा ही। संतां रै इण पुनीत काम में सूफी कवियाँ भी आप रो पूरो योग दियौ। जात, संप्रदाय आद री भावनावां सूं ऊपर उठ'र बां मिनख–मिनख रै हिवड़ै रै तारां नै जोड़णै री अनूठी कोसीस करी। आं दोनुवां मिल'र हिन्दू–मुस्लिम संस्कृति अर धार्मिक भावना में संतुलन बिठाय'र समन्वय लावणै री सफल कोसीस करी। दोनुवां री कोसीस रै कारण भगती री अेक अैड़ी पद्धति रो जलम हुयो

जिण नै निरगुण धारा नांव मिल्यौ। उणनै जन जन अपनाई।

इणीज भांत वेदां सूं चाल'र अद्वैत री धारा कद अवतार वाद में बदल'र 'वैष्णव भगती' रै रूप में चाल पड़ी ओ पत्तो ही नी चाल्यौ। राम अर क्रिसन विस्णु रा औतार मानीज'र सगुण भगती रा उपास्य देव बण्या। तुलसी 'सगुनहि–अगुनहि नहिं कछु भेदा' कैय'र सगुण–निरगुण में समन्वय री कोसीस करी।

1.2.3.4 धार्मिक

मध्यकाल में अनेक धरम प्रचलित हा अर बै आपस में अेक–दूसरै रो विरोध करता। आ विरोधी भावना इतरी जोददार ही कै इण में मारपीट, कत्ल आद होणो आम बात ही। इणकाल खण्ड में भारत में मुख रूप सूं पांच भांत रा सम्प्रदाय हा। भागवत धरम नै मानणवाळा वैस्णव, सिव री उपासना करणाळा सैव, परम सगती नै मां रै रूप में मानणवाळा मां रा भगत–साक्त, गणेस जी नै ई सो कीं मानणवाळा–गाणपत्य अर सूरज रा उपासक सौर! साथै ई कुळ देवता, ग्राम देवता, लोक देवता आद री पूजा रो विधान भी हो पण इणा री पूजा 'लोकार्थ' भाव सूं करी जांवती। विस्णु, सिव, सगती, गणेस अर सूरज री उपासना खुद री पसन्द अर जरूरत रै मुजब करी जांवती। आं सगळां में सैव सम्प्रदाय सब सूं जादा लोकप्रिय हो। वैस्णव आराधना सैव मत सूं पछै सरू हुई पण इणरो प्रभाव जल्दी ई आखै भारत पर पड़्यौ। पछै दार्सनिक चिन्तन रै कारण द्वैतवाद, भेदाभेदवाद, विसिस्टाद्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, सुद्धाद्वैतवाद आद भगती आन्दोलन रा आधार बण्या। अै सगळा भी भागवत धरम सूं जुड़ैड़ा है।

बौद्ध धरम हालांकै सामाजिक न्याय री मांग नै लैय'र जनता सामी आयो पण आगै चाल'र ओ भी वैदिक धरम रै प्रभाव सूं खुद नै मुगत कोनी राख सक्यौ। इणरा भी 'महायान' अर 'हीनयान' दो भेद बणग्या। 'हीनयान' आप री दार्सनिक जटिलता रै कारण जनता सूं दूर हटतो गयो जद कै 'महायान' रा दरवाजा सब लोगां तांई खुला हा। इण कारण इणनै अपणावण वाळा लोग कम भणिया लिख्या अर पिछड़ियोड़ा तबकै सूं जादा आया। जिणसूं होळै–होळै धरम रो साचो रूप तो लारै छूटग्यौ अर बीं री जांगां तंत्र साधना लेली। जनता नै चमत्कार दिखाय'र वाहवाही लूटणवाळां धरम पर हावी होयग्या। बुद्ध री कठिन साधना री जागां पंचमकार (मांस, मदिरा, मैथुन, मत्सर, मुद्रा) लेली। वाम मारग री प्रधानता रै कारण बौद्ध धरम रो भी पतन होग्यो। आं विसम परिस्थितियां में नाथ पंथी जोगियाँ सुद्धीकरण अर साधना रो नारो बुलन्द कर्‌यौ। साधना में नारी नै वरजित कर दी। मन अर आचरण री सुधता कानी ध्यान देय नाथ पंथी जोगियां योग (हठ) साधना पर बल दियौ। ज्ञान मारग में 'षट चक्र' 'इड़ा–पिंगला–सुषुम्ना' सून्य समाधी, कुंडलनी आद रो जिक्र नाथ पंथ रै प्रभाव रै कारण हुयौ।

1.3 भगती पद्धति

भगती आन्दोलन आखै भारत रो आन्दोलन हो। ओ आन्दोलन देसी भासावां रै माध्यम सूं गाँव रै लोगां तक पूग्यो। इणसूं ब्राह्मणां रै अेकाधिकार नै चुनौती मिली अर भोळै भाळै लोगां नै बतायो गयो कै भगवान रै सामी सगळा मिनख बरोबर है। ऊँच, नीच, जात–पाँत आद रा बाड़ा मिनख रा बणायोड़ा है। इण सूं जन जागरण हुयौ। ओईज भगती मारग आगै चाल'र निरगुण अर सगुण साखावां में बंटग्यौ। हालांकै ओ भेद जितरो है आज बीतो उण समै कोनी हो।

1.3.1 निरगुण भगती

मध्यकालीन संत परम्परा में संतां जिण वाणी री रना करी उण नै निरगुण काव्य कैयो जावै। अे संत मायातीत ब्रह्म नै ई आपरो साध्य मानता। इणां रो कैवणो हो कै ब्रह्म माया रै तीनूं गुणां (राज, सत अर तम) सूं परै है इण कारण बो निरगुण है। संत स्तुति या साधना में लिखता अर बोलता, ओ संत काव्य रै नावं सूं जगचावो हुयौ।

साहित्य में इण परम्परा रो विकास उपनिसदां, सूफियां वैस्णवां, योगियां अर इस्लाम सूं हुयौ। ओ ईज कारण है कै इण परम्परा में दरसण, साधना, अध्यात्म, उपासना आद सगळो कीं मिलै पण इण रै बावजूद इण नै किणी दायरै या वाद में नीं बांध्यौ जा सकै। इण परम्परा रो उद्देस्य हो परमात्मा सूं अळगी हुयेड़ी बीं रो ही अंस आत्मा नै दुबारा परमात्मा सूं मिलाणो। इण कारण बां योग साधना, उपासना, श्रद्धा, प्रेम आद सगळां रो

सहारो लियौ। अे संत परमात्मा नै निराकार, अजन्मो, अविनासी अर हमैस रैवण वाळो मानता। इण कारण उण रो रूप आकार किण भांत हो सकै ? बो अजर अमर है तो उण रो जलम किण भांत हो सकै ? बीं नै पावण खातर सगळा बारै रा उपाय बेकार है। बो मन अर वाणी रो विसय कोनी। बो इन्द्रियातीत है। उणनै तो संत खुद री लगन, श्रद्धाभाव अर प्रेम रै बलबूतै ही पाय सकै। इणीज कारण संतां बाहरी आडम्बरां रो विरोध कर स्वानुभूति पर जोर दियो। निरगुण भगती भी दो साखावां में बंटगी – एक ज्ञान मार्गी अर दूजी प्रेम मार्गी।

1.3.1.1 ज्ञान मार्ग

संतां रै बढ्या जीवण–दरसण रा सूत्र शंकराचार्य रै अद्वैतवाद सूं जुड़ेड़ा है। शंकराचार्य रै चिन्तन री विरासत नै लैय'र रामानुजाचार्य आगै बढ्या। बांरा चेला स्वामी रामानन्द इण परम्परा नै आगै बधाई। रामानन्द रा भगत निरगुण अर सगुण दोनुवां नै मानणवाळा हा। निरगुण भगती रै विकास रै मूळ में अवतारवाद री उपेक्षा ही। देस में अैड़े लोगां री तादाद घणी ई ही जिणा पर नाथपंथी योगियां रो प्रभाव हो। बां रै मन में प्रेम भाव अर भगती रस री कोई जागां कोनी ही। इस्लाम रै माध्यम सूं भारतीय चिन्तन पर अेकेस्वरवाद रो प्रभाव भी पड्यो, जको अवतार वाद या सगुण परमात्मा नै कौनी मानतो। इणा लोगां तांई निरगुण ब्रह्म री उपासना ई जादा ठीक ही। इण ज्ञान मार्ग रो प्रचार–प्रसार बां लोगां में हुयौ जकां नै आज तक धरम में भागीदार कोनी बणाया गया हा। दबयौड़ा अर अलग थलग लोगां में आत्मगौरव रो भाव जगायो। इण पंथ में जात पांत रो कोई भेद कोनी हो। 'हरि को भजे सो हरि को होई' कैय'र मिनख मिनख नै बराबरी रो दरजो दियौ गयौ।

ज्ञान मार्ग में अद्वैतवाद नै आधार बणा'र योग साधना, गुरू री महिमा, नाम जपणो अर आचारण सुद्धि पर जोर दियो गयौ। बाहरी आडम्बर जिणमें बरत, तीरथ, मूर्ति पूजा आद री आलोचना करी गई। निरगुण धारा नै आगै बधावणै में महारास्ट्र में नामदेव रो नाम प्रमुख है। उत्तरादै भारत में रामानन्द रै पछै बां रा बारह चेला अर कबीरदास इण मार्ग नै आगै बधावणै में घणो अर महताऊ योगदान दियो। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रै मुजब तो ज्ञान मार्गी रै संतां में कबीर, रैदास, नानक आद दो–च्यार में ई व्यक्तिगत अनुभूति री गैराई अर नुंवोपण हो बाकी सब में पिस्ट पेसण मिलै।

ज्ञान मार्गी संतां री सूची घणी लाम्बी है। कठैइ संतां खुद रा पंथ भी चलाया जिणा रा मूल सिद्धान्त भी अै ईज हा। दादूदयाल, सुंदरदास, मलूकदास, लालदास, सेन भगत, पीपा, धन्ना, जांभो जी, हरिदास निरजंनी, सिख गुरू परम्परा, बाबा लालदास, सदना अैड़ा संत कवि हुया है जिकां री वाणी आज भी लोक मंगळ रो संदेस दैवै। अे संत 'कानन सुनी' रै बजाय 'आँखन देखी' पर जादा जोर देंवता इण कारण आं री वाणी में ईमानदारी अर साफगोई साफ झलकै।

1.3.1.2 प्रेम मार्ग

मध्य काल सूं पैली ई साहित्य में अेक अैड़ी परम्परा री सरूआत हुई जिण नै 'प्रेम मार्गी (सूफी) साखा', 'प्रेम काव्य', 'प्रेम कथानक काव्य', 'प्रेमाख्यानक काव्य', 'सूफी काव्य' आद अनेक नांव दिया गया। असल में अे नाम इण बात कानी इसारो करै कै आं काव्या में प्रेम विसय नै प्रमुखता दिरीजी है। ज्ञान मार्गी संतां जिण भांत परमात्मा सूं मिलणै तांई ज्ञान अर भगती साधना री राह बताई उणी भांत परमात्मा सूं मिलणै तांई प्रेम री जरूरत बताई। इणा री रचनावां में परम्परागत भारतीय सिणगार भावनां रै बजाय सुछन्द प्रेम री थापना करीजी है। इणी'ज कारण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इण परम्परा नै विदेसी मानली। रामचन्द्र शुक्ल 'रामायण' में वर्णित प्रेम नै आदर्स मानै, इण कारण सूफी काव्य रा प्रेम नै विदेसी बता दियौ। अठै आ बात ध्यान राखणै जोग है कै भारतीय काव्य में भी सुछन्द प्रेम इ है। इणीज भांत 'क्रिसन–रूकमणी', 'राधाक्रिसन', 'नळ–दमयन्ती', 'उसा–अनिरूद्ध' आद री कथावां में सुछन्द प्रेम रोई तो बरणाव है। प्राचीन भारतीय वाङ्गमय रो अध्ययन कर्यौ जावै तो आ बात सामी आवै कै प्रेमाख्यानक काव्य परम्परा भारतीय परम्परा रो ई बिगसाव है। हाँ ! आ बात भी मानणै जोग है कै इण परम्परा नै समै–समै पर बीजी परम्परावां भी प्रभावित करती रैयी जिणसूं वांरी कैई बातां अपणाई गई।

आं काव्यां री विसेतावां रामचन्द्र शुक्ल इण भांत बताई है –

– फारसी मसनवियां रै भांत आं प्रेमाख्यानकां में भी प्रेम रो चित्रण अेकान्तिक, लोक सूं बारै अर आदर्सात्मक है। साथै ई नायिका री अपेक्षा नायक रै विरह नै जादा विस्तार दियो गयो है।

– मसनवियां में पूरी कथा सर्ग या अध्यायां में बंटेड़ी कोनी हुवै। पूरो काव्य अेक ई छन्द में हुवै। कथा री सरूआत परमात्मा री प्रार्थना, पैगम्बर री वंदना अर स्याहे वक्त री बडाई साथै हुवै।

– अे प्रेम कथावां मुसलमान कवियां लिखी है।

आचार्य रामचन्द्र – शुक्ल जी री बातां री काट भारतीय परम्परा में ई मिल ज्यावै इण कारण 'प्रेम मार्ग' भी भारतीय परम्परा रो ई अेक विकसित रूप कैयो जा सकै।

प्रेम मार्ग री परम्परा री पैली पोथी 'हंसावली' राजस्थानी भासा में लिखीजी है। इणरा कवि 'असाइत' है। भुला दाउद 'चान्दायन' री रचना सन् 1379 में करी। 'लखमसेन पदमावती कथा' री रचना सन् 1459 में दामोदर कवि करी। 'सत्यवती कथा' रा रचनाकार (1501) ईस्वर दास है अर मृगावती (1503) री रचना कुतुबन करी। 'माघवानल कामकन्दला' 1527 में गणपति कवि अर 'पदमावत' री रचना सन् 1540 में मलिक मुहम्मद जायसी करी। 'पदमावत' अैड़ो प्रेमाख्यानक है जिकै में प्रेमाख्यानकां री सगळी प्रवृतियां मिलै। इण री आधी कथा काल्पनिक अर आधी अेतिहासिक है। आं पोथ्यां रै अलावा 'मधुमालती' री रचना मंझन 1545 में करी। इणी भांत 'रूप मंजरी', 'प्रेम विलास प्रेम लता री कथा' 'चित्रावली' 'नल दमयन्ती' आद प्रेम कथावां भी आप रै जुग में खूब चावी हुई।

'प्रेम मार्गी' कथावां रो बिगसाव विसुद्ध भारतीय परम्परा सूं हुयौ है पण बा पर सूफी काव्यां रो भी प्रभाव पड्यो।

1.3.2 सगुण भगती

सगुण भगती साहित्य में अनुराग अर माधुर्य भाव रै साथै–साथै दास्य अर दीनता रो भाव भी अभिव्यक्त हुयौ है। इण सूं विदेसी समीक्षकां नै ओ भ्रम हुयौ कै इणरो कारण तत्कालीन वातावरण है। बां रो विचार हो कै राजनीतिक दासता रै कारण लाचार हिन्दू जनता भगवान री सरण में आयी है, पण ओ सोचणो गळत हो। सगुण भगती री परम्परा राजनीतिक परिस्थितियाँ रो परिणाम नीं होय'र वैदिक काल री भगती धारा रो अेक रूप हो। अवतारवाद री कल्पना साथै ई इण देस में सगुण भगती रै इण व्यापक भाव नै जागां मिलगी अर इण रा कैई रूप विकसित हुया।

सगुण भगती रै इण वेग रो अेक कारण विद्वान ओ भी मानै कै बौद्ध अर जैन धरम जद नास्तिक ठहरा दिया गया तो अद्वैतवाद रो खूब प्रचार हुयौ। शंकराचार्य इण प्रचार में सिरै हा। 'अहं ब्रह्मास्मि' या 'सर्वं खल्विद ब्रह्म' रै आधार पर संसार नै नासवान मानणवाळा ब्रह्मज्ञानियों रै साथै कीं ढ़ोंगी भी पैदा होग्या जका ब्रह्मविद्या सूं अणजाण हा। शंकराचार्य तो पेली कैय चुक्या कै अनुभव में उतार्यां बिना ज्ञान ढ़ोंग है। इण भांत बैराग अर मायावाद रो ढ़ोंग करणियां सूं सीधै–सादै लोगां नै बचाणै तांई सगुण भगती जरूरी ही। दंभी अर ढोंगी साधकां सूं लोगां नै बचाणै तांई विस्णु भगती रो प्रचार कर्यो गयो जिण में रामानुज, निम्बार्क, मधवाचार्य, वल्लभाचार्य आद दिखणाद रा आचार्य प्रमुख हा। वैस्णव भगती में राम अर क्रिसन विस्णु रा औतार मान्या गया। इण भांत सगुण भगती रो प्रसार आं दो रूपां में हुयो – एक राम भगती अर दूजी क्रिसन भगती।

1.3.2.1 राम भगती

राम रो जिक्र तो वेदां में भी आवै पण बो दसरथ रो बेटो कोनी। राम साहित्य री रचना आदि कवि वाल्मीकि सूं सरू हुई। रामायण रो रचना काल ईसा रै पाँच–छः सइकै पैली सूं लैय'र इग्यारा सइका पैली या इण बिचाळै हुयो है। इण बात नै सगळै पिच्छमी अर भारतीय विद्वान मानै। संस्कृत सूं लेय'र पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर बीजी लोकभासावां में रामकथा री रचना हुयी है। राम कथा आ सुदूर भारत सूरीनाम, मलेशिया, जावा, इंडोनेशिया आद द्वीपांतांई कैई रूपां में चावी हुई। रामायण री कथा महाभारत रै 'आरण्यक', 'द्रोण' अर 'शांतिपर्व' में मिलै। अगस्त्य संहिता, राघवीय संहिता, रामपूर्व तापनीय उपनिषद्, राम रहस्य उपनिषद् में भी राम भगती री

महमा अर राम कथा मिलै। इणीज भांत बौद्ध अर जैन धरमां रा रचनाकार भी राम कथा कानी आकर्सित हुआ। आ बीजी बात है कै आं रचनाकारां राम कथा रो उपयोग खुद रै धरम रै प्रचार–प्रसार तांई जादा कर्‌यो।

आदिकाल रो राजनीतिक वातावरण अैड़ो हो कै राम रो चरित्र प्रेरणादायक हो सकै हो पण इण काल रै कवियां नै खुद रो आस्रयदातावां री बढ़ाई सूं ई फुरसत कोनी मिली। भगत कवियाँ राम रो 'लोक रक्षक रूप' जनता नै दिखायो। मध्य काल में राम भगती में तुलसीदास रो कद घणो ऊँचो है। तुलसीदास सूं पैली राम भगत कवियाँ में विष्णुदास रो नांव उल्लेख जोग है। स्वामी रामानन्द अर कवि अग्रदास भी राम कथा रा 'भरत मिलाप' अर 'अंगद पैज' में प्रसंग लिया है। तुलसीदास 'राम चरित मानस' रै अलावा गीतावली, रामाज्ञा, प्रश्नावली, रामलला नहछू, बरवै रामायण, जानकारी मंगल, रामलला नहछू, विनय पत्रिका आद ग्रंथां री रचना करी जका राम भगती सूं सम्बन्धित है। तुलसीदास राम चरित्र नै अैड़ी ऊँचाई दी कै आज तक कोई कवि बठै तक कोनी पूग सक्यो। नाभादास अर केशवदास आद कवियाँ भी राम काव्य री रचना करी। केशव री 'राम चन्द्रिका' आप रै कलात्मक चमत्कार रै कारण खूब चावी हुयी। इण रै अलावा सेनापति, प्राणचन्द चौहान, माधवदास, ह्रदय राम, नरहरिदास बारहट, लालदास अर कपूर चन्द आद कवियां भी राम रै चरित्र नै लेय'र रचनावां करी है।

राजस्थानी भासा में भी राम कथावां रची गई हैं। सब सूं पैली मेहोजी गोदारा दूहा अर चौपाइयां में रामायण री रचना करी। माघोदास दंघवाड़िया 'राम रासौ', सुरजनदास पूनिया 'राम–रासौ', अर 'रामायण कवत' री रचना करी। सरवण भूकर, मुहता रूघनाथ, कविया करणीदान भी राम काव्य री रचना करी।

मध्यकाल सूं चाल'र राम काव्य री रचना पछै भी होंवती रैयी। दसम गुरू गोविन्द सिंह 'रामावतार' नांव सूं रचना करी। चिन्तामणि कवि 'रामायण' अर 'रामाश्वामेघ' री रचना करी। सूरति मिश्र, 'राम चरित' अर रसिक गोविन्द 'रामायण सूचनिका' ग्रन्थ री रचना करी। ओ सिलसिलो अब तांई चालै। आधुनिक काल में भी राम चरित कथा खूब रच्यो गयो है। मैथिलीशरण गुप्त रा अै सबद राम रै चरित्र पर कितरा सटीक है –

राम तुम्हारा चरित्र, स्वयं काव्य है।
कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य है।।

1.3.2.2 क्रिसन भगती –

सगुण भगती धारा रो दूसरो अंग क्रिसन भगती है। क्रिसन विस्णु रा सोळा कला अवतार मान्या गया है जका द्वापर युग रा महानायक है। बुद्धि अर चतराई सूं सगळां नै चमत्कार दिखाया। क्रिसन नाम रै रिसि रो जिक्र ऋग्वेद में भी आवै पण वेदां रै क्रिसन अर महाभारत रै क्रिसन में फर्क है। संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंस अर देस री लोक भासावां मे क्रिसन लीला रो पूरो बरणाव हुयो है। भगवान रा दो रूप मान्या गया है – लोक रक्षक अर लोक रंजक। पूतना, धेनुकासुर, चाणूर, मुस्टिक कंस आद नै मारणै में लोक रक्षक अर बाल लीला, राम लीला, गोप लीला आद में क्रिसन रो लोक रंजक रूप उभरयौ है। मैथिल कोकिल विद्यापति सूं सरू होय'र श्री क्रिसन भगती री आ धारा बिना किणी रूकावट रै आधुनिक काल तक बैंवती आयी है।

मध्यकाल में क्रिसन भगती रा कैई सम्प्रदाय सामी आया जिणा में वल्लभ, निम्बार्क, राधावल्लभ, हरिदासी, चैतन्य (गौड़ीय) आद खास उल्लेख करणै जोग है। आचार्य वल्लभ रै मत गुजब श्री क्रिसन सत्, चिन्त अर आनंदसरूप है। बै अविनासी सर्वसगतीमान, सर्वज्ञ अर अनंत है। बै लीला रूप है। बां री लीलावां रो प्रयोजन लोकहित करणो ई है। इणीज भांत निम्बार्क सम्प्रदाय में क्रिसन साथै राधा री उपासना रो विधान है। क्रिसन ही ब्रह्म है। राधा वल्लभ सम्प्रदाय में क्रिसन री जागा राधा नै प्रमुखता दिरीजी है। हरिदासी सम्प्रदाय में भी क्रिसन 'लीला पुरूष' है। बै हर दम लीला में लीन रैवै। गौड़ीय सम्प्रदाय में चैतन्य महाप्रभु क्रिसन नै बृजेन्द्र कुमार कैयो है। उणां में उनन्त सगतियां है। राधा भी इण सगती रो रूप है।

वल्लभाचार्य जी 'पुष्टी मार्ग' री थापना करी, जिणमें में 'अस्ट छाप' रा कवि है, इणा में सबसूं प्रमुख सूरदास है। सूरदास रै अलावा कुंभनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, नन्ददास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी, चतुर्भुजदास जैड़ा कवि भी है। सूरदास वात्सल्य सम्राट है। सूरदास पैली विनय रा पद कैंवता पण वल्लभाचार्य

रै कैवर्ण पर लीला रा पद कैवण लागग्या। निम्बार्क सम्प्रदाय में निम्बकाचार्य, भट्ट, हरिव्यास देव, परसुदास देव आद क्रिसन भगत कवि हुया। राधा वल्लभ सम्प्रदाय में हित हरिवंस, दामोदर दास, हरिराम व्यास, चतुर्भुजदास, ध्रुवदास, नेही नागरीदास आद घणा कवि भी हुया है। हरिदासी या सखी सम्प्रदाय में स्वामी हरिदास जगन्नाथ गोस्वामी, बीठल विपुल, बिहारिनदास आद कवि हुया है। चैतन्य (गौड़ीय) सम्प्रदाय में भगवान दास, सूरदास मदनमोहन, गदा धर भट्ट, चन्द्र गोपाल, माघवदास माधुरी, भगवत मुदित आद उल्लेख करणै जोग भगत कवि है। इण रै अलावा मीराँ बाई, रसखान आद कवि है बे किणी भी सम्प्रदाय सूं जुड़ेड़ा कोनी। क्रिसन भगती रीति काल में भी चालती रई पण रीति कालीन कवियाँ रो मुख उद्देस्य भगती नीं होय'र सिणगार हो।

1.4 इकाई रो सार

इण भांत इण इकाई में आ जाणकारी दी गई कै भगती आन्दोलन भारत में मुसलमानां रै आगमन सूं घणो पैली सरू हो चुक्यो हो। आज रै विद्वान आलोचकां रो तो मानणो है कै अगर अठै विदेसी नईं भी आवंता भी भगती आन्दोलन रो रूप ओ ही रैवतो मध्य युग में जैड़ी राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक वातावरण हो बो इण आन्दोलन नै तेज करणै में मददगार रियो। मध्य युग में छूआ–छूत, ऊँच–नीच, धार्मिक ढोंग रै उन्मूलन तांई अैड़ै सुधार वादी आन्दोलन री जरूरत ही। अै संत अर भगत कवि समाज रै पिछड़ेड़ै अर गरीब तबकै सूं आया हा। अे लोग समाज री गरबी नै पिछाणै हा। बे सीधी सादी अर तर्क सम्मत लोक भासा में भगती रो सरल रूप जनता सामी राख्यो जठै काम महताऊ हो। करम नै ही धरम बतायौ गयौ है।

1.5 अभ्यास रा प्रस्न

1. भगती रो उद्भव कद हुयो ?
2. भगती काल री राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक परिस्थितियाँ समझावो।
3. क्रिसन भगती सम्प्रदायां री जाणकारी करावो।
4. राम भगती साहित्य रै विकास पर अेक निबन्ध लिखो।

1.6 सदंर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्तिकालीन काव्य।
2. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भक्ति और रीति कालीन हिन्दी मुक्तक काव्य।

इकाई – 2

भगती काव्य : परम्परा अर मूल स्त्रोत

इकाई रो मंडाण

2.0 उद्देस्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 भगती री परम्परा

2.2.1 भगती री परिभासा

2.2.2 भगती रो उद्भव

(i) वैदिक काल

(ii) उपनिसद् काल

2.3 भगती काव्य रा मूल स्त्रोत

2.3.1 निरगुण भगती

2.3.1.1 ज्ञान मारगी साखा

2.3.1.1.1 वैदिक साहित्य

2.3.1.1.2 लोक

2.3.1.1.3 नाथ पंथ अर बौद्ध दर्सन

2.3.1.1.4 इस्लाम

2.3.1.2 प्रेम मारगी साखा

2.3.1.2.1 लोक

2.3.1.2.2 प्राचीन वाङ्गमय अर इतिहास

2.3.1.2.3 इस्लाम

2.3.2 सगुण भगती

2.3.2.1 राम भगती काव्य रा स्त्रोत

2.3.2.2 क्रिसन भगती काव्य रा स्त्रोत

2.3.2.3 दार्सनिक विचार

2.3 इकाई रो सार

2.4 अभ्यास रा प्रस्न

2.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

2.0 उद्देस्य

इण इकाई रो उद्देस्य है –

1. भगती काल री परम्परा अर स्रोत रो अध्ययन करणो है। विद्वान रो अध्ययन करणो है। विद्वान आमतौर पर भगतीकाल सवत् 1350 सूं संवत् 1700 तक मानै। कैई विद्वान भगती काल नै भगती आन्दोलन री संज्ञा देवै अर इण रो उद्भव विदेसी राजसत्ता री प्रतिक्रिया में हुयो मानै। इण विचार सूं घणकरा विद्वान सहमत कोनी क्यूं कै गहन अध्ययन सूं आ बात सामी आई है कै भारत में भगती री परम्परा घणी जूनी है। डॉ. राम

विलास शर्मा रो कैवणो है कै ''देश और काल की दृष्टि से ऐसा व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन संसार में दूसरा नहीं है। ईसा की दूसरी शताब्दी में ही आंध्र प्रदेश में कृष्णोपासना के चिह्न पाये जाते हैं। गुप्त सम्राटों के युग में विष्णु नारायण–वासुदेव की उपासना ने अखिल भारतीय रूप ले लिया। पाँचवी शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक तमिलनाडु भगती–आन्दोलन का प्रमुख स्रोत रहा। आलावार संतों की कीर्ति सारे भारत में फैल गई। काश्मीर में लालदेव, तमिलनाडू में आंदाल, बंगाल में चंडीदास, गुजरात में नरसी मेहता, भारत के विभिन्न प्रदेशों में भगत–कवि लगभग डेढ़ हजार वर्ष तक जनता के ह्रदय को अपनी अमृत वाणी से सींचते रहे।'' इण सूं आ बात तो साफ हो जावै कै भगती आन्दोलन देसज है। इणरै उदय साथै विदेसी सत्ता अेक कारण हो सकै।

2. भगती आंदोलन री भावभूमि री जाणकारी विद्यार्थियों नै समझाणी।

हरेक आन्दोलन या विचारधारा री अेक भाव भूमि हुवै जिण सूं बो आगै बढ़ै। भगती आन्दोलन घणो व्यापक हो पण उण री भाव भूमि अठै री संस्कृति या बै विचार है जका सदियां सूं अठै रै लोगां रै संस्कारां में हा। वैदिक धरम रै अलावा भगती आन्दोलन पर नाथ पंथी योगियां, जैन अर बौद्ध धरमां रो प्रभाव भी देख्यो जा सकै। इस्लाम रै सम्पर्क में आणै सूं बहुदेव वाद री जागां एकेस्वरवाद नै प्रसार मिल्यौ। धरमां अर मत–मतांतरां री चोखी बातां भगती धारा में आ'र मिलती गई जिणसूं बो एक आंदोलन बणग्यो।

3. भारत में वैस्णव भगती री सुरुआत कद सूं हुई ?

4. भगती आन्दोलन री धारावां कुणसी है ?

5. भगती आन्दोलन री विचारधारा रा स्रोत कुणसा है ?

2.1 प्रस्तावना

भारत रो भगती आंदोलन भावात्मक अेकता रो प्रतीक है – इणी प्रस्तावना सूं इण इकाई नै आगै बढ़ाणी है। डॉ. राम विलास शर्मा कैवै, ''भगती आंदोलन में जो भावात्मक एकात स्थापित हुई, उसमें जितना फैलाव था, उतनी गहराई भी थी। यह एकता समाज के थोड़े से शिक्षित जनों तक सीमित नहीं थी। संस्कृत के द्वारा तो राष्ट्रीय एकता कायम हुई थी उससे यह भिन्न थी। इसकी जड़ें नगरों और गाँवों की अनपढ़ जनता के बीच गहरी चली गई थीं। यह एकता प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से कायम हो रही थी। भगती आन्दोलन एक ओर अखिल भारतीय आन्दोलन था, दूसरी ओर वह प्रदेशगत, जातीय आन्दोलन भी था। देश और प्रदेश एक साथ; राष्ट्र और जाति दोनों की सांस्कृतिक धारायें एक साथ। भगती आन्दोलन की व्यापकता और सामर्थ्य का यही रहस्य है।''

रामविलास जी रै इण कथन रै आलोक में ई देखणो ओ है कै इण आन्दोलन री विचारधारा री जड़ कठै है। भगती आन्दोलन जिण री निरगुण, सगुण साखावां आगै चाल'र उपसाखावां में विभाजित होगी, कांई इणा में भीतरी रूप में कोई अेक ई भाव भूमि है या अलग ? इण आन्दोलन रो जुड़ाव जन साधारण सूं हो ओ आम मिनख री जरूरत भी हो अर बीं नै राह दिखावणाळो भी।

इण भगती आंदोलन रो आधार बणी लोक भासावां। भगती आन्दोलन लोक भासावां रै माध्यम सूं हुयो। गुजराती, राजस्थानी ब्रज, अवधी, बंगला आद भासावां में भगती साहित्य रच्यो गयो जिणसूं लोक भासावां री ताकत बढी है। भगती साहित्य सूं 'राष्ट्रीय अेकता' मजबूत हुई। 'सन्तन को का सीकरी सों काम' कैय'र राज सत्ता रै ठोकर मारणाळा भगत कविगण समाज रा सांचा आगीवाण बण्या अर समाज में फैलयौड़ा आडम्बरा में कळीजयौड़ा मिनख नै मुगती दिराई अर गरीबी अर छूआछूत री पीड़ भुगततै मिनख नै सहारो दियौ। 'हरि को भजै सो हरि को होई' सुण'र बीं में भी कीं हिम्मत बापरी। भगती रा बीज अठां री परम्परा में मौजूद हा।

जात–पाँत अर ऊँच–नीच री भावनावां सूं ऊपर उठ'र अेक मिनखपणै सारू भगत कवि जको संदेस दियौ उण रो मोल सनातन है अर इणी माटी अर परम्परा सूं जुड़यौड़ो है। बा परम्परा वैदिक काल सूं चाली आवै है जिणरै च्यानणै में भटकेड़ो मिनख आपरी राह सोध लेवै। बां गुमोज जोग परम्परा आज भी गुप्त गंगा री भांत जन–जन रै मन में वेगवती है। भगती काल रै कवियाँ बै स्रोत ढूंढ़या जिणा सूं मानखो धन्य–हुयग्यो, आज भी बां स्रोतां री दरकार है।

2.2 भगती री परम्परा :–

भारतीय धरम साधना रै इतिहास में भगती मारग रो स्थान घणो ऊँचो अर न्यारो है। भगती री सुरुआत तो घणी पैली सूं हो चुकी ही। पण बीं रो पूरो बिगसाव मध्यकाल में हुयो। आ भगती धारा इतरी पावन ही कै इणरै कारण आखौ हिन्दू समाज रो पुनरजागरण हूयां बिनां नीं रै सवयो।

2.2.1 भगती री परिभासा :–

भागवत धरम री मूळ चेतना सूं अेक अैड़ी धारणा रो जलम हुयौ जिणरी भावभूमि लोकोन्मुखी ही। भगती सबद री व्युत्पत्ति मोनियर विलियम्स रै मुजब 'भज्' धातु सूं करी जा सकै है। आ भागवत भगती आर्यां रै दार्सनिक अर आध्यात्मिक विचारां सूं श्रद्धा–विस्वास अर उपवास रो विकसाव होय'र उपास्य देव रै व्यापक भाव में बदळगी। इण भगती भाव रो सब सूं पैली जिक्र 'श्वताश्वेश्वर उपनिषद् (6/33)' में मिळै।

श्रद्धा, विस्वास अर प्रेम जैड़ा गुण भगती री आधार भूत ताकत है। पौराणिक भगती रो मूळ व्यक्ति परक श्रद्धा है अर्थात् इण में परमात्मा री कल्पना जरुरी है। 'विस्णु' अर 'भागवत' आद इण श्रद्धा री धूरी हा। पुराणां में 'विष्णु' री कल्पना परम सत्ता रै रूप में करीजी है। आ कल्पनां भी करी गई कै भगवान बैकुण्ठ धाम में रैवै, इण कारण जीव आत्मावां नै बैकुण्ठ में जाणै री अर भगवान रै सान्निध्य में रैवणै री प्रेरणा दी गई। भगवान री भगती नै सबसूं ऊँची बताय'र उण सारु भगती अखण्ड श्रद्धा री कामना करीजी।

2.2.2 भगती रो उद्भव :–

संहिता भाग रै रचना काल तक भगती रै होवण री जाणकारी कोनी मिलै। भगती रो विकास तो वैदिक काल सूं ई सरु हो चुक्यो पण इण रो रूप आगै चाल'र थिर हुयौ। भगती रै उद्भव अर विकास रो अध्ययन नीचे लिख्या बिन्दुआं रै आधार पर कर्‌यो जा सकै –

2.2.2.1 वैदिक काल :–

वैदिक काल में जिग (यज्ञ) या कर्मकांड री प्रधानता ही। कर्मकांड नै माध्यम बणा'र धार्मिक अनुस्ठान हुया करता। आर्य लोग प्रकृति पूजक हा। बै प्राकृतिक वस्तुआं में किणी देवता री कल्पना कर लेंवता बे जळ, हवा, आग, मेह आद ने देवता मान्या। वदंना करणो भी बां री जिन्दगी रा हरख नै दरसावणो हो। वेदां में जल, हवा, मेघ अगन देव सब री अरदास मिलै। आर्यां रो ध्यान भौतिक जिन्दगी रै सुखां कानी हो इणीज कारण बांरो ध्यान बारलै विधानां पर ज्यादा रैंवतो। सुभ–असुभ में भी बां रो बिस्वास हो जिण रै कारण बै जिग आद कर्मकांड घणी श्रद्धा साथै करता क्यूं कै उणरै बिनां जिग रो कीं मतलब कोनी होतो। इण सूं ई श्रद्धा मूलक भगती रो जलम हुयौ अर बहुदेववाद री जागां अेक देव री उपासना सरु हुई। भगत सारू ओ जरूरी है कै आपरी बिखरेड़ी ताकत नै अेक जागां भेळी कर अेक देव में ई आप रो ध्यान लगावै। नतीजो ओ हुयो कै अब बहुदेव री कल्पनां होळै–होळै सिमट'र अेक में होण लागगी उण 'सत्' नै ई विद्वान इन्द्र, मित्र वरुण, अगन आद नांव दे दिया। प्रकृति रै देवी करण रै बाद देवतावां रो मानवीकरण कर्‌यौ गयौ जिण सूं अवतार वाद री भावनां नै तागत मिली। हिंसात्मक (जिग में बलि आद) अर कठोर वृत्तियाँ री जागां अब कोमल वृत्तियाँ प्रधान हुई। इणरो असर भगती साधना री विधियाँ पर भी पड्‌यो। बौद्ध अर जैन इण प्रवृत्ति नै आगी बढ़ाई।

कालान्तर में 'ब्राह्मण', 'उपनिषद्', 'आरण्यक' आद री रचना हुई। इणी दौरान, 'कर्मफळ', 'पुनर्जन्म' आद री कल्पनां भी करीजी। जीव नै करमा रा बंधण सूं मुगत करवाणै रा उपाय भी कर्‌या गया। करमजाळ सूं अळगा रैवण तांई तप, उपासना आद री व्याख्या करीजी। वैदिक उपासना अब ध्यान अर जोग में बदळगी जिण सूं श्रद्धा अर भगती रा दरवाजा खुलग्या। आर्य जद भारत भोम पर आया तो बां रो यक्ष, किन्नर, गंधर्‌व, व्रात्य आद जातियां सूं परिचै हुयौ। आं दोनुवां री छत्रछाया में भारतीय संस्कृति अर भगती रो बिगसाव हुयो।

2.2.2.2 उपनिषद् काल :–

'श्रीमद्भगवद्गीता' में ज्ञान योग अर कर्म योग साथै भगती रो भी जिक्र है। जन रा हियै में वैदिक करमकांड अर हिंसा सूं मुगती री इच्छा तो ही पण आधार कोनी हो। गीता रा बाह्रवैं अध्याय में श्री कृष्ण जनसमाज ने 'वैयक्तिक परमात्मा' री देन कैवै, वां रो कैणो है –

'मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अतः ऊर्ध्व न संशयः।।8।।'

अर्थात् 'हे मिनख ! तूं म्हनै आप रै मन में रमाले अर आप री बुद्धि नै म्हारै में थिर करदे। बिना किणी सक रै तूं म्हारै मांय समा जावैलो।'

इण पछै शां डिल्य अर नारद रै भगती सूत्रां में भगवान री भगती रो खूब बखाण हुयौ। शां डिल्य रो कैवणो हो कै भगती सूं ई ईस्वर में अटळ अनुराग जतायो जा सकै। ईस्वर मुजब आदर रो भाव, आणंद री संवेदना, जुदाई में विरहानुभूति, बीजी सगळी बातां सूं विरक्ति रो भाव, लगोलग भगवान रो गुणगान करणो, पूरी तरै सूं समरपण, सांची भगती री पिछाण है। उपनिषदां में भगती री परिभासा 'परानुरक्तीश्वरे सः भगती' अर्थात् परम आसक्ति (प्रेम) ही मूळ भाव बतायौ गयौ है।

वैदिक भगती परम्परा रै समान्तर दक्खणी भारत में द्रविड़ संस्कृति सूं जुड़ेड़ी भगती परम्परा चाल चुकी ही। आ परम्परा ईसा सूं कई सईकां पैली चाली आवै है जिण में सरणागत अर समरपण री भावना भरपूर ही। बीं नै आगै चाल'र दक्खणी भारत रै आचार्यां उतरादै भारत में भी चावी बणाई। वास्तव में ईस्वी सन् रै सुरुआती समै में ई दिखणादी अर उतरादी परम्परावां रो मेळ हो चुक्यो हो जिण रो पूरो लेखो आलवारां रै भगती साहित्य में मिलै। इण में पूजा नै भगती रो सब सूं बड़ो साधन मान्यो गयौ है।

इण भांत उपनिषद् काल पछै भगती रो सरूप विकसित होंवतो रैयो। ईस में मुख रूप सूं छः गुण – ज्ञान, बल, ऐस्वर्य वीर्य, सगती अर तेज मान'र स्रिस्टी री रचना, पालण अर संहार करणवाळो मान्यो गयो। इण रै मुजब ई ब्रह्मा, विस्णु, महेस रा करम खेतर तय हुयग्या। होळै–होळै ईं अवतार भावना सगुण, अर निरगुण भगती धारा, लोक रो आधार बनी। निरगुण भगती अवतारवाद नै नही मानै पण प्रेम, आसक्ति श्रद्धा अर विस्वास आद भगती मूलक तत्व निरगुण भगती में भी समाया। भाव री भगती दक्खणी भारत रै आलावर संतां री देन है।

पांच रात्र पंथ रो उद्देस्य भगती रै साधनां रो निरूपण करणो रैयो है। संहितावां मिन्दरां रै निरमाण, वां में आराध य देव री थापना अर भली भांत पूजा करणै री विधि दिवी।

इण भांत विक्रम री चौदहवीं सदी तक भगती रै रूप रो पूरी तरै बिगसाव हो चुक्यो हो। डॉ. मनमोहन सहगल रो इण बावत कैवणो है कै, ''उत्तर भारत में वेदों, उपनिषदों, शास्त्रों, पुराणों के माध्यम से यह प्रवृत्ति नित्य सजीव थी। हां पराजित मानसिकता की पुकार में दयनीयता और संवेदना कुछ जरूर बढ़ गई मानी जा सकती है। इस तरह भगती का द्रविड़ प्रदेश में उपजना और रामानन्द द्वारा उत्तर भारत में लाया जाना भी आंशिक रूप से ही सही कहा जा सकता है।''

2.3 भगती काव्य रा मूळ स्रोत :–

भगती काव्य री परम्परा री खोज में आ जाणकारी मिली कै भगती रा बीज वैदिक साहित्य में अर पछै उपनिषदां में भी मिलै। चौदहवें सइकै में पूग'र भगती पंथ रो जिण भांत विस्तार हुयो उण रा स्रोत भी अठै री माटी में हीहा जका। सगुण अर निरगुण पंथ भी न्यारी–न्यारी धारावां में विभाजित हुयग्या। अे आपरी जीवनी सगती कठै सूं ली ? आं बातां रो विवेचन अठै करणो है। नीचै लिख्या बिन्दुआं रै आधार पर आपां भगती काव्य रा स्रोत खोजणै री कोसीस करांला –

2.3.1 निरगुण भगती :–

भगवान रै निरगुण निराकार रूप नै मानण वाळा अर बाहरी रूप नै नकारण वाळा भगत निरगुण पंथी कैया गया। इणारै मुजब ईस अविनासी, अजर, अजन्मो अर अमर है। बो हर वक्त हरैक जागां मौजूद है। उणा

रा दरसण नीं कर्‌या जा सकै फगत मैहसूस कर्‌यो जा सकै अर सांचो गुरु ई मेळ करवा सकै। निरगुण भगती रा स्रोत इण भांत है –

2.3.1.1 ज्ञान मारगी

भाव री जागां ज्ञान सूं प्रभु तक पूगण री निरगुण भगती ज्ञान मार्गी कहीजै।

2.3.1.1.1 वैदिक साहित्य

वैदिक साहित्य दुनियां में सब सूं पुराणो है। परवर्ती साहित्य या ज्ञान–विज्ञान पर वेदां री विचारधारा रो प्रभाव पड़णो सुभाविक हो। वेदान्त में 'एकोऽहंद्वितीयोनास्ति' कैय'र अेक ई ईस्वर बतायो गयो है। चराचर जगत में ईस री सत्ता है। सगळा प्रभु में है अर बो सगळां में है। 'अहं ब्रह्मस्मि' रो भाव संत काव्य में 'सोअहं' रै रूप में देख्यो जा सकै। ब्रह्म जद धारणा करी 'एकोऽहम् बहुस्यामि' तो स्रिस्टी री रचना हुई। कबीर कयौ है –

इक्को अल्ला, नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे।

एक नूर ते सब जग उपजेया, कौण भले, कौण मंदे।

डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित निरगुण भगती धारा पर वेदान्त रै प्रभाव रो जिक्र करता कैवै, ''सन्तों के चिन्तन, जीवन दर्शन और काव्यधारा पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव है। उपनिषदों में प्रतिपादित ब्रह्म, जीव, जगत और माया सम्बन्धी विचारधारा के साथ ही ब्रह्म के स्वरुप वर्णन से सम्बद्ध उपमानों और अप्रस्तुत योजनाओं को संत कवियों द्वारा प्रायः उसी रूप में ग्रहण कर लिया गया है।''

2.3.1.1.2 लोक साहित्य

काव्य रचना रो अेक स्रोत लोक भी हुवै। मध्यकाल में हिन्दू जनता री राजनीतिक अर सामाजिक स्थिति चोखी कोनी ही। मध्यकाल रा हिन्दू–मुसलमान अेक–दूसरै नै सक री नजर सूं देखता। उणा में विजित अर विजेता भाव हो। हिन्दुवां में आपस री छुआछूत, अर जात–पांत आद रै कारण घणी फूट ही। संत कवि इण सूं प्रभावित हुयां बिना नीं रै सक्या। बां 'मनुख–मनुख री जात अेक, अेको पहचानिए' कैय'र मिनख–मिनख रै बिचाळै रो फासलो पाटणै री कोसीस करी। ओ ईज कारण है कै संत काव्य में जात–पांत अर छूआछूत नै लैय'र घणी जागरूकता दीसै। संतां रो 'परदुःख कातरता' रो भाव बां नै सदैव उद्वेलित करतो रैयो कै बै समाज में समानता री थापना करै। डॉ. नगेन्द्र भगती साहित्य रो विवेचन करता थकां कैवै, ''सन्त कवियों का लक्ष्य काव्य–रचना नहीं था, उनकी रचनाओं में जन–जन के हित और उनके उद्‌बोधन की भावना सन्निहित है।''

2.3.1.1.3 नाथ पंथ अर बौद्ध दरसण

संत काव्य नै नाथ पंथ अर बौद्ध दरसण सूं भी प्रेरणा मिली है। संत मत में जीव, आत्मा, जगत ब्रह्म आद रै सम्बंध नै जैड़ा विचार है बां रो स्रोत नाथ पण है। हठ योग री साधना भी संत मत में नाथ पंथ सूं आई है। अंध विस्वासां नै दूर करणै तांईं नाथ पंथी जोगियां खण्डन–मण्डन रो तरीको अपणायो, बोईज तरीको संत साहित्य में भी मिलै। डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित, संत मत पर नाथ पंथ रो प्रभाव बतावता कैवै, ''संत काव्य और संत दर्शन पर नाथ पंथ का भी प्रचुर प्रभाव है। नाथ पंथी कवियों एवं विचारकों के शून्यवाद उनके द्वारा गुरु की प्रतिष्ठा और सृष्टि क्रम; आत्मा जीव आदि के विषय में उनकी मान्यताओं से संत कवि अनेकशः प्रभावित रहे हैं। संत साधना में योग प्रक्रिया की जो प्रधानता है उसका मूल स्रोत नाथ पंथी साधना पद्धति ही है।''

नाथ पंथ रै अलावा संत मत पर बौद्ध धरम रो प्रभाव भी देख्यो जा सकै। संत कवियां वैदिक साहित्य परम्परावां अर आचार विचार री जैड़ी बात करी है बा बौद्ध धरम सूं प्रभावित है। इणीज भांत संत कवियाँ जीव हत्या रो विरोध अर अहिंसा रा समर्थन कर्‌यो है बो भी बौद्ध धरम रो प्रभाव कैयो जा सकै।

2.3.1.1.4 इस्लाम

संत काव्य नै इस्लाम री देन रचनात्मकता री बजाय निसेधात्मक ज्यादा रैयी। मूरत पूजा अर अवतारवाद रो विरोध जैड़ो संत मत में देख्यो जावै बा इस्लाम री देन है। हिन्दुआं में बहुदेववाद हो पण मुसलमान अेकेस्वरवादी हा। संत कवियाँ अेकेस्वर वाद स्वीकार कर हिन्दू अर मुसलमानां रो अेक ई परमात्मा बतायो –

मंदिर मसजिद दोउ अेक है, इन मंह अंतर नाहिं।

रविदास राम रहमान का, झगड़ा कोउ नाहिं।।

अेकेस्वरवाद रै सनेसै सूं भरम खायेड़ी जनता नै राहत मिली। धरम रै बाह्रलै आडम्बरां सूं छुटकारो दिरा'र संत कवियां अेक मानव धरम री थापनां री कोसीस करी जिण रो ओ फायदो हुयो कै हिन्दू–मुसलमान रै बिचाळै जकी दूरियां ही, बै कम होणी सरु होगी।

2.3.1.2 प्रेम मारगी साखा :–

मध्य काल सूं पैली ई अेक अैड़ी काव्य परम्परा री सुरुआत हो चुकी ही जिण नै विद्वान प्रेम मारगी (सूफी) साखा, प्रेम काव्य, प्रेम कथानक काव्य, सूफी काव्य आद कैई नांव दिया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रै मुजब इण रा रचनाकार मुसलमान हा पण हिन्दू घराणा री कथावां नै काव्य रौ आधार बणायो। आ धारा बिल्कुल देसज ही जिण रो प्रवर्तन भारतीय परम्परा सूं हुयो। इण बाबत डॉ. दीक्षित रो कैवणो है कै ''बेनफी, कीलर और हर्टेल प्रभृति यूरोपीय विद्वानों ने तो अपने अनुसंधानों से यह भी प्रमाणित किया है कि भारतीय प्रेमाख्यानों की ही एक शाखा सिकन्दर के साथ यूनान में पहुँची थी जो क्रमशः रोम, इटली, जर्मनी, स्पेन एवं इंग्लैण्ड की विभिन्न भाषाओं में विकसित होती हुई समस्त यूरोप में फैल गई – इसी शाखा या परम्परा का विश्व साहित्य में 'रोमांस काव्य की धारा (Cycle of Romance)' कहा जाता है। अतः भले ही कुछ विद्वान भ्रान्तिवश इस परम्परा को विदेशी घोषित करें किन्तु हमारे विचार से यह शुद्ध भारतीय परम्परा है जिससे भारतीय संस्कृति के विकास क्रम की रूपरेखा यथार्थ रूप में निहित है।''

आं प्रेमाख्यानां री कथा सुछन्द प्रेम होणै रै कारण ई आचार्य शुक्ल इण नै विदेसी सैली रो प्रभाव बतायो पण वास्तव में अैड़ा प्रेमाख्यानक भारतीय साहित्य री परम्परा रो ई हिस्सो है। उत्कट अर सुछन्द प्रेम, किणी अलौकिक ताकत री मदद सूं नायक–नायिका रो मिलणो आद प्रवृत्तियाँ भारतीय साहित्य में पैली सूं विद्यमान ही। प्रेमाख्यानक रचनावां रै स्रोत री पड़ताल आं बिन्दुआं रै आधार पर करी जा सकै –

2.3.1.2.1 लोक

प्रेमाख्यानकां रो मुख स्रोत लोक है। इण री ज्यादा तर कथावां लोक प्रचलित है। हिन्दूवां में अै कथावां पीढ़ी दर पीढ़ी सूं चाली आवै ही। इणां री लोकप्रियता देखतां थकां कवियाँ इणा नै आप री लेखनी सूं सबदरुप दियौ। आं में अलौकिक चरित्रां रो आवंणो लोक री देन है। दरअसल लोक आप री दमित इच्छावां री पूर्ति 'फैंटेसी' या अलौलिक पात्रां रै माध्यम सूं करै। आं कथावां में लोक विस्वास, रूढ़ियाँ, परम्परावां रो भी पूरी तरां निर्वाह करीज्यो है। इण री रचना भी लोक भासा में हुई है जिण सूं इण री लोकप्रियता में इजाफो हुयो है।

2.3.1.2.2 प्राचीन वाङ्मय अर इतिहास :–

आचार्य रामचंद्र शुक्ल राम अर सीता रै गिरस्त प्रेम नै आदर्स मान'र सूफी प्रेम काव्यां में दरसायेड़ै सुछन्द प्रेम नै विदेसी प्रभाव बतायो। आ बात पूरी तरां सांच कोनी क्यूंकै प्राचीन भारतीय ग्रन्थां में भी सुछन्द प्रेम रो वर्णन हुयो है। ऋग्वेद री 'उर्वशी–पुरुरवा' री कथा सूं लेय'र अपभ्रंश रै चरित काव्यां तक सुछन्द प्रेम निरुपण री अेक परम्परा चाली आवै। क्षेमेन्द्र रै 'कथा सरित् सागर' में सौ सूं जादा सुछन्द प्रेम री कथावां है। कौतूहल कवि री 'लीलावती' प्रसिद्ध प्रेमाख्यानक है। 'सुदर्शन चरित' में तत्कालीन राजा री भी बड़ाई करी गई है। भारतीय वाङ्मय में 'नल–दमयन्ती', 'उदयन वासवदत्ता', 'शकुन्तला–दुष्यन्त', 'भर्तृहरि–पिंगला', 'विक्रम–सपनावती' आद री सुछन्द प्रेम कथावां मौजूद ही। राजस्थानी भासा में 'हंसावली' प्रसद्धि प्रेम गाथा है। मुल्ला दाऊद री 'चान्दायन', 'लखमसेन–पदमावती' रा रचनाकार दामोदर कवि, 'सत्यवती' रा ईश्वर दास, 'मृगावती' रा कुतुबन, 'माधवा नल–काम कन्दला' रा रचनाकार गणपति कवि है। शुक्ल जी बतायो कै इण रा रचनाकार मुसलमान है अर हिन्दू घराणा री कथा वस्तु ली है। पछै जैड़ी सोध हुई है उणसूं पतो चालै कै तिरेपन प्रेमाख्यानक काव्य मिल चुक्या है जिण में छत्तीस रा रचनाकार हिन्दू है। इण भांत कैयो जा सकै कै कथानक सैली आद नै लैय'र जको भरम हो, उणनै दूर करणौ है – क्यूंकै आ विसुद्ध भारतीय परम्परा है।

2.3.1.2.3 इस्लाम

प्रेमाख्यानकां पर फारसी सैली रो प्रभाव है। सूफी साधना में आखरी ध्येय 'वस्ल' (ईश्वर मिलन) है। लौकिक प्रेमी–प्रेमिका रै मिलन रै माध्यम सूं इण में पूरी कथा नै रूपक में कैयी जावै। मिनख जद 'इश्क' रो चिन्तन करण लाग ज्यावै तद आ दसा हुवै। तीसरी स्थिति 'वज्द' री है। कैई सूफी काव्यां में 'शरीयत', तरीकत, हकीकत अर मारफत नांव रा चार सोपान है। सूफी कवियाँ इण प्रेम साधना नै भारतीय कथावां रै माध्यम सूं चित्रित करणै री कोसीस करी है।

2.3.2 सगुण भगती

निरगुण निराकार ईस्वर मन अर बुद्धि सूं परै है। सगुण भगत 'अविगत गति कछु कहत न आवै' मान'र भगवान् रै सगुण रुप री पूजा उपासना, अरचना करै। अवतार वाद रै सिद्धान्त रै बिगसाव पछै लोक में राम अर कृष्ण भगती जग–चावी हुई। राम अर कृष्ण भगवान विष्णु रा औतार मान्या गया। वैष्णव भगती रै सिद्धान्तां मुजब बै समै–समै पर आप रै भगतां रो उद्धार करण तांईं औतार धारण करै। राम अर कृष्ण भगती रा प्रमुख स्रोत इण भांत है –

2.3.2.1 राम भगती काव्य रा स्रोत

ऋगवेद में भी राम रो नाम कैई बर आवै पण ऋगवेद रो राम दसरथ पुत्र कोनी। रामायण में (वाल्मीकि) में राम अेक क्षत्रिय अर आदर्स राजा है। इण भांत आदि कवि री आदि रचना ई 'राम काव्य' है। राम काव्य उतरों ई पुराणो है जितरो संस्कृत काव्य रो उद्गम। महाभारत में वन पर्व में 'रामोपाख्यान' है जिण री कथा मार्कण्डेय ऋषि कैवै। कालिदास 'रघुवंशं' महाकाव्य में राम रै साथै ई राम रा पूर्ववर्ती अर परवर्ती राजावां री कथा कही है। संस्कृत रै अनेक रचनाकारां राम नै आप रै काव्य रो चरित् नायक बणायो है। छठै सइकै में भट्टि कवि 'रावण वध' में राम रै चरित्र री महानता बतावंता थकां रावण री बड़ाई भी करी है। नौंवी सदी में कुमार पाल नांव रै कवि 'जानकी हरण' नाम सूं राम काव्य री रचना करी है। इण में कालिदास री सैली अपणाई गई है। ग्यारहवैं सइकै री 'रामायण मंजरी' क्षेमेन्द्र री कृति रामकथा पर आधारित है।

महाकवि वाल्मीकि राम रै रूप में अेक अैड़ो चरित नायक प्रस्तुत कर्यो जैड़ो प्रवृत्ति काव्यां में, नाटकां अर आख्यानां में मानव जीवन नै लगोलग परिस्कृत करणै रो सनेसो देवै। वाल्मीकि री कला, लोक संग्रह री भावना अर आदर्सवाद आद सूं परवर्ती काव्य पूरी तरां अभिभूत है बौद्ध अर जैन साहित्य में हालांकि राम रै चरित्र नै अटपटै ढंग सूं चित्रण करणै री कोसीस करी जी है बे पण सफल नीं हुया। आं श्रमण धर्मा में भी राम नै (बौद्ध धर्म में बोधिसत्त्व अर जैन में आठवों बलदेव) आखिर ओतार मानणो पड्यो। अपभ्रंस साहित्य में स्वयंभू री रचेड़ी 'पउम चरिउ', रइधू रचित 'पदम पुराण' में जैन परम्परावां रो पूरी तरां निर्वाह हुयो है।

भास रै नाटक 'प्रतिमा' री कथा में भी वाल्मीकि रामायण रो आधार है। भास रै नाटक 'अभिषेक' में सीता–हरण पछै री कथा वाल्मीकि रामायण सूं है। भवभूति रो 'उत्तर रामचरित' भी अेक प्रसिद्ध रचना है। कविराज सूरि री 'राघव पांडवीयम्' अेक चमत्कार पूर्ण रचना है। इण में स्लेष रै माध्यम सूं राम अर पांडवां री कथा कैयी जी है। इणी कड़ी में विद्या माधव री 'यादव–राघवीय' दैवज्ञ सूर्य री 'राम कृष्ण' विलोम रचनावां है। मुरारि रचित 'अनर्घ राघव', राजशेखर री 'बाल रामायण', शक्ति भद्र री 'आश्चर्य चूड़ामणि' रचनावां भी इणी सैली री है। 'हनुमन्नाटक' अर 'प्रसन्न राघव' दो उच्चकोटि री कृतियां भी राम भक्ति काव्य सूं जुड़ेड़ी है।

'योग वशिष्ठ', 'अध्यात्म रामायण', 'अद्भुत रामायण', 'आनन्द रामायण' आद कृतियां राम भगती काव्य री प्रेरणा तो देवै। इण रै अलावा तमिल री 'कंब रामायण', तेलगू री 'द्विपद रामायण', (रंगनाथ रचित) मलयालम में राम कवि री 'राम चरितम्' अयिपिल्लै आशन री 'रामकथाप्पाट्टु', नरहरि री (कन्नड़) में 'तोरवे रामायण' लोक प्रिय रचनावां है। राम भगती मुजब रचनावां लिखणै में राजस्थानी रा कवि भी किणी सूं कम कोनी। राजस्थानी में मेहोजी गोदारा री 'रामायण', माधोदास दघवाड़िया री 'राम रासो' सूरजदास पूनिया री 'रामरस' मुहंता रुघनाथ री 'रुघरास' कृतियाँ प्रसिद्ध है।

राम भगती रा आं प्रबन्ध काव्यां रै अलावा मोकळै–मुक्तक साहित्य री रचना भी हुई है। राम भगती काव्य

री परम्परा अजै तांई चालै पण तुलसीदास जी द्वारा रचित 'राम चरित् मानस' अैड़ी नामी रचना है कै उण सामी सब रो तेज फीकी पड़ग्यो। तुलसीदास जी 'नानापुराण निगमागम' रो सार लेय'र रचना करी कै आज राम री जैड़ी मूर्ति जनमानस में है बा तुलसीदास री रचेड़ी है। अेक कवि री इण सूं बड़ी सफलता कांई हो सकै। इण भांत राम भगती काव्य री मूलप्रेरणा स्रोत वाल्मीकि रामायण रैयी है। हर जुग रा कवि लेखक, नाटककार वाल्मीकि रामायण सूं प्ररेणा लेय'र आप रै युग रै अनुरूप उण री कथा में थोड़ो घणो परिवर्तन, परिवर्द्धन करता रैया पण तुलसीदास जी री रचेड़ी राम री मर्यादापुरुषोत्तम, करुणावतार, भगत बछल री मूरत सगळां सूं ऊँची अर लोकप्रिय है। राम रो ओ लोक रक्षक रूप जण–जण रो कण्ठहार है।

2.3.2.2 क्रिसण भगती काव्य रा स्रोत :–

ऋग्वेद रै आठवैं अर दसवैं मंडल में श्री कृष्ण रो नांव आवै। 'कौशीतकी ब्राह्मण' में भी अंगिरस ऋषि रै चेला रो नांव श्री कृष्ण है जिण नै देवकी रो बेटो बतायो गयो है। इण सूं ओ भरम पैदा हुयो है वेदां रो श्री कृष्ण अर महाभारत रो श्री कृष्ण कांई अेक ई है पण आगै चाल'र आप री सोध रै आधार पर डॉ. भण्डारकर अर लोकमान्य तिलक ओ बतायो कै अै न्यारा–न्यारा दो चरित्र है।

महाभारत में वर्णित कृष्ण रो सरू रो रूप तो अेक सामान्य मिनख रो है पण आगै ओ रूप परिवर्तित, परिवर्धित होय'र पर ब्रह्म, विष्णु, नारायण आद रूपां में थापित हो जावै। महाभारत में कृष्ण वृष्णि, सात्वत जदुवंसीय क्षत्रीय रै रूप में लिखिजेड़ा है। गीता में खुद श्री कृष्ण कैवै म्हूँ 'वृष्णियाँ' में वासुदेव हूँ। महाभारत, गीता अर पुराणां में कृष्ण रै जैड़ै रूप रो विकास हुयो है उण मुजब विद्वानां अटकळां सूं कांम लियो है। पास्चात्य विद्वानां री नकल करता भारतीय विद्वान भी कैवै कै ईसा री सुरुआती सदियां में वासुदेव धर्म दक्खण में पूगग्यो। बठै उणा रै चरित्र में आभीरां री प्रेममयी बालगोपाल लीला मिलगी। नतीजो ओ हुयो कै गीता रा कृष्ण अर आभीरां रा बाल 'गोपाल' अेक मेक हुयग्या। सिला लेखां में भी कृष्ण री बाल लीलावां रा चितरांम मिलै।

पुराण ग्रन्थां में श्री कृष्ण रै आध्यात्मिक रूप री अभिव्यक्ति हुई है। विष्णु रै बाकी अवतारां नै अंसावतार अर श्रीकृष्ण नै पूर्वावतार बतायो गयो है। 'भगवत पुराण' में श्री कृष्ण री मै'मा रो खूब गायन हुयो है। पुराणां में ई श्री कृष्ण नै योगेस्वर, सच्चिदानन्द, अच्युत, अविनासी आद नांवां सूं सम्बोधित कर्‌यो गयो है। 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' में भी कृष्ण री खूब प्रसंसा करीजी है। इणी पुराण साहित्य में श्री कृष्ण नै देवाधिदेव, भक्तां रा आराध्य अर भगत वछल बताया गया है। बै अेक साथै ई लोक रंजक अर लोक रा रक्षक है। कृष्ण रा दो रूप मान्या गया है। – 'ऐश्वर्यमय श्री कृष्ण' अर 'माधुर्यमय श्री कृष्ण'। 'ऐश्वर्यमय' रूप सूं लोक रक्षण करै तो 'माधुर्यमय' रूप सूं लोक रो रंजन। बाल लीला सूं लेय'र किसोरावस्था तक री लीलावां माधुर्यमय रूप रै अन्तर्गत हुवै।

महाभारत में श्री कृष्ण रै पारिवारिक रूप रो वर्णन कोनी। इण नै पुराणां रै रचेतावां आप री कल्पना सूं पूरो कर्‌यो है। पुराणां में ई कृष्ण री रुकमणी, सत्यभामा पटराणियाँ साथै सोळा हजार राणियाँ बताई गई है। राध ा नै अठै इतरों महत्त्व कोनी मिल्यो जितरों मध्यकाल में। मुख्य पुराण भागवत में तो राधा रो जिक्र ई कोनी। अन्य पुराणां में राधिका रो खूब वर्णन है अर बा नायिका रो स्थान ले लेवै।

संस्कृत काव्यां में श्री कृष्ण लीला रो वर्णन सब सूं पैली अश्वघोष रै 'ब्रह्म चरित' में मिलै। इण पछै कवि हाल री रचेड़ी 'गाहा सतसई' में कृष्ण रो बो ई ज रूप चित्रित कर्‌यो गयो है जैड़ो मध्य युग री कविता में उभरै। भट्ट नारायण रै नाटक 'वेणी संहार' में सिणगार रो चितराम कर्‌यो गयो है।

'ध्वन्या लोक' में श्री कृष्ण बाबत अेक अर हेमचन्द्र री प्राकृत व्याकरण में दो श्लोक मिलै। 'द्वाश्रय' काव्य में 'गोप गीतां' रो उल्लेख है। नाट्य दर्पण, अलंकार कौस्तुभ, कंदर्प मंजरी, कृष्ण कर्णामृत, श्री कृष्ण लीलामृत आद संस्कृत ग्रंन्थां में कृष्ण जीवन रा अलग–अलग प्रसंग है। जयदेव रचित 'गीत गोविन्द' तो कृष्ण री केलि क्रीड़ावां रो वर्णन करणवाळो चावा गीतां रो काव्य है। बारहवैं सइकै पछै तो कृष्ण काव्य री खूब रचना हुई जिण में बोपदेव री 'हरि लीला', वेदान्तदेशिक री 'यादवाभ्युदय' प्रसिद्ध रचनावां है। 'हरिचरित् काव्य', 'गोपलीला', 'कंस निधन महाकाव्य', 'ब्रज बिहारी गोपाल चरित', 'मुरारि विजय नाटक', 'हरि विलास काव्य' आद रचनावां जैड़ी तेरहवै अर पन्द्रहवैं सइकै बिचाळै लिखी गई, बड़ी प्रसिद्ध रचनावां है। आधुनिक भारतीय भासावां में श्री कृष्ण

काव्य री सरुआत मैथिल कोकिल विद्यापति सूं मानी जावै जिकां श्री कृष्ण री लीलावां रो बड़ो सरस वर्णन कर्‌यो है। इण भांत पौराणिक ग्रन्थां सूं लेय'र मध्यकाल तक जैड़ो श्री कृष्ण काव्य रच्यो गयो उण में कवियां नै श्री कृष्ण रो लोक रंजक रूप ज्यादा भायो है।

2.3.2.3 दार्सनिक विचार

राम अर कृष्ण भगती काव्य रा वैचारिक स्रोत अवतार वाद सूं तो जुड़ेड़ा है ई साथै ई तुलसी जैड़ै विद्वानां 'सगुनहि, अगुनहि नहिं कछु भेदा' कैय'र उणां नै अद्वैत अर द्वैतवाद सूं भी जोड़ दिया। भारत में राम अर कृष्ण दो अैड़ा चरित्र है जका जुगां–जुगां सूं राजनीतिक, धार्मिक अर सामाजिक चेतना नै झकझोरता रैया है। आं दो चरित्रां बिना भारतीय संस्क्रति री कल्पनां करणो ई निरर्थक लागै।

2.3 इकाई रो सार

भगती आन्दोलन अखिल भारतीय हो। वैदिक कर्म कांड री श्रद्धा साथै होळै–होळै प्रेम रै संजोग सूं भगती रो सरूप निखरतो गयो। आगै चाल'र भगती री निरगुण अर सगुण दो धारावां बणगी। निरगुण में निराकार ईस्वर री आराधना करीजी अर सगुण में 'वैष्णव' भगती नै बल मिल्यो। राम अर कृष्ण रा लोक रक्षक अर लोक रंजक रूप उभर्‌या। भगती आन्दोलन रै माध्यम सूं हिन्दू–मुस्लिम अेकता मजबूत हुई। जनता में फैलेड़ै अंध विस्वास अर कुरीतियाँ पर चोट कर संत कवियाँ दुःखी जनता नै अमन राह दिखाई। कैई पिच्छम रै विचारकां रो कैणो है भारत में भगती आन्दोलन विदेसी सत्ता रै कारण हुयो; पण अध्ययन सूं आ बात सामी आई है कै भगती री सरुआत ईसा पूर्व सइकै सूं हो चुकी ही। विदेसी सत्ता अगर नीं आंवती तो भी भगती आन्दोलन रो बिगसाव कीं अैड़ै रूप रै ओळै–दोळै ई होंवतो, जैड़ो हुयो है।

2.4 अभ्यास रा प्रस्न

1. भगती री परम्परा कद सूं सरु हुई ? समझा'र लिखो।
2. ज्ञान मारगी भगती काव्य रा स्रोत कांई है ?
3. प्रेम मारगी काव्य परम्परा कांई बारै री है या इण री जड़ां भारतीय संस्कृति में है ?
4. राम भगती काव्य अर कृष्ण भगती काव्य रै स्रोतां बाबत सविस्तार लिखो।

2.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. सं. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. डॉ. बहादुर सिंह – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भगती कालीन काव्य।
4. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भगती और रीति कालीन मुक्तक काव्य।
5. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में राम कथा।
6. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य (भाग 2)।
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास।
8. सम्पा. डॉ. कल्याणसिंह शेखावत – रामकथा।

इकाई – 3

भगतीकाल अथवा मध्यकाल (वि.सं. 1450 सूं 1850 तक) : जुग रो दरसाव

इकाई रो मंडाण

3.0 उद्देस्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 भगती रौ उदय अर विगसावौ

3.2.1 राजनीतिक परिवेश

3.2.2 सामाजिक परिवेश

3.2.3 आर्थिक परिवेश

3.2.4 सांस्कृतिक परिवेश

3.2.5 साहित्यिक परिवेश

3.3 इकाई रो सार

3.4 अभ्यास रा प्रस्न

3.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

3.0 उद्देस्य

- भगतीकाल रो उदय अर विकास रो अध्ययन करणो ।
- मध्यकाल अथवा भक्तिकाल का उदय रा खातर राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक अर साहित्यिक परिवेश विद्यार्थियों ने समझाणी ।

3.1 प्रस्तावना

राजस्थानी साहित्य मांय वि.सं. 1450 सूं 1850 ताईं रौ भगती काल दो रूपां मांय मानीज्यौ है। इण काल री साहित्य–सिरजणा पूरै भारत मांय चावी रैयी है। इण समैनै स्वर्ण काल कैयो जाय सकै। अठै सूं मारू गुर्जर रौ सरूप गुजराती अर राजस्थानी मायं बदळतौ सौ लखावै। राजस्थान री राज भासा राजस्थानी होवती गयी। पण अठै मध्यकाल री राजनीतिक अर सामाजिक उथळ पुथळ रौ नजारो सामीं आवै।

आंरभ काल मांय चितौड़ रा गुहिलोत अर सिसोदिया, नागौर अर अजमेर रै मुगल शासकां रौ घणौ प्रभाव राजस्थान रै इतियास माथै असर कर्‌यौ। इण समै मांय राजपूत वंसां रो उत्थान होयौ जिण मायं मारवाड़ रा राठौड सिरैनांव रैया। मध्यकाल मांय मुगल साम्राजय री थरपणा, अकबर रै साम्राज्य री राजनीतिक धारमिक नीतियां, फैरूं, ब्रिटिष राज अर देषी रियासतां री भेळप राजस्थान रै इतियास माथै घणो असर दरसावै। 14 वीं सदी मांय राठौड़ां रौ उदय होवणो सरू होवै। इण तरियां 1394 मांय चूंडा मारवाड माथै काबिज हौवे। पण उणांरा उत्तराधिकारी अयोग्य निसरै। राव जोधा 1458 मांय बीकानेर री थरपणा करै। अकबर रै शासनकाल मांय कछवाहां रौ प्रभाव बधै। चहुवाण वंष री अेक खांप हाडों का रावदेवा 1343 मांय बूँदी राज्य री थापणा करै। 1631 मांय शाहजहां माधोसिंह नै कोटा रौ अलायदो राजा मान लेवै। कोटा बूंदी सू अलायदौ होय जावे। सिरोही माथै चहुवाणां री देवड़ा शाखा रौ कब्जौ होय जावै।

भरतपुर री रियासत 1713 मांय सामीं आवै, जठै जाटाँ रो इधकारो रैवे। जैसलमैर मांय भाटी राज करै। 1350 रै लगैटगै डूंगरसिंह डूंगरपुर राज री थरपणा करै इण रै पाछे महारावळ उदयसिंह रा सपूतां पृथ्वीराज अर

जगमाल ने डूंगरपुर अर बांसवाडा रौ इधकारो मिलै।

बाबर अर महाराणा सांगा रै बिचालै खानवा मांय भयंकर जुद्व होवे। जठै राणा सांगा खेत रैय जांवै मोकळी रियासतां, मेवाड ने छोड़र, अकबर रै मुगल साम्राज्य मांय मिळ जावै। 18 वी सदी मांय मुगलां रै शासन रौ पतन हौवे अर मराठांरी सगती रौ उदय होवै। 1818 ताईं सिरोही ने छोडर देषी रियासतां अंग्रेजी सता ने स्वीकार कर लेवे। 1819 सू 1947 ताईं अंगेजी राज रैवे। पण 1857 री गदर सूं भारत सुतंरता अंदोलण री सरूआत होय जावै।

उणीज काल मांय वीरता अर भगती रा बीज बोइजणा सरू होवै। सद् व्यवहार, सदा चरण, नीति, नैतिकता अर बुद्धिमता पूरण रचनावां रो रच रचाव आरंभ हुय जावै। बेलि क्रिसन रूकमणी री अर राजिया रा दूहा जिसडी सांगोपाग काव्य रचनावां, भाषा रो बैवार घणे मान सामीं निजर आवै। राजस्थानी भाषा मांय मारवाडी मै मुळकायत सूं साहित रचीज्यौ। ढूंढाड़ी मेवाड़ी, मेवाती, शेखावाटी अर हाड़ौती मांय भगती परम्परा अर वीर रसात्मक काव्यां री रचनावां होयी। डिगळ शैली रो धणो महताउ सरूप रैयो। इणी काल मांय मीरां, ईसरदास बारठ री रचनावां मिलै। चारण कवियां री रचना परम्परा मांय राज भगती वीर पूजा रौ घणो बखाणा होयो। सगुण भगती धारा अर निरगुण भगती धारावां मांय पद्य साहित री सिरजणा होयी। इण जुग मांय संत दादू दयाल होयौ। नाथ समुदाय री मोकळी रचनावां होयी। मध्यकाल मांय पद साहित मांय चारण काल, आख्यान काव्य, संत साहित, जैन काव्य, लैकिक प्रेम काव्य अर दूजी नानाविध रचनावां रचीजी।

इणीकाल मांय धारमिक साहित्। इणी काल में गद्य साहित अर सिरजणात्मक गद्य लिखीज्या पण राजस्थान री भगती परम्परा सगुण अर निर्गुण सरूप मांय मुकळायत सू साहित सिरजण होयो। इणभांत भगती री सगती सूं जन मानस मांय सदाचरण, सद्विष्वास अर सद्आस्था सामाजिक परिवेस मांय नुवौ जीवण जीवणै रो सोच दरसावै। बदळाव रौ जरियौ इणी रचनावां सारू आगे बधतौ रैयो। भगती साहित रो उदय अर विगसावो निर्बाध गति सू चालतौ रेयो। सामाजिक सोच नै नुवीं दीठ मिळी। सत रौ पतियारौ बधतो रैयो। दुख री घडी मांय धीजो अर संतोख सांती रौ वातावरण बण्यौ। जुद्धां रे दुख दरद उत्पीड़ित जनता मांय भगती री लहर लगोलग सुख संतोख अर सान्ती दिरावती रैयी। राजस्थान री जनता रो विस्वास आडिग अरावल री तरियां थिर थ्यावास दिरावतौ रैयो।

3.2 भगतीकाल रौ उदय अर विगसावौ

राजस्थानी सहित मांय मध्यकाल भगती सूं सराबोर रैयो। इण काल रा दोय भेद मानीजै। अेक तो पूरब मध्यकाल (वि.सं. 1450 सू वि.सं. ई स 1850 ताईं)। राजस्थानी सहित रा इतियासकार विद्वानां इ काल निर्धारण करयौ–आ बात सांप्रतेक जाणीजे। पण किणी–काल री धणखरी जाणकारी साख उण काल री स्थितियां परिस्थितियां माथै ध्यान दिराइजै। अमुक काल री राजनीतिक, सामाजिक, आरथिक, सांस्कृतिक, धार्मिक अर साहित्यिक, परिवेष किण भांत रैयो अर बदलाव किण भांत आयौ ओ सुवाल सामीं आवै।

3.2.1 राजनीतिक परिवेशः–

राजनीति री दीठ सूं देख्यो जावै तो पूरबकाल रै समै मुहम्मदबिन तुगलक रौ राज चालतौ हो बी रै पाछे लोदीवंष रौ छैकडलौ सुल्तान इब्राहिम लोदी हौ, जिकै मुगलां रो मुकाबलो कर्यौ, पण असफल रैयो। मुगलां रै समै पानीपत रो जुद्ध घणो महताउ रैयौ। उणां री विजय हुई। इणभांत छोटा मोटा जुद्ध चलता रैया।

राजस्थानी सहित रो मध्यकाल या भगती काल सगळां सूं बतौ। राजनीतिक घटना–वि.सं. 1584 मांय खानवा जुद्ध रौ इतियास मांय चरचित रैयी। उण समै आखे भारत रा प्रमुख शासकों अर सेनानायकां मिळ'र मेवाड़रा तत्कालीन महाराणा संग्राम सिंघ जी नै आपरो नेता मान'र मुगल हमलावरी बाबर री सेना सूं इतियास परसिध जुध कर्यौ। विस्वासघात रै पाण महाराणा संग्राम सिंघ हार गया अर देवलोक सिधारग्या।

इण खानवा जुध सारू डॉ. रघुवीर सिंघ पूर्व आधुनिक राजस्थान, पोथी रे, पृष्ठ संख्या 16 माथै लिखौ है, क महाराणा संग्राम सिंघ राजा सांगा री हार पाछे हिन्दू जनता रौ सोच बदळग्यो। पराजित हुवण रो घणौ

सदमौ जनता माथै रैयो। इणी कारण हिन्दू जनता निराषा, भय अर आत्म ग्लानि नै दूर करण सारू भगती साहित कानी मुडगी। आपरै धरम माथै प्रहार देखता थकां या धरम परिवर्तन नीं करणै सांरू काषी माय करौत लेवण लाग्या। भगतां अर संता रौ ध्यान इण संकट वेळा में टाळण सारु भगती साहित रचीजणौ सरू हुयौ। 'नराणाम् उत्तमम् इति नरोतमम्'। बात ने सार्थक करण सारू नर मांय नारायण रौ सरूप होवे। छेवट परमात्मा ई जगत री रिछपाल करै। उणां रो अवतार ई भगना री प्रति पालणा करें। अधरम अन्याव अर,अनाचार ने मिटावण सारु भगवान रौ अवतार होवै। सिस्टी रौ कल्याण करीजै।

हिन्दू जनता मांय आस्था, विस्वास अर आसा रो संचरण करण सारू भगती री रचनावां रचीजी। उण सत्ता वैवस्था सू अलायदा अर निरवाळा हुवण, सारू कोउ नृप होउ, हमे का हानि या संतन को सीकरी सौं कहा काम– जिस्या भाव गोस्वामी तुलसीदास जी रच्या। राजनीति सूं निरवाळा रैया।'

भगती जुग मांय तीन धारावां। बैवती जा रैयी ही बै ही शैव, शाक्त अर वैष्णव।

भगती रौ निजधाम ईसर रौ रैवास। वृन्दावन केन्द्र रूप मांय जाणीज्यौ।

3.2.2 सामाजिक परिवेशः–

सामाजिक परिवेष समाज मांय बदलाव री पून बाजण लागी। समाज मांय वर्ण वैवस्था करम रै मुजब चालती, अूंच नीच, रौ भैदभाव सरू हुयग्यौ। लोगां मांय ओछापण संकीर्णता थिर थ्यावस रैवण लागी। कुरीतियां बधण लागी। शोषक अर शोषित वरग सामीं दीखता। पुराणी रूढियां, कर्मकांड, समाज नै जकडतौ रैया, अठीनै बाल ब्यांव, अणमेल ब्यांव, दायजो प्रथा, सती प्रथा जैड़ी कुरीतियां रौ पसारण हुवतौ निगै आयौ रगत पवित्तरता, अर वंष परम्परा महताऊ होवती रैयी। इण भांत रा संस्कार अर परम्परावा जड़्यां जमावती रैयी। नारी री दषा विचार जोग हुयगी।

3.2.3 आर्थिक परिवेश :–

समाज मांय कुरीतियां बधण लागी। मोटैतोर माथै समाज दोय भागा मांय बटग्यौ। अेकै कानी अूंचौ वरग, जिकौ सम्पन्न हुवतो, अर दूजै कानी निम्न वर्ग (निचला वर्ग), भूखमरी, बेरोजगारी, पेट भरण सारू काम काज री खोज मांय भटकतो रैयो। घणी मैनत अर ओछी कमाई सूं निचलौ वरग गरीब सूं गरीब बणन लाग्यौ। मोटो खावणौ अर मोटो पैरणो ई बां रो ई जीवण बैवार रैयो।

समाज मांय बैपारी वरग रौ दबदबो रैयो। बाणियां बरग रा लोग राजाओं, जमींदारों अर ठाकरां ताईं करजो दिरावता। सूद ब्याज खावता पीवता, अर शोषण रौ धंधो चालू राखतां बिणजारा राष्ट्रीय अर अंतराष्ट्रीय, विणज करता। उणां रा बाळद दूर दूर ताई बैपार करता रैवता।

निचली, जातियां नाई, धोबी, कुभार, तेली, मोची, सुथार, कारीगर आदि आप आप रे भाग मुजब धंधौ करना अर पेट पालता। कैई लोग खेत खलियान माथै जीवण बितावता। उणा मांय संतोख बिरती रैवती। अूंच नीच, मांय समाज रौ विभाजन, साव निजर आवतौ।

3.2.4 सांस्कृतिक परिवेश :–

समाज रौ महताऊ आधार उणांरी संस्कृति माथै निरभर करै। समाज री सम्पन्नता अर धन–दौलत ठाठ बाठ रौ तद ई परिचै मिलतौ। धरम अर समाज रौ मेल जोल रौ असर संस्कृति माथै अवस जांणीजै। लोगां रो बैवार, आचरण, आस्था, विस्वास अर चिन्तणा उणी समाज मांय दीखै जठै संस्कृति, रौ सरूप बिगसावौ लिरावता दरसाई जै।

राजस्थान री सभ्यता अर संस्कृति री पिछाण न्यारी निकेवली लागै। बड़ा बड़ा गढ़ां रौ निरमाण, मोटी मोटी हवैलियां, मिन्दर, स्थापत्य कलावां, चित्र कलावां अर मूर्ति कलावां रौ विगसावौ आप री निजू साख बणावै। राजस्थान रौ बिगसावौ कठोर परिश्रम, साची लगन अर संकल्प सीळ, मिनरवां रै पाण ई होयो। राजस्थान रा मिनख मानवी, परिवार, अर समाज सदैव सदाचरण सूं सोभित रैयो है।

मध्यकाल मांय जठै बदलाव री पून बाजणी सरू हुयी बठै समाज अर संस्कृति माथै मोकळो प्रभाव सामीं

निजर आवै। धरम माथै होवण वाळै आक्रमण सू मिनख समाज री आस्थावा मांय लडखडाहट आवणी सुभाविक होवै। राज परिवार मांय विभाजन होवणो सरू हुयौ। इकाइयां टूटती गयी। रहन सहन, आचार विचार, मांय बदळाव आवणो सरू होयौ। स्थापत्य कलावां अर ललित कलावां माथै बदलाव रो असर विदेसी अर मुस्लिम ष्शैली रौ पड़नौ सामीं दीखै, धारमिक परिवेष, सैकडूं बरसां सू भारत सांस्कृतिक, गतिविधियाँ, रौ मुख स्थल रैयो। पुराणी सभ्यता री पिछाण सामीं आवण लागीं। आखे भारत मांय इण सूं पैला द्रविड़ अर आर्य सभ्यता अर संस्कृति रौ प्रभाव घणै मान दीखतौ। उणी सैंस्कारा रौं असर लगोलग होवतौ पण समाज मांय आवण वाळै बदलाव रौ कारण धारमिक कुठाराघात अर भारतीय संस्कृति, माथै बिण रौ असर हौवतो रैयो।

प्रो बी एम दिवाकर राजस्थान रा इतिहास पृ. सं 394 मांय लिखै–राजस्थान धर्म अर सभ्यता रै मामलै मांय आर्य तो काईं सिंधु निवासियां सूं प्राचीन लागै।

राजस्थान सदीव सुतंत्रता सारू संघर्ष करतौ रैयौ है, अर धरम री रिछपाल करण मांय पाछनीं दरसायी। ष्शैव, वैष्णव, अर शाक्त धरम, रो प्रचलन, अठै बरसां सू चालतौ रैयो है। धरम साधनां री बाढ सी आयोडी ही। मध्यकाल मांय धरम रो पसारो सांवठो हौ। पण पाखंड कारण अनाचार, व्यभिचार अर मिथ्याचार, बधतौ गयौ। धारमिक सुधारवादी आंदोलन भी चालता रैयौ।

इणी बिचालै भगतीकाल (मध्यकाल) मांय भगती री दो धरावां चालू हुयगी। निरगुण अर सगुण भगती सूं जिके री पिछाण बणी। समाज मांय दोनूं धरमा रौ महताऊ प्रभाव पड़यौ। मुगलां रै इधकारै सूं मुस्लिम धरम रौ फैलाव हुयौ। धरम रै नाम माथै अत्याचार बधतौ गयौ। जनता मांय अविस्वास री भावना बधती गयी। कठेई ध ारम परिवर्तन हुवण लागौ पण धरम सुधार आंदोलळ सारु संतां रौ धण मोलो योगदान रैयौ। जनता रै मन मांय षांति अर विस्वास थरपावण सारु सम्प्रदायां मांय धरम सुधार अर नुंवी विचार धरावां पनपती रैयी। ईष भगती, रूढिवादी परंपरा नै तोडती गयी, मूरती तोड़ण वाला रै कारण ईष्वर रै निराकार, निरगुण, उपासना सारू बधेपौ हुवण लाग्यौ। महान संता री आगूंच सोच जनता मांय थिर थ्यावस भाव उपजावती रैयी।

3.2.5 साहित्यिक परिवेशः–

भगती री सगली सदीव कायम रैयी। अनेकूं प्रहार होवता थकां ईष भगती कठेई दबियोडी कोनी रैयी। ईष्वर रै नाना विध सरूपां माथै नाना विध साहिता सिरजण सरू हुयगी। भगती साहित मांय उदारता करूण भाव बिचालै अग्यान दूर करण सारण सारू सिरजणा मांय नुवी दीठ सामीं आयी। धारमिक भावना सारू दक्खिण रै अलवार संतां भगतां रो महनाऊ योगदान करीज्यौ। साहित रचीज्यौ। धारमिक साहित रौ प्रचार प्रसार महताऊ माण राख्यो। भगती साहित रै उदय अर विगसावै रे पाण ई साहित रचीजण मांय दुख री घड़ी में धीरज धारण करण री सगती मिली वसुधैव कुटुम्बकम् री भावधारा रौ उदय हौ वणो अर समाज मांच मर्यादा अर नीति रो सनेस मिळयौ। मिनख मानवी री शारीरिक सूक्ष्म प्रकिया रै सागै सागै अखिल ब्रहमांड रै रहस ने सबद रूप देवण री खिमता दिरावण वाली भाषा रौ जलम मध्यकाल मांय होयौ। नुवौ चिन्तण, नुवोमारग साहित् सिरजण सागै जनता मांय नुवौ सनेसो पूगतो रैयो। इणकाल मांय भगती साहित, ईष्वर रा नानाविध सरूपां रौ बखाण करता थकां धण मोलो चिन्तण, विचार विमर्ष री खिमता कै बधावतो रैयौ। दक्खिण रै महातमाऔं री दारसनिक विचार धारावां सूं जुड़ाव भगती री सगती ने बधावण सारू मुकळायत में रैयो।

राजस्थानी साहित रै मध्यकाल रै पूर्वार्द्ध मांय जिकी भगती काव्य धारा रौ प्रणयन होयो उण सारू आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' मांय लिखै विजित एवं पददलित हिन्दू जाति किस मुख से तराने गाती है। वह निसंबल हो उस सर्व शक्तिमान की चरण शरण में पहुँची।'' इण बात नै पुख्ता करण सारू उण जुग रै साहितकारां जुग री मांग पूरण करण रौ काम करयौ।

भगती अंदोलण री सरूआत मन री शान्ति हिवड़ै मांय आस्था, सरधा अर विस्वास नै थिर थ्यावस राखण सारु संता महातमावा दारसनिक विचार धारावां रा जाणीकार लोगां रै पाण ई सिमरथता थरपती रैयी। मौटे तौर पै कैयो जाय सकें के उत्तर भारत मांय भगती अंदोलण रै आलवार भगतां री घणमोली दैण रैयी। दिखणाद मांय छठी सदी सरु हुयौ भगती अंदादेलण उत्तरी भारत मांय लगैटगै 14वीं सदी मांय पूग्यौ। इण विसाल अंदोलण

सू राजस्थान री जनता ई घणी प्रभावित होगी। भगती रै मारग सूं परमेसर री प्राप्ति सीधी सरल अर चावी ठावी बण सकै। राजस्थान रौ भगती साहित अमोलक बाजे। भारतीय भगती अंदोलण सूं राजस्थान ई घणखरौ प्रभावित हुयौ। भारतीय धारमिक अंदोलण माथे सांव दीठ राखीजै, जठै पुराण, उपनिशद् रिचावां अर बांरै सूत्रां माथै ध्यान दिराइजे।

भारतीय दायरै मांय आस्था विस्वास भगती जुगरी प्रवषतियां कैई कारणा सू व्याप्योडी रैयी। पिछम रे विद्वानां अर भारत रै विद्वानां इण सारू मोकळी राय दरसायी है। पिछमरा विद्वान बेबर, कीथ अर ग्रियर्सन भगती सारू ईसाई धरम री देण बतावै। कैई क्रिस्ण नै क्राइस्ट रौ आधार मानै।

पण भारत रा विद्वानां मांय कृष्ण स्वामी आयंगर तिलक आद भगती रो स्त्रौत भारतीय मानता रैया है। आचार्य शुक्ल अर डा हजारी प्रसाद द्विवेदी री मानता है कै मुसलमानी रै अत्याचार रै कारण करूण अर सगती कौ मारग लोगां रौ ध्यान हटावण सारू भगती ई मान्यौ है। पराजय रै कारण निराषा आवण री स्थिति भरम उपजावै। जुगरी परिस्थितियां ई भगती अंदोलन री सरूआत जाणीजै। वैदिक सहित मांय रिगवेदी रिचावां रो आचरण, बैवार, करम रै प्रति सरधा रौ आधार मानीजै। बियांई आर्यों रै जीवण मांय करम पद्धति अर ग्यान, चिन्तण, मनन आद री भावनावां जगत् सूं जुड़योडी रैयी हैं रामायण, महाभारत, अर गीता में भगती रै तत्वांरा दरसण होवे। ''सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरण व्रजः'' री बुनियाद भगती सारू धारणावां दरसावै। उपनिशदां मांय ब्रहम री विचारणा री पिछाण होवै। निरगुण उपासना लोगां री वास्तै समझ सूं अलायदी रैयी। उपासना रौ सीधे सादो, सरल मांरग सोधणे री मंछा साधरण लोगा मांय रैयीं। जैन, बौद्ध धरम अर, पुराणिक अध्ययन विष्णु रै अनेक अवतारां री बातां, सूत्र ग्रंथां, सूं भगती रौ विगसावौ होयो।

शैवमत, शाक्त मत अर वैष्णवमत आद मांय प्रेमतत्व सूं सगला प्रभावित हुआ। शंकराचार्य, मध्वाचार्य अर वल्लभाचार्य आद रा मत मतान्तर घणा व्यापा। इण भांत भगती अंदोलण रौ विगसावौ होवतो रैयो। अेकेष्वर वादी निरगुण निराकार उपसना माथै जोर दियौ। लीला पुरूष रा अवतार सूं सगुण भगती साखा रो बधेपौ हुयौ। इण तथ्यां सू सांप्रतेक लखावै के जुद्धा अर बाहरी आक्रमणां, धरमरी अदला बदळी सूं उफत्योडी जनता भगती मारग नै अपणायौ मनरी सान्ती अर आस्था विस्वास संकट मांय धीरज राखण री खिमता कै कारण भगती मारग रो उदय अर विगसावो होयो। इण परिस्थितियां रौ असर राजस्थान री जनता माथै घणमोलो पड़ियौ।

भगती जुग रै उद्यसारू डॉ. मुषीराम शर्मा रै सबदां में ''यवन शासन की दुर्दान्त पीडाओं से मर्माहन आर्य जाति को पंचम युग की इस भक्ति ने भगवत् लीलाओं का मंजूल लेप लगाकर अपूर्व आष्वासन दिया। यह युग आर्य जाति की कर्त्तव्य शक्ति के लिए भी स्मरण रहेगा। इसी युग में राम–ष्याम भक्ति के मेघों ने बरस कर रसवती साहित्य सरस्वती को अपार रस धाराओं से अप्लावित कर दिया। काव्य, चित्र, संगीत आदि नाना ललित कलाएं भक्ति से उत्साह एवं स्फूर्ति पाकर अपने ओज के साथ चमक उठी। आर्य जाति का हृदय अधीनता जन्य विषाद को भूलकर आनन्द मग्न हो गया।'' (भक्ति का उदय, पृ.सं. 269)

मध्यकाल (भगतीकाल) में भगती आंदोलन रौ महताऊ योगदान दिखणाद रै आलवार संता रौ महताऊ योगदान उत्तर प्रदेष अर राजस्थान ताईं जन आंदोलन रै रूप में फळतौ फूलतो रैयौ। इणी बाबत डॉ राम सागर त्रिपाठी आपरी पोथी भक्ति रस मीमांसा भक्ति रसामश्त सिंधु प्रिष्ठ संख्या 29 मांय लिखै, ''उपनिषद्काल से चली आती हुई– दार्षनिक विचारधारा ने दक्षिण के मध्यकालीन महात्माओं के हाथ में पड़कर नवीन मोड़ को स्वीकार कर लिया था। फलतः शाक्त, शैव और वैष्णव, विचार धाराएं जनमानस पटल पर अंकित होकर नवीन आंदोलन का सष्जन कर रही थी। अद्वैतवाद के प्रतिरोध में विषिष्टा द्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत इत्यादि अथक विचारधाराएं अपना स्थान बना चुकी थी। इस नवीन में निर्वाणोन्मुख बौद्व धर्म का शाखा प्रषाखाओ में विभाजन, जन साधारण में प्रचलित साधना मूलक अनेक मतवाद और अंततः मुसलमानों का प्रवेष कम कारण नहीं हुआ था। इन समस्त विचार धाराओं का राज्यों में प्रभावित करना अनिवार्य हो गया था।''

भगती री सगती सूं जन साधारण रै मन मांय सान्ति, सुरक्षा, अर आंणद रौ अनुभव होवतो रैयो, भगतीकाल रै उदय अर विगसावै सारू इतियासकार मोतीलाल जी आद री भावनावां लगैटगै बरोबर रैयी है।

शोधपूरण तथ्य इणी बात रो समरथण करे है कै अन्तसपीड, बेवणा, आक्रमण कारों री आक्रमक स्थिति, धरम परिवर्तन घटनावां, संकट मय जीवण सूं उबरण वास्तै जन मानस रौ ध्यान भगती री सगती कानी लागियौ। राजस्थान भगती रै अंदोलण मांय भारतीय भगती वातावरण सूं कदेई अलायदौ कोनी रैयो। राज री सत्ता वैवस्था सागै राजस्थान रै जनमानस में हौले– हौले सामाजिक बदळाव आवतो रैयौ। जुझारू राजस्थान सदीव सुतंत्रता सारू संघर्शमय रैयो है। धरम धरणियां लोग धरम ग्रंथां रौ भणनौ भणावणै अर संता महंतां रै विचार धारवां सूं सदीव प्रेरणा लिरावता रैयो। मध्यकाल सांय साहित सिरजण मुकळायत सूं होयी। राजस्थानी साहित मांय मोकळो रच रचाव होयो। राजस्थानी साहित रौ स्वर्ण जुग मध्यकाल ई मानीजै। राजस्थानी राजस्थान री राजभाषा बणती गयी। सगती अर भगती रो ताल मेल रैयो। भगत कवियां सगुण भगती सारू राम–क्रिस्ण नै आपरा आराध्यदेव मानता रैया उणां रै गुणगान सूं मोकळो सहित रच्यो। अठीने निरगुण परम्परा रा भगत निरगुण पंथ सारू लेखणी चलायी। इण विध ''ब्रहम'' सरूप सगुण अर निरगुण थरपीज्या। संतां विद्वानां, महन्ता रै पाण भगती साहित रै जरियै सद वैवार, सदाचरण, सीळ संयम, आतम तोश बधतो रैयो। जगां–जगां मिंदर मठां री थरपणा होयी। भजन, वाणिया, हरजस आदरै जरिये लोगां माय सुद्वता अर सांती थिर थ्यावस रैयी। सद्विचार सदुपदेस अध्यात्म अर दर्षन सूं सार निसारता थकां जनमानस मांय भगती री गंगा जमुना अर सरस्वती प्रवाहित करी। भगती, नीति, सिणगार अर ग्यान गरिमा समेत साहित रौ रचाव धणमोलो होयौ। राजस्थानी भाषा साहिता सारू मीरांबाई री भगती री सगती लोक चाव लिरायोडी रैयी।

इणभांत भगती साहित रौ उदय अर विगसावो होवतो रैयो, जिके सारू राजस्थान रौ इतिहास साख भरै। डॉ हीरालाल माहेष्वरी, मोतीलाल मेनारिया, डा. कल्याणसिंह शेखावत, बी.एल. माली 'अषान्त' डॉ किरण नाहटा अर सीतारामलालस भूपति राम साकरिया, अर अगरचन्द नाहटा रौ इण विध मोकळो योगदान मानीज्यौ।

इणी मध्यकाल (भगतीकाल) मांय ईसरदास ''ईसरा सो परमेसरा'', पांचों पीर, करणी जी, तेजाजी आद होया। वेलिकिसन रूक्मणी री, हरिरस आद ग्रंथ रचीज्या। आवड़ माता ''आंवड तूठी भाटियां'' माताजी रो छंद कवि दुरसा आढ़ा (छंद चालकनेस मानारो) रच्यो। ईसरदास जी मोकळा अवतारां रा नांव गिणायां भगतारां दुख मेटण अर मोक्ष (मोख) दिरावण साख विनय करता लिखै–

माहरा क्रम मेटिवा माहव क्रम हूँ कथिस तुहारा केसव

नाम तुहारउ हू धणनामी सांस सांस संभारिस स्वामी।

ईष्वरदास जी भगत अर चमत्कारी महापुरूष हा। इणां री भगती भाव सूं रच्योड़ी रचनावां मांयं हरिरस' धणी परसिध होयी। इण रै सागै गरूड़ पुराण, गुण भागवत हंस अर गुण आगम गुण वैराट अर गुणरास कीला, आद ग्रंथ ई धणा महताऊ रचीज्या।

मीराबाई री क्रिस्ण भगती रो प्रमाण जग जाहिर होयौ। उणा री प्रेमा–भगती री साधना सारथक रैयी अर सामाजिक क्रांति महिला–जागरण सारु मीरां रौ नांव अजेताईं अमरकीरत थरपीजतो रैयो है।

राजस्थानी मांय सगुण भगती धारा मांय रामअर क्रिस्ण री मूरत पूजा सारू मोकला मिन्दरा री थरपणा होयोडी है। कठेई कठेई कवेसरां की रचनावां मांय सगुण–निरगुण भाव ई सामीं आवै। सगुण भगती रा साधक कवि मूरत पूजा मांय अस्था अर विस्वास राखता। वैश्णव भगती सारु बल्लभाचार्य, बिट्ठलनाथ, मधाचार्य, सगुण भगती सारू री अराधनानै आगै बधाई अर अध्यात्म अर दर्षन रा उपदेष दिया दिराया। मोकळा धारमिक सम्प्रदायां रै पाण भगती री सगती बधती गयी। मेवात खेत्तर मांय चन्द्र सखी रा भजनअजैताई गाईजे। ब्याव सादियां मांय ई उण भजनां रौ महताऊ अस्थान बण्योडो रैवे। राजस्थान समाज मांय नुवो लोक जागरण, नारी सारु सरधा अर प्रेम भाव, सदाचरण, सदाषयता, अर नारी रो देवी सरूपा भाव थिरथरपायोडो मिलै। ब्रहम री सत्ता री व्यापकत्ता अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, विषुद्धाद्वैत आद मांय सावळ थरपीजै। इसी कारणै राजस्थान रै जनमानस मांय सान्ती सुस्थिरता अर जीवण सारू आस्था अर विस्वास बधतौ रैयौ है। मध्यकाल (भक्तिकाल) सामाजिक परिवेष मांय स्वर्णकाल, बाजे। भगती रौ विस्तार सगुण निगुण अंदोलनां सारू होवतो रैयो है। सदाचरण सील, सान्ती, आस्था अर विस्वास सागै जन मानस रौ कुण्ठाग्रस्त मन धीजो धारै अर जीवण री गाड़ी नै गुडाकावता रैवै। भगती

अंदोलन ई समाज मांय मिनख–मिनख रो भेद, अूंच नीच अर छूत–अछूत री विखमतावां अर विसंगतियां ने मेटे–मिटावे। राजस्थानी भगत कवियां मांय कृष्णदास अग्रदास, पष्थ्वीराज राठौड, अल्लूजी, ओपाजी,ईसरदास बारठ, बापजी चतरसिंह जी आदरौ नांव उल्लेख जोग लागै।

3.3 इकाई रो सार

इण बात रौ पुख्ता प्रमाण मध्यकाल रै पूरबला मध्यकाल अर उत्तर मध्यकाल री राजनीतिक सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक अर साहित्यक वातावरण भगती साहित रै उदय अर विगसावै नै दरसावै। भगतीयुगमांय दोय धारावां बैवती रैयी है। जिण मांय अेक ईष्वर रै सरूप नै निरगुण–निराकार अर घट–घट वासी मानै। ब्रहम री सत्ता ब्रहमांड मांय पसर्‌योडी बतावे, जद कै दूजी विचारधारा सगुण साकार भगती मांय ईष्वर रो लीलाधारी पुरूष, मांय थरपैं। नर में नारायण रा उत्तम गुणां नै परोटण री खिमता जतावै। इण भांत राम क्रिस्ण नै आराध्य देव मानता थकां भगती भाव रौ बखाण करे। मानुषा अवतार घणौ दुरलभ होवै। मिनख जलम ले यर उत्तम गुणां सूं आपरी कीरत् थरपाय सकै। ''कीर्ति यस्य सः जीवति'' को मारग अमरत्व होवण रौ आधार मानै। धारमिक सुधारवादी आंदोलण रै जरिये भगतीरी निर्गुण धारा रौ पसारो करै। आपरी संस्कृति अर धरम की रिछपाल सारू राजस्थान रो जनमानस सदीव सावळ सोच सारू आगै बधतो रैयो है अर परिवेस अर परिस्थितियां रै मुजब उणां ढाळता रैया है।

इण भांत मध्यकाल मांय पूरब मध्यकाल भगतीकाल अर उत्तर मध्यकाल श्रृंगारिक काल रै नांव सू जाणी जै। भगती मांय प्रिथीराज राठौड री 'बेलि' रचीजी। खिड़िया जग्गा अर ईसरदास री रचनावां मांय वीरता अर धारमिक उपासना रो महताऊ मारग दीखै। इणीकाल मांय केसोदास गाडण, श्री धर व्यास तेजोजी चारण, कान्हो जी बारठ, जयसिंह, अल्लूजी कविया, चूंडो जी दधवाड़िया सांयां जी झूला कल्याणदास राव, महेषदास राव, जतीजयचंद, बारहठ नरसिंह दास, मेहोजी बांकीदास, दुरसा आढा आद कवेसरां रौ नाव घणेमान उल्लेख जोग रैयो। वेद पुराण उपनिषद, श्रीमद्‌भागवत आद सू मोकळा संदर्भा रै सागे भगती री रचनावा मोकळे तादाद मांय रचीजी।

इण बखत भगती धारा मांय सगुण भगती अर निरगुण भगती साहित रौ रच रचाव सांगो–पांग होयो। मध्यकाल री जनता रौ मानस घणखरा इतियासिक उथलपुथल, रै पाणा संता महंता रे विचारा सांगै आस्था, विस्वास अर ईषभगती मांय आपरो मन लगायोडौ राख्यो। सामाजिक बदलाव रै सागे समाज मांय भगती री सगती सूं सदाचार आतम संयम, समाज मांय भगती री सगती सू सदाचार आतम संयम, धीजो, अर सांच रौ बेवार, नैम धरम री मरजादा नै कायम राखता सुख सान्ती पूरण जीवण जीवता रैया। भगती री बेलि पसरती पांगरती, फलती, फूलती रैयी।

3.4 अभ्यास रा प्रस्न

1. राजस्थानी साहित्य रा मध्यकाल रा प्रमुख सगुण भगता री जाणकारी रचनावा सूँ करावो
2. भक्ति साहित्य पर मध्यकाल रो काई असर रह्यो प्रमाण देर समझावौ।
3. मीराबाई, ईसरदास नरहरिदास जेड़ा भगता री सार रूप में जाणकारी करावौ।
4. राजस्थान रा संता रो मध्यकाल में योगदान रो बखान करौ।

3.5 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य
2. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्ति कालीन काव्य
4. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भक्ति और रीतिकालीन हिन्दी मुक्तक काव्य

इकाई – 4
मध्यकालीन सगुण भगती रा वैष्णव सम्प्रदाय

इकाई रो मंडाण

4.0 उद्देस्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 'वल्लभ सम्प्रदाय'

4.2.1 वल्लभाचार्य रो जीवण परिचै

4.2.2 वल्लभाचार्य री रचनावां रो परिचै

4.2.3 वल्लभाचार्य री सिस्य परम्परा

4.2.4 क्रिसन भगती रो सरूप

4.3 'निम्बार्क सम्प्रदाय'

4.3.1 निम्बार्क रो जीवण परिचै

4.3.2 निम्बार्क री रचनावां रो परिचै

4.3.3 निम्बार्क री सिस्य परम्परा

4.3.4 निम्बार्क री क्रिसन राधा भगती रो सरूप

4.3.5 राजस्थान री सलेमावाद पीठ अर 'परशुरामाचार्य'

4.4 'गौड़ीय सम्प्रदाय'

4.4.1 चैतन्य महाप्रभु रो जीवण परिचै

4.4.2 चैतन्य री रचनावां रो परिचै

4.4.3 चैतन्य री सिस्य परम्परा

4.4.4 चैतन्य री क्रिस्सन भगती रो सरूप

4.5 इकाई रो सार

4.6 सबदावली

4.7 अभ्यास रा प्रस्न

4.8 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

4.0 उद्देस्य

इण इकाई रो मूळ उद्देस्य मध्यकालीन सगुण भगती रा 'वैष्णव सम्प्रदाय' में नामी वल्लभ, निम्बार्क अर गौड़ीय सम्प्रदाय री विस्तृत जांणकारी दिरावणो है। 16 वीं अर 17वीं सदी रा अै सम्प्रदाय राधा अर क्रिस्सन भगती नै नूंवो सरूप प्रदान कर्‌यो हो। अै सम्प्रदाय उत्तरी–पूर्वी भारत में आपरो खासौ नाम कर्‌यो है। अै सम्प्रदाय मथुरा, वृन्दावन अर बंगाल में घणा चावा रैया है। इणारी भगती भावना 'माधुर्य' अर 'साख्य भाव' री ही, इणा श्री क्रिस्सन री सगुण रूप में उपासना करी है।

इण इकाई रो उद्देस्य आ तीनां सम्प्रदायां री जाणकारी अर भगती भावना नै उजोगर करणो है।

4.1 प्रस्तावना

मध्ययुगीन भारत री सगुण भगती रा वैष्णव भगती सूं परिपूरण वल्लभ सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय अर चैतन्य रौ गौड़ीय सम्प्रदाय वैष्णव सम्प्रदायां में घणा चांवा रैया है। आ तीन रा मूळ उद्देस्य राधा अर क्रिस्सन री भगती भावना नै नूंवै रूप में प्रस्तुत करणौ रैयो है। इणारौ प्रभाव राजस्थान में भी देखण मिळै है। इणामें श्री क्रिस्सन री भांत–भांत री लीलावां रो अंकन कर्‌यो गयौ है, कठैई बाल लीला, रास लीला, गोपी लीला आद रा बणाव सराहण जोग है। वैष्णव धरम में इणारो घणौ महत्व है।

4.2 वल्लभ सम्प्रदाय

17वीं सदी में राजस्थान में वल्लभ सम्प्रदाय रो आगमन व्हीया, उण सूं पैलां औ सम्प्रदाय ब्रज में घणौ चावौ हो, इणमें राधा–क्रिस्सन री भगती भावना रो नूंवो सरूप मिळै है। इणमें कीरतन, सुमिरण, दास्य, सखा अर माधुर्यता रा बरणाव मिळै है। राजस्थान में नाथद्वारा इणरो खास धाम रैयो है। वल्लभ सम्प्रदाय में वैष्णव भगती रो सोवणो रूप देखण नै मिळै। इणमें श्री क्रिस्सन री लीलावां रो चित्रांकन देखण जोग है। वल्लभाचार्य इण पंथ रो प्रचार अर प्रसार कर्‌यो है। वल्लभाचार्य श्री नाथ जी रै सुरुप–पूजन में अस्ट प्रहर भावना, सिणगार–सजावट अर कीरतन आद रो सुन्दर आयोजन कर्‌यो है। इण सम्प्रदाय में 'अन्नकूट' अर 'छप्पन भोग' जैड़ा उच्छबी रो प्रचलन भी हो।

4.2.1 वल्लभाचार्य रो जीवण परिचै

इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक वल्लभाचार्य मान्या जावै है। आं रौ जळम वि.सं. 1535 (1478 ई.) में चम्पारण्य नामक गांव में हुयों। अै तैलंग बामण हां, इणारौ पालन–पोसण काशी में व्हीयों। इणारै जळम बाबत विद्वानां में मतभेद है। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा रै मुजब इणारौ जळम बिहार रै चम्पारण जिले में अर इणारौ सुरुवाती जीवण काशी में बित्यो हो। इणारै पिता रो नाम लक्ष्मण भट्ट अर माता रो नाम इलम्मागारू हो। इणारौ परिवार घणो सिमरिध हो। इणारी सिक्षा–दीक्षा भी चोखी हुई ही। आं रा सुरूवाती गुरु लक्ष्मण भट्ट अर माघवेन्द्रपुरी हा, अै छोटी उम्र में ही वेद, पुराण, दरसण आद विसयां रा पंडित अर ग्याता बणग्या हा। 1558 सं. में इणारौ ब्या'व हुयो हो। इणारै दोय टाबर व्हीया, जिणामें विठ्ठलनाथ घणा चांवा हा, मोटो बेटो गोपीनाथ हो। वल्लभाचार्य री मिरत्यु 1642 सं. में काशी में व्हीं ही। तदै गोसाई विठ्ठलनाथ इणारौ पद भार संभाल्यौ हो, वल्लभाचार्य नै 'शुद्धाद्वैतवाद' रो प्रतिपादन कर्‌यो हो।

4.2.2 वल्लभाचार्य री रचनावां रो परिचै

वल्लभाचार्य री रचनावां– बाबत पं. पुरोहित आचार्य इणारै 71 ग्रंथ गिणाया है। रामचन्द्र शुक्ल मुजब इणारै ग्रन्थां रा नाम इण तरै है– 'पूर्व मीमांसा भाष्य', 'उतर मीमांसा भाष्य', 'सुबोधिनी टीका', 'सिद्धान्त रहस्य' आद खास है। विठ्ठलनाथ आपरै ग्रन्थ ''विद्वतमंडलम्'' में आपरै पितृचरण में गोपी पति रति मारग रो प्रवर्तक आचार्य भी कयो है। श्रीमद्भागवत री 'सुबोधिनी' नाम री टीका रै 'रास–पंचाध्यायी' प्रकरण में वल्लभाचार्य जी गोपियां रो विसेस उल्लेख भी कर्‌यो है।

वल्लभाचार्य ठौड़–ठौड़ घूम'र श्री क्रिस्सन भगती रो प्रचार कर्‌यो हो उणा इणानै ब्रज में आपरी गाद्दी री थापना करी ही। श्रीनाथ रो मिन्दर भी इणा बणवायो हो। वि.सं. 1550 में गोकुल रै गोविन्द घाट माथै पुष्टिमार्गी साखा री थापना करी ही, 'पुष्टि' रो मतलब भगवान् री भगती करनै उणारी किरपा प्राप्त करणो है। 'पुष्टि' रो सम्बन्ध भगवान् रै अनुग्रह सूं है। इणारी रचनावां में श्री क्रिस्सन भगती रा न्यांरा–न्यांरा सरूप रा बणाव मिळै है।

4.2.3 वल्लभाचार्य री सिस्य परम्परा

वल्लभाचार्य रो मत क्रिस्सन भगती काव्य में घणो चावो हुयो। इणा क्रिस्सन री माधुर्य भगती रो प्रचार कर्‌यो है। अे शुद्धाद्वैतवादी हा। इणारै मुजब ब्रह्म, जीव अर जड़ जगत् में कोई फरक नीं है। इणा क्रिस्सन भगती री थापणा 'पुष्टिमार्ग' सूं करी ही। वल्लभाचार्य रै चेलां में विठ्ठलनाथ, कुम्भनदास, सूरदास, परमानंददास अर क्रिस्सनदास खास है।

विठ्ठलनाथ ''विद्वामण्डलनम्'' नाम री कृति लिखी है। विठ्ठलनाथ अर वल्लभाचार्य रा च्यार च्यार सिस्यां सूं 'अष्टछाप' री थापना करी, जिणमें वल्लभाचार्य रा कुम्भनदास, सूरदास, परमानंददास क्रिस्सनदास अर विठ्ठलनाथ रा च्यार सिस्य गोविन्दस्वामी, नंददास, छीतस्वामी अर चतुर्भुजदास हां। अै आठूँ कवि क्रिस्सन भगती परम्परा में ''अष्टछाप'' नाम सूं घणां चांवा है।

4.2.4 क्रिस्सन भगती रो सरूप

वल्लभाचार्य रै शुद्धाद्वैत मुजब ब्रह्म ही इण जगत् में सबसू ऊँचो हो। जीवात्मा अर जड़ जगत् तात्विक रूप सूं ब्रह्य ही है। 'शुद्धाद्वैत' दरसण री साधना ही 'पुष्टिमार्ग' है। माधुर्य भाव री उपासना ही 'पुष्टिमार्ग' रो आधार है। इण में श्री क्रिस्सन री लीलावां रो बरणाव मिळै है। वल्लभाचार्य गोपिकावां री भगती नै आपरौ आदर्स मानै है। गोपिकावां भी सातविक प्रेम री प्रतीक है। इण खातर पुष्टिमार्गी भगती गोपिकावां नै गुरु मान'र उणारै आचरण रो अनुकरण करणी। वल्लभाचार्य श्री क्रिस्सन नै परब्रह्म मान्यो है। श्री क्रिस्सन सत्, चित, आनन्द रो रूप है अर बै सगळी जागां व्याप्त है–

''पर ब्रह्म तु कृष्णोहि सच्चिदानन्दकं वहत्।
जगतु त्रिविध प्रोक्त ब्रह्म विष्णु शिवास्ततः।
देवता रूपवत प्रोक्ता ब्रह्मणीर्त्थ हरिर्मत।।''

वल्लभाचार्य रै मुजब श्री क्रिस्सन रो रूप निरगुण है, पण निरगुण व्हैतां थकां भी वै सगुण है। भगतां खातर बै सगुण रूप धारण'र संसार में लीलावां करै है। इण सम्प्रदाय में वात्सल्य अर साख्य भावां री प्रधानता रै कारण दूजा सम्प्रदायां रै अस्ट पोर सेवा विधान सूं न्यारी है। वल्लभ सम्प्रदाय में सेवा रो क्रम मंगला, सिणगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, सिंझ्या–आरती आद खास है। वल्लभाचार्य रो भागवत् तत्त्वां माथै आधारित है। इणा साधना प्रदान पुष्टिमार्ग री खोज करी ही, प्रेम भगती में वल्लभाचार्य भगवान् री महिमा रै 'ग्यान' अर उणारै 'ध्यान' रो समावेस कर दियो। सत्संग, चरित–श्रवण, मनन आद अर बाल गोपाल री सेवा में विसेस रूचि दिखायी ही। वल्लभाचार्य रै मुजब सच्चिदानंद देहधारी क्रिस्सन ही पूरण परब्रह्म है। अणपार सगतियां सूं बै सगळां री आत्मा में रमण करै है, इण खातर वै आत्माराम भी है। 'पुरुषोत्तम' रूप में वै 'अगणितानंद' अर 'परमानंद' रो रूप है। अै आपरै भगतां खातर कैई लीलावां करै है। अै जगत् नै सांच अर संसार नै झूठौ मान्यो है। लीला पुरुस आपरी लीला रै खातर इण जगत रो सिरजण करै। 'अनुग्रह' भी उणारी लीला रो रूप ही है। सगळा नै पूरी निस्ठा रै साथै क्रिस्सन रो भजन करणो चाहिजै–

''सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो ब्रजाधिपः।
स्वस्यायमेव धर्मो ही नान्यः क्यापि कदाचन।।''

भगत रै खातर तनुजा, वितजा अर मानसी सेवा रो विधान है। वल्लभाचार्य रै मुजब प्रेम री तीन अवस्थावां है–स्नेह, आसक्ति अर व्यसन घणौ महत्व दियो है। श्री क्रिस्सन रै मानव जळम लेण सम्बन्ध में सूरदासजी कैवै है–

''याकी कोखि औतरें वे सुत, करै प्रान परिहास।''

क्रिस्सन री बाळ लीलावां में माखण चोरी, कालिया नाग दमण, पूतना रो वध आद घणखरा चितराम देखण नै मिळै है। कालिया–दमन करण वाळा क्रिस्सन री सुन्दरता रा बरणाव में मुरली (बांसुरी) गाननै सुण'र गोपियां माथै कांई प्रभाव पड़ै, जिणमें यग्य पत्नी लीला, 'गोवर्द्धन धारण' आद कथावां रा चित्रण इण सम्प्रदाय री भगती भावना में देखण नै मिळै है। सूरदास बतायो है कै मोहिणी मुरली रो गान सुणतां ही इण जगत् में ऊँध ी गति व्है जावै है। जकां गाय रा बछड़ा दूध पी रैया हां, बै दूध छोड़ देवै है, गायां चारो चरणो छोड़ दियो है, जमुना भी ऊँधी धार बैहण लागी अर हवा रूक गयी है–

''मुरली गति विपरीति कराई।
तिहूं भुवन भरि नाद समान्यौ, राधा रमन बजाई।।''

सूरदास री भांत परमानंददास भी लिख्यो है कै स्याम रो फुटरापो मनमोवणो है ज्यूं–ज्यूं क्रिस्सन बड़ा व्है रैया है त्यूं–त्यूं उणारौ अनुराग गोपियां में बढ़ रैयो है। क्रिस्सन रै रूप अर गुणां माथै वै घणी मंत्र मुग्ध व्है रैयी है। अेक गोपी पिणघट माथै क्रिस्सन रै रूप नै देख'र मंत्र मुग्ध कैय रैयी है–

''सांवरौ बदन देखि लुभानी।
चले जात फिरि चितयौ मोतन, तब ते संग लगानी।
कयल नैन उपरेनो फेर्‌यो, परमानंदहि जानी।।''

वल्लभाचार्य नै बाळ–गोपाल क्रिस्सन री पूजा अपणाई अर आपरै चेलां में उणरौ प्रसार भी कर्‌यो। लारै सूं विठ्ठलनाथ ''युगल किसोर उपासना'' रो विधान भी चलायो हो अर नवधा भगती रा सगळा तत्व क्रिस्सन नै लैय'र थापित कर्‌या हा।

इण तरै 'शुद्धाद्वैत सिद्धान्त' क्रिस्सन नै लीला नायक रै रूप में अमर कर दियो। साहित्य में इणीज रूप रो बोलबालो रैयो है। नायक क्रिस्सन में बाळ–क्रिस्सन री प्रतिस्ठा व्ही अर आमीरां रो बाळ देवता अठै रूप बदलाव रै साथै बाळ–क्रिस्सन रै रूप में उपास्य बण्यो हो। अष्टछाप रा कवियां अर सूर नै विसेस रूप सूं बाळ रूप रो लालित्य 'शास्वत रूप' सूं थरप दियो। धीरे–धीरे क्रिस्सन रो दारसनिक रूप गायब व्है'र 'लीलाधर' रूप ही खास रैयो। वल्लभाचार्य ही लीला नायक रै रूप में क्रिस्सन री सांची प्रतिस्ठा करी ही।

सार – वल्लभ सम्प्रदाय री क्रिस्सन भगती रो मूल्यांकन करां तो इणमें क्रिस्सन रा चरित में 'मानवीय अन्तर्वृतियां' री उद्धात अभिव्यंजना देखण नै मिळै है। क्रिस्सन आपरी सक्रियता, सचेस्टता, जतन, संघर्स, महान् दायित्व, उद्देस्य अर महान् सांस्कृतिक निरमाण में महताऊ गौरवपूरण भोमका निभायी है।

4.3 निम्बार्क सम्प्रदाय

'वैष्णव' धरम रा मूळ प्रवर्तकां में च्यार आचार्य व्हीयां है, जिणामें श्री हंसनारायण (सनक), श्री लिछमी, रूद्र अर ब्रह्म अै च्यार सम्प्रदाय घणा चांवा व्हीया, कालान्तर में श्री निम्बार्क, श्री रामानुज, श्री विष्णु स्वामी, श्री माध्वाचार्य रा च्यार नामी सम्प्रदाय चावा व्हीया। निम्बार्क सम्प्रदाय रा पैला प्रवर्तक हंस भगवान मान्या जावै है।

इण सम्प्रदाय में 'गोपाल मंत्र' रो घणौ महत्व है। इणमें 18 अक्षर अर पांच पद है। निम्बार्क सम्प्रदाय में इणी मंत्र रो उपदेस गुरु दिया करता हा, सनक वादियां सूं नारद नै औ मंत्र मिल्यो, उणानै निम्बार्क उपदेस दियो हो। निम्बार्क सम्प्रदाय रै मुजब ब्रह्म नै प्राप्त करणौ ही जीव रो उद्देस्य है। इणरो उपाय सरणागति है। उपासना में भगवत् प्रेम रो साधन है। भगवान् री पूजा रै रूप में उपासना इण सम्प्रदाय में जरूरी करम है। खुद निम्बार्क जी कैवै है–

''उपासनीयं नितरां जनैः सदा प्रह्मणयेउज्ञाननतोउनु वृते।''

निम्बार्क सम्प्रदाय उपासना प्रधान है। इण सम्प्रदाय में हरैक वैष्णव गुरु सेवा, भगवान् रो जप, भागवत् पूजा, भागवत रूप चिन्तन रो ही जसगान करै। इणारी उपासना में वैदिकी पूजा, तांत्रिक पूजा, अनुरागात्मक पूजा, नित्य विहार घणा महत्व राखै अर इणारी बारली उपासना प्रणाली में मुद्रा, कंठ तिलक अर स्मृति चिन्ह रो बणाव भी मिळै है। इण पंथ रो प्रचार मथुरा, वृन्दावन अर राजस्थान रै सलेमाबाद में भी देख्यो जा सकै है।

निम्बार्क सम्प्रदाय हरि व्यास देव पांच सुख मान्या है– सेवा, सुरत, उत्साह, सहज अर सिद्धान्त। निम्बार्क सम्प्रदाय में उपासना पद्धति तांत्रिक अर 'शास्त्रीय' दोनूं तरै री रैयी है। निम्बार्क नै रंगदेवी रो अवतार मान'र उणानै वात्सल्य रस रो दरसक कयो गयो है।

इण तरै इण सम्प्रदाय में श्री क्रिस्सन ही उपास्य, भजनीय, सेव्य अर पूज्य है। क्रिस्सन रै साथै ही राधा नै भी ईस्ट देवी रै रूप में अंगीकार कर्‌यो गयो है। इणारै अनुयायी लिलाट माथै गोपी चंदन री दोय लाम्बी रेखावां नै धारण करै, जिणारै बीच में अेक क्रिस्सन बिन्दु राखै है। इण सम्प्रदाय नै ''सनक सम्प्रदाय'' अर ''हंस सम्प्रदाय'' भी कैयो जावै है। सनक अर सनंदन आद रिखि इण सम्प्रदाय रा आद आचार्य रैया है।

4.3.1 निम्बार्क रो जीवण परिचै

निम्बार्क तेलंग बामण हा। डॉ. भण्डारकर रै मुजब इणारौ जळम सन 1162 मान्यो जावै है। इणारौ जळम वेल्लोरी जिले रै निम्ब नाम रै गांव रै अरुण रिखी री धरम पत्नी जयन्ती रै उदर सूं कांति माह सुदि पख पूनम नै व्हीयो हो, अै बाळपणै सूं ही क्रिस्सन रा भगत हा, दिक्खणांद में भणाई करनै वैराग्य धारण करता हुया भारत री जातरा करता आखिर में वृन्दावन में भगती साधना करी ही। दारसनिक साहित्य में इणारै निम्बार्काचार्य, निम्बादित्य, निम्ब भाष्कर, नियमानंदाचार्य आद नाम भी मिळै है।

4.3.2 निम्बार्क री रचनावां रो परिचै

निम्बार्क कैई ग्रन्थां री रचना करी है, जिणामें उणारा सिद्धान्तां री जाणकारी मिळै है। साथै ही इणारी क्रिस्सन भगती रो रूप भी मिळै है। इणारी रचनावां रा नाम इणगत है–

''वेदान्त परिजात सौरभ, वेदान्त–कामधेनु, मंत्र रहस्य षोड़शी, सदाचार प्रकाश, प्रपति चिन्तामणि, दशश्लोकी।'' इणमें दरसण ग्रन्थां री परम्परा घणी व्यवस्थित रूप सूं मिळै है, पण रस–रीति रो प्रवर्तन वठै भोत पछै व्हीयो है। 'दशश्लोकी' ग्रन्थ निश्चित रूप सूं बाद रो ग्रन्थ कैयो जा सकै है। 'वेदान्त–परिजात', 'सौरभ' अर 'दशश्लोकी' ग्रन्थां में इणारै सम्प्रदाय रा सिद्धान्त देखण नै मिळै है।

4.3.3 निम्बार्क री सिस्य परम्परा

निम्बार्क रा चेलां री परम्परा नै आगै बढ़ावण में श्री निवासाचार्य, औदुम्बराचार्य, गौरखाचार्य, विश्वाचार्य, पुरुषोत्माचार्य, देवाचार्य, हरिव्यास देव खास है। निम्बार्क मतावलम्बियां में श्री भट्ट, हरिव्यास देव, रूप रसिक देव अर तत्व वेजा देव भी क्रिस्सन काव्य नै आध्यात्मिकता में डुबौ दियो है, पण काव्यत्व इणारी पोथ्यां में बौत कम मिळै है।

4.3.4 निम्बार्क री क्रिस्सन राधा भगती रो सरूप

निम्बार्क सम्प्रदाय में राधा–क्रिस्सन रै पति–पत्नी सम्बन्धां नै स्वीकार कर्‌यौ गयो है। इणमें राधा रै विरह नै घणौ महत्व दियो गयो है। निम्बार्क जीव अर ब्रह्म रै सम्बन्ध नै लैय'र 'द्वैताद्वैत सिद्धान्त' रो प्रतिपादन कर्‌यो है। इणारै मत सूं परमार्थ अेक भी है अर परब्रह्म रूप में अनेक है। इणा सगुण, सर्वव्यापी, साकार–ब्रह्म री कल्पना प्रस्तुत करी है। बै प्राकृत दोसां सूं पूरण उन्मुक्त अर कल्याण–गुणां रो अमर कोस है। परमात्मा ही परब्रह्म, नारायण, पुरुषोत्तम, पूरण पुरुस अर भगवान् क्रिस्सन आद संज्ञावा (नाम) सूं जाणीजै है। अै भगतां खातर भगवान् रै पदारविन्दां री उपासना रै अलावा कोई दूजो साधन ही नीं मानै। क्रिस्सन ही पूरण ब्रह्म है, जिणरी वंदना ब्रह्मा, विष्णु अर महेस करै है। उणारी अणपार सक्तियां है। भगती सूं ही क्रिस्सन प्राप्त व्है सकै है। जिणामें 'शांत', साख्य, दास्य, वात्सल्य अर उज्ज्वल रूपां रो विधान है। सर्वेस्वर क्रिस्सन है अर राधा उणारी आह्लादिनी सगती है। उणारौ रुप क्रिस्सन रै अनुकूल ही है। विस्णु अर लिछमी री कल्पना ही इण परम्परा में क्रिस्सन अर राधा री कल्पना रै रूप में देखण नै मिळै है। 'द्वैताद्वैत सिद्धान्त' पूरण प्रेम माथै आधारित अनुरागात्मिकता परा–भगती रो संतरो रूप है। इण सम्प्रदाय में 'रस रूप' क्रिस्सन रो ही है। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न अर अनिरुद्ध उणारा हीज स्वस्थ दूजा रूप है। क्रिस्सन री अस्टयामी मानसी सेवा नै अठै घणी मानता मिळी है। चैतन्य अर गौड़ीय सम्प्रदायां में भी क्रिस्सन सगळी जगां व्याप्त सर्वेस्वर है। बै सगळी मानतावां रा प्राण वल्लभ है। राधा पूरण सगती अर क्रिस्सन री आखिरी साधना रो पूरण तत्व है।

निम्बार्क रा गोपी–क्रिस्सन अर राधवल्लभ रा क्रिस्सन रा अवतारी रूपां रो गुणगान करै है अर क्रिस्सन रो रसात्मक रूप अठै घणखरौ अभिव्यक्त व्हीयो है। निम्बार्क रै मत में जीव अर जगत् रो ब्रह्म सूं सम्बन्ध द्वैत भी है अर अद्वैत भी है। 'दशश्लोकी' रै भाष्य में हरिव्यास देव इण बाबत कैवै भी है–

''एकमेव ब्रह्म विज्ञानरूपं वस्तुतः सर्वाकारम्।
जीव ब्रह्मणोर भेदेउपि वैलक्षण्य व्यवहारोडवतारारिणोरिव।
नित्यास्तेन न क्वापि वाक्यव्याकोपो भक्ति सिद्धिश्च।
न च साधूर्यम्।।''

निम्बार्कचार्य रै नाम सूं संघ प्रचलित 'राधाष्टक' में पढ़ण वाळा नै ओ फळ बतायो है कै इणनै पढ़'र क्रिस्सन धाम वृन्दावन में, युग्म सेवानुकूलता, सखी मूरत धार'र नित्य (रोज) निवास करै है–

''सुतिष्ठन्ति वृन्दावने कृष्णधाम्नि सखीमूर्तयो युग्मसेवानुकूलताः।''

क्रिस्सन री सगती अचिंत्य अर अणपार है। बै 'ऐस्वर्य' अर 'माधुर्य' दोनूं रा आश्रय है। रमा, लिछमी अर भू सगती उणारै ऐस्वर्य रूप री अधिस्ठात्री है अर गोपी–राधा उणारै प्रेम अर माधुर्य री अधिस्ठात्री है।

जीव मात्र भगवान् में व्याय है अर सर्वदा भगवान् रै अधीन है। ईस प्रेरक है अर जीव प्रेर्यमान है। जीव अनन्त है। ब्रह्म अंसी है अर जीव अंस है। इण खातर वै सदैव भगवान् रै अधीन है–

''सर्वेश्वरस्य हरेरंशोज्यमतो हरे अधीन मित्यर्थः।''

श्री हरिव्यास देव परब्रह्म भगवान् क्रिस्सन रै दो रूपां रै मुजब, भगवान् रै लोकादि प्राप्ति री भुगती भी दो तरै सूं होवै है–'ऐश्वर्यानंद' अर 'सेवानंद प्रधान'।

प्रेम भगती इण सम्प्रदाय में पांच भावां सूं पूरण कैयी गयी है–शांत, दास्य, सख्य, वात्सल्य अर उज्ज्वल।

सार – निम्बार्क सम्प्रदाय री क्रिस्सन भगती भावना में प्रेमाभगती, नवधा भगती, माधुर्य रा गुण घणा रैया है। इण भगती भावना में क्रिस्सन रो रसात्मक रूप घणौ सामी आयो है। इण सम्प्रदाय में राधा–क्रिस्सन रै पति–पत्नी सम्बंधां नै भी स्वीकार करै है।

4.3.5 राजस्थान री सलेमाबाद पीठ अर परशुरामाचार्य

आ पीठ परशुराम जी थरपी ही। आ पीठ निम्बार्क सम्प्रदाय री खासी चांवी पीठ है। आ किशनगढ़ सूं 12 मील दूरी सलेमाबाद में है। 16वीं सदी में हरिव्यास देव हुया हा जिणारा चेला परशुराम देव हा, इणा ही राजस्थान में सलेमाबाद पीठ बणाई ही, सलेमाबाद नै परशुरामपुरी भी कैयो जावै है। परशुराम देव रो जळम जयपुर रै नेड़ै खण्डेला गाँव में हुयो हो, अै जात रा आदि गौड़ बामण हा, इणारौ जीवणकाल वि.सं. 1603–1677 रै लगैटगै रयो है। अै कबीर सूं घणां प्रभावित रया हा, अै ग्यानी अर प्रभावसाली संत महात्मा हा अै हरिव्यास देव रा चेला रैया हा अर ब्रज सूं निम्बार्क सम्प्रदाय री गादी नै किशनगढ़ रै नैड़ै सलेमाबाद में ल्याया हा। अठै ह ी
राधा–क्रिस्सन री भगती करण माथै जोर दियो अर निम्बार्क सम्प्रदाय रो प्रचार कर्‌यो। नाभादास 'भक्तमाल' ग्रन्थ में इणारै प्रचार अर उपदेस सूं जांगळ प्रदेस रा लोगां में क्रिस्सन भगती रो घणखरौ प्रचार कर्‌यो हो।

भगती रचनावां–डॉ. मोतीलाल मेनारिया रै मुजब इणारा 22 ग्रंथ अर 750 फुटकर पद मिळै है। इणारै ग्रन्थां रा नाम इणगत है ''साखी का जोड़ा, छंद का जोड़ा, सवैया दस अवतार का रघुनाथ चरित्र, श्री कृष्ण चरित्र, प्रहलाद चरित्र, सिंगार सुदामा चरित्र, द्रौपदी का जोड़ा, छप्पय गज–ग्राहया, अमर बोध लीला, नाम विधि लीला, शौच निषेध लीला, नाथ लीला, निज रूप लीला, श्री हरि लीला, श्री निर्वाण लीला, रुकमणी लीला, तिथि लीला, नक्षत्र लीला विप्रभमती, श्रीबावनी लीला, वार लीला आद।

'विप्रमती' में परशुराम देव री वाणियां मिळै है अर 'परशुराम सागर' में ऊपर दरसायोड़ौ ग्रन्थ इणीज में मिळै है। अै सगुण उपासक हा पण इणारी रचनावां में सगुण अर निरगुण रो समन्वय देखण नै मिळै है।

ज्यां –

''अवधू उलट्यो मेर चढ़यो मन मेरा सूनि जोति धुनि लागी।
अणभै सबद बजावै विणकर सोई सुरता अनुरागी।।
उड़ि आसमान अषाड़ा देषै, सोई वदिय बड़भागी।
घर बाहर उर कछू नांही, सोई निरभै वैरागी।।''

इणां री भासा लोक भासा री ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। इणांरी भासा नै सधुक्कड़ी भी कैयो जा सकै है। इणांनै गुरु रै प्रति घणौ हैत दरसायो है। इणारी साखियां रा उदाहरण देखीजै–

''सद्गुरु मार्यौ बान मरि, घर वन कछु न सुहाय।
तन मन विक्ल सुं पीड़िते, 'परसा' कहिये काय।
लागी प्रीति अपार सों, अब मन अनत न जाय।
परसा बोले आन से, तो फिरि श्याम रिसाय।''

सिस्य परम्परा– परशुराम देव रा चेलां में हरिवंशदेव, नारायणदेव, वृन्दावनदेव, गोविन्ददेव, गोविन्दशरणदेव, सर्वेश्वरशरणदेव, निम्बार्कशरणदेव, ब्रजराजशरणदेवी, गोपीश्वरशरण देव, घनश्यामशरण देव, बालकृष्णशरण देव, राधासर्वेश्वरशरण देव खास है। आं लोगां समै–समै माथै इण समप्रदाय रो जागां–जागां प्रचार–प्रसार कर्‌यो है। सलेमाबाद रै अलावा इण सम्प्रदाय री दूजी छोटी–छोटी पीठां में किशनगढ़, लूणावा, पळसाना, श्रीमाधोपुर, धोंद रैनवाल, नीमकाथाना, उदयपुरवाटी, चिड़ावा, बीकानेर, पीपाड़, जैतारण, नीमाज, लाम्बा, जोधपुर, फलोदी, ब्यावर, जयपुर, शाहपुरा, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़, डूंगरपुर आद खास स्थान है।

इण तरै आ पीठ राजस्थान में चावी पीठ मानीजै। जकी क्रिस्सन–भगती रो प्रचार करै। सलेमाबाद पीठ रा उच्च भवन, विशाळ मिन्दर, भजन स्थळ, सभा भवन, अजै भी घणा चावा है।

4.4 गौड़ीय सम्प्रदाय

16 वीं सदी में चैतन्य महाप्रभु इण सम्प्रदाय री सरुवात करी ही। राधा अर क्रिस्सन री आराधना नै इणा आपरै सम्प्रदाय में महताऊ स्थान दियो है। भगती आप पवित्रता रो महताऊ साधन बतायो है। चैतन्य मानव कल्याण नै गौड़ीय सम्प्रदाय रो चरम उद्देस्य मान्यो है। इणां जातिवाद रो विरोध कर्‌यो है। इणां वैष्णव धरम सुधार सम्बन्धी कार्य कलापां सूं सफलता री चरम सीमा तांई पूगायो हो। चैतन्य नै क्रिस्सन रो अवतार मान'र उणारी पूजा रो आयोजन करणौ चैतन्य सम्प्रदाय वाळा आपरौ कर्तव्य समझै है। नाम कीरतन नै चैतन्य आपरी साधना जगत् में घणौ ऊँचौ स्थान दियो है। इणरौ उद्देस्य 'शांत', दास्य, साख्य, वात्सल्य अर माधुर्य आ पांच भाग सूं उपासना करनै क्रिस्सन सूं तादात्मय करण रो उपदेस दियो जावै है। इण सम्प्रदाय री अस्टपोर सेवा प्रणाली में राधा रै परकीया होण रै कारण भावुकता अर रोचकता मिळै है। अस्ट कालीय लीला में 'निशान्त', पूर्वाह्य, मध्याह्य, अपराह्य, प्रदोष, रात्रि, अलस निद्रा लीला रा बणाव भी मिळै है।

चैतन्य सम्प्रदाय सेवा प्रणाली में लीलावां री निराळी छटा देखण नै मिळै है। राधा क्रिस्सन रै अनुरागमय मिलण में मित्रां, विसेस'र सखियां री चारू लीलावां आपरौ रोचक महत्व राखै है। गौड़ीय सम्प्रदाय में भगती रै भांत–भांत रा पखां रो सैद्धान्तिक अर दारसनिक दीठ सूं जैड़ो बणाव व्हीयो है, बैड़ौ दूजी ठौड़ नीं मिळै। चैतन्य रै अनुयायी भगतां री मण्डली, भगती भाव रो दरसण, सास्त्रां अर पुराणां सांमजस्य सूं अपूर्व निरूपण कर्‌यौ है अर इण तरै गौड़ीय सम्प्रदाय री नींव राखी है।

4.4.1 चैतन्य महाप्रभु रो जीवण परिचै

चैतन्य महाप्रभु रो जळम 1485 ई. में बंगाल रै नवद्वीप में हुयो हो। उण समै बंगाल में विष्णु भगती रो कम प्रचार हो, घणखरा लोग उण बखत मां काळी अर मनसा देवी रा उपासक हा, 'शाक्त सम्प्रदाय' रो घणौ जोर हो, बाईस बरस री उम्र में चैतन्य री विद्वता री ख्याति नवद्वीप रै बारे बंगाल में फैलगी ही, अेक बार जदै वै आपरै पिता रो पिण्डदान करबा गया वठै उणानै अेक ईस्वरीपुरी नाम रा परम वैष्णवी मिल्या, जिणा चैतन्य रो क्रिस्सन भगती में प्रवेस करायो हो, उण बखत चैतन्य गृहस्थी हा, कुछ समै पछै उणा आपरी माता अर पत्नी नै छोड़'र सन्यास ले लियो अर रामेस्वर अर वृन्दावन माथै तीरथ जातरा करण लागा। बै क्रिस्सन रो नाम संकीरतन करता–करता प्रेम में मस्त व्है'र नाच्या करता हा अर उणारी आँख्या सूं प्रेम रूपी आंसू झरण लागता, इणारी प्रेमा भगती अर भगती रै प्रवचनां नै सुण'र इणारा कैई अनुयायी बण्यां हा।

4.4.2 चैतन्य री रचनावां रो परिचै

चैतन्य महाप्रभु ग्रन्थ भी रच्यां है, जिणामें वारै सिद्धान्त वारी भगती भावना आद री जाणकारी मिळै है। इणांरी रचनावां रा नाम इण भांत है–'चैतन्य चरितामृत', 'चैतन्य भागवत्', 'चैतन्य मंगल', 'भक्ति–रत्नाकर'।

4.4.3 चैतन्य री सिस्य परम्परा (अनुयायी)

चैतन्य महाप्रभु री सिस्य परम्परा में कैई अनुयायी बण्यां, जकां आप–आपरै खेतर में चैतन्य री परम्परा नै आगे बढ़ायी। श्री नित्यानंद अर अद्वैत आचार्य अै दोनूं विद्वान–भगत श्री चैतन्य महाप्रभु रा चेला हा। महाप्रभु इणा दोनूं महात्मा नै बंगाल में वैष्णव धरम प्रचार खातर भेज्या हा अर इणारा 6 चेला वृन्दावन में धरम प्रचार रै खातर रैया करता, फैर चैतन्य रा तीन सिस्य श्री रूप गुसांई, सनातन (गुसांई) अर जीव गुसांई भी खास रैया है। अै तीनूं अस्टछाप कवियां रै समकालीन हा, आं तीनूं भगतां री प्रसंसा नाभादास आपरै ग्रन्थ भगतमाल'' में भी करी है।

जीव गुसाई (गोस्वामी) वृन्दावन में श्री राधा दामोदर रै मिन्दर री थापणा करी अर श्री गोपाल भट्ट भी श्री राधारमण जी रो मिन्दर बणवायो हो। अै दोनूं मिन्दर अजै तांई घणा चावा है। श्री रूप गुसाई भगती 'शास्त्र' माथै तीन महताऊ ग्रन्थ संस्कृत में लिख्या है– 'भक्ति रसामृत सिन्धु', 'उज्जवल नीलमणि' अर लघु भागवतामृत।

श्रीरूप गुसाई रा मोटा भाई अर समकालीन भगत श्री सनातन गुसाई नै श्रीमद्भागवत दशमस्कंध री टीका 'अर वृहद भागवतामृत' नाम रा दोय ग्रन्थ भी लिख्यां, श्री रूप गुसाई रा भतीजा श्री जीव गुसाई, रूप गुसाई रै दोनूं ग्रन्थां री संस्कृत टीका, 'दशमभागवत् री टीका, षट् संदर्भ' अर गोपाल चम्पू ग्रन्थ लिख्या। आं सगळा ग्रन्थां में चैतन्य सम्प्रदायी भगती रो रूप विवेक मिळै है अर इणामें भगतीसास्त्र री घणी सुन्दर व्याख्या है। चैतन्य सम्प्रदायी उक्त ग्रन्थां रो विसेस प्रचार सन् 1600 ई. (1657 वि.सं.) रै लगैटगै, श्री गोपाल भट्ट गुसाई रा चेला, श्री निवाशाचार्य करयौ, जिणा श्री जीव गुसाई जी सूं भगती सास्त्र रो अध्ययन कर्‌यो हो। उणी समै चैतन्य सम्प्रदाय नै अेक संगठित रूप देय'र उणारा दारसणिक सिद्धान्तां रो भी व्याख्या करी।

17वीं सदी रै बिचाळै बंगाल–उड़ीसा सूं कैई उत्साही युवक–भगत चैतन्य सम्प्रदाय रो विसेस ग्यान करण खातर ब्रज में आया हा, उणामें श्री निवास, श्यामानंद अर नरोतमदास खास है। इणा गौड़ीय विद्वानां री सेवा में रैय'र गौड़ीय भगती तत्वां री सिक्षा अर विद्वतापूरण ग्रन्थां रो अध्ययन करणो सरू कर्‌यो अर कैई ग्रन्थां री प्रतिलिपियां कर'र गौड़ीय भगती तत्व अर साहित्य रै प्रचार में योगदान दियो। जीव गुसाई रै आदेस मुजब इणां ग्रन्थां री कैई प्रतिलिपियां साथै लैय'र बंगाल–उड़ीसा में धरम प्रचार रो महताऊ काम कर्‌यो हो, इण तीनां भगत–विद्वानां रै परिवारां अर चेला मिल'र बंगाल, उड़ीसा, आसाम आद अगूंणी (पूर्वी) प्रदेसां में इण सम्प्रदाय रो घणौ प्रचार करियो हो।

4.4.4 चैतन्य री क्रिस्सन भगती रो सरूप

गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में क्रिस्सन रो स्थान परम उपास्य रै रूप में मिळै है। अै विष्णु अर ब्रह्म रा अवतार नीं व्है'र खुद भगवान् है–

''स्वयं भगवान् कृष्ण, कृष्ण, परमत्व।

पूर्वज्ञानी पूर्णानंद परम महत्व।।''

चैतन्य क्रिस्सन नै बैकुण्ड रा अनन्त अवतारां रो अनन्त ब्रह्माण्ड रो आधार मानै है। अै ही ब्रजेन्द्र अर ब्रजनंदन है। क्रिस्सन सर्वसगतीमान अर सच्चिदानंद है। क्रिस्सन ग्यान–योग, भगती योग अर करम योग सूं बस में व्है जावै है।

चैतन्य देव परमात्मा नै भी क्रिस्सन रो अंस मानै है। अै गुणावतार ब्रह्मा, विष्णु अर महेश तीनूं है। साक्षात् रसमय भगवान् री सगळी लीलावां में नरलीला घणी चावी है। अै च्यारूं जुगा में 'शुक्ल', रक्त, क्रिस्सन अर पीळो वस्त्र धारण कर अवतार लेवै है। गौड़ीय सम्प्रदाय क्रिस्सन रै रिसेस्वर रूप रो विकसाव कर्‌यो, जिणरौ क्रिस्सन भगती काव्य माथै घणौ प्रभाव पड़ियो है।

गौड़ीय सम्प्रदाय में भगवान् रो सरुप सच्चिदानंद मान्यो जावै। संघिनी, संवित् अर छंदिनी इण सूं सम्बन्धित तीन तरै री सगतियां है। इणा तीनूं तरै री सगतियां में ह्लादिनी राधा रूप है। श्री राधा सरुप सूं श्री क्रिस्सन प्रेम री प्रणय–विकृति अर्थात् घनीभूत अवस्था रूप है। श्री राधा आदि सगती है। क्रिस्सन ही

'सर्वशक्तिमान्' है। इण सम्प्रदाय में गोपियां रै रुप नै समझण खातर राधा नै केन्द्रगत कर्‌यौ गयो है। गोपियां इण सम्प्रदाय में श्री क्रिस्सन री रुप भूत 'शक्ति' (सगती) रो अंस है। भगवान् री अवतार लीलावां रो भांत भांत रा पुराणा सूं संकलन'र उणा में तात्विक आधार देण रो जतन श्री रूप गोस्वामी (गुसाई) कर्‌यो है। चैतन्य सम्प्रदायी राधा क्रिस्सन री युगल भगती रो, नाम अर लीला–कीरतन रो भी चैतन्य महाप्रभु रै जीवण काल में ही भली भांत प्रचार व्है गयो हो अर श्री क्रिस्सन चैतन्य रै मौखिक उपदेस सुण'र उणारै कैई अनुयायी भी बण्या हा। तात्विक सिद्धान्त री दीठ सूं चैतन्य सम्प्रदाय 'अचिन्तय भेदाभेदवादी सम्प्रदाय' भी कहलावै है। इण सम्प्रदाय रै मुजब परम तत्व अेक है, बौ तत्व सच्चिदानंद पुरुस अनन्त (अणपार) 'शक्ति' (सगती) सूं सम्पन्न अर अनादि है। ज्यूं रूप रसादि गुणां रो आश्रय अेक पदार्थ दुग्ध, न्यारी–न्यारी इन्द्रियां सूं न्यारैं–न्यारैं रूप में दिखायी देवै है, उणीज भांत अेक ही परमतत्व, उपासना भेद सूं न्यारैं–न्यारैं तरीके सूं अनुभूत होवै है–

''ततत् श्री भगवत्येव स्वरूपं भू रि विधते।
उपासनानुसारेण भाति ततदुपासके।।''

तत्ववेता अेक अद्वितीय तत्व नै ही ब्रह्म परमात्मा अर भगवान् कैय'र दरसावै–

''वदान्ति ततव्वविदस्तत्वं यज्ज्ञानमद्वयम्।''

परमत्व री अणपार सगती अचिन्त्य है। इण खातर बै अेकतत्व, न्यारैत्व, अंसित्व धारण करण में सकसम रैया है।

परमात्मा, योग रो उद्देस्य है। भगवान् रो भगती सूं साक्षात्कार होवै है। श्री रूप गुसाई 'लघु भागवतामृत' ग्रन्थ में कैयो है– ''श्री कृष्ण में अनन्त गुण है, वे असंख्य अप्राकृत गुणशाली और अपरिमित शक्ति से विशिष्ट हैं और पूर्णानंदधन उनका विग्रह है, जो ब्रह्म निर्गुण, निर्विशेष अमूर्त कहा गया है, वह सूर्य तुल्य श्री कृष्ण के प्रकाश तुल्य है।

इण सम्प्रदाय में भगवान् रा तीन अवतार बताया गया है– 'पुरुषावतार, गुणावतार अर लीलावतार।'

परब्रह्म श्री क्रिस्सन रो आदिवतार पुरुस है, जकों वासुदेव भी है। क्रिस्सन री तीन तरै री ताकत है–अन्तरंगा, बहिरंगा अर तटस्थ।

अन्तरंगा में सुरुप 'सगती' है, बहिरंगा में 'माया शक्ति' है अर तटस्थ में 'जीव शक्ति' है। भगवान् री सुरुप सगती प्रकास तुल्य है अर माया छाया तुल्य है। परब्रह्म श्री क्रिस्सन आपरै तीन सुरूपां सगतियां में प्रकास तुल्य है अर माया छाया तुल्य है। परब्रह्म श्री क्रिस्सन आपरै तीन सुरूपां में तीनूं धामा में हमेसा रैवै है। पूरण रूप में द्वारिका, पूरणेतर रूप में मथुरा, पूरणतक रूप में गोकुल (वृन्दावन)।

भगवान् श्री क्रिस्सन री भावमयी गोलोक लीला च्यार भावां सूं सम्बन्ध राखै है–दास्य, सख्य, वात्सल्य अर माधुर्य, आ च्यारूं भावां सूं क्रिस्सन चैतन्य सम्प्रदाय में प्रेमा भगती होवै। आं भावां में सबसूं ज्यादा उत्कर्स माधुर्य भाव रो है, क्यूकै इण प्रेम रै मांय कैई दूजा प्रेम भावां रो भी समावेस व्है जावै है।

चैतन्य सम्प्रदाय में सत्संग, नाम अर लीला कीरतन, ब्रज–वृन्दावन वास, क्रिस्सन मूरत री सेवा पूजा आद भगती रै साधना माथै बळ दियो गयो है।

चैतन्य री प्रसंसा, भगत नाभादास आपरै 'भगतमाळ' ग्रन्थ में आं सबदा में करी है–

''गौड़ देश पाखण्ड मेटि कियो भजन परायन।
करुणा सिन्धु कृतज्ञ भये अगनित गति दायन।
दशधा रस आक्रान्ति महत जन चरन उपासे।
नाम लेत निहपाप दुरित तिहिं नर के नासे।।''

सार– इण तरै सदियां सूं 'शैव, शाक्त अर तांत्रिक' विचारधारावां सूं जकड़ी बंगाल री भोम माथै चैतन्य अेक नूंवो अर सात्विक जीवण सूं परिपूरण राधा–क्रिस्सन री रागानुका भगती रो प्रचार कर्‌यो हो। इण सम्प्रदाय रै इतिहास सूं मालूम होवै है कै उणारा दारसनिक सिद्धान्ता रो 'अष्टछाप' रै काव्य माथै भी चैतन्य सम्प्रदायी

दारसनिक सिद्धान्ता रो प्रभाव ही नीं पड़्यो बल्कि चैतन्य लीला–कीरतन रै साथै नाम संकीरतन रो विसेस प्रचार भी कर्‌यो अर उणा भी कीरतन रै साथै गान अर वाद्य रो प्रयोग भी कर्‌यो हो। इणारै भगती भाव में माधुर्य रो गुण भी मिळै है।

4.5 इकाई रो सार

इण विसय रो सार औ है कै 16–17 री सदी रा अै वैष्णव सम्प्रदाय जिण भांत क्रिस्सन राधा री भगती भावना नै उजोगर करी है, बा सराहणजोग है। इणा क्रिस्सन री लीलावां रो गुणगान घणो प्रभावी रूप सूं प्रस्तुत कर्‌यो है। श्री क्रिस्सन री सेवा दास्य अर साख्य भाव सूं प्रकट करी है। श्री क्रिस्सन नै अै परब्रह्म मान्यो है। इणा भगवान् री महिमा रै ग्यान अर उणारै ध्यान में समावेस कर्‌यो है। सत्संग, चरित–श्रवण, मनन, चिन्तन आद नै भी इणा श्री क्रिस्सन री सेवा में विसेस रूप सूं अर्पित कर्‌यो है। 'शांत', सिणगार अर वात्सल्य रस सूं परिपूरण आंरी माधुर्य भाव री भगती मिळै है। इणा आपरै धरम प्रचार रो काम भी कर्‌यो है। आगै चाल'र इणारी सिस्य परम्परा भी बखूबी निभाई है। इकाई रो सार है आं तीनूं सम्प्रदायां री भगती भावना नै उजागर करणो।

4.6 सबदावली

आं तीनूं वैष्णव सम्प्रदायां री काव्य रचनावां में ब्रज, खड़ी, हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, देसी, राजस्थानी, अरबी–फारसी भासावां री सबदावली रो प्रयोग देखण नै मिळै है। जिणरा उदाहरण देखीजै –

ब्रज भासा रा सबद – कछु, डारै, सांकरी, छाड़त, डोलन, पकर।

देसी सबद – खरिक, चटपटी, ठकुराइन, ठगौरी, गोहन, डहकि, झारी।

पंजाबी भासा रा सबद – असी, लखि, मत्थै, हथ्थो, चल्ला, नाले, सांनू।

राजस्थानी भासा रा सबद – लुगाई, हांको।

अरबी–फारसी रा सबद – अजब, गजब, जुलमी, आफत, नाजुक, अलबेली, आसमान, महबूब, परदा, गुलदस्ता।

संस्कृत भासा रा सबद – उपासनीयं, भगवत्येवं।

4.7 अभ्यास रा प्रस्न

नीचै लिख्योड़ा सवालां रा पडूतर 500 सबदां में दिरावौ–

(1) वल्लभ सम्प्रदाय रो परिचै देवतां थकां वल्लभाचार्य रै इण सम्प्रदाय में क्रिस्सन भगती भावना नै उजागर करावौ।

(2) निम्बार्क सम्प्रदाय माथै टिप्पणी लिखो।

(3) गौड़ीय सम्प्रदाय में चैतन्य महाप्रभु रै योगदान नै बतावौ।

नीचै लिख्योड़ा सवालां रो पडूतर 150 सबदां में दिरावौ–

(1) वल्लभाचार्य री सिस्य परम्परा माथै टिप्पणी लिखो।

(2) निम्बार्क रो जीवण परिचै देवतां थकां उणारी रचानावां री सामान्य जाणकारी दिरावौ।

(3) निम्बार्क सम्प्रदाय में सलेमाबाद पीठ अर परशुरामदेव रो योगदान नै दरसावो।

(4) गौड़ीय सम्प्रदाय माथै लेख लिखो।

4.8 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

(1) डॉ. एम. जॉर्ज–भक्ति आन्दोलन और साहित्य।

(2) डॉ. सुमन शर्मा–मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का सामाजिक विवेचन।

(3) डॉ. नारायण दत शर्मा–निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण भक्त हिन्दी कवि (भाग–1)।
(4) डॉ. मीरा श्रीवास्तव–मध्ययुगीन हिन्दी कृष्ण भक्ति धारा और चैतन्य सम्प्रदाय।
(5) डॉ. शरण बिहारी गोस्वामी–कृष्ण भक्ति में सखी भाव।
(6) डॉ. उषा गोयल–चैतन्य सम्प्रदाय का ब्रज भाषा काव्य।
(7) डॉ. रामचरणलाल शर्मा–हिन्दी साहित्य में अष्टछापी और राधावल्लभीय काव्य।
(8) के. भास्करन नायर–हिन्दी और मलयालम में कृष्ण भक्ति काव्य।
(9) डॉ. कृष्णदत पालीवाल–मध्ययुगीन हिन्दी महाकाव्यों में नायक।
(10) डॉ. दीनदयाल गुप्त–अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय (भाग–1)।

इकाई – 5
सगुण अर निरगुण भगती धारा

इकाई रो मंडाण

5.0 उद्देस्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 सगुण भगती धारा

5.2.1 अग्रदास

5.2.2 ईसरदास

5.2.3 मीराँबाई

5.2.4 गवरी बाई

5.2.5 अल्लूजी

5.2.6 माधोदास दधगड़िया

5.2.7 प्रिथ्वीराज राठौड़

5.2.8 सांया जी झूला :–

5.3 निरगुण भगती धारा

5.3.1 दादूजी

5.3.2 रज्जब जी

5.3.3 सुन्दर दास

5.3.4 जन गोपाल :–

5.3.5 गरीबदास

5.3.6 जगननाथ

5.3.7 संतदास

5.3.8 भीखजन :–

5.4 इकाई रो सार

5.5 अभ्यास रा प्रस्न

5.6 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

5.0 उद्देश्य

भगति री दो धारावाँ एक सगुण अर दूजी निरगुण। इन इकाई रा उद्देस्य नीचे मुजब है –

1. राजस्थानी साहित्य री सगुण भगति धारा री जाणकारा करावणौ अर प्रसिद्ध सगुण भगतां री विगत मानणौ।
2. राजस्थानी साहित्य री निरगुण भगति धारा भी धणी सबल है, इण इकाई म निर्गुण भगति धारा री सांगोपांग जानकारी करावणी।
3. राजस्थानी भगति साहित्य री विसेसतावां रो गुण गाण करावणौ।

5.1 प्रस्तावना

राजस्थान साहित्य रै मध्यकाल नै 'स्वर्णजुग' री संग्या दिराई जावै तो अतिस्योक्ति कोनी होवै। भगती भावना रा सगुण निरगुण रूप ब्रह्म री व्यापक सत्ता नै मानण सारु जन मानस साव चेत दीखै। इण सारु भगत कवि आप आप रै आराध्य दैव री उपासना सारु घणमोलो साहित्य रच्यौ।

5.2 सगुण भगती धारा

सगुण भगती में कवेसरां राम अर क्रिस्ण री उपासना विष्णु रूप में करी। आं कवेसरां विष्णु या ब्रहम नै निराकार नीं मान'र साकार अर सगुण मान्यौ। सगुणोपासना मांय ब्रह्म रा दोय रूप जाणीजै सगुण अर निर्गुण। सगुण सरूप सरल अर सुगम होवै। इण बाबत भगत कवि तुलसीदास गोस्वामी लिख्यौ–

सगुण रूप सुलभ अति, निगुण जात नहीं कोय।
सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होय।।

सगुण भगती धारा मांय ईस्वर रै अवतार री कल्पना करीजी। भगतां री रिछपाल सारु भगवान सरीर धारण करै अर उणारा दुख दरद मिटावै। सगुण भगत्तां मांय भगवान री लीला में आस्था अर विस्वास थरपीज्यौ। भगवान री लीला माधुरी चार प्रकार री होवै। 'ऐश्वर्य माधुरी', 'क्रीड़ा माधुरी', 'वेणु माधुरी' अर 'विग्रह माधुरी'। राम भगतां 'ऐश्वर्य माधुरी' नै अपणायर भगवान री विग्रह माधुरी या रूपमाधुरी रो बखाण करयौ। जद कै क्रिस्ण भगतां वेण माधुरी अर मुरलीधर अर गोपलीला रै सरूप मांय क्रीड़ा माधुरी नै परोटी।

इण तरिया सगुण भगती मांय रामाश्रयी अर कृष्णाश्रयी धारावां मांय उपासना सरू हुयी।

सगुणवादी वेद, 'शास्त्र', पुराणां रै वचनां माथै विस्वास करता रैया। लीला अवतारां रै गुणगान करता थंका सगुण भगती भाव सूं जन मानस मांय अनुराग करता रैया। सगुण भगती मांय राजस्थान री भगती–सगती परम्परा माथै मोकळा भाव दरसावता कवेसरां रचवावां करी। कैई कवेसर राम भगती री रचनावां माथै घणो जोर दरसायौ तो कैई कवेसरां क्रिस्ण भगती माथै काव्य रचना करी। राजस्थान मांय भगत कवियां मांय ईसरदास बारहठ अर मीराँबाई रौ नांव उल्लेख जोग है। भगती अर सगती सागै सागै चालती रैयी। मध्यकाल रा कवेसर धरती अर धरम सूं जुड़योड़ी रचनावां करता रैया। चारण कवेसरां में धारमिक भावनावां अूंचै दरजै री रैयी। प्रिथीराज राठौड़ री 'वेलिक्रिस्ण रूकमणीरी' काव्य भगती अर सिणगार री घणमोली रचना। भगती रचनावां मांय 'शिव–पारवती', सती सावित्री, राम कृष्ण पांडवां आद नै विषय बणावता थकां मोकळो काव्य रचीज्यौ। चूंडो जी दधवाड़िया 'गुण मारवाड़ी', 'रामलीला अर गुण चारण वेलि' सरीखी रचनावां रची।

15 वी सदी मांय श्रीधर व्यास 'सप्त सदी रा छंद' लिखिया अर खिड़िया माता जीरा छंद रच्या। 16 वीं सदी मांय जयसिंह ''हरि रासौ'' लिख्यौ जिण मांय भगती री अूंची भाव धारा प्रवाहित होयी।

राजस्थानी भगती साहित्य मांय पयहारी (दूध पीने वाले) लगै–टगै (सं. 1559–84) मांय होया। कवि वैस्णव भगत हा। इणा री सबदावली ब्रजभासा प्रधान ही पण मध्यकाल मांय डिंगळ अर पिंगळ दोनूं ई कवियां रै काव्य री सौभा बढाई। कृष्ण भगती री महिमा इणारी रचनावां मांय मिळै जियांः–

आवत लाल गोवर्द्धन धारी।

आलस नैन सरस रस रंगिन, प्रिया प्रेस नूतन आहारी।।

इणा री काव्य रचनावां 'जुगल सैन चरित्र', बुध गीता अर प्रेमतत्व निरूपणा आद मिलै।

5.2.1 अग्रदासः–

कवि अग्रदास री 'रचना माल' वि. सं 1632 रै लगैटगै मिळै। उणा री रचनावां मांय 'श्रीराम मंजरी पदावली', हितोपदेश भाषा', 'उपासना बावनी', 'कुंडळिया', 'रहस्य त्रय' आद है।

अग्रदास जी भगवान श्रीरामचन्द्र रा उपासक। बां लिख्यो –

रघुवर लागत है मोहि प्यारो।

अवधपुरी सरयू तट विहरै दशरथ प्राण पियारो।

इणा री भाषा ब्रज ही। इणी तरिया नाभादास, मीराँबाई, ईसरदास बाहठ, अल्लू जी, कवि जल्ह, प्रिथ्वीराज राठौड़, सांयां जी झूला, दुरसाजी, माधोदास दधवाड़िया आद भगत कवि भी इणी समै हुया।

5.2.2 ईसरदास :–

अे रोहड़िया शाखा रा चारण कवि हा। इणा रो जलम जोधपुर रियासत रै भाद्रेस नांव रै गांव मांय वि. सं. 1595 मांय हुयो। कैई लोग उणां रो जलम वि. संवत 1515 बतावै। इण सारू कथणी है–

पनरासौ पनरोतरे, जनम्यां ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवौ उजास।

इण बाबत ओ ई दूहो चावो है–

पनरासौ पिच्चाणवै, जनम्यां ईसरदास।
चारण वरण चकार में, उण दिन हुवौ उजास।

ईसरदास जी 'हरिरस' रच्यौ–

लागूँ हूँ पहली लुळै, पीताम्बर गुरू पाय।
भेद महारस भागवत, प्रामूँ जाय पसाय।

ईसरदास जी भगत अर चमत्कारी महामानव हा। 'ईसरा सो परमेसरा' कैयर लोग उणां नै पूजता।

ईसरदास जी री रचनावा है–''हरिरस, छोटा हरिरस, बाल लीला, गुणभागवत हंस, गरूड पुराण, गुण आगम, निन्दास्तुति देवियाण, वैराट, रास कैलास, सभा पर्व अर हांला झांला रा कुंडळिया।''

ईसरदास जी री भगती रचनावां मांय भागवत, उपनिषद् आद संस्कृत ग्रंथ माय रचियोड़ा सिद्धान्तां रो बरणाव भी मिळै। ज्यूं –

तिलाँ तेल पोहप फुलेल, उज्झलत सायर।
अगनि काठ जोवन्न घट्ट। भगवट्ट सु कायर।
खगनीर धीर अंतर खरा, मद कुंजर वपुजिम मयण।

मन बसे तेम तू मोहरे सो मन बसियो महमहण।–

5.2.3 मीराँबाई :–

सगुण भगती धारा मांय भगत कवियत्री मीराँ बाई रो नांव राजस्थानी साहित्य मांय आदर सूं लियो जावै। मीराँबाई मेड़तै रा राठौड़ रावदूदा री चौथी संतान रत्नसिंह री बेटी हा।

इणा रौ जलम वि.सं. 1555 रै लगैटगै बाजोली नामक गांव में हुयौ। मीराँ री माताश्री रो देहान्त होयो जद बे बोत छोटी उमर मांय हा। रावदूदा इणा नै पाळ पोसर बड़ा करिया। मेवाड़ रा महाराणा संग्राम सिंह (प्रथम वि.सं. 1565–84) रै पाटवी कुंवर भोजराज रै सागै मीराँबाई रो ब्यांव हुयौ। ब्यांव रै दोय–तीन बरसां रै बाद भोजराज रौ निधन होयग्यौ। मीराँ रा पिता रत्नसिंह खानवा जुद्ध में खेत रैया। मीराँ रौ मन संसार सूं उचटग्यौ अर बे पूजा अर पाठ भजन कीरतन मांय आपरौ दुखी जीवण बितावण लागा। इण सूं मीराँ रो देवर राणा विक्रमाजीत (वि.सं. 1588–93) नाराज होंवतौ थको उणा नै विस दैयर मारण री योजना बणायीं, पण सगळा प्रयास असफल रैया। भगत कवयित्री मीराँ 'गीत गोविन्द री टीका, नरसी जी रौ माहेरो', 'सत्यभामा जी सूं रूसणा' आद काव्य रचनावां री जाणकारी मिळै, पण आं ग्रंथां री भासा अर कविता मिलती जुलती नीं लागै। किणी री संस्कृत भासा है तो किणीरी ब्रजभासा अर गुजराती मिळै। जद कै मीराँबाई री भासा राजस्थानी है जकी ब्रज अर गुजराती री सबदावली लियोडी मिळै। उणारी रचनावॉ री भासा सरल, सुभाविक, अर सरल पदावली लियोड़ी सीधी सादी है। मीराँबाई री भगती प्रेमा भगती ही। उण मांय आध्यात्मिक असर अर भगत हिरदै रो

गंभीर भाव मौजूद है। मीराँबाई। मीराँ रा पदा मांय भगती रस री प्रधानता है, दंपति भाव है। भगवान क्रिस्ण री भगती मांय लीन मीरांबाई रो दरद दरद देखणजोग है –

दरस बिन दूखण लागा नैण।
जद सूं आप बिछुड़या प्रभु मौरे, कबहुँन पायौ चैन।
सबद सुणत म्हारी छतियाँ कांपै, मीठ थारा बैन।
विरह कथा कासूं कहूं सजनी, बह गई करबत अेन।
कल न परत पल पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैण।
मीराँ रा प्रभु कबरे मिलोगा, दुख मेटण सुख देण।
इणी भांत 'मीराँ पदावली' मांय सूं लियोड़ा पद उणां री भासानै दरसावै।

फागण के दिन चाररे होली खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद री झणकार रे।
बिन सुर राग छत्तीसूं गावै, रोम रोम अंगसार रे।
सील संतोस री केसर घोली, प्रेम पीत पिचकार रे।
उडत गुलाल लाल भयो अंबर, बरसत रंग अपार रे।
घट के पट सब खोल दिये है, लोक लाज सब डाल रे।
होली खेल पीवघर आये, सोइ प्यारी री प्यार रे।
मीराँ के प्रभुगिरधर नागर, चरण कंवल बलिहार रे।

मीराँबाई महाराणा विक्रमादित्य रै अत्याचारां सूं चित्तोड छोड'र चाली अर आपरै बडे पिता राव वीरमदेव दूदावत रै सागै मेड़ता पूगी। तीरथ जातरा सारु पुष्कंर रौ मारग लियो। मीराँ बाई रै मेड़ता में परिवार मांय हुया जुद्धां रै कारण चारूं मेर रा दुखां सूं दुखी होवती थकी भगवान क्रिष्ण रै निजधाम वृन्दावन पूगी। वृन्दावन मीराँ नै घणो सुहावणो लाग्यौ, बठै री ब्रजभूमि घणी पवितर लागी। कवयित्री उण भोम रो गुणगान करती कैवै–

आली म्हानै लागे वृन्दावन नीको।

घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दरसण गोविन्द जीरो। ''मीराँबाई रो मन वृंन्दावन मांय केई दिन लाग्यो रैयो पण उण जागां मोकळा सम्प्रदायां रो ओछापण देखता थकां उणां रो मन उचाट होयग्यो अर वि. संवत 1596–1597 रै बिचाळै रावरणछोड रै धाम द्वारकापुरी जा पूगी। द्वारिका मांय मीराँ रौ अंतिम समय बीत्यौ अर उण जागां द्वारकाधीस री मूरत मांय लीन होयगी। मीराँबाई बाई रा पद आज ई आंखै भारत मांय राग–रागिनी सागै गाईजै। मीराँबाई सांची भगत कवयित्री हा अर उणरै पांण ई नारी समाज मांय उणा इत्तो मान सनमान है। मीराँबाई रै जीवण माथै डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, ड़ॉ मोतीलाल मेनारिया, डॉ शम्भु सिंह 'मनोहर', डॉ कल्याणसिंह शेखावत घणमोलो सोधखोज रो काम कर्‌यौ।

डॉ कल्याणसिंह शेखावत, मीराँवाणी, मांय मीराबाई रै जीवण चरित अर भगती री विसेसतावां सारू लिखै–''मूर्ति पूजा, सत्संग, अवतारवाद में आस्था, एक निष्ठा एवं अनन्य भक्तिभाव, कठिन साधना, शरणागत वत्सलता, स्तुति, वैराग्य, श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं का गुणगान संदेश प्रेषण, गुरू महिमा, रामकृष्ण अभेदाभाव, मीरांकी भक्ति साधना के प्रमुख आधार हैं।''

मीराँबाई रै पदां मांय नवधा भगती रौ सरूप साफ निजर आवै,। नवधा भगती रै नौ सौपानां रौ परिचे मीराँ रै पदां मांय दरसाइज्यो है। श्रवणः श्रवण, सुणत श्रीमद भागवनत रसना रटत हरी।

कीर्तन : माई री म्हैतो गोविन्द रा गुण गास्यां।

स्मरण : रसना तूं स्याम बिना मत बोल।

पाद सेवनः मन रे! परस हरि रा चरण।

अर्चन : छापा तिलक मनोहर बाना।

दास्यभाव: म्हानै चाकर राखो जी, स्याम म्हानै चाकर राखोजी।

सख्यभाव : मीराँ रै प्रभु कब री मिलौगे, पूरब जनम रो कोल।

वंदन: मीराँ रा प्रभु गिरधर नागर सुणज्यो म्हारी पीड़।

आत्म निवेदन: पीया मोही आरत तोरी।

इण भांत मीराँबाई खुद री भगती सूं राजस्थान मांय भगत सिरोमणी कहीज्या।

भगती काल री सगुण धारा मांय राम अर क्रिस्ण भगत घणा होया है। इणकाल मांय राम अर क्रिस्ण री उपासना चालती रैयी। क्रिस्ण भगती रा कवेसरां मांय चारण कविंया रौ अनूठौ योगदान रैयो। भगत कवयित्रियाँ मांय मीराँबाई अर गवरी बाई री रचनावां घणी महताऊ है।

5.2.4 गवरी बाई (1758–1808):–

इणा रो जलम डूंगरपुर मांय नागर ब्राहमण रै घरां होयो। छोटी आयु मांय ब्याव अर पति रौ सुरगवास होवणे सूं गवरीबाई रौ जीवण भगवद भगती मांय बीत्यो। महाराव शिवसिंह इणां नै मिंदर बणायर दियौ। गवरी बाई भगतीरो फुटकर रचनावा रची। गवरीबाई, ग्यान भगती अर वैराग री महिमा गावता रैया। इणा री रचनावां मांय राजस्थानी, गुजराती अर ब्रज भासावां री सबदावली परोटीजी है।

रचना री बानगी देखीजै :–

होली खेलत मदन गोपाल।
मोर मुकुट कर काछनी छाजे, चंचल नैण विसाल।
सब सखियन में मोहन सोहत, ज्यूं तारन बिच चांद उजाल।
चोबा चन्दन और कुमकुमा, उडत अबीर गुलाल।
ताल मृदंग झांझ डफ बाजे, गावन बसंत धमाल।
गवरी के प्रभु नटवर नागर, निरखी भई निहाल।।

गवरीबाई रा पद लगैटगै 610

लिखीज्योड़ा है। क्रिस्ण भगत कवयित्री रौ मान–सन्मान आखै राजस्थान मांय सोभित है।

इण तरिया सगुण भगतां मांय

भगतां री महिमा न्यारी अर निकेवली है।

5.2.5 अल्लू जी :–

इणां रो जलम वि. सं. 1620 रै लगैटगै होयो। राव मालदेव री विजय सूं संबंधित

इणारी भगती रचना रौ नमूनो देखणजोग है–

गोपनार चित हरण, प्रेम लच्छण समप्पण।
कुंज बिहारी क्रस्न, रास व्रिंदावन रच्चण।
गोवरधन ऊद्धरण, ग्राह मारण गज तारण।
जरासिंध सिसपाळ भिड़ै, भूव भार उतारण।
जमलोक दरस्सण पर हरण भौ, भंजण जांमण मरण।
औ मंत्र भलौ निसदिन 'अलू' सिमर नाथ असरण सरण।
कवि अलू दूहे करमाणद पात ईसर विद्या चौ पूर। कविते अलू दूहे करमाणंद,
छंदे मेहो झूलणे मालौ, सूर पदे गीते हरसूर।।

अल्लू जी री कविता री काव्य भासा डिंगळ है। इणां री कविता सर,

भगती पूरण अर ग्यान देवणवाळी है। अल्लू जी लिखे–

सोही बाण सुबांण, भजै हरिनांम निरन्तर।
साही पांण सुपाण, भरै बिण छंदै ऊदर।
सोही लाज सुलाज, त्रिया पर मेळप तज्जै।
सोही सूर सामंत, भिड़ै भारथ नह भज्जे।
दिल धरम सोही पाळै दया, न्याव सोही पखन करै।
हर चरण चित लागौ 'अलू', सोही सपूत कुळ उद्धरै।

कविवर अल्लू रचनावां भगती भावनावां रो बखाण सरस अर सरल ढंग सूं।

5.2.6 माधोदास दधगड़िया :–

माधौदास जी चारण 'दधवाड़िया साखा' रा चूंडाजी रा सपूत हा। इणा रौ जलम वि. सं. 1610 सूं 1615 रै बिचाळै होयो। कयो जावै है के उणारो गांव बळूंदां (जोधपुर) हो, पण प्रामाणिक जलम स्थान रो पतो कोनी लाग्यो। कई मुसलमान इणा री गांया नै चोरी कर लेग्या। अे उणा रो पीछो कर्‌यो अर जुद्ध मांय मार्‌या गया। लगैटगै वि.सं.1690 में आ घटित घटना बताईजावै। माधौदास जी नामी कवि अर हरि भगत हा। 'रामरासौ' अर दसम स्कंध हस्तलिखित प्रतियां मिळै। इण मांय सोळह सौ सूं ज्यादा छंद है। ओ डिंगल काव्य है। कवि माधोदास भगवान राम रा उपासक हा।

भरत या सब रघुनाथ बडाई।
बधि कपि बालि सग्रीव निवाजै, कै कंधा ठकुराई
मम बल ही अलप साखमिग्र, निकट सलित न कुदाई।
रामप्रताप स्यंध सौ जोजन उल्लंघत पलक न लाई।
बौह जल ही पाथर तळ बूडत, तिल प्रमाण कण राई।
लिखि श्री राम नाम गिर डारत, दधि सिर जात विराई।

5.2.7 प्रिथ्वीराज राठौड़ :–

राजस्थानी साहित्य मांय सगुण भगती धारा री क्रिस्ण भगती उपासना रा भगत कवि प्रिथ्वीराज राठौड़ जगचावा है। अै भगत कवि बीकानेर नरेस राव कल्याणमल रा बेटा अर राव जैतसी रा पोता हा। इणा रो जलम संवत् वि. सं. 1606 मांय हुयो। ख्यातनाम महाराजा रायसिंह जी रा बडा भाई हा। प्रिथ्वीराज राठौड़ तलवार अर कलम दोनूं रा धणी हा। बे वीर पुरूस अर क्रिस्ण भगत हा। प्रिथ्वीराज जी दोय ब्याव कर्‌या हा। पैलड़ी जोडायत रौ ''नांव लालां दे हौ जैसलमैर रा रावळ हरराज री बेटी ही। उणा रो देहान्त हुयां रै पछै उणा री भाण चंपादे सूं आप दूजो ब्याव रचायौ। प्रिथ्वीराज राठौड़ रो देहान्त वि. सं. 1657 मांय हुयो।

पृथ्वीराज राठौड़ राजस्थानी भासां रा अूंचे दरजै रा कवि हा। उणा री रचनावां में वेलि किसन रूकमणी री, 'दसम भागवत रा दूहा, गंगा लहरी, बसदेरावउत, अर दसरथरावउत' आद महताऊ है। 'वेलिक्रिसन रूकमणी री' सगळां सूं उत्तम रचना है जिणरा दोय संस्करण धाप्या अेक 'बंगाल री रायल एशियाटिक सोसायटी' कानी सूं अर दूजी 'हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग सूं' पैलड़े संस्करण रा सम्पादक डॉ. एल. पी. टैसीटोरी हा अर रा सम्पादक सूर्यशंकर पारीक अर ठाकुर रामसिंह दूजै संस्करण रा सम्पादक हा। 'वेलि' रो रचनाकाल वि. सं. 1637 दियोड़ो है। इण बाबत एक दूवौ प्रसिद्ध है–

वरसि अचळगुण अंग ससी संवति तवियो जसकरि स्त्री भरतार।
करि श्रवण दिन राति कंठकरि पामै स्त्रीफल भगति अपार।

वेलि डिंगळ सहित रै प्रसिद्व छंद ''बेलियोगीत मांय तीन सौ पांच पद्यां रौ अेकखंड काव्य है,

जिण मांय किस्ण रूकिमणी री ब्यांव कथा रौ बाखाण होयो है। कथा रौ प्रसंग कवि मुजब श्रीमद्‌भागवात रो दसवों स्कंध है–

वल्लि तसु बीज भागवत वायौ, महि थाणौ प्रिथुदास मुख।
मूळ ताल जड अरथ मण्डेहे, सुथिर करणि चढि छाँह सुख।
'वेलि क्रिसन रूकमणी रा काव्य भगती अर सिणगार सूं भर्‌यौ पूरो है।
इण मांय वैण सगाई अलंकार, उपमेय–उपमान अर भासा सैली
रो प्रयोग लाखीणौ लखावै, कवि खुद री लेखनी सूं वातावरण नै सजीव बणायौ है।
संग सखी सीळ कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदिमणी परि।
राजति राजकुँअरि राय आंगण, उडियण वीरज अम्ब हरि।

रूकमणि रौ ब्याव करना थका कवि लिखै–

रामा अवतार नाम ताई रुकि मणि, मानसरोवरि मेरूगिरि।
बालकति करि हंस चौ बाळक, कनकवेलि बिहुँ पान किरि।।

'वेलि' मांय प्रकृति रौ बखाव अमालो है। छ रितुवां रौ लेखो अर रात, परभात, गरमी बिरखा, बसंत आद रौसांगोपांग बरणन हुयौ है।

'दसम् भागवत रा दूहा' पोथी मांय 184 दूहा वसुदेवरावउत मांय 165 दूहा, गंगा लहरी मांय 80 दूहा रचैयौड़ा मिळै। क्रिस्ण रूकमणीरी वेलि में भगती रा 80 दूहा।

'वेलि' मांय सिणगार भगती अर वीर रस मौजूद है, पण इण रो आध्यात्मिक पख ही घणौ उजळौ है। जीवण रा बंधना सूं मुगत होवण रो मारग ही भगती होवे–इण सारु भगती रो गान भगत करै।

विद्वानां रो मनत है कै बेलि वेद पुराण है। ' बेलि' वेल है। इम कवि लिखैः–

रूकमणि गुण लखण रूप गुणरचवण, वेलि तांस कुण करै बखाण।
पांचमो वेद भाखियो पीथळ, पुणियों उगणीस मो पुरांण।
केवल भगत अथाह कलावत तैजु किसन त्री गुण तवियो।
चिहुँ पाचमो वेद चाळदियो नव दूणम गति नीगमियो।

इण भांत प्रिथ्वीराज राठौड नामी भगत कवि हा। उणारी भगती बेजोड़ है। उणारी पोथी 'बेलि' अदभुद काव्य है। आ रचना राजस्थानी भासा रा अलंकारां अर छंदां रा माणक–मोतियां सूं सज्जी–संवरी है।

5.2.8 सांया जी झूलाः–

भगत कवि सांयांजी झूला रौ जलम वि. सं. 1633 मांय 'झूला खांप' शाखा रा चारण अर ईडर रियासत रै लीलछा गांव रावासी स्वामीदास रै घरां होयो। अै स्वामीदास रा हा। इणा रो देहावसान वि. सं. 1703 मांय होयो। ईडर नरेस राव कल्याणमल इणांरा आश्रयदाता हा जिणा सांयाजी नै लाखपसाव अर कुबाबा नांव रौ गांव दिरायौ।

सायां जी झूला किसण भगवान अूंचे दरजै रा भगत हा। उणा री दोय पोथ्यां 'नागदमण' अर 'रूक्मिणी हरण जैड़ी घणमोली रचनाबां है। अ डिंगल काव्यभासा में रच्चोयोड़ी रचनावां है। कठैई कठैई गुजराती भासा रा सबद ई मिलै।

सांया जी झूला री 'नागदमण' भासा सैली अर काव्य कला री दीठ सूं गिणावण जोग पोथी है। 'नागदमण' मांय 'कालिया मर्दन' रौ कथा प्रसंग रच्योड़ो है। इण मांय 129 छंद है जिणामें 124 भुजंग प्रयास, चार दूहा अर अेक छप्पय मिळै। 'नागदमण' मांय यसोदा मय्या रो वात्सल्य, गोपिकावां रो प्रेम अर कालिया जुद्ध रौ चित्रमय बखाव हुयो है। रचना रा उदाहरण देखीजै–

जदूनाथ काळी समीबाथ जोड़े घणी भोमचाली चड़ी बात घोडे
उभा गाय गोपाल झूरंत आरै हाहाकार हक्कार संसार सारे।
सुणैबात आधात माता सनेही जसोदा ढळी कद्दळी खंभ जेही
संबाहे सखीलार हाली सयाणी रहाटी विचाले थकी नंदराणी

तबे नंदरी नारि आहीर टौळे खड़ै आपड़े हेका खलोळे।
जुवै जोषिता जुथ्थ भेळी जसूदा बपैयो हुई कानव्हौ मेघबुन्द
बिहुँ लोचनै नीर धारा बहंती कनैयो कनैयो जसोदा कहंती।
कलिंदा तणै आई लोटंत कांठे गयो जाणि चिन्तामणी रंग गांठे
इणी भांत रूकिमणी हरण मांय भगती री सगती रौ परिचै
मिलै ठैठ भाषा मांय भगती री मिठास रळियावणी भाषा रौ
सरूप बखाणै।

सायांजी झूला रा रच्योड़ा छंद उल्लेख जोग–

प्रगट्या क्रिसन वासुदेव जादवपता, श्री हुई रूकमण रावभीमकसुता।
विमल पिता मात कुळ छात जणावियो लाइ भरतार अवतार रूखमण लियो।
झळाझळ राजहंस राजकुँवरी भली एह छै रूखमणी रूप जुग ऊपली।
मात पित पूत परवार बैठा मतौ सोजियावाद विवाद कारण सुनौ।
भाखियौ भीम मुख जोय चवदै भवनां कुँवर वर–मूझ–एक सूझै क्रिस्ण
सांया जी झूला, नागदमण मांय गोवंश ब्राहमण अर नारियों–री
सुरक्षा राखण सारु हिरदैगत भावनां सू ओतप्रोत होयर ग्रंथ रच्यो।
इण तरियां सगुण भगती शाखा रा क्रिस्ण भगत कवि सांयां जी झूला।
रौ नांव घणैमान उजासै।

5.3 निरगुण भगती धारा–

निरगुण भगती धारा रा कवेसर, निरगुण अर निराकार ब्रह्म री उपासना करण वाळा हा। शंकराचार्य रौ अद्वैत वाद या 'एकेश्वर वाद' नै मानणवाला भगत कवि भी मूरत पूजा या देवळ अर मिन्दरा मांय आस्था अर विस्वास कोनी राखता। ब्रह्म री सत्ता सगळा जगत में मानीजै। सगलां निर्गुण कवि किणी न किणी सम्प्रदाय सूं जुड़्योड़ा हा। अै करम कांड रौ विरोध करता। पांखड रो विखण्ड न करता, अंधविस्वास, कुरीतियां अर धरम री जड़ता माथै तीखा व्यंग्य करता। निराकार ब्रह्म रा उपासक अे संत प्रेमनाम सबद सदगुरू आद री महिमा रौ गुणगान करता रैया। राजस्थानी साहित्य वास्तै आं संता रो योगदान अमोलो है। काव्य रचना सारु भी इणा रौ ध्यान घणो कोनी होवतो। कवि पैला भगत् अर पाछै उपदेसक रैया। निरगुण सम्प्रदाय रा कवेसर धरम सिद्धान्ता रै प्रचार'प्रसार सारु लगोलग लाग्योड़ा रिया। उणा रा चेला भी प्रचार प्रसार मांय लागता थका समाज मांय नुई क्रांति अर लोक जागरण रौ प्रभावी सनेस दियो। सांच बोलणो, सुद्ध आचरण अर ब्योहार राखण सारू जन मानस नै प्रेरणा दीवी। इणा री विचारधारा अर कबीरदास री विचारधारा मांय घणौ आंतरौ कोनी हो।

5.3.1 दादूजी :–

संत दादू रौ जलम वि. सं. 1601 मांय होयो। उणां रै बारै मांय विद्वानां मांय मतभेद है। कैई इणा नै ब्राहमण, कई मोची, अर कैई धुनिया बतावे। जलम स्थळ रो कठेई कोअी ठीक ठाक पतो कोनी लाग्यो। केई बतावै कै अेहमदाबाद रै लोदी नामक ब्राहमण नै साबरमती नदीमांय बैवती संदूक मांय दादू मिळया। इणी तरै गुरू रौ नाम भी अग्यात। दादूजी जन गोपाल 'दादू जलम लीला परची' मांय लिख्यो है कै अेक दिन भगवान खुद प्रगट हुयनै इणा नै दरसण अर उपदेस दियो। दादूजी वैरागी संत रै रूप मांय साधु संता नै सत्संग मांय दिखिया।

दादू जी वैरागी संत रै रूप में साधु सेवा अर सत्संग मांय आजन्म लाग्या रैया। अहमदाबाद सूं दादू जी उगणीस बरस री औस्था मांय राजस्थान आया। इणा सीकर, आमेर, कल्याणपुर, नरैणा आद स्थलां माथै धरम रो प्रचार करियौ। दादू जी ब्याव कर्यो अर आपरै अेक बेटो अर दो बेटिया होया। दादू रौ गोलोकवास वि. सं. 1660 मांय नरैणा में होयो। उणा रा बडा बेंटा गरीबदास जी उणा री गद्दी माथै विराज्या। दादू री वाणी प्रसिद्व है। इण मायं प्रेम गुरू भगती, संत्सग, माया, जीव, ब्रहळ, आद तत्व अर ग्यान संबधी विसयां माथै निजू विचार राखीज्या है। दादूवाणी री भा सा सीधी सादी सरल है अर जीव, जगत अर ब्रह्मग्यान सू भरी पूरी है। दादू जी

लिखै है–

घीव दूध में रमि रहयां, व्यापक सब ही ठौर।
दादू बकता बहुत है मथि काढे ते और।।
दादू दीया है भला। दिया करो सब कोय।
घर में धरा न पाईये जो कर दिया न होया–
कहि कहि मेरी जीभ रहि, सुणि सुणि तेरे कान।
सतगरू बपरा क्या करै, चेला मूढ अजान।।
दादू देख दयाल कौ, सकल रहा भरपूर।
रोम रोम में रमि रह्यो, तू जिनि जाने दूर।
जिहि घर निंदा साधुकी सो घर गये समूल।
तिनकी नींव न पाईये नाँव न हाँव न धूल।

दादू जी सरल चित्त बिरती वाळा संत कवि हा। बे निरगुण, निराकार ब्रह्म री उपासना मांय सदीव लीन रहै। उणां रा पद अमोलक है ।

भाई रे ऐसा पंथ हमारा।
द्वै पख रहित पंथ गह पूरा आवरण एक ऊधारा।
वाद विवाद काहू सूं नाही मैं हूँ जग थें न्यारा।
समद श्टि भाई सहज में आपहि आप विचारा।
मैं पै मेरी यह मति नाही, निरवैरी निरविकार।
काम कल्पना कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा।

दादू जी रै पंथ मांय चार तरै रा साधु हा खाकी, विरक्त, थांभाधारी अर नागा। बखनाजी–इणां रौ जलम जैपर राज्य रै नराणा गांव मांय वि. सं. 1600 सूं 1610 रै विचाळै होयो। इणा री जात सारू विद्वानां अेक मत कोनी। कोई इणानै हिन्दू अर कोई मुसलमान बतावै। बखनाजी री मिरतू रै बाबत ई प्रमणिक जाणकारी कोनी। अंदाजै सूं बतायौ जावै कै अै वि. सं. 1680 या 1687 सूं पैलां ब्रहम लीन होया।

बखनाजी री वाणी छपगी है। उण मांय पद मिळै 167 पद गाया जावण जोग है। जिणमें

अै गायन विद्या मांय प्रवीण हा।
इणारी भासा सादी सरल अर आम जनता री भाषा है।
बखना हरि जळ बरसिया जलथळ भरै अनेक
करम कठौरां माणसाँ, रोम न भीगो एक।
पाणी में पथर रह्यौ उपरि बंध्या सिवाल।
बखना ढाँच्या नीकळी मॉहि अगन की झाळ।
पय पाणी भेळा पिवै, नहीं ज्ञान को अंस।
तजि पाणी पय नै पीवै बखना साधू हंस।

5.3.2 रज्जब जीः–

निरगुण साखा मांय रज्जब जी नामी संत कवि हुया। उणा रौ जलम जैपर राज्य रै सांगानेर में वि.सं. 1624 रै लगैटगै होयो। आय जात सुं पठान हा अर पूरौ नांव रज्जब अली खाँ हौ। 20 बरस री उमर मांय आप ब्याव सारू सांगानेर सूं आमेर गया हा। उण जागां दादूदयाल जी सूं मिलणो होयो। अै ब्याव रौ विचार छोडर उणारा चेला होयग्या। आप दादू जी रै सागै सत्संग मांय रैंवता। इणारी दादू जी सारू घणी सरधा ही। दादूजी री मिरतू पांछै उणां ई देह त्याग दी। इणां रौ देहावसान वि. सं. 1746 मांय सागांनेर में होयौ। रज्जब जी घणां पढिया लिखिया कोनी हा पण सूं इणां 'वाणी' अर 'सर्वंगी' नांव रा दोय मोटा ग्रंथ रच्या जिणा री भासा पींगल है जकी डिंगळ रो सबदावळी लिरायोडी है।

साखी–दादू दरिया रामजल सकल संत जन मीन।
सुख सागर में सब सुखी जन रज्जब लोलीन।
सत गुरू चुम्बक रूप है, सिस्य सुई संसार।
अचल चलैं उनकै मिलै यामें फैर न फार।

5.3.3 सुन्दरदास :–

सुन्दरदास दादू दयाल रा सिस्य हा। उणा रौ जलम सन 1595 में मांय होयौ। छः बरस री आयु मांय दादू जी रा चेला बण्या। अै बाल ब्रह्मचारी हा। बे सिणगार रस री कवितावां नै जै'र समान मानता। कैसव री 'रसिकप्रिया' नै बै आछी नीं समंझता।

रसिक प्रिया रसमंजरी और सिंगारहि जानि।
चतुराई करि बहुविधि, विषै बनाई आनि।

सुन्दरदास घूमता फिरता रैवता। बे सगळे उत्तरभारत, मध्यप्रदेस, मालवा अर गुजरात ताईं फिरता–घिरता रैया। कदैई फतेहपुर, कदेई मोरां, कदेई कुरआन अर आमेर आवता–जावता। आखिरी दिनां मांय में सागानेर रैया जठै 1689 मांय सुरगवास होयौ। इणां री भासा पर पिगळ रो प्रभाव है।

5.3.4 जनगोपाल :–

अै फतेहपुर सीकरी रा रैवणवाळा वस्य हा। सीकरी मांय दादू दयाल जी सूं गुरु मंतर लियौ। इणांरौ रचनाकाल वि. सं. 1650 रै लगैटगै है। इणां रा प्रमुख ग्रंथ है–'दादू जनम लीला परची, ध्रुव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, भरत चरित्र, मोहविवेक, चौबीस गुरुबां की लीला, सुक संवाद, अनन्त लीला, बारह जखड़ी काया–प्राण संवाद, भेंट के सवैये, कवित, साखी पद आद।

तोसो मैं स्वामी ह्वै आये, द्वारे सेवग तिन सुख पाये।
अरू जब बीते समये दोई ढुढाहार की विनती होई।
स्वामि गए सबनि सुख पाये, रमते नग्र नराणे आये।
वषनौ होरी गावत दैख्यो, गुरू दादू अपनौ करि पै यो।

जगजीवन दादू जी रा प्रधान चेला हा। इणा रौ रचनाकाल वि. सं. 1650 रै लगैटगै है। जगजीवन जी संत अर 'शास्त्र' ग्याता हा। 'वाणी' इणां रौ प्रमुख ग्रंथ हैं। अे पैलां 'वैष्णव' हा अर पाछै दादू पंथी हुया। इणारी भासा सीधी सादी अर सरस है। उदाहरण देखाजै–

खीर नीर निरने करै पर उपगारी संत।
कहि जग जीवन साखि धर पार ब्रह्मम को अैन।
यह संब संपति जायेगी विपत्ति पड़ेगी आय।
जग जीवन सोई भली जै कोइ खरचै खाय।

इणी तरिया निरगुण पंथ मांय दादू दयाल रा सिस्यां में दामोदरदास, भीखजन, संतदास, खेमदास, राघवदास, वांजिदजी, मंगळराय हुया जका ग्यान, दरसन अर वाणी रै पाण निरगुण निराकार ब्रह्मम रा गुणगान गाया अर समाज मांय बदळाव सारू काम करियौ। राजस्थानी साहित्य मांय निरगुण निराकार भगवान री परिकल्पना सारू गुरुपद रौ महताऊ रूप, आडम्बरां अर मिथ्याचार रौ विरोध, सील, संतोस, दया, त्याग, वैराग्य रौ पालन करणौ, काम, क्रोध, लोभ, मोह अर अभिमान रौ त्याग करणौ आद प्रमुख राखीज्या है। इण बाबत मोकळा पंथ सम्प्रदायां री थापणा हुयी। संतजन राजस्थानी समाज मांय पसरयोड़े अंधकार नै मिटावण सारु ग्यान री जोत जगायी अर आचरण सुदी माथै घणौ जोर दियौ।

नांव निरंजन नीर है सब सुकुत बनराय।
जन रज्जव फूलै फलै सुमिरन सलिल सहाय।।

भली कहत मानत बुरी, यहै प्रक ति है नीच।
रज्जव कोठी गारकी ज्यूं धोवै ज्यूं कीच।
रज्जव कोल्हू काल कै सब तन कतिली समानि।
सो उबरै कहि कौन विधि जो आया विचि धानि।
रज्जबल जी री वाणी रा पद भगती अर प्रेम सू ओत प्रोत है।

5.3.5 गरीबदास :–

अै दादूदयाल रा बेटा हा अर गद्दी रा उत्त्राधिकारी हुया। इणां रौ जलम वि.सं. 1632 मांय होयौ। गरीबदास संगीत विद्या रा प्रेमीअर आछा पंडित हा। इणां साखी, पद, अनभै प्रबोध अर अध्यात्म बोध आद ग्रंथ रच्या। इणा रौ पद हैं–

नाद व्यंद ले उरघै धरै।
सहज जोग हठ निग्रह नांही पवन फेरि घट मांहै भरै।
त्रिकुटी ध्यान संधि नहि चूके भौंर गुफा क्यूं भूलै।
द्वै सर संधि अनूप अराधै सुख सागर में झूलै।
इंगला प्यूंगला सु ामन नारी तिरवेणी संग लावै।
नौसे नवासी फेरि अपूठा दसवै द्वार समावै।
अरधे उरधे ताली लखेचन्द, सूरसम कीन्हा।
अ टकमल दल माहे बिगसे ज्योति सरूपी चीन्हा
रोम रोम धुनि उठी सहज में परधै प्राण सुपीवै।
गरीब दास गुरुमुखि बूझी। जो जाणै सो जीवै।

5.3.6 जगननाथ :–

आप जातिसूं कायस्थ हा। वि. सं. 1640 रै लगैटगै आमेर में जलम हुयौ। आप दादू जी रा चेला हा। आप प्रतिभावान अर जोगा कवि हा। 'वाणी' अर 'गुणगजनामा' इणांरा ग्रंथ है। इणी भांत 'गीता सार' अर 'योग वशिष्ठ सार' ई इणा री रच्योड़ी रचनावां है–

मणिया सहज इक्कीस लै भाटसता माला पोइ।
जगन्नाथ मन सुरति सौ रात दिवस भजि सोई।।
मन की मेरी कलपना नव निश्चल जगन्नाथ।
सुमिरन सो स्वांस रहै चंचल मन तहँहाथ।।

5.3.7 संतदास –

संतदास दादू दयाल रा सिस्य हा। इणां रै जलम समै री प्रामाणिक जाणकारी नीं मिळै पण इणां जीवत समाधि वि. सं. 1696 मांय लीवी ही। दादू रै 52 प्रधान चेलां मांय इणा रौ नांव गिणावणा जोग है। इणा 'वाणी' रची जिणरी छंद संख्या बारह हजार मिळै। अै छंद ''बारा हजारी'' रै रूप में जग चावा है।

'वाणी' री बानगी रैण छमाही हो रही, आया नाँही पीव।
संत सनेही कारणे तलफै मेरा जीव।।
बिरहणी बिछड़ी पीव सौ ढूंढत फिरै उदास।
संतदास इक पीव बिन निहचल नांही बास।।

5.3.8 भीखजनः–

संतदास जी रा चेला भीखजन फतेहपुर निवासी ब्राहमण हा।

इणा रो रचनाकाल वि. सं. 1683 है। 'भीख बावनी' आपरी चावी रचना है। इण मांय 53 छप्पय है। आप नीति विसयक अमोलक रचनावां रची।

राजस्थानी साहित्य री निरगुण अर निराकार भगती धारा संता री वाणी आखै भारत में फैली। देस रा नामी संता मांय रामांनद, नामदेव, ज्ञान देव, एकनाथ तुकाराम, गुरू नानक, गुरू रामदास आद साची समाज सेवा कर सच्चे ग्यान रो उपदेस अर ईसर उपासना लोक भासावां में करी।

निरगुण धारा मांय ''जातिन पूछौ साधु की पूछ लीजिए ज्ञान'' री सार्थकता सिद्व होवै। उणां रा दारसनिक विचार ब्रह्म री व्यापक सत्ता रौ बखाण करै अर दरसावै कै परमेसर परब्रहम, स्वंय भू, निराकार, परम प्रकास रूप, माया सूं परे, क्रिया रहित थिर अर सदा अेक रस है। निराकार होवणैसूं उणां रै देह कोनी दीखै। ईस सगतीमान अर सगळी दीठ सूं सिमरथ है। जीव वास्तव में ईसर (ब्रहम) रौ ई रूप होवै पण माया रै आवरण सूं ढक्यौड़ै होवण रै कारण बो मूळ नै नीं पिछाण सकै। माया रौ पड़दौ हटतां ई आतमा परमात्मा रो मिलण होय जावै।

दादू लिखियौ :–

पाका मन डोले नहीं, निहचल रहे समाई।
काचा मन दस दिसिफिरै, चंचळ चहुँ दिसिजाई।।

निरगुण भगती रा भगत परमात्मा नै घट घट मांय विराजता बतावै । संत करम अर सत् वंचना रै सागै सागै करम खेतर मांय काम काज करतौ रैवै उण रौ मोख (मोक्ष) अपणै आप होय जावै।

5.4 इकाई रो सार

निरगुण अर सगुण दोनूं ई परब्रह्म परमात्मा रौ सरूप हौवै। भगती रौ मारग साधकां सारु न्यारौ निर वाळौ नीं है।

राजस्थान री धरती संतां रै नांव सूं औळखीजै। भगती सहित्य री बरजण सूं सदाचरण, सद वैवार अर हिरदै री सुद्धता रौ ग्यान मानवी समाज मांय घणौ फैल्यौ। धन अर माया दोनूं ई भगती सामी निरर्थक लागै। संता सारू सद्गुरू ई सरबस है।

5.5 अभ्यास रा प्रस्न

1. 'सगुण भगती' किणनै कैवै ? उदाहरणां सूं समझावो।
2. निरगुण भगती रां साधना रो विधान समझावो।
3. नीचै लिख्या पर टिप्पण लिखो–
   (क) अल्लूजी कविया
   (ख) माधोदास दधबाड़िया
   (ग) पृथ्वीराज राठौड़
   (घ) सांयाजी झूला
4. दादू पंथ काईं है – सवझावो।

5.6 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्तिकाल।
2. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में रामकथा।
3. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
4. डॉ. जितेन्द्रनाथ पाठक – भक्ति और रीतिकालीन मुक्तक काव्य।

इकाई – 6

भगती धारावां : प्रमुख रचनाकार अर रचनावां

इकाई रो मंडाण

6.0 उद्देस्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 उपयोगिता

6.3 आवस्यकता

6.4 निरगुण धारा (क) ज्ञान मारगी (ख) प्रेम मारगी

6.4.1 (क) ज्ञान मार्ग (रचनाकार अर रचनावां)

(i) जांभोजी (ii) हरिदास (iii) जसनाथ (iv) लालदास (v) बखनाजी (vi) दादू दयाल (vii) रज्जब (viii) गरीबदास (ix) दरियाव जी (x) जगन्नाथदास (xi) सुन्दरदास (xii) दयाबाई (xiii) चरणदास (xiv) रामचरण (xv) सहजो बाई (xvi) दयाल दास

6.4.2 (ख) प्रेम मारगी

(i) हंसावली (ii) लखम सेन पद्मावती

6.5 सगुण धारा : (अ) राम भगती धारा (ब) क्रिसन भगती धारा

6.5.1 (अ) राम भगती धारा

(i) मेहोजी गोदारा (ii) माधोदास दधवाड़िया (iii) सुरजनदास पूनियां (iv) सरवण भूकर (v) मुंहता रुघनाथ (vi) नरहरिदास बारहठ (vii) कविया करणीदान (viii) जैन राम काव्य

6.5.2 (ब) क्रिसन भगती धारा

(i) मीराँ बाई (ii) प्रिथीराज राठौड़

6.6 इकाई रो सार

6.7 अभ्यास सारू प्रस्न

6.8 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

6.0 उद्देस्य

कैई सईका बाद आज भी भगती साहित्य घणो प्रेरणादायी अर उपयोगी है। दुःखी अर भटकेड़ै मिनख नै राह दिखावण री उणमें अपार खिमता है। अैड़ै अणमोल साहित्य रा रचनाकार कुण हा ? उणारी जिन्दगी री थोड़ी सी झलक अर बांजकी रचनावां रची, उणरी में जाणकारी करावणो इण इकाई रो उद्देस्य है। काव्य रचना अर रचनाकार में आम तौर पर बिम्ब–प्रतिबिम्ब अर भाव हुवै। हालांकि रचनाकार निजु राग–द्वैस सूं ऊपर उठ'र रचना करै पण उण रै जीवन री झलक रचेड़ै आखरां में लांध ई जावै। पिच्छम में तो आलोचनां रो ओ नुवों तरीको अपणाइज्यौ है कै रचना रै माध्यम सूं रचनाकार तक पूगणो। ओ ठीक भी है क्यूं कै रचनाकार रो सबसूं बड़ो सबूत तो उण री रचना ई हुवै।

6.1 प्रस्तावना

आपणै देस में भगती आन्दोलन री जड़ां घणी गैंरी है। ईसा सूं दो सइकां पैली दिखणादै भारत में श्री क्रिसन री उपासनां रै अैनाण–सैनाण मिलै। इण दिसा में जद खोज हुई तो बेरो पड़्यो कै ईं बात में भी आंसिक सच्चाई है कै भगती रो जलम दक्खणी भारत में हुयौ अर बठै सूं रामानन्द रै साथै उत्तरी भारत में उण रो

प्रचार–प्रसार हुयौ। आपणो मरुधर प्रदेस बियां तो जुद्धां अर तलवारां री झणकार रो प्रदेस है पण ओ जाण'र आप नै अचुम्भो हुवैलो कै भगती माळा रा अणगिण मूं'गा मोती इण प्रदेस में हुया है। हालांकि अठै ज्ञान मार्गी संत ज्यादा हुया है पण सरुआती सूफी सैली (रामचन्द्र शुक्ल रै मुजब) रो ग्रंथ 'हंसावली' राजस्थानी भासा में ई रचीज्यो। राजस्थानी भासा में राम री जिन्दगी अर कथा सूं जुड़ैड़ा ग्रंथ (रामायण आद) भी अठै लिख्या गया। श्री क्रिसन में अटूट आस्था राखणवाळी भगत सिरोमणि मीराँबाई इणी प्रदेस में जलम लियो। इण इकाई में राजस्थान अर राजस्थानी भासा रै प्रमुख रचनाकारां अर उणांरी रचनावां सूं आप रूबरू हुवौला अर बां बाबत जाण सकोला।

6.2 उपयोगिता

भगती आन्दोलन किणी अेक प्रदेस री सींव तक सीमित या बंधेड़ो कोनी हो। ओ आन्दोलन देसी भासावां रै माध्यम सूं जगचावो हुवौ अखिल भारतीय आन्दोलन है। उण बखत देस में ना तो आज जिस्या संचार रा साधन हा अर ना ही इतरों जबरदस्त 'मीडिया' हो इण रै बावजूद इण काल रै संतां या भगतां री वाणी में गजब री अेक रुपता है। जका लोग कैवै कै रास्ट्रीय अेकता रो प्रसार अंग्रेजां रै आयां पछै हुयौ। बां लोगां नै भगती आन्दोलन री रचनावां री पूरी जाणकारी करणी चायजै। आं रचनावां रो सामूहिक सुर अेक सरिखो है। आज तांई आप हिन्दी साहित्य में भगती काल बाबत भणता रैया पण राजस्थान अर राजस्थानी भासा रा रचनाकारां भी भासा, भाव, विचार आद पखां नै देखतां किणी दूजी भासा रै रचनाकारां सूं अे लारै कोनी। अठै कैई अैड़ा महान संत हुया है जकां आपरा पंथ भी चलाया जका पंथ आज भी चालै। बां री वाणी आज भी जण–जण में चेतना जगावै। जुगां–जुगां सूं भटकेड़ै मिनखां नै संतां री वाणी राह दिखांवता रई है अर आगै भी दिखांवता रैवैला।

6.3 आवस्यकता

आपणो देस भारत अलग–अलग भासावां अर धरमां रो देस है। हरैक भासा बोलण वाळां री आप री अेक अलग पिछाण है। इण अनेकता में ई बै अेकता रा सूत्र भी है जका इण देस नै जोड़ै अर अखण्ड बणावै। भगती आन्दोलन आखै भारत रो आन्दोलन हो जको अेक लम्बै अरसै तांई असम सूं गुजरात अर कास्मीर सूं कन्या कुमारी तक जण–जण नै भगती रै रस सूं सराबोर करतो रैयो। ओ अलग–अलग भासावां रो आन्दोलन होंतां थकां भी इण में विचारां अर भावां री कमाल री अेकता है। नामदेव, तुकाराम आद महारास्ट्र रा संत हा पण उतरादै भारत में भी वांरो बो ही आदर है। मीराँबाई, सूरदास, तुळसी अलग–अलग भासावां रा कवि है पण आखै देस रा लोग आं रो मान करे। ओ अपणायत रो भाव रास्ट्रीयता नै मजबूत करै ई करै, धरम अर मजहब री संकळाई सूं मिनख नै ऊँचो उठाय'र भावात्मक अेकता में भी पिरोवै। जद ई तो रहीम, रसखान सारिखै मुसलमान कवियां पर कोई कवि सौ–सौ हिन्दू न्यौछावर करण री बात लिखै। इणीज कारण राजस्थानी भगती आन्दोलन कवियाँ अर उणां री रचनावां बाबत जाणकारी जरूरी है।

6.4 निरगुण धारा

परमात्मा री आराधना रा दो रूप है – ज्ञान अर भगती! ज्ञान जद अनुभूति बण जावै जद ई सार्थक व्है। अनुभूति बिना ज्ञान कोरै सबदां रो जाळ रै जावै। शंकराचार्य रो कैणो है कै ज्ञान जद तक अनुभव में नीं बदळै, उण रो कीं सार कोनी। निरगुण भगती रा दो रूप है – (क) ज्ञान मार्ग (ख) प्रेम मार्ग

6.4.1 (क) ज्ञान मारगी :

ज्ञान मार्गी संत कवि परमात्मा रै निराकार रूप री आराधना पर जोर देवै। गुरु रै बतायौ मारग में 'नाम' रो सिमरण कर साधक आगै बंधै। ज्ञान मार्ग री संत परम्परा रा प्रमुख संत अर उणा रो काव्य इण भांत है –

6.4.1.1 जाम्भोजी :– जंभेस्वर या जंभनाथ रो जलम विक्रम संवत् 1508 में भादवै बदी आठम (क्रिसन जन्माष्टमी) नै नागौर रै गाँव पीपासर रै पंवार राजपूत रै घर में हुयौ। जाम्भोजी आप रै माँ–बाप री इकलौती संतान हा। अै बाळपणै में सोचता ही रैंवता, बोलता कीं कोनी। इण कारण लोग इणां नै गूंगा समझता पण सोच–समझ'र जद अे समझावंता तो लोग अचम्भो कर्‌या करता।

माँ–बाप रै मर्‌यां पछै जांभोजी आप री सारी जायदाद दान करदी। बाळपणै में गायां चरावंती वेळा अै साधना कर्‌या करता। बे नोखा रै अेक गाँव समराथळ कनै तपस्या करण लागग्या। बे पूरी जिन्दगी ब्रह्मचारी रैया। जांभोजी लोगां नै चोखी सीख देंवता। जीवां नै नीं सतावणा अर दरखतां नै नीं काटणा अे भी उणारै आचरण नियमां में हा। इण भांत जांभो जी उणतीस नियम बणाया आं नियमां नै मानण, वाळा बीस+नोई अर्थात् बिश्नोई कहीज्या।

जांभोजी री वाणी 'जंभ वाणी' रै नांव सूं चावी हुई, जिण में परयावरण संरक्षण अर समाज सुधार री बातां साथै मिनख नै नसै सूं दूर रैवण री सीख दी गई। जांभोजी परयावरण बचावण तांई बां मिनख री ल्हास नै बाळणै री जागां दफणावण री सीख दीवी अर मूरत पूजा नीं कर निरगुण ब्रह्म नै मानणै पर जोर दियो। जांभो जी जठै तपस्या करता बो समराथ धोरो आज बां रै अनुयायियां रो तीरथ धाम है। मिंगसर बदी नम संवत 1591 में जाम्भोजी समाधी लेली। वा री समाधी पर आज भी मेळो भरीजै। मुकाम गांव बिश्नोई संतां रो मोटो धाम है।

6.4.1.2 हरिदास :– राजस्थान रा संत सम्प्रदायां में निरंजनी सम्प्रदाय घणो महताऊ है। इण रा प्रवर्तक हरिदास जी हा। इणा रै जलम अर काल रै सम्बन्ध में विद्वान अेक मत कोनी पण कीं प्रमाणां रै आधार पर कैयो जावै कै डीडवाणै रै नेड़ै अेक छोटै सै गॉव कापड़ोद में आं रो जलम हुयो। इणा रो जलम वि. संवत 1512 मान्यौ जावै। जलम सूं अै क्षत्रीय हा, नांव हो हरी सिंह अर काम हो लूट मार करणो। अेकर अै किणी संत रै सम्पर्क में आया अर इणा री जिन्दगी में बदळाव आग्यौ। वि. संवत 1556 में इणा नै औ ज्ञान हुयौ। इणरै पछै आप निरंजनी पंथ री थापना करी जको निरगुण–निराकार परमात्मा नै मानै। मूल रूप सूं ओ पंथ कबीर पंथ रै नेड़ै दीखै। डीडवाणै कनै गाढ़ा नांव री जागां इण पथ री प्रमुख पीठ है। वि. संवत 1595 में हरिदास जी ब्रह्मलीन हुआ। 'मंत्र राज प्रकाश' निरंजनी पंथ रो धरम ग्रन्थ है।

ग्रंथ रचना :– हरिदास जी रै ग्रंथां री सूची इण भांत है –

(i) भक्त विरदावली (ii) भरथरी संवाद (iii) नाम माला ग्रंथ (iv) ब्यावहलो (v) पद (vi) साखी (vii) नाम निरुपण (viii) जोग ग्रंथ (ix) टोडरमल जोग ग्रंथ आद।

हरिदास जी री वाणी रो अेक उदाहरण देखीजै –

भूखे दुख संकट सहै, सहै विडाणा भार।
हरिदास मौनी बळद, कासूं करै पुकार।।
घर आई निरभै भई, डाव पड़िया सूं होय।
हरिदास ता सार कूं, पासा लगै न कोय।।
लोहा जल सूं धोइए, तब लग कांटी खाय।
हरिदास पारस मिल्यां, मूंघे मोल बिकाय।।

6.4.1.3 जसनाथ :– जसनाथी सम्प्रदाय रा प्रवर्तक जसनाथ जी जांभोजी रा समकालीन हा। इणा रो जलम वि. संवत 1539 में काती सुदी इग्यारस नै बीकानेर कनै कतरिया सर गाँव में हुयो। हमीर जी जाट अर उणां री जोड़ायत आपनै बेटै री भांत पाळ्या। दस बरसां री उम्र में आं रो ब्याव कर दियो पण अे घर छोड वैरागी बणग्या। लोग कैवै इणां नै गोरखनाथ दीक्षा दी। अै चमत्कारी संत हा। दिल्ली रो सुलतान सिकन्दर लोदी भी इणा सूं प्रभावित हो। 24 बरसां री ऊमर में आप कतरियासर गाँव में जींवत समाधी ले ली।

6.4.1.4 लालदास :– लालदास, दादूजी रा समकालीन हा। इणा रो जलम सावण बदी पंचमी नै संवत 1597 में मेवात रै छोटै से गाँव धोळी दूब में हुयो। अे जात रा मेव (मुसलमान) हा। लालदास लकड़ियाँ बेच'र गुजारो करता। बालपणै सूं ई भगवान रा प्रेमी हा अर कम बोलता। तिजारा (अलवर) रै अेक मुलमान फकीर गदन चिस्ती सूं बां दीक्षा ली। दीक्षा लियां पछै अलवर कनै गाँव बाघोली में अेक पहाड़ री टेकरी पर झूंपड़ी बणा'र रैवण लागग्या। पछै अै नगला आग्या जठै चाळीस बरसां तक रैया। अैं गिरहस्त हा अर 108 बरसां री लाम्बी ऊमर लेय'र संवत 1705 में ब्रह्मलीन हुया।

लालदास संप्रदाय में मिनख रै सद आचरण पर ज्यादा जोर दियो जावै। ऊँच, नीच, जात पांत आद

भेदभाव रा अे विरोधी हा। आपरी वाणी में पाखण्ड रो खण्डन कर्‌यो गयो अर सामाजिक बुराइयाँ नै दूर करणै की कोसीस करीजी। 'लालदास की वाणी' अर 'लालदास की चेतावनी' इणा री प्रमुख रचनावां है।

6.4.1.5 बखना जी :– जैपुर रै नराणा गांव में वि. संवत 1600 अर 1610 रै बिचाळै बखना जी रो जलम हुयो। अे हिन्दू हा या मुसलमान ओ भी विद्वानां में विवाद रो विलय है और तो ओर इणां री मौत रो भी कोई प्रमाण कोनी वि. संवत 1680–87 रै बिचाळै अे ब्रह्मलीन हुआ। बखना जी संगीत रा गैहरा जाणकार हा। इणा रा 167 दूहा अर पद मिलै। भासा री दीठ सूं इणा री वाणी सरल अर सहज है। बानगी देखीजै –

बखना हरिजन बरखिया, जलथल भरै अनेक।
करम कठोरां माणसां, रोम न भीगा अेक।।
पाणी में पत्थर रह्यो, ऊपर बंध्या सिवाळ।
बखना ढाच्यां नीकळी, मां ही अगन की झाळ।।
अपणी माया पार की, पलक अेक में होई।
अगन दहै तसकर भुसै, देखत विनसै कोई।।
पय पाणी भेळा पिवै, नहिं ज्ञान को अंस।
तज पाणी पय नै पिवै, बखना साधु हंस।।

6.4.1.6 दादूदयाल :– दादू रो जलम संवत 1601 में अहमदाबाद गुजरात में हुयौ। आं री जात नै लेय'र विवाद है कोई तो बाह्मण बतावै अर कोई पिंजारा। सात बरस री ऊमर में इणा रो ब्याव कर दियो गयो। इग्यारा बरसां री ऊमर में ब्रह्मानन्द नांव रै महात्मा इणां नै दीक्षा दी। अहमदाबाद सूं चाल'र अे नागौर रै (परबतसर कनै) करडाला गाँव आग्या। अठै छः बरसां तक तपस्या करी फैर सांभर आयग्या। अे गिरस्त जिन्दगी बितावंता अर पिंजारै रो काम भी करता। इणां रै गरीबदास, मिस्कीनदास दो बेटा, सोभा कुंवरी अर रूप कुंवरी दो बेटियां ही। सांभर में ई इणा दादू पंथ री थापना करी अर वि. संवत 1660 में ब्रह्मलीन हुया।

ग्रंथ रचना :– दादू री वाणी बड़ो ग्रंथ है। 'दादू वाणी' नांव रै इण संग्रै में 37 अंग है अर साखियां री संख्या 2652 अर पदां री संख्या 445 है जका 27 राग–रागनियां में गाया जावै। दादू वाणी रा **नमूना** –

पद –

भाई रे, ऐसा पंथ हमारा।
द्वैपख रहित पंख गहि पूरा, अवरण अेक आधारा।
वाद विवाद काहू सो नांहीं, मांहीं जगत थे न्यारा।
सम दृस्टि सुभाय सहज में, आप ही आप बिचारा।।
काम कल्पनां कदे न कीजै, पूरण ब्रह्म पियारा।
इहि पंथ पहुंचि पार गहि दादू, सो तत सहज संभारा।
साखी :–
आपा मिटै हरि भजै, तन मन तजै विकार।
निर्बैरी सब जीव सौं, दादू यह मत सार।।
घीव दूध में रमि रह्या, व्यापक सबहि ठौर।
दादू बकता बहुत हैं, मथि काढ़ै तैं और।।

6.4.1.7 रज्जब :– रज्जब रो जलम सांगानेर (जैपुर) रै अेक ऊँचै पठान घरानै में वि. संवत 1624 में हुयो। अे दादू रा प्रमुख चेला हा। बींद रै भेख में दादू रा दरसण करण तांई गया अर बठै ई रैयग्या। रज्जब नै गरु सूं घणो लगाव हो। दादू रै सुरगवास पछै रज्जब आपरी आँख्या बंद करली अर मिरत्यु तक कोनी खोली। इणा रो सुरगवास वि. संवत 1746 में सांगानेर में हुयो। इणा री भासा सरल अर आमजन रै समझ में आवणवाळी है।

ग्रंथ रचना :– रज्जब रा 'वाणी' अर 'सर्वंगी ग्रंथ' दो ग्रंथ प्रकास में आया है। इणा में 5352 साखी अर

209 पद हैं। 'सर्वंगी' ग्रंथ में समकालीन संतां री वाणी रो संकलन है। उदाहरण –

साखी –

दादू दरिया राम जळ, सकल संत जन मीन।
सुख सागर में सब सुखी, जन रज्जब लौ लीन।।
नाव निरंजन नीर है, सब सुकृत बनराय।
जन रज्जब फूलै फलै, सुमरिन सलिल सहाय।।

6.4.1.8 गरीबदास :– गरीबदास संत दादू दयाल रा बड़ा बेटा हा। इणा रो जलम वि. संवत 1632 में नराणा गांव में हुयो। 28 बरसां री ऊमर में आप दादू पंथ री गादी पर विराज्या। आप नामी गायक हा। आप निरगुण निराकार नै मानता। वि. संवत 1693 में आप ब्रह्मलीन हुया।

ग्रंथ रचना :– 'अनभै–प्रबोध', साखी, चौबोला अर पद अे चार इणा री प्रमुख रचनावां है जकी 'गरीबदास की वाणी' में संकलित करीजी है। इणा री कविता रो विसय गरु मैहमा, नाम सिमरण, माया अर मन सूं बचाव अर सद आचरण है। अेक उदाहरण देखीजै –

नाद व्यंद ले उरघै धरै।
सहज जोग हठ निग्रह नांही, पवन फेर घट मांहै भरै।
त्रिकुटी ध्यान संधि नहिं चुकै, भौंर गुफा क्यूं भूलै।
द्वै सर संधि अनूप अराधै, सुख सागर में झूलै।
डिंगला पिंगला सुखमण नारी, तिरवेणी संग ल्यावै।
नौसे नवासी फेरि अपूठा, दसवें द्वार समावै।
अरधै डरधै ताली लखै, चन्द सूर सम कीन्हा।
अस्ट कमल दल मंहि विगसे, ज्योति सरुपि चीन्हा।
रोम राम धुनि उठि सहज में परचै प्राण सुपोवै।
गरीबदास गुरमुख व्है बूझी जो जाणै सो जीवै।

6.4.1.9 दरियाव जी :– दरिया जी रो जलम जैतारण में वि. संवत 1633 में हुयौ। दरियाव जी हिन्दी, संस्कृत, फारसी अर राजस्थानी भासावां रा जाणकार हा। वि. संवत 1769 में आप संत प्रेमदास जी सूं दीक्षा लीवी अर पछै, जैतारण आयग्या। अठै ई गरु गादी री थापनां करी। 'वाणी' नांव सूं ग्रंथ रचना करी। इणां रै पदां, साखियां री संख्या घणी बतावै पण अब कम ही मिलै। राम स्नेही पंथ रा अे संत कवि है। इणा री साखियां रा उदाहरण :–

साध पुरख देखि कहै, सुनी कहै न कोय।
कानां सुनी सो झूठ सब, देखी सांची होय।।
सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात।
दरिया बाहर चांदना, भीतर काळी रात।।
दरिया बगूला ऊजळा, उज्जल ही व्है हंस।
ये सरवस मोती चुगै, वांके मुख में मंस।।
कंचन कंचन ही सदा, कांच कांच सो कांच।
दरिया झूठ सो झूठ है, सांच सांच सो सांच।।

6.4.1.10 जगन्नाथ दास :– जगन्नाथ दास रो जलम संवत 1640 आमेर में हुयौ। आप संत दादूदयाल रा चेला हा। आप सदैव गरु रै साथै रैंवता। इणा रा दोय ग्रंथ 'वाणी' अर 'गुण गंजनामां' है। नुवीं सोंध मुजब इणा रै 'गीतासार' अर 'योग वसिस्ठ सार' दो और ग्रंथां री जाणकारी मिली है। इणा री कविता रो अेक उदाहरण–

मणियां सहज इक्कीस लै, खटसत माळा पोई।
जगन्नाथ मन सुरति सों, रात दिवस भजि सोई।।
मन की मेरे कलपना, तन निस्चल जगन्नाथ।
सुमिरन सों स्वांसा रहै, चंचल मन नहं हाथ।।

6.4.1.11 सुन्दरदास :– सुन्दरदास रो जलम दौसा सहर में वि. संवत् 1653 में हुयो। आप रा पिता परमानन्द अर माता सती वैस्य जाती रा हा। छः बरसां री ऊमर में आप गरु दादूदयाल री सरण में आग्या। इग्यारा बरस री ऊमर में साहित्य अर दर्सन रौ अध्ययन करण तांई आपनै कासी भेज्या गया। विद्या पढ़'र आप पाछा फतेहपुर सेखावाटी आयग्या। अठै खूब साधना करी। फतेहपुर रै लोगां में सुन्दरदास जी खातर गैरी सरध ा ही। आप आदत सूं घुमक्कड़ हा। आप बंगाल, असम, गुजरात, उत्तराखण्ड री खूब जातरावां करी अर आध यात्मिक अनुभव भेळा कर्‌या।

सुन्दरदास जी वेदान्त सास्त्र अर ब्रह्म ज्ञान रा पिंडत हा पण साथै ई सांख्य अर भगती नै भी मानता। संत साहित्य में सुन्दरदास रै साहित्य रो घणो मान है। बिनां गरु रो ज्ञान बै भूल–भुलैया री भांत मानता –

तो भक्तन भावें दूरि बतावें तीरथ जावें फिर आवें।
जी कृत्तम गावें पूजा लावें, रूठ दिखावें बहकावें।
अरु माला नावें तिलक बनावें, क्या पावें गुरु बिन गेला।
दादू का चेला भरम पछेला, सुन्दर न्याय व्है षेला।।

सुन्दरदास जी रै मुजब साहित्य में सिणगार री बजाय सांत रस नामी हुवै। कलात्मक रूप सूं चायै सिणगार नै उत्तम कैय सको पण लोक हित री दीठ में बो नीचो मानीजै। इणीज कारण कवि 'केशव' री 'रसिक प्रिया' नै उणां मिनख रै मन में वासना पैदा करणवाकी काव्य पोथी बताई है। वां री काव्य रचना रो उद्‌देस्य लोक मंगळ री भावना है।

ग्रंथ रचना :– सुन्दरदास जी रा छोटा–बड़ा कोई 42 ग्रंथ बताया जावै जका अब ''सुन्दर ग्रन्थावली'' रै नाव सूं सम्पादित कर्‌या जा चुक्या है। वां रै प्रमुख ग्रंथां रा नांव है – ज्ञान समुद्र, सर्वांगयोग, पंचेन्द्रिय चरित्र, गुरु महिमा अष्टम, गुरुषटपदी, भ्रम विध्वंसाष्टक, रामजी अष्टक, नाम अष्टक, गुरु सम्प्रदाय, सहजानन्द ग्रंथ, अडिल्ला छंद ग्रंथ आद।

6.4.1.12 दयाबाई :– संत दयाबाई रो जलम वि. संवत 1750 अर 1775 रै बिचाळै हुयौ। आप संत चरणदास री चेली हा। मेवात खेतर रै डेहरा गाँव नै ई आप साधनां स्थली बणाई। आप रा रच्या दो ग्रंथ अब तक सामी आया है। आप रै ग्रंथ 'दया बोध रो रचनाकाळ' वि. संवत 1818 है। बीजै ग्रंथ 'विनय मालिका' री रचना कद हुई इण रो बेरो कोनी चालै –

संवत ठारासै समै, पुनि ठारा गये बीति।
चैत सुदी तिथि सातवीं, भयो ग्रंथ सुभ रीति।।

आप रै ग्रंथां में निरगुण संतां री भांत नाम महिमा, गुरु महिमा, सूर रो अंग, सुमिरन रो अंग आद री चर्चा है। आप री कविता में दीनता साथै बैराग भावना अर स्त्रिया सारू ऊंचै आदर्स री बातां है। उदाहरण –

निरपच्छी के पच्छ तुम, निराधार के धार।
मेरे तुम ही नाथ इक, निराधार आधार।।
नहिं संजम नहिं साधना, नहिं तीरथ व्रतदान।
मात भरोसे रहत है, ज्यों बालक नादान।।

6.4.1.13 चरण दास :– चरणदासी पंथ री थापनां करण वाळा संत चरणदास रो जलम वि. संवत 1760 रै लगैटगै पिता मुरलीधर अर माता कुंजी देवी रै घरां हुयौ। उगणीस बरस री ऊमर में आप नै गुरु जी सूं ज्ञान मिल्यो। गुरु जी साथै बारा बरस रैय'र ध्यान लगाणो सीख्यो। पछै खुद उपदेस देण लागग्या अर चरणदासी पंथ

री थापनां करी। आपरा 52 चेला हा। दयाबाई अर सहजो बाई इणा री खास चेलियां ही। वि. संवत 1838 रै लगैटगै चरणदास जी परलोक सिधारग्या।

ग्रंथ रचना :– चरणदास रै रच्योड़ै ग्रन्थां री संख्या 14 बताई जावै। बै इण भांत है – अस्टांग योग, अमरलोक खंड धाम, हरि प्रकास टीका भक्ति पदारथ, भक्ति सागर, नासकेत, सन्देह सागर, सबद, राममाला ज्ञान सवरोदय, दानलीला, कुरुक्षेत्र लीला, ब्रह्मज्ञान सागर, मन विरत्तन गुटका। आप री साखिया रा उदाहरण –

सतगुर मेरा सुरमां, करै सबद की चोट।
मारै गोळा प्रेम का, ढहै भरम का कोट।।
कड़ुवा कचन न बोलिए, तन सों कस्ट न देय।
अपना सा सब जानिए, बनें तो दुःख हरि लेय।।

6-4-1-14 jkepj.k %& साहपुरा में राम स्नेहीपंथ री थापनां करणियां संत रामचरण रो जलम जैपर कनै सोढा गाँव में माघ सुदी चवदस संवत 1776 में हुयौ। वि. संवत 1808 में गुरु किरपा राम सूं सबद सुण 'राम सनेही' बण्या। वि. संवत 1826 में आप भीलवाड़ा गया तो राजा रणसिंह खूब सुआगत कर्यो। बठै आप साहपुरा में गद्दी री थापनां कराई। आप री 'वाणी' छपीहै जिण में 8000 रै लगैटगै छंद है –

उदाहरण सारु –

क्षुधा पिपासा उदर संग, सीत उस्ण तन साथ।
सो किसके सारे नहीं, ये कर्ता के हाथ।।
ये कर्ता के हाथ और मतव्याधि लगावै।
कैक स्वाद सिंगार अजब हैरान करावै।
राम चरण भज राम कूं, पांचों प्रबल नाथ।
क्षुधा पिपासा उदर संग, सीत उस्ण तन साथ।।

6.4.1.15 सहजोबाई :– आपरो जलम मेवात रै डहरा गाँव में वि. संवत 1800 रो लगै टगै हुयो। आप संत चरणदास सूं नाम लियो। आप आपरै पदां में गुरुभक्ति दिखाई है। गुरु नै सब सूं सिरै मानता थकां उणा रो पद भगवान सूं भी ऊँचो बतायो है। वां री साखियां रा उदाहरण इण भांत है –

प्रेम दिवाने जे भये, मन भयो चकनाचूर।
छके रहै घूमत रहै, सहजो देख हजूर।।
साहन को तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कुंजर के पग बेड़ियां, चींटी, फिरै निसंक।
अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजार।
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै संसार।।

6.4.1.16 दयालदास :– आप 'रामसनेही पंथ' रा रामदास रा बेटा हा। पिता रै परलोक सिधार्यां पछै गादी पर विराज्या। आप रो जलम वि. संवत 1816 में हुयो। आप ऊँचै चरित्रवाळा महात्मा हा। इणा रै चेलै पूरणदास 'जन्मलीला' नांव रै ग्रंथ में आप रै गुणां रो बखाण कर्यो है। आप रा रचेड़ा फुटकर छंद अर 'करूणा सागर' ग्रंथ चावा है। इणा री कविता रा अेक बानगी देखीजै –

रामइया सरण की प्रतिपाल।
अबलग करि सोई सब कीजै अपने घर की चाल।
जो सूरज परकासै नाहीं रात न कंज विसाल।
ससि नहिं अमि द्रवै जो मायवतो निपजै केम रसाल।
विरह कुमोदिनी जीवन सोई सब लालों सिर लाल।
ग्वाल बाल के समरथ स्वामी रामदास किरपाल।।

इण भांत मध्यकाल में राजस्थान में अणगिण संत हुया है। बां री गादी आज भी चालै। उणा री जलम भोम या जठै गादी है बठै साल सवाई मेळा भरै। आं संतां री वाणी आज भी जण–जण नै सीख अर प्रेरणा देवै।

6.4.2 प्रेम मारगी :–

मध्यकाल में पिच्छम अर उतरादै भारत में सूफी आन्दोलन रा कैई केन्द्र हा जिणा में लाहौर, मुल्तान, हांसी, दिल्ली, पानीपत आद जगचावा है। इणा में राजस्थान रा अजमेर अर नागौर घणा महताऊ हा। अजमेर में चिस्तिया सम्प्रदाय ज्यादा लोकप्रिय हो। इणा सूफी संतां जिण साहित्य री रचना करी बीं नै आचार्य रामचन्द्र शुक्ल मसनवी सैली री रचनावां बताय'र वां री कैई विसेसतावां बताई है। पछै जैड़ी खोजबीन हुई उण सूं पत्तो चालै कै आ परम्परा विसुद्ध भारतीय ही। इण पर सूफियां रै विचारां रो प्रभाव तो पछै पड़िग्यो। इण सैली री दो प्रसिद्ध रचनावां मिली है जिण री भासा राजस्थानी है। अै रचनावां है – (i) हंसवाली (ii) लखन सेन पद्मावती

6.4.2.1 हंसावली :– इण में अेक दूजी सूं कैई कथावां गुंथीजेड़ी है। पाटण री राजकुमारी घणी रूपवती ही पण लारलै जलम रै किणी संस्कार रै कारण बा रोज पांच मिनखां नै मारणै रो व्रत ले राख्यो हो। इण रो नायक राजकुमार सपनै में राजकुमारी नै देखै अर मोहित हो जावै। पछै जोगी रो भेख धारण कर आपरै मंत्री नै साथै लेय'र उणनै ढूंढण निकळ पड़ै। आखिर राजकुमार बीं नै ढूंढ लेवे। बो राजकुमारी सूं मिल'र उण नै लारलो जलम दिखावै। राजकुमारी लारलै जलम में मादा पंखेरु ही। उण अंडा दिया। जंगळ में आग लागी तो उणरो साथी पांखी बीं नै छोड'र उडग्यो। बा अण्डां साथै ई बळगी। इण कारण बा आप रै नूंवै जलम में मिनखां री विद्रोही होगी। लारलै जलम री घटनावां देखणै सूं उण नै इण मनोग्रंथी सूं मुगती मिलगी। विसयवस्तु अर सैली री दीठ सूं इण कथा में सगळी प्रवृत्तियाँ मिलै जकी भारतीय प्रेमाख्यानकां में बताई गई है। इण री रचना कविवर असाइत कवि सन् 1370 में करी। इण सूं पैली कोई प्रेमाख्यानक कोनी मिलै। इण री भासा रो अेक नमूनो –

देवि अवधारु मुझ विनती।
पेलि भवि हूं पंखिणी हती।।
इड़ा मेहला सेवन कीड।
दव बळतउ तेणि बाने आविड।।
मुझ भरतार साहस नवि कीड।
अपति मेहलीनी उड़ि गयु।।

6.4.2.2 लखनसेन पद्मावती :– इणरी रचना दामो या दामोदर कवि सन 1459 में करी। कवि खुद इण नै वीर कथा बताई है। इण में राजा लखनसेन (लक्ष्मण सेन) अर राजकुमारी पद्मावती री प्रेम कथा है। लखन सेन नै राजकुमारी नै देखतां ई प्रेम हो ज्यावै। इण रै बरणाव में सैसूं पैली मंगलाचरण, गणेस जी री वंदना, आतम परिचै, रचना काल अर रचना रा उद्देस्य बताया गया है। नायक जोगी बण'र नायिका रै बाप सूं झगड़ो करै आद प्रवृत्तियॉ रो निभाव हुयो है। छंद योजना में चौपाई रै अलावा दूहा अर सोरठां आद रो प्रयोग भी कर्‌यो गयो है। इण में इतिवृत्तात्मकता ज्यादा अर भावात्मकता कम है।

इण भांत राजस्थानी भासा में प्रेम मार्गी रचनावां आप रै सुरुआती दौर में लिखी गई। सूफी मत रै प्रभाव सूं गजलां आद रो सिरजण भी हुयौ पण राजस्थानी भासा में सूफी प्रभाव कम ई आयो।

6.5 सगुण धारा :–

'पांच रात्र, सात्वत' अर 'नारायणी' आद धरमा अर बां री साखावां में विस्णु पूजा रो वैवस्थित रूप मिलै। अठै सूं ई वैस्णव भक्ति रो विकास मान्यो जा सकै। निम्बाकाचार्य, विष्णुस्वामी, मध्याचार्य अर वल्लभाचार्य आद आचार्यां इण नै आगै बढ़ाई। राम अर क्रिसन री विस्णु रै औतार रै रूप में मानता अर पूजा रो विधान भी बतायो। राम रो चरित्र इतिवृत्तात्मक रूप में वर्णित करीज्यो पण क्रिसन रै चरित्र नै मुक्तक रूप में अभिव्यक्त कर्‌यो गयो। राम रो 'लोक रक्षक' अर क्रिसन रो 'लोक रंजक' रूप ई लोगां रै मन नै जादा भायो। इण दो धारावां (अ) राम भगती धारा (ब) क्रिसन भगती धारा में जका प्रमुख रचनावां अर कवि हुया है, बां री जाणकारी इण भांत है –

6.5.1 राम भगती धारा :– मध्यकाल में राम रै चरित्र नै लेय'र राजस्थानी भासा में प्रबन्ध अर मुक्तक काव्य रै रूप में कवियाँ रचनावां करी, बै इण भांत है –

6.5.1.1 मेहोजी गोदारा :– मेहोजी गोदारा रो जलम बीकानेर री श्री डूंगरगढ़ तैसील रै भोजास गाँव में वि. संवत 1540 में हुयो। आपरै पितारो नांव सेखोजी गोदारा हो। मेहोजी जांभोजी नै मानता। मेहोजी वि. संवत् 1601 तक मौजूद हा। 35 बरस री ऊमर में आप संवत् 1575 में 'रामायण' लिखी। आप रो रचेड़ो ग्रंथ अेक 'रामायण' ई है।

ग्रंथ :– मेहोजी री रामायण में 261 दूहा अर चौपाइयां रचेड़ी है। इण में कांड या अध्याय कोनी। सीधी–सपाट कथा चालती जावै। कवि इण कथा में कीं बदळाव भी कर्‌या है जियां कैकेयी बीमार दसरथ री सेवा करै इणरै बदळै बीं नै वरदान मांगणै री छूट मिलै। राम बनवास रै बखत भरत भी अजोध्या में हुवै। राम बां नै कोसै। मारीच री जागां भोज नांव रै पात्र री कल्पना, सीता हरण सूं पैली रावण सुगन विचार करै। अंत में रावण रो वध लिछमण करै आद और भी कैई बदळाव कवि कर्‌या। इण कृति रो महात्तम जतावंता डॉ. मदन सैनी कैवै, ''प्रस्तुत रामायण विक्रम संवत की सोलहवीं शताब्दी की एक सांगोपांग, श्रेष्ठ एवं सफल आख्यानक काव्य कृति है। वस्तु, रूप भाषा, रोचकता, काव्यत्मकता तथा तत्कालीन मरुदेशीय समाज चित्रण की दृष्टि से राजस्थानी भाषा और साहित्य में यह कृति एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में समादृत की जानी चाहिए।''

6.5.1.2 माधोदास दधवाड़िया :– माधौदास जी अेक ऊँचा भगत, कवि अर तलवार रा धणी हा। आप रो जलम वि. सं. 1610–15 रै बिचाळै जोधपुर राज में मेड़ता कनै बळूंदा गाँव में हुयो। आप रै पिता रो नांव चूंडा जी हो। आप केसोदास गाडण अर पृथ्वीराज राठौड़ रा समकालीन अर जोधपुर रै महाराज सूरसिंह जी रै दरबार में कवि हा। वि. सं. 1664 रै नेड़े इणां 'राम रासौ' री रचना करली। संवत 1690 रै आसै–पासै कई मुसलमानां इणां री गायां घेर'र ले जाणी चायी तो आप तलवार लेय'र उणा सूं भिड़ग्या अर वीरगती पाई।

ग्रंथ रचना :– मेहाजी गोदारा री रामायण पछै राम रै चरित्र नै लेय'र रच्यो जावण वाळों 'रामरासौ' राजस्थानी भासा रो पैलो महाकाव्य कैयो जा सकै। इण काव्य रो प्रधान रस सांत है पण बीजा रस भी मौकै मुजब आवै। इणा री 'राम रासौ' रै अलावा 'भासा दसम् स्कंध' अर 'गज मोख' दो रचनावां और है। आ तीनुवां में 'राम रासौ' ई जग चावो ग्रंथ है जिण में 1087 रै लगैटगै छन्द है। मेहोजी री भांत माधौदास जी भी रामरासौ में थोड़ा बदळाव कर्‌या है। इण री काव्य भासा डिंगल है जकी भावां रै प्रवाह में मददगार है। मध्यकाल में रचिजेड़ो ओ ग्रंथ राजस्थानी भासा री घणी महताऊ काव्य पोथी है।

6.5.1.3 सुरजनदास पूनियाँ :– सुरजनदास पूनियां रो जलम गाँव भींयासर में वि. संवत 1740 रै लगैटगै जाट (सिद्ध) परिवार में हुयौ। आपनै बालपणै में ई बैराग हुयग्यो अर आप वील्होजी (बिस्नोई सम्प्रदाय रा साधु) रा चेला बण'र दीक्षा ले ली। वि. सवंत 1673 में मरणै सूं पैली वील्हो जी आपनै 'रामड़ावास' रा महन्त बणा दिया। आप अेक 'सिद्धहस्त' कवि हा। आप कई पोथ्या रची वि. संवत 1748 में जाभोळाव गाँव में आप रो सुरगवास हुयो।

ग्रंथ रचना :– आपरी रचेड़ी कृति 'रामरासौ' रा बीजा नांव भी है – 'रामायण का कवत', 'रामायण' अर 'कवित राम रासौ'। 'राम रासौ' आप री घणी महताऊ रचना है जिणरी सुरुआत सूरपणखां रा नाक–कान कटण साथै हुवै। साखियाँ, गीत, हरजस अर डिंगल गीत, साखी–अंग चेतन, दसावतार रा दूहा, अस्वमेघ जिग का दूहा, कथा चिंतामणी, कवित्त बावनी, ज्ञान महातम, ज्ञान तिलक, कथा गज मोख, भोगळ पुराण आद आप री नामी रचनावां हैं। आप री रचनावां बाबत डॉ. हीरालाल माहेस्वरी रो कैवणो है, ''कवि सुरजन जी वीत रागी साधु थे, किन्तु मानव समाज से उदासीन नहीं थे। उन की काव्य साधना मानव जीवन के अभ्युत्थान का महान् प्रयास है।''

6.5.1.4 सरवण भूकर :– सरवण भूकर डूंगरगढ़ (बीकानेर) तहसील रै गाँव धीरदेसर में अेक जाट खानदान में जलम्या। गाँव में आज भी कवि री समाधी है। आप नै जसनाथी सम्प्रदाय में 'हुकारियै' रो मान मिलयौड़ो हो। आप री पोथी 'सीत पुराण' राजस्थानी भासा में रामभक्ति री अेक महताऊ कड़ी है। 'सीत पुराण'

जसनाथी सम्प्रदाय में आज भी लोकगाथा री भांत गाई जावै। आ कथा पैली सूं चाली आवै। सरवण भूकर इण नै नुवों रूप दियो। इण री कावतां अर मुहावरा आज भी लोक में चालै। इण री कथावस्तु पर मेहाजी गोदारा री रामायण रो पूरो असर है। 'सीतापुराण' रै अलावा 'हरकीरत' नांव सूं अेक और रचना भी है। कवि रा घणा ई 'सबद' पूनरासर रा मंहत सिवनाथ जी सिद्ध रै संग्रै में है।

6.5.1.5 मुंहता रुघनाथ :– मुहंता रुघनाथ रो जलम वि. संवत 1725 में मारवाड़ रै जोधाण में हुयो। अै जात रा मोहत वैस्य हा। इणा रा बाप दूदा अर मां रो नांव पद्मिनी हो। आप वि. संवत 1795 में 'रुघरास' नांव रै ग्रंथ री रचना करी। इण ग्रंथ री कथा रो आधार वाल्मीकि रामायण ई है। इण री भासा सैली सोवणी अर सरस है। तत्सम सबदां रै साथै विदेसी सबदां रो प्रयोग भी कर्‌यो गयो है। 'रुघरास' री कथा वस्तु देखता ओ खंड काव्य ई सिद्ध हुवै।

मेहोजी गोदारा सूं सरु होय'र मुंहता रुघनाथ आप–आप री राम कथा रो आधार चाये वाल्मीकि रामायण सूं लियो है पण साथै ई बीजै ग्रंथां में प्रचलित राम कथा रो जगचावा अंस भी लेणै सूं नीं चूक्या। इण रै साथै ई लौकिक प्रभावां सूं भी रामकथां अछूती नीं रैयी।

6.5.1.6 नरहरिदास बारहठ :– नरहरिदास बारहठ रो जलम संवत 1648 अर सुरगवास संवत 1733 में हुयौ। आप लक्खाजी बारहठ रा बेटा हा। जोधपुर रा महाराजा गजसिंह आप रा आस्रयदाता हा। आप सुतंतर रूप सूं तो राम कथा कोनी लिखी पण आप री कृति 'अवतार चरित' में 'रामावतार' रै नांव सूं राम रो लूंठो चित्रण है। इण ग्रंथ री रचना पुस्कर में 1733 में हुई। रामावतार री भासा राजस्थानी अर सैली पिंगल है। इण री भासा–सैली में महाकाव्योचित गरिमा है। इण में प्रबन्ध री निजर सूं कठै ई कमी कोनी लखावै। मंगलाचरण सूं लैय'र फलागम तक कवि पूर्ण रूप सूं कथा नै निभाई है।

6.5.1.7 कविया करणीदान :– 'सूरज प्रकास' रै रचनाकार कविया करणीदान रो जलम मेवाड़ रै सूलवाड़ा नांव रै गॉव में हुयौ। आप रै पिता रो नांव विजयराम हो। कविराजा श्यामलदास अर करनल टॉड भी आप री घणी बड़ाई करी है। आप संग्राम सिंह (द्वितीय) सूं सम्मानित होय'र महाराजा अभैसिंह (जोधपुर) रै दरबार में पधार्‌या। आप रो 'सूरज प्रकास' ग्रंथ असल में बंसावली है जिण में सूरजवंस (सूर्यवंश) रो इतिहास समेटणै री कोसीस करीजी है। इणी में राम कथा रो बरणाव है। राम रै जलम सूं लैय'र प्रमुख प्रसंगां री रचना, राम, रावण जुद्ध आद रो खास चित्रण है। राजस्थानी भासा में राम भगती धारा में 'सूरज प्रकास' री अलग ही ठौड़ है।

राम कथा री आ परम्परा भगती काल पछै रीतिकाल में भी चालती रैयी। वंसावलियां, लाक्षणिक ग्रंथां आद में भी कवियाँ आप–आप रै ढंग सूं राम कथा रो बरणाव कर्‌यौ।

6.5.1.8 जैन राम काव्य :– राजस्थानी भासा में रामकव्यां में जैन राम काव्यां री गिणती कम होनी। हालांकै जैन कवियां आप रै धरम रै प्रचार तांई राम कथा अपणाई। बां राम कथा नै आप रै धरम मुजब कैई जागां मोड़ देणै री भी कोसीस करी है। वि. संवत 1604 में विनयसमुद्र 'पद्म चरित' री रचना करी। 'सीता चउपई' री रचना वि. संवत् 1611 में समयध्वज करी। इण में सात सर्ग है। 'राम सीता रास' री रचना वि. संवत 1649 में कवि नगर्षि करी। 'रघुनाथ विनोद' जैन कवि सिरीसार री रचेड़ी कृति है। भासा री दीठ सूं देखां तो जैन कवियाँ राजस्थानी भासा रै प्रचार–प्रसार में घणो महताऊ योगदान दियो है। इणां री राम री जिन्दगी बाबत रचित कृतियॉ चाये आप रै धरम प्रचार–प्रसार तांई ही पण इण सूं भासा रै बिगसाव में घणी सहायता मिली है।

6.5.2 क्रिसन भगती धारा :–

साहित्य रै इतिहास में सगुण भगती धारा रो दूसरो अंग क्रिसन री भगती परम्परा है। क्रिसन भगवान विस्णु रा सोळा कलावां रा पूरण अवतार मान्या गया है। क्रिसन असली अरथा में लोक नायक हा। बां आप री जिन्दगी रै हरैक पक्ष नै सकारात्मक रूप सूं लियौ। 'गीता' में क्रिसन–रो कथन 'परित्राणाय साधुनाम्, विनाशाय च दुष्कृताम्' आज भी भगतां नै आस्वासन देवै। क्रिसन रो लोग रंजक रूप लोक में ज्यादा प्रिय हो इण कारण भगतगण बां री बाल लीला, रासलीला, गोप बालावां साथै क्रीड़ा रो ज्यादा बरणाव हुयौ है। लोक रक्षक तो क्रिसन है ई! पूतना, धेनुकासुर, कंस जैड़ै दुस्ट जन नै मारण वाळा अर भगत वत्सल इतरा कै दुरजोधन रा राजसी

भोजन त्याग बिदुर रै घरां सूकी रोटी खाई। जुधिस्ठर रै राजसूय जिग में पग धोणै रो जिम्मो अर महाभारत रै जुद्ध में अर्जुन रै रथ रो संचालण करणै रो जिम्मो लियौ। इण रै बावजूद लोगां नै उणा रो लोक रंजक रूप ई पंसद आयो। मध्यकाल री राजस्थानी कलम तेगां री झणकार सुणणै री अर जुद्धा रै मैदान में वीरां री हुंकार सुणणै री आदी होगी ही स्यात् इणीज कारण राजस्थानी भासा में क्रिसन भगती धारा रा कवि कम है। पण जठै मीरां बाई 'प्रेमदीवानी' है बठै अेक सूं ई आ सगळी कमी पूरी हो ज्यावै।

6.5.2.1 मीराँबाई :– मीराँबाई इण तरै री भगत कवयित्री है जकी किणी सम्प्रदाय सूं जुड़ेड़ी कोनी। क्रिसन रै प्रेम री दीवानीं मीराँ अैड़ी क्रान्तिकारी महिला ही जकी सगळी वर्जनावां तोड़'र क्रिसन प्रेम में लीन होगी। मीराँ रो जलम वि.सं. 1555 में राव दूदा रै बेटै रतन सिंह रै घराणैरा मेड़ता कनै गॉव बाजोली में हुयौ। मीराँ री मां उणारै बाळपणै में ई सुरग सिधारगी। दादो सा क्रिसन रा भगत रा। इण कारण मीराँ नै क्रिसन भगती रा संस्कार टाबर पणै में ई मिलग्या। मीराँ रो ब्याव महाराणा संग्राम सिंह रै पाटवी राजकंवर भोजराज साथै हुयौ। मीराँ रो वैवाहिक जीवन सात बरस रैयो। ब्याव रै थोड़ा बरसां पूछै ही भोजराज रो सुरगवास हूयग्यौ। पति री मौत पछै मीराँ कान्ह री भगती में रमगी। इणां रै देवर इण पर रोक लगाणी चायी तो मीराँ खुल'र कै दियो–

म्हारो तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जिणारे सिर मोर मुगट म्हारो पति सोई।।

मीराँ नै साधुवां री संगत में जाणै सूं रोकणै तांई अणगिण कस्ट दिया गया। जहर रो प्यालो दियो गयो। सांप पिटारा, कांटां री सेजआद बातां मिळै पण मीराँ क्रिसन भगती सूं पाछी कोनी हटी। विक्रमी संवत 1604 में मीराँ सुरग सिधारग्या। इणा री कैई रचनावां बताई जावै जियां–गीत गोविन्द टीका, नरसी जी का मायरा, सत्यभामां नूं रूसण, रुक्मणी मंगळआद, पण अै प्रमाणित कोनी। प्रमाणित सिर्फ मीराँ रा पद है जका आज आखै विस्व में सरधा साथै गाया जावै।

6.5.2.2 प्रिथीराज राठौड :– प्रिथिराज राठौड़ रो जलम मिगंसर बदी एकम वि. संवत 1606 में हुयौ। आप रा पिता राव कल्याणमल जी हा। आप बीकानेर नरेस रायसिंह जी रा छोटा भाई हा अर 'पीथळ' नांव सूं कविता रचना करता। आप अकबर रै नवरतनां में हा। प्रिथिराज काव्य, संगीत, कला, संस्कृति भासा आद रा गैरा विद्वाना हा। आप कलम रै साथै तलवार रा भी घणी हा। इणीज कारण अकबर आप नै कई महताऊ जुद्धां री जिम्मेदारी सूंपी। आप पक्का वैस्णव भगत हा। वि. संवत 1657 में आपरो सुगरवास मथुरा में हुयौ।

'वेलि' क्रिसन रुकमणि री' रचना वि. संवत 1637 में हुयी। 'वेलि' में क्रिसन अर रूकमणी हरण री कथा है। ओ भगती रै साथै–साथै ऊँचै दर्जे रो वीरता अर सिणगार रो ग्रंथ भी है। इण री रचना डिंगल रै वेलियो छंद में हुयी है। इणरी काव्य भासा डिंगल है जिण पर कवि रो पूरो अधिकार है।

6.6 इकाई रो सार

इण भांत राजस्थानी भासा में भगती रचनावां री कमी कोनी। मध्य काल में राजस्थान में कैई संत मत थापित हुआ उणा रा मठ आज भी है। बां री रचनावां आज भी घर–घर में गाइजै। अै संत चाये वीतरागी हा या घरगिरस्ती पण इणां रो समाज साथै पूरो जुड़ाव हो। इण अध्ययन सूं ओ भी बेरो लागै कै इणा संतां पढ़यै–लिख्यै वरग अर सहरां री बजाय गाँवां रै भोळै–भाळै अणपढ़ लोगां नै आप रा उपदेस दिया। बां में आस्था जगाय'र अंध ा विस्वास अर कुरीतियाँ सूं बचाया अर उणांरी जिन्दगी नै सरल अर सहज बणाई।

प्रेम री प्रारम्भिक रचनावां भी राजस्थानी में रचीजी अर्थात् इण परम्परा री सरुआत ई राजस्थानी भासा सूं हुई। इणीज भांत राजस्थानी में राम कथावां भी घणी लिखीजी पण तुलसी रै 'राम चरित मानस' रै कारण बै इतरीं लोकप्रिय नीं हो सकी। फैर भी लोक में राजस्थानी रामायण रो पाठ हुया करतो या गीतां रै माध्यम सूं गाई जांवती। आ भी हरख री बात है कै इण प्रदेस में मीरां जैड़ी क्रिसन भगत कवयित्री हुई वा नारी सुतंतरता री आज भी मिसाल है। इणीज कड़ी में आपां प्रिथीराज राठौड़ री 'बेलि' नै किण भांत भूल सकां क्यूंकै बा अद्भुत अर काळजयी रचना है।

6.7 अभ्यास रा प्रस्न

1. राजस्थानी में निरगुण भगती रै संतां रो परिचै देंतां थकां बां री खास–खास रचनावां री जाणकारी करावो।
2. राजस्थानी में राम भगती रै विकास पर निबंध लिखो।
3. 'क्रिसन भगत कवियाँ में मीराँ बाई री जागां सबसूं ऊँची हैं'। इण कथन नै उदाहरणां सूं समझावो।
4. सगुण भगती धारा पर अेक निबंध लिखो।

6.8 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. सं. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में रामकथा।
3. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्तिकालीन काव्य।
4. प्रिथिराज राठौड़ – 'वेलि क्रिसन रुकमणी री'।
5. डॉ. बहादुर सिंह – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
6. डॉ. हीरालाल माहश्वेरी – बिश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य।
7. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।
8. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।

इकाई – 7

राजस्थानी साहित्य री धार्मिक अर दार्सनिक पूठभौम (पृष्ठभूमि)

इकाई रो मंडाण

7.0 उद्देस्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 उपयोगिता

7.3 महत्त्व

7.4 धार्मिक वातावरण

- 7.4.1 हिन्दू धरम
- 7.4.2 शैव मत
- 7.4.3 शाक्त मत
- 7.4.4 बौद्ध धर्म
- 7.4.5 जैन धर्म
- 7.4.6 सिद्ध अर नाथ सम्प्रदाय
- 7.4.7 इस्लाम धर्म
- 7.4.8 लोक देवी–देवता

7.5 दार्सनिक भोम

- 7.5.1 अद्वैत वाद
- 7.5.2 अवतार वाद
- 7.5.3 बौद्ध अर नाथ पंथ रो सून्यवाद अर हठवाद
- 7.5.4 अेकेस्वर वाद
- 7.5.5 अहिंसावाद
- 7.5.6 विधि–निसेध
- 7.5.7 मानवतावाद

7.6 इकाई रो सार

7.7 अभ्यास रा प्रस्न

7.8 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

7.0 उद्देस्य

किणी भी देस, काल, जाति या भासा रै साहित्य नै गैराई सूं समझण तांई उण रा इतिहास जाणणो जरूरी हुवै। कोई भी साहित्य आप रो अेक वैचारिक धरातल राखै। उण ई वैचारिक या दार्सनिक धरातल पर आखै साहित्य री नींव धरीजै जिण पर उण भासा या देस रै साहित्य रो महल चिण्यो जावै। इणीज भांत रचनाकार जिण भासा में रचना करै, उण भासा रै बोलण वाळां री धार्मिक मानतावां कांई है ? आ बात भी साहित्य अर रचनाकार दोनुवां नै प्रभावित करै, क्यूं कै रचनाकार जद निरपेख भाव सूं रचना करैलो तो उण में लोगां री सोच अर खुद रो नजरियो, दोन्यूं उभर'र आवैला। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल रै मुजब मानां तो सन् 1318 सूं लेय'र

सन् 1643 तक सवा तीन सौ बरसां रै लगैटगै भगतीकाल रयो। इण लम्बै अरसै में भारत पर विदेसी सत्ता काबिज ही। मुगलां रो उत्थान इणी'ज काल में हुयो। इण काल में उच्चकोटी री भगती रचनावां रची गई। साथै ई ओ उथळ–पुथळ रो काल भी हो। उण बखत देस में हिन्दू धर्म रै साथै–साथै बौद्ध, जैन, सैव, साक्त, इस्लाम आद कई धरम चालै हा। सगळां री सोच भी अलग–अलग ही। इण सब रै बावजूद रचनाकारां री आपसी सोच अर सद्भावना घणी गै'री ही। उणां सगळां आपस में तालमेल बिठाय'र रचना करम कर्‌यो। आ समन्वय री भावना कींकर आई, इण सगळी बातां रो बेरो आप नै भगती काव्य री धार्मिक अर दार्सनिक पूठभोम भण्यां ई बेरो लागसी।

ऊपर सूं देखण में ज्ञान मार्गी, प्रेम मार्गी, राम भक्ति, कृष्ण भक्ति सगळी न्यारी–न्यारी दीसै। इण रो ओ ऊपरी अलगाव खरबूजै री भात है नारंगी री भांत कोनी। खरबूजो ऊपर सूं चाये अळगो दीसै पण भीतर अेक हुवै अर नारंगी ऊपर सूं अेक दीसै पण मांय सूं अलग–अलग फांक हुवै। विगत में जायां पाठक रै अै सगळी बातां भली–भांत समझ में आवैगी, ईं इकाई रो ओईज उद्देस्य है।

7.1 प्रस्तावना

राजस्थानी साहित्य रै इतिहास में भक्तिकाल घणो महताऊ है। इण बखत हिन्दुआं री सामाजिक अर आर्थिक स्थिति घणी खराब ही। तुलसीदास जी री 'कवितावली' रै अेक पद में कितरीं दीन हीन हालत रो बरणाव है देखीजै –

'खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस
कहैं अेक अेकन सों कहाँ जाई का करी।'

इणी'ज पद में तुलसीदास आगै 'गरीबी' नै ई रावण बताय'र राम सूं उण रो वध करणै री अरदास करै। अैड़ै कठिन बखत में आं भगत कवियाँ तीन सो बरसां सूं जादा जनता री नाव नै खेय'र पार लगाई। तन अर मन सूं टूटेड़ी जनता नै दिलासो बंधाय'र उण में आत्मसम्मान री भावना पैदा करी। हिन्दुआँ में जद जात–पांत अर छूआ–छूत इतरीं ही कै अेक जात नै दूसरी जात सूं घणी नफरत ही ! ऊपर सूं विदेसी सत्ता कठै–कठै ई जबरदस्ती धर्म बदळाय'र कोढ़ में खाज रो काम करै ही। अैड़ै में आं भगत कवियां रै काव्य जनता नै कितरों सहारो दियो, देखणै री बात है। सैव–साक्त–वैस्णव सगळै धर्मां नै मानण वाळा अेक–दूजै सूं लड़ता अर नफरत करता। तंतर–मंतर अर जादू–टूणां सूं ढोंगी साधु भोळी–भाळी जनता नै ठग्या करता। जनता जावै तो कठै जावै।

इस्या बखत में भगतां या संता रो आणो, जनता नै अंध विस्वासां सूं मुगती दिरावणी, बां में जिनदगी बाबत विस्वास पैदा करणो घणो ओखौ काम हो पण उणां कर्‌यो। हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण, सूद्र रै नांव पर जैड़ो भेद भाव कर्‌यो जांवतो बीं नै तर्क सूं समझाय'र भोळै–भाळै लोगां नै रास्तो दिखायो। बै कैड़ा धार्मिक अर दार्सनिक विचार हा जिणा नै सुण'र जनता रै हिड़दै में ज्ञान रो चानणो हुयग्यो, बो सगळो कीं इण इकाई में आप भणोला। साथै ई भणोला कै अै सगळा विचार जैड़ा भगत कवियॉ, जनता सामी राख्या बै किणी नै किणी रूप में भारतीय समाज में मौजूद हा। 'भक्ति आन्दोलन' री विगत समझणै सूं आप सामी इण आन्दोलन रा सगळा आयाम खुल जावैला।

7.2 उपयोगिता

आज जद देस में साम्प्रदायिक अर अलगाववादी तागतां ओजूं सक्रिय है अर बै जन–जन नै धर्म रै नांव पर, जात रै नांव पर ठगणै में लाग्यौड़ी है तो 'भक्ति साहित्य' री उपयोगिता घणी निजर आवै। इण साहित्य री पृस्ठ भूमि में जैड़ा विचार है बै कदे पुराणा नीं हो सकै। जात–पांत अर धर्म नै लेय'र पैली भी राड़ होंवती, आज भी होवै। भगत कवियां 'ईस्वर अल्लाह' अेक बताय'र अर उण नै घट–घट वासी कैय'र

मिनख–मिनख अेक है'रै विचार री थापना करी। उण री आज भी जरूरत है। दुनियां में आज धन कमावण अर अेक–दूजै सूं आगै निकलणै री होड़ मचेड़ी है। अैड़ै बखत में हार्‌यै–थक्यै अर जिनगाणी री दौड़ में भाजतै मिनख नै कीं राहत दे सकै तो तो वा है संतां री वाणी। 'भक्ति काव्य' री पृस्ठ भूमि में जैड़ा धार्मिक अर दार्सनिक विचार है उणां नै जाण–समझ'र मिनख कीं सुख री सांस लेसी।

7.3 महत्त्व

इण बात नै लेय'र भी है कै भूमंडलीकरण रै जुग में खतरा घणा बधग्या है। अणुबम, हाइड्रोजन बम अर मारक मिसाइलां जैड़ा घातक हथियार दुनियां नै खतम कर सकै। उण बखत जैड़ा संघर्स हा बै आज री भांत खतरनाक कोनी हा पण आज दो देसां री छोटी सी झड़प या दो सत्ताधारियां रो अहंकार दुनियां पर कांई संकट ल्या खड्‌यो करै, कयो कोनी जा सकै। संतां री वाणी में अपणायत, भाईचारै अर सुख–सान्ति रा सनेसा भरेड़ा है। बां में आज भी इतरा तागत है कै भटकेड़ै मिनख नै राह दिखावै। बै विचार जिण पर 'भक्त काल' रो साहित्य रच्यो गयो है, आज घणा महताऊ है।

7.4 धार्मिक वातावरण

धरम सास्त्रां में 'धर्मः इति धारियति' कैय'र धर्म री परिभासा दीरीजी है। इण रो पूरी तरां खुलासो करता आचार्य 'परशुराम चतुर्वेदी' रो कैवणो है कै धर्म परमात्मा अर मिनख रै बिचाळै सम्बन्धां री थापनां करणै तांईं अेक माध्यम है। जात, कुणबो, देसकाल अर परिस्थितियाँ सूं निरपेख होय'र नैतिक जिम्मेदारी रो पालण करणो धर्म है। धर्माचरण या नैतिकता समाजपरक है तो धर्म साधना मिनख परक। दूजै सबदां में कैयो जा सकै कै धर्म अेक सामाजिक कर्तव्य है पण साधना साथै जोड्‌यां पछै बो आतम मुगती रो साधन भी है। इण परिभासा रै आलोक में अलग–अलग धर्मां री समीक्षा करतां थकां भक्ति काल री धार्मिक पृस्ठभूमि नै समझणै री कोसीस अठै करांला।

आ बात भी ध्यान में राखण जोग है कै राजनीतिक परिवेस भी धार्मिक परिवेस नै प्रभावित करै। भक्तिकाल री सरुआत मुहम्मद बिन कासिम रै राज में हुवै। बो न्याय–प्रिय अर विद्वान सासक हो पण बो आप री सनक री वजह सूं जादा मसहूर हुयो। उण रा उत्तराधिकारी ना तो बीं री भांत कुसळ प्रसासक हा अर ना ही न्यायप्रिय जिणसूं उणां नै हरा'र, दिल्ली पर लोदी वंस काबिज हुयग्यो। लोदी वंस नै हरा'र मुगल सत्ता री नींव पड़ी जकी लम्बै समै तक चाली।

हिन्दू जनता आप री पराजित मानसिकता साथै भीतर ई भीतर दुखी ही क्यूं कै बां नै ना तो खास सत्ता में भागीदारी मिलती अर ना ही बां री आर्थिक हालत ठीक ही। अैड़ै हालातां में हिन्दुआं साथै अन्याय भी हुयौ। इण दौरान जैड़ा मत अर धर्म भारत में चालै हा बां में सैव, साक्त, वैस्णव, जैन, बौद्ध अर इस्लाम हा। हालांकि जहाँगीर रै राज में पारसी धर्म रो प्रवेस भी हो चुक्यो हो पछै इसाई मिसनरी भी आग्या पण इणां रो प्रभाव 'भक्ति आन्दोलन' पर नीं पड्‌यो। प्रमुख धर्मां अर मतां रो भक्ति आन्दोलन पर कांई प्रभाव पड्‌यो उण री चर्चा नीचै लिखेड़ै बिन्दुआं रै आधार पर इण भांत है –

7.4.1 हिन्दू धर्म :

वैदिक धर्म में कर्मकांड री प्रधानता ही। आर्य लोग जैड़ा जिग्य (यज्ञ) करता बां में हिंसा घणी होवंती। इण रै फलस्वरूप बौद्ध अर जैन धर्मां रो उदय हुयो तो हिंसा रै जाबक रोक लागगी। बौद्ध धर्म राज धर्म हुयग्यो जको ईसा सूं पाँच सौ बरसां सूं पैली सूं लेय'र गुप्त काल तक चालतो रैयो। हिन्दू धर्म रो अब फैर उत्थान हुयो। चोथै–पाँचवैं (ईस्वी) सईकै में शंकराचार्य अर कुमारिल भट्‌ट जैड़ै विद्वानां रै कारण बौद्धधर्म देस सूं बारै निकळग्यो। जैन धर्म गाँवां अर कस्बां में आप रो सफर जारी राख्यौ।

हर्षवर्धन पछै कोई तागतवर हिन्दू सम्राट नीं होणै रै कारण केन्द्रीय हिन्दू सत्ता छिन्न–भिन्न होगी। देस छोटी–छोटी रियासतां अर रजवाड़ां में बंटग्यो। अै लोग छोटी–छोटी बातां नै लेय'र आपस में लड़ता। इणीज कारण अठै जको भी बारै सूं हमलावर आयो उण नै घणी मुस्कल कोनी हुई। भक्तिकाल री जद सरुआत हुई मुगल साम्राज्य रो सूरज आभै नै आपरी जोत सूं तपावणो सरु कर दियो हो। उण बखत हिन्दुआं री आर्थिक अर

धार्मिक दसा चोखी कोनी ही। मुसळमानां में विजेता रो घमण्ड अर हिन्दुआं में हार री कुण्ठा ही। धर्म रै नांव पर आडम्बर अर दिखावो हो। मूर्ति पूजा, कर्मकांड घणो हो। तंतर–मंतर सूं अंधविस्वासी लोगां नै धर्म रै नांव पर लूटणो रैग्यो हो पण आचरण री सुद्धता पर जोर कोनी हो। हिन्दुआं में आपस में जात–पांत अर छूआ छूत रो जोर इतरो जबरदस्त हो कै साथै खाणो–पीणो तो दूर नीची जातरा लोगां री छियां भी अगर 'सवर्ण' पर पड़ ज्यांवती तो उण नै न्हावणो पड़तो। इण कारण नीची कैयी जावणवाळी जात रा लोगां आप री इच्छा सूं भी ध र्म बदळयो। जादातर इणां इस्लाम कबूल कर्‌यो क्यूं कै इस्लाम में छूआछूत कोनी ही। धर्म बदळवाण तांई लोगां पर दबाव भी दियो गयो। गैर मुसळमानां नै 'जजियो' कर देणो पड़तो।

नारी री दसा घणी खराब ही। पड़दा रो रिवाज हो। पति मर्‌यां पछै सती होणै में लुगाई जात री इज्जत समझी जांवती। दास–दासियां राखणै रो भी रिवाज हो। आदमी नै अेक सूं ज्यादा ब्याव करणै में कोई रोक–टोक कोनी ही। पुनरजलम अर कर्मवाद रो सिद्धान्त भी हिन्दू धर्म में हो।

हिन्दू धर्म में सगुण अर निर्गुण दोन्यूं धारणावां प्रचलित ही। निर्गुण निराकार ईस जद धरती पर धर्म री हाण (यदा यदाहि धर्मस्य.....) होंवती देखै, पाप बधता देखै, तो आप रै भगतां री रक्षा तांई अवतार धारण करै। इणीज कारण तुलसी आगै चाल'र – 'सगुनहि, अगुनहि नहि कुछ भेदा' कैय'र दोनुवां में समन्वय कर्‌यो।

बौद्ध धर्म हालांकि अनात्मवादी धर्म हो पण अब तांई बुद्ध नै हिन्दू धर्म में विष्णु रै नोवैं औतार रै रूप में मानता मिल चुकी ही। वैष्णव धर्म री भांत बुद्ध री भी खूब मूर्तियाँ बणी। हिन्दुआं में बहुदेव वाद रो प्रावधान हो। तेतीस करोड़ देवी–देवता हा। हरेक री पूजा रो न्यारो विधान भी हो। इस्लाम रै सम्पर्क में आणै सूं अेकेस्वरवाद नै तागत मिली। साधु–संतां रो सम्मान, सुरग–नरक, पिंडदान, सराध आद हिन्दू धर्म री खुदरी खासियत है। इण री धुरी पर ई हिन्दू री जिनगानी चक्कर काटती रैवै।

7.4.2 सैव (शैव) मत

मध्यकालीन धर्म साधना में पैली चाली आंवती धर्म साधनावां किणी न किणी रूप में जरूर मिलै। कठै–कठै तो आप रै मूळ रूपं में अर अठैई थोड़ै बदलाव साथै। ईसा रै तीन – च्यार सौ बरसां पैली जैन अर बौद्ध धर्म भारत में इण भांत फैल्या कै अै राजधर्म भी बणग्या। अहिंसा धर्म रै पालण सूं बाहरी सुरक्षा अर प्रसासनिक ढांचो दोन्यूं ई चरमराग्या। राजावां नै बौद्ध, जैन धर्म रै बजाय सैव मत जादा रास आयो।

सैव धर्म भगवान सिव री पूजा, अर्चना, आराधना सूं जुड़ेड़ो है। सिव सब सूं पुराणा आदि देव अर देवाधिदेव है। बां री मानता आर्य अर अनार्य दोनुवां में ही। पूर्व मध्यकालीन सिलालेखां में इण बात रा प्रमाण भी मिलै। सैव सम्प्रदाय सूं कीं बीजा सम्प्रदाय भी निकळ्या जिणमें पासुपात, कापालिक आद प्रमुख हैं। राजस्थान में अै मत आज भी चालै। गाँवां में इण रा निसाण कठै न कठै जरूर मिल ज्यावै। पासुपात धर्म नै मानण वाळा मिनख रै सुद्ध आचरण, सात्विक रहन–सहन आद पर जोर देवै पण कापालिक मत में आहार–विहार आद री कोई मरजाद कोनी। मांस, मदिरा, मैथुन, मत्सर आद नै बै आप री साधना रा हिस्सो मानै। मन्तर–तन्तर रो प्रयोग आम हो। बे धर्म साधना रै पड़दे लारै पापाचरण बधावै। पूर्व मध्य काल में सैव मत री अै दौन्यूं साखावां पूरै भारत में फैलेड़ी ही। सैव मत नै राजाश्रय भी मिल्यौ हो जिण सूं आम जनता भी इणरै प्रभाव में आयां बिनां नीं रै सकी। सिव नै आदि जोगी बतायो गयो। 'योग साधना' रो इण बखत इतरों बोलबालो हो कै भगती अर ज्ञान साथै भी योग सबद जुड़ग्यो। कालान्तर में बौद्ध धर्म पर भी इण रो असर पड्‌यां बिना कोनी रै सक्यो। कापालिक मत री कुछ साधना रा दोस बौद्ध धर्म में भी आया। कापालिक रै अलावा वीर सैव, लिंगायत, कस्मीरी सैव आद भी सैव मत री साखावां ही।

7.4.3 साक्त (शाक्त) मत

सगती पूजा रो भाव राजस्थान में सरू सूं रैयो है। सिव भगती रै बराबर ई सगती पूजा अर उपासना बराबर होंवती रैयी है। सगती भी प्रागैतिहासिक काल सूं पूजीजती रैयी है। मातृदेवी री पूजा इण प्रदेस री पुराणी परम्परा है। दुर्गा, चामुण्डा, चांडिका, सिंह वाहिनी, महिसासुर मर्दिनी रै रूप में पूजित आ देवी सगती री प्रतीक है। राजस्थान वीरां अर जोधावां री धरती रैयी है। जुद्ध री परम्परा रै कारण मातृदेवी री पूजा घर–घर में होंती

रैयी है। बाण माता, करणी माता, करौली माता, नागणेची जी, अम्बिका, दधीमती आद देवियाँ आज भी कुल देवी रै रूप में मानी जावै। सगती साधना इण प्रदेस में धर्म साधना रो अळगो नीं होवण वाळो हिस्सो है। साक्त मत भी दक्खण मार्गी अर वाम मार्गी साखावां में बंटग्यो। साक्त मत साथै भी सैव मत री भांत कर्मकांड जुड़ग्यो। नर बली, पसु बली दी जाणण लागी। धर्म साधना में बाहरी आचरण प्रमुख होग्यो। आतम चिन्तन, सरधा, सात्विक तरीकै सूं जीणो गौण होग्या। अेक जागां कबीरदास 'वैस्णव की कुटिया भली, साक्त की बड़गाँव' कैय'र साक्त मत री भर्त्सना भी करी हे। इण सब रै बावजूद इण मत नै मानण वाळा आज भी है।

7.4.4 बौद्ध धर्म

वैदिक धर्म में जद जिग्य अर कर्मकांड घणा बध गया अर धर्म रै नांव पर बेकसूर पसुआं री बलि दी जांवती तो घणकरा लोग दुःखी होग्या। फालतू री इण हिंसक वृत्ति सूं घिन आंवती अर नफरत भी ही। इणी'ज कारण जद 'अहिंसा परमोधर्मः' रो सिद्धान्त लेय'र बौद्ध धर्म रो प्रादुर्भाव हुयो तो लोगां दिल खोल'र इणरो सुआगत कर्‌यो। बुद्ध रा उपदेस संस्कृत में नीं होय'र आम भासा (पालि) में हा। वेदां रै कर्मकांड री जागां उपदेसां में जिनगानी नै सैजता सूं जीणै पर जोर हो। बौद्ध धर्म सिर्फ भारत में ई नीं भारत सूं बारै लंका, चीन, जापान, मलेसिया अर एसिया रै बीजै देसां में फैल्यो।

राजस्थान में भी बौद्ध धर्म री लहर आई । अठै कैई जागां 'बौद्ध विहार' बण्या। बैराट रै खण्डरां में कीं अैड़ा प्रमाण भी मिल्या है। लालसोट, चाकसू आद स्थानां पर बौद्ध विहार होणै रा पक्का सबूत मौजूद हे। झालावाड़ री गुफावां में बौद्ध धर्म रा प्रतीक देख्या जा सकै। पुस्कर हालांकि वैस्णव धर्म रो केन्द्र हो पण अठै भी कीं बौद्ध धर्म रा प्रतीक मिल्या है। राजस्थान रै दक्खणी अर पूरबी हिस्सै में ई बौद्ध धर्म रो कीं प्रभाव रैयो बाकी जागां नीं क्यूंकै बाकी जागां वैस्णव अर सैव धर्म री ज्यादा मानता ही। जादातार राजा जुद्ध प्रेमी हा इण कारण साक्तमत नै मानता। हरेक राजघराणै री आप री कुलदेवी ही।

कालान्तर में ब्राह्मण धर्म रो पुनरुत्थान हुयो। शंकराचार्य अर कुमारिल भट्ट सरीखै विद्वानां रै कारण बौद्ध धर्म पिछड़ग्यो। बीं में विकृतियाँ आगी। बौद्ध विहारां में पापाचार होण लागग्यो अर बौद्ध धर्म महायान, हीनयान सिरखै सम्प्रदायां में बंटग्यो।

7.4.5 जैन धर्म

बौद्ध धर्म री बजाय राजस्थान में जैन धर्म ज्यादा लोक प्रिय हुयो। बौद्ध अर जैन धर्म दोन्यूं समकालीन हा। दोन्यूं धर्मा रो तत्त्व चिन्तन, आचार संहिता अेक सरीकी हीं। दोन्यूं धर्म ई आतम सुद्धि अर सरीर नै कस्ट देय'र मन नै काबू करणै री प्रक्रिया पर जोर देवै। इण रै बावजूद राजस्थान में जितरों महत्त्व जैन धर्म नै मिल्यो उतरों बौद्ध धर्म नै कोनी मिल्यो। जैन धर्म अपरिग्रह, अहिंसा, अस्तेय सांच रो संदेस देवै अर जीव मात्र नै प्रेम रो सनेसो देंता थकां सरीर रै तप (काया–कळेस) पर जोर देवै। वेदां रै कर्मकांड अर जिग आद रो विरोध करै अर मिनख रै आचरण री सम्यकता अर सम्यक ज्ञान आद नै अपणावण रो कैवै।

राजस्थान में जैन धर्म रो फैलणै रो अेक कारण ओ भी है कै जैन साधु कदैई भी राजावां या राजदरबारां रो सहारो कोनी तक्यो। बै सीधा आम मिनख तक पूग्या अर आप रो सनेसो दियो। वैस्य समाज इण धर्म सूं खास प्रभावित हुयो। बां जैन सावकां नै आप रा गुरु बणाया। जैन मिन्दरां रो निर्माण करवायो। जैन सरु सूं ई पद जातरा करता रैया है। आप रै चतुर्मास में बै लोगां नै नैतिकता, अहिंसा आद री सीख देंवता। राजस्थान रै हरेक इलाकै में जैन मन्दिर या उपासरा मिल जावैला। मध्य काल में राजस्थान में जैन धर्म सिखर पर हो। राजस्थान जैन धर्म नै अणगिण साधु, आचार्य अर विद्वान दिया। राजस्थान रै सांस्कृतिक उत्थान में जैन धर्म रो महताऊ योगदान है।

आगै चाल'र जैन धर्म में भी विकृतियाँ आयगी। स्वेताम्बर अर दिगम्बर साखावां में जैन धर्म रो विभाजन होग्यो। इण में पाखण्ड अर कर्मकांड आग्या। जैन कवियाँ जिण साहित्य री रचना करी उण रै मूळ में तो भारतीय संस्कृति रैयी पण जैन कवियाँ आप री साहित्यिक कृतियाँ में आप रै धर्म रो सनेसो ई दियो। इणीज कारण रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य रै इतिहास में ज्यादातर जैन साहित्य नै धार्मिक कैयो है।

7.4.6 सिद्ध अर नाथ सम्प्रदाय

राजस्थान रै मध्यकालीन समाज पर सिद्ध अर नाथ सम्प्रदायां रो भी प्रभाव हो। बौद्ध धर्म री 'वज्रयान' साखा सूं सिद्ध अर नाथ सम्प्रदाय पैदा हुया। अलख निरंजन सिव री उपासना करै। आदिनाथ अर गोरख नाथ सिव रा औतार कैया जावै। नाथ सम्प्रदाय मध्यकाल में राजस्थान में खूब फूल्यौ। हनुमानगढ़ री नोहर तहसील में आज भी गोरख पंथ रो बड़ो केन्द्र है। तंत्र–मंत्र, जादू–टूणा सैव मत रा अंग हा बे ही, सिद्ध अर नाथ सम्प्रदाय में भी हा। सिद्ध नारी संसर्ग नै बुरो कोनी मानता जद कै नाथ नारी नै नरक रो 'दुआर' कैंवता। मछन्दरनाथ सिद्धां रा भी गुरु हा। नारी रै सम्पर्क में आणै सूं साधना सूं गिरग्या तो गोरखनाथ बां नै उबारया। गोरखनाथ मछन्दरनाथ रा चेला हा। जद कैवत चाली–'जाग मछन्दर गोरख आया'।

नाथ पंथी जोगी हठ जोग रा साधक हा। हठ जोग री बातां अे जोगी बड़ी अटपटी भासा में कैयी है। अै बातां ऊपर सूं तो बेतुकी अर अस्लील लागै पण इणां में हठ जोग रो गैरो ज्ञान है। विद्वानां इणां री भासा नै 'सांध्य भासा' कैयी है। नाथ पंथारा कई जोगी अर गोरख नाथ समाज सुधारक भी हा। जनता पर इण रो आछो प्रभाव हो। 'भक्ति आन्दोलन' रै निर्गुण सम्प्रदाय पर नाथ पंथ रो प्रभाव साफ देख्यो जा सकै है। इण में खण्डन–मंडन, सुधार वाद अर हठ जोग री जकी प्रवृत्तियाँ है, बां रो बिगसाव नाथ पंथ सूं हुयो है। आगै चाल'र नाथ अर सिद्ध दोन्यूं पंथां में ढ़ोंग दिखावो अर भोळै–भाळै लोगां नै ठग'र खाणै री प्रवृत्ति ज्यूं–ज्यूं बधती गई आं सम्प्रदायां रो पतन होंवतो गयो।

राहुल सांकृत्यायन 'नौ नाथ अर चौरासी सिद्धां' रा नांव गिणाया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इणां रै साहित्य नै सम्प्रदायिक बताय'र साहित्य सूं बारै कर दियो अर कैयो, ''उनकी रचनाओं (नाथों सिद्धों – जैनों) का जीवन की स्वाभाविक सरणियों, अनुभूतियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह साम्प्रदायिक शिक्षा मात्र है अतः शुद्ध साहित्य की कोटि में नहीं आ सकती।'' पण सगळो साहित्य अैड़ो कोनी। इणा में अैड़ो साहित्य भी घणो ई है जको भक्ति आन्दोलन नै प्रभावित कर्‌यो है।

7.4.7 इस्लाम धर्म :

भारत में इस्लाम रो आवणो अेक हमलावर अर विजेता रै रूप में हुयो। मध्यकालीन भारत में इस्लाम अेक प्रमुख धर्म हो जको राजावां, नवाबां यानी मुस्लिम सासकां री छत्रछाया में उत्तरादै अर दिखणादै भारत में खूब फळ्यो–फूल्यो। इस्लाम अेकेस्वरवाद अर बराबरी रो समर्थक है। हिन्दू धर्म में व्यापकत, छूआ–छूत अर ऊँच–नीच रै भाव रो फायदो भी इण नै मिल्यो क्यूं कै जुगां सूं मिनखां रो इण कानी झुकाव होणो सुभाविक हो। साथै ई धर्म बदळवाण तांईं मुस्लिम सासकां हिन्दू जनता पर जुलम भी खूब ढाया। राजस्थानी भासा रै प्रबन्ध महाकाव्य 'कान्हड़ दे प्रबन्ध' में मुसलमान सासकां रै जुलमां रो वर्णन बड़ो मार्मिक है।

राजस्थान में इस्लाम रो आवणो बा'रवीं सदी में हुयो। इण रो प्रमुख केन्द्र अजमेर हो। सूफी संत मुइनुद्दी चिस्ती अठै विराजता। बां आपरै नैतिक आचरण अर चमत्कारी व्यक्तित्व सूं जनता में चोखी पैठ बणाई। ब T
सीधै अर सहज तरीकै सूं जद इस्लाम रै भाईचारै, बराबरी, सद्भावना रो सनेसो दियो तो आम जनता उणसूं सूं प्रभावित हुयां बिना कोनी रै सकी। हिन्दुआं रै बहुदेववाद अर पाखंडां सूं भ्रमित होयेड़ी जनता नै जद अेकेस्वरवाद रो सीधो मारग दिख्यो तो जनता उण नै अपणा लियो। राजस्थान में जालौर, नागौर, मांडलगढ़, चित्तौड़, टोंक, अजमेर आद इस्लाम रा खास केन्द्र है। राजस्थान में इस्लाम रो जियां–जियां फैलाव हूतो गयो, जागां–जागां मस्जिदां बणण लागगी। इस्लाम रै विद्वानां रो मान–सम्मान बध्यो। जुद्ध रै बखत नै छोड़ हिन्दु–मुसळमान आपस में प्रेम अर भाईचारै साथै–रैवण लागग्या। धार्मिक सहिस्णुता राजस्थान री न्यारी खासियत ही।

इस्लाम में कीं सूफी संत अैड़ा भी हुया है जका हिन्दू धरम अर इस्लाम में तालमेल (समन्वय) बिठाणै री भी कोसीस करी। इणां में मुइनुद्दीन चिस्ती घणा महताऊ हा। मध्यकाल में इस्लाम रो प्रभाव बीजै धर्मां पर भी पड्‌यो। हिन्दू धर्म रै प्रभाव सूं बीजै धर्मां में जैड़ी जात–पात अर ऊँच–नीच री भावना पनपै ही बीं नै सुधारण री कोसीस करीजी। इणीज भांत मूर्ति पूजा अर कैई दूजा पाखण्ड भी दूर करणै री कोसीस करी गई।

7.4.8 लोक देवी–देवता

भक्तिकाल री धार्मिक पृस्ठभूमि रो अध्ययन करती बगत लोक देवी–देवतां बाबत भी जाण लेणो जरूरी है। लोक देवी–देवता लोगां री आस्था रा केन्द्र हुवै। बै वीर, त्यागी, जुझारू अर आपरै वचनां पर मर मिटण वाळा पुरख हा। जका लोक रै भलै तांई कदे भी पाछा कोनी हट्या अर मौंको पड़तां ई आप रै प्राणां री बाजी लगा दी। हर गाँव, खेड़ै अर ढाणी में आज भी अेक–दो लोक देवी–देवता री देवळी या थान मिलणो इण री लोकप्रियता रो सबूत है। लोगां री अटूट आस्था, श्रद्धा अर बिसास ई इण री आधार भूमि है। आप री इच्छावां री पूर्ति तांई लोग इणां री मनौतियाँ मानै अर पूरी हुयां पछै इणां री कड़ाही करै, पारणा करै या जातरा करै।

लोक देवी–देवता खेती बाड़ी करण वाळै करसां, मेहनत–मजूरी करणाळां मजूरां अर वीरता सूं जीवण वाळा लोगां में ज्यादा मान्या गया अर लोकप्रिय भी हुआ। पिछड़ेड़ै, दलित अर निम्न वर्ग रै लोगां नै मिन्दर आद में प्रवेस री मनाही ही। आभिजात्य धर्मां रै आचार्यां भी इणां कानी खास ध्यान कोनी दियो इण कारण अै लोक देवी–देवतावां री अराधना में लागग्या। अठै मध्यकाल में अनेक महापुरुस हुया है जकां नै हिन्दू अर मुसळमान दोन्यूं अेक भाव सूं मानै। बै देवता भी है अर पीर भी। मल्लिनाथ, देवनारायण, हड़भूजी, गोगाजी, तेजाजी, पाबूजी, रामदेवजी, केसरियाजी मेहाजी आद इणी श्रेणी में आवै। इण भाव रो अेक दूहो आज भी लोक में मसहूर है –

पाबू हड़भू राम दे, मागंळिया मेहा।
पांचूं पीर पधारज्यो, गोगादे जेहा।

इण रै अलावा घर में किणी प्रिय–जन री मौत पछै पित्तर रै रूप में मानता अर पूजा मध्यकाल सूं लै'र आज तांई परम्परागत रूप में चाल्या आवै। साथै ई बड़, पींपळ, खेजड़ी, तुळछी आद री पूजा रो आम रिवाज हो। इणां नै देव रूंख कैय'र खास मौकां पर इणा री पूजा करीजती। इणां री मानता मानी जांवती।

इण भांत राजस्थान रो मध्यकालीन धार्मिक जीवन बहुआयामी हो जिण में कुल देवता, लोक देवता, वैस्णव, सैव, नाथ भक्ति आद सूं लेय'र बीजै धर्मां रो असर हो।

7.5 दार्सनिक भोम

भक्ति काल री धार्मिक पृस्ठभूमि में आप देख चुक्या हो कै मध्यकाल में भारत में हिन्दू, सैव, साक्त, जैन बौद्ध, गाणपत्य, इस्लाम आद अनेक धर्म अर धार्मिक पंथ हा। इणा सगळै धर्मां रा आप–आप रा विचार हा पण साथै ई कैई अैड़ी बातां भी ही जकी सब में अेक सरीखी ही।

कोई भी धर्म या आन्दोलन जद ई लाम्बो चाल सकै जद उण रो आधार किणी ठोस विचार या दर्सन पर हुवै। भक्ति आन्दोलन जको चार सइकां तक जन–जन नै भक्ति री गंगा में स्नान करवांतो रैयो इण रो आध ाार उणरी विचारधारावां मध्यकालीन धर्मां री धड़कण बणी। भक्ति आन्दोलन री निर्गुण अर सगुण दोन्यूं धारावां भी ऊपर सूं चाये अळगी दिखै पण बां में समानतावां भी भोत है। इण बाबत डॉ. तारकनाथ बाली रो कैवणो है, ''ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग साधना के दो रूप हैं जो विरोधी न होकर परस्पर सम्बद्ध हैं। ज्ञान की अनुभूति ही भक्ति है। ज्ञान मार्ग पर चलने वाले आचार्यों ने भी अनुभूति पक्ष पर बल दिया है। बिना अनूभूति का ज्ञान मात्र वाक्य ज्ञान है जिससे कुछ भी सिद्ध नहीं होता।'' जका विचार आगै चाल'र भक्ति रा आधार बण्या बां रो सार में परिचै इण भांत है–

7.5.1 अद्वैतवाद

भक्ति आन्दोलन पर शंकराचार्य रै अद्वैतवाद रो प्रभाव परतख रूप सूं देख्यो जा सकै। संत काव्य री विवर्त भावना, प्रतिबिंब भावना, प्रणय भावना आद पर शंकराचार्य रै विचारां रो पूरो–पूरो प्रभाव है। शंकराचार्य रै 'एकोब्रह्म द्वितीयो नास्ति' रो भाव पूरै संतकाव्य में मौजूद है। संतमत रै मुजब जीव सुद्ध ब्रह्म तत्त्व है। दो रो भाव माया रै कारण नजर आवै। संत काव्य में आत्मा री अखण्डता, अेक रसता, अद्वैतरूपता, अवर्णनीयता आद रो प्रतिपादन शंकराचार्य रै विचारां मुजब हुयो है।

सूफी काव्य रो प्रेम तत्व या रहस्यवाद री भावना भी मूल रूप सूं निर्गुण ब्रह्म सूं जुड़ेड़ी है। शंकराचार्य

रै ब्रह्मवाद रो निर्गुण भक्ति पर प्रभाव रो जिक्र करता डॉ. तारकनाथ बाली कैवै, ''रहस्यवाद में ब्रह्म और आत्मा की भावना किसी भी नर और नारी के रूप में की जा सकती है। कबीर ने रहस्यानुभूति को एक सामान्य दुलहिन के माध्यम से व्यक्त किया है – 'दुलहिन गावहु मंगलाचार' और जायसी आदि रहस्यवादी कवियों ने विशिष्ट नायक–नायिका के प्रतीकों के माध्यम से अपनी प्रेम पद्धति का प्रकाशन किया है। निर्गुण भक्ति में निर्गुण ही भक्ति का प्रत्यक्ष आलम्बन बन कर आता है, मगर रहस्यवाद में निर्गुण ब्रह्म को प्रिय या प्रिया के रूप में व्यक्त किया जाता है। लेकिन यहाँ मूल उद्देश्य होता है – उन गोचर और स्थूल प्रतीकों के माध्यम से ही उनसे ऊपर उठकर निर्गुण ब्रह्म से मिलन के आनन्द का भोग।''

इणीज भांत 'एकोअहं बहुस्यामि' री भावना 'अेक नूर तें सब जग उपजेया' अर ब्रह्म रै सिवा दूजो कीं कोनी री भावना 'जळ में कुंभ, कुंभ में जळ है, बाहर भीतर पानी' में देखी जा सकै। कैयो जा सकै कै भक्ति आन्दोलन री पृस्ठभूमि में शंकराचार्य रा अद्वैत दर्सण रो पूरो प्रभाव भक्ति काव्य पर है।

7.5.2 अवतारवाद

श्री मद्भागवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण 'यदा यदाहि धर्मस्यग्लानिर्भवति भारतः' कैय'र अवतार वाद री पुस्टी करै। पुराणां में विस्णु रै मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परसुराम आद अवतारां रो बरणाव है। इणामें राम अर कृष्णावतार प्रमुख है। भक्तिकाल में अवतारवाद री इण भावना नै और तागत मिळी। तुलसीदास सगुण अर निर्गुण नै (सगुनहि–अगुनहि नहिं कछु भेदा) अेक ई बतावै अर उदाहरण देय'र कैवै –

अगुण अरूप अलख अज जोई
भगत प्रेम बस सगुण सो होई
जो गुण रहित सगुण सोइ कैसे ?
जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे।

सूरदास जी मुजब निर्गुण री भक्ति मुस्किल है। इणीज कारण बै ''अविगत गति कुछ कहत न आवै।'' कैय'र सगुण लीला रै पदां रो गायन करै। उणां मुजब तो सगुण भक्ति त्याग'र और किणी री भक्ति, ''परम गंग को छांड़ि पियासो, दुर्मति कूप खनावै।'' वाळी बात मानै। इण भांत पुराणां में वर्णित अवतारवाद भी भक्तिकाल री पृस्ठभूमि में है।

7.5.3 बौद्ध अर नाथ पंथ रो सून्यवाद अर हठवाद :–

नाथ पंथ पर बौद्ध धर्म अर सैव मत दोनुवां रो प्रभाव हो, आ बात पैली कैयी जा चुकी है। निर्गुण पंथ में सून्यवाद, सै'ज समाधी अर हठ जोग रो जैड़ो जिक्र मिलै बो सगळो नाथ पंथ रो है। नाथ पंथ में सून्य समाधी, गुरु मै'मा, इन्द्रिय दमन, प्राण साधना, बैराग, मन साधना, कुंडलनी जागरण आद जैड़ा तत्व है बै ज्यूं रा त्यूं ज्ञान मार्गी (निर्गुण) संतां में मिलै। गोरखनाथ रो चलायेड़ो 'षट्चक्र योग मार्ग' कबीर अर परवर्ती संतां में देख्यो जा सकै। गोरखनाथ कैयो कै धीरजवान बोईज है जिकै रो चित्त विकार रा साधन होणै पर भी विकृत नीं हुवै। बां मुजब अमूर्त में ई मूर्त बसै –

नौ लख पातर आगै नाचै, पीछै सहज अखाड़ा।
ऐसो मन लै जोगी खेलै, तब अंतर बसै भंडारा।।
अंजन माहीं निरंजन भेंट्या, तिल मुख भेंटया तेलं।
मूरति माहीं अमूरत परस्या, भया निरन्तर खेलं।।

आं उदाहरणां नै देख'र कैयो जा सकै कै संत काव्य पर नाथ पंथ रै सिर्फ भाव पक्ष रो प्रभाव ई कोनी पड़्यो बल्कै छन्द अर सबदावली तक रो असर देख्यो जा सकै।

7.5.4 अेकेस्वरवाद :–

इस्लाम सूं पैली हिन्दुआं में बहुदेव वाद हो। इस्लाम में 'अेकेस्वरवाद' री मानता ही। गीता में श्रीकृष्ण भी कैयो है भगत म्हांरी जैड़ै भावं सूं पूजा अर्चना करै म्हूँ उण रूप में दरसण देऊँ। ओ अैड़ो बिन्दु है जठै आय'र

बहुदेव वाद खतम हुय जावै। हिन्दुआं में तेतीस करोड़ देवी–देवता हा। इण कारण आपस में खूब खींचताण भी है। अेकेस्वरवाद रै प्रभाव सूं आगै चाल'र तुलसीदास जैड़ै भक्त कवियाँ नै समन्वय री प्रेरणा मिली। ईस्वर अेक है कृष्ण, राम, अल्लाह आद उण रा अलग–अलग नांव है।

7.5.5 अहिंसावाद

वैदिककाल में जिग अर अनुस्ठानां रै नांव पर घणी पसु बली दी जांवती। बौद्ध अर जैन धर्म रै उद्भव पछै हिंसा घणी कम होगी। इण रो प्रभाव आगै चाल'र भक्ति आन्दोलन पर भी पड्यो। संत या भक्त अहिंसा रा पुजारी हा 'वसुधैव कुटुंबकम्' री भावना नै मान्या करता। कबीर अैड़ै संतां तो मुसलमानां में कुर्बानी अर हिन्दुआं में बलि रो खूब विरोध कर्यो है। कबीर लिख्यो है–

(1) दिन में रोजा रखत है रात हनत है गाय

या

(2) बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।

जो नर बकरी खात हैं, तिनको कौन हवाल।।

7.5.6 विधि–निसेध :

संत काव्य में खण्डन–मण्डन अर विधि–निसेध भी खूब मिलै। संतां रो मानणो हो कै आचरण री सुद्धि बिना नाम जपणै रो कांई महत्त्व है। कबीर कैवै –

पंडत वाद वदन्ते झूठा।
राम कह्यां जे हरि मिलै, खांड कह्यां मुख मीठा।

मूरती पूजा पर व्यंग्य करता कबीर कैवै –

पाहन पूजे हरि मिले, पूजूं जाय पहार।
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार।।

इण भांत बां प्रचलित मानतावां जकी अंध विस्वासां सूं जुड़ेड़ी ही अर मिनख री चेतना बांनै तर्क री कसौटी पर कस'र नीं स्वीकारै, उणरो संतां खूब विरोध कर्यो। इण रा बीज सिद्ध नाथ अर जैन साहित्य में मिलै। संत कवियां आडम्बरां पर चोट करी है बा चाणचक्क कोनी ही, इण सूं पैली नाथ पंथी साधुआं में भी ओ ही काम कर्यो हो।

7.5.7 मानवतावाद

भक्ति साहित्य मानवतावादी साहित्य है। ओ मिनख नै अंध विस्वासां सूं काढ'र अेक परमसत्ता सूं जोड्बो चावै। जात, धर्म, सम्प्रदाय सूं ऊँचो उठाय'र मिनखपणै रै सामान्य धरातल पर मिनख नै खड्यो करै। आर्थिक क्षेत्र में 'सांईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।' कैय'र समानता ल्यावणै री कोसीस करी। अै सगळा तत्त्व बां अठां री परम्परा सूं ग्रहण कर्या है।

इणीज भांत भक्ति काल री पृस्ठभूमि में अनेक विचारधारावां है जिण रो समन्वय भक्त कवियां आप रै काव्य में कर्यो है।

7.6 इकाई रो सार

इण भांत आप जाण चुक्या हो कै भक्तिकाल री पृस्ठभूमि में वैष्णव, सैव, बौद्ध, साक्त, जैन, इस्लाम आद धर्म अर सम्प्रदाय हा। भक्त कवियां आं सब सूं 'छाज' री भांत सार–सार ग्रहण कर मानवता रै कल्याण रो मार्ग दिखायो। भगवान सिव री भांत भक्त कवियाँ खुद हलाहल पीय'र जन–जन नै अम्रित पान करवायो। भक्ति काल सूं पैली आं मतां नै मानणवाळा आपस में अेक–दूजै सूं वैर–भाव अर ऊँच–नीच राखता पण भक्त कवियां 'उळटा–सीधा नीपजै ज्यों खेतन में बीज' कैय'र राम रै नांव री मैहमा बताई अर हर मिनख तांईं भक्ति मार्ग सुलभ करायो।

भक्ति आन्दोलन रो आधार मूलतः भारतीय दरसण है जिण रो प्रयोग भगत या संत कवियां अैड़ै सहज ढंग सूं कर्‌यो है कै बीं री समझ आम मिनख तक पूगी। 'हरि को भजे सो हरि को होई' कैय'र इण भक्ति धारा मिनख–मिनख नै जोड़णै रो काम कर्‌यो। आज प्रचार–प्रसार रा इतरा साधनां रै बावजूद मिनखपणै पर खतरो मंडरांवतो दीसै। अै खतरा जुद्ध रा भी हो सकै अर अेक–दूसरै पर आप रो हक जमाणै रा भी। लागै अब अेक और भक्ति आन्दोलन री जरूरत है।

7.7 अभ्यास रा प्रस्न

1. मध्यकालीन भारत में कुण–कुणसा धर्म प्रचलित हा ? साररूप में लिखो।
2. भक्तिकाल री पृस्ठभूमि में इस्लाम अर बौद्ध धर्म रो कांई योगदान है ?
3. भक्तिकाल री धार्मिक पृस्ठभूमि पर अेक लेख लिखो।
4. भक्तिकाल री दार्सनिक पृस्ठभूमि पर अेक लेख लिखो।

7.8 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्ति कालीन काव्य।
2. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भक्ति और रीति कालीन मुक्तक काव्य।
3. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में राम कथा।
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
5. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।

इकाई – 8

पूर्वी राजस्थान रा प्रमुख संत–सम्प्रदाय

इकाई रो मंडाण –

8.0 उद्देस्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 दादू पंथ

8.3 राम स्नेही सम्प्रदाय

8.4 बिश्नोई सम्प्रदाय

8.5 नाथ सम्प्रदाय

8.6 जसनाथी सम्प्रदाय

8.7 निरंजनी सम्प्रदाय

8.8 निम्बार्क सम्प्रदाय

8.9 लालदासी सम्प्रदाय

8.10 वरणदासी सम्प्रदाय

8.11 गूदड़ पंथ

8.12 अलखिया सम्प्रदाय

8.13 आई पंथ

8.14 इकाई रो सार

8.15 अभ्यास रा प्रस्न

8.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

8.0 उद्देस्य–

इण इकाई लेखन रो उद्देस्य है–

1. मध्यकाल री संत–साहित्य परम्परा री जाणकारी करावणी।
2. राजस्थान रै संत समप्रदायां री पिछाण री विगत मांडली
3. निरगुण–निराकार भगती रौ समाज माथै होवणवाळै प्रभाव नै दरसावणो।
4. 'दादू पंथ' अर राम 'स्नेही पंथ' बाबत जाणकारी पाठक लग पुगावणी।
5. 'नाथ सम्प्रदाय' रा आदिनाथ अर दूजा संतां री मंडळी सूं परिचै करावणौ।
6. 'विश्नोई सम्प्रदाय' रा प्रवर्त्तक जांभैजी रै आदस अर सिद्धान्तां रै महताऊ सरूप रौ ग्यान करावणौ।
7. 'निम्बार्क सम्प्रदाय' री प्रमुख पीठ अर कवियां रौ परिचै करावणौ।
8. 'संत' सबद री व्याख्या अर महत्त्व बतलावणौ।
9. 'चरणदासी सम्प्रदाय' अर 'आईजी पंथ' रै विचारां सूं ओळखाण करावणी।
10. राजस्थानी संत सम्प्रदायां रौ राजस्थानी समाज माथै विचारां, नैतिक आचरणां अर भगती री सगती रौ प्रभाव दरसावणौ।

11. सम्प्रदायां मांय आधुनिक संत 'बनानाथ', 'नवलनाथ' अर 'विवेकनाथ' री काव्य–प्रतिभा रौ परिचै करावणौ।

8.1 प्रस्तावना :

राजस्थानी साहित्य रौ मध्यकाल संत परम्परा सारू घणो महताऊ है। निरगुण भगती धारा मांय संत सम्प्रदायां रौ उदय होयो। आं संतां जन साधारण वास्तै सत रौ मारग दरसायौ। अध्यात्म री सगळी विसेसतावां रौ खुलासौ कर्‌यौ अर मोकको साहित्य रच्यौ राजस्थान रासंत पंथां (सम्प्रदायां री विगत नीचै मुजब है–

संत–सम्प्रदाय / पंथ	प्रवर्त्तक	ठिराणौ अर दायरौ
1. नाथ	गोरखनाथ	सगळौ राजस्थान
2. रसिक (रामावत वैरागी)	अग्रदास	रैवासा अर जैपर
3. बिश्नोई	जांभोजी	पीपासर, मुकाम, संमराथल, जांगळू प्रदेस
4. जसनाथी	जसनाथ	कतरियासर
5. निरंजनी	हरिदास	डीडवाणो, नागौर, जोधपुर
6. दादूपंथ	दादूदयाल	नरैना, जैपर, शैखावाटी
7. लालदासी	लालदास	नगला, रसगण, अलवर, भरतपुर
8. चरणदासी	चरणदास	दहरा, अलवर, जैपर
9. रामस्नेही	रामचरण	शाहपुर, भीलवाड़ा, उदयपुर
10. रामस्नेही	दरियावजी	रैण, नागौर, जोधपुर
11. रामस्नेही	हरिराम	सिंहथळ, बीकानेर
12. रामस्नेही	रामदास	खेड़ापा, नागौर, जोधपुर
13. अलखिया	लालगिरि	बीकानेर
14. गूदड़पंथ	संतदास	दांता, भीलवाड़ा
15. आईपंथ	जीजीदेवी (आईजी)	बिलाड़ा, पाली, जोधपुर

8.2 दादू पंथ :

दादूपंथ चलावणिया संत दादूदयाल हा। 'दादू जीवन चरित्र' (हस्त लिखित ग्रंथ कं 31519 राज. विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर) आचार्य क्षितिमोहन सेन (दादू उपक्रमणिका) अर आचार्य पी. डी. बडथ्वाल मुजब दादू दयाल रौ जलम गुजरात रै अहमदाबाद नगर मांय वि.सं. 1601 (फाल्गुन शुक्ला अष्टमी गुरूवार) मान्यौ जावै। दादू सारू मुसलमान या धुनिया या ब्राह्मण मान्या जावै। स्वामी दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास) मांय दादू नै 'तेली बतावै, पण दादू महाविद्यालय रजत जयंति ग्रंथ मुजब अै लोदीराम नामक नागर ब्राह्मण रा रा पाळयोड़ा बेटा हा। डॉ. मोतीलाल मेनारिया अर डॉ. हीरालाल माहेश्वरी इणां नै धुनिया मानै पण बै जात–पात रै बंधण सूं घणा ऊंचा महामानवी हा। संत खातर

कहीज्यौ है ''जाति न पूछौ साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।''

दादू जी रो ब्यांव सात बरस री उमर में होयौ पण बांरै मन मांय ईस भगती में रम्यो। ग्यारह बरस री आयु मांय एक गुरू बुढ्ढन यानि ब्रह्मानंद जी मिळ्या। उणांरा बै चेला बणग्या अर विचार मंथण–चिन्तन–मनन मांय उणांरौ मन लागग्यौ।

दादूजी अहमदाबाद छोड़'र राजस्थान मांय आयग्या। बै आबू पूग्या, फैर कर डाला गया। बठै छः बरस कठौर तप–साधना करी। पछै दादूजी सांभर आया। बठै रा लोग उणांरी विचार–धारा सूं घणा प्रभावित होया।

अठै घणखरा लोग उणां रा चेला बण्या।

संवत् 1632 मांय बे आमेर पूग्या अर बठै सूं सीधा नरैणा पूग'र आसरो बसायो। राजस्थान री भोम उणां री करम अर साधना री भोम बणगी। अठैई आपरौ आखो जीवण बीत्यौ। आपरौ निधन वि. सवंत् 1660 (ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष री अष्टमी) रै दिन होयौ अर उणां रौ अंतिम संस्कार 'भैराणा' री पहाड़ी माथै होयो, जको आज ताई पवित्तर अर पूजा योग स्थळ बाजै।

इणा री ''दादूवाणी'' पोथी जगचावी है। जिण मांय पद, साखियां सागै ग्यान, दर्सण, री सीख मिळै। दादूजी रा दरसण संबंधी विचार : संत दादू कैवै – परमेसर पर ब्रह्म, स्वयं भू, निराकार, परम ज्योति रूप माया सूं परै सुस्थिर सदा अेक रस है। जीव वास्तव में ब्रह्म रौ ई अेक रूप है, पण मिनख माया रै आवरण सूं 'मूळ' नै नी पिछाण पावै।

ईस निराकार है, उणां रै हाथ, पांव, माथौ अर मूंडौ कोनी, पण सगतीमान अर समर थवान है। माया रौ पड़दौ हटते ई आतमा–परमातमा रौ मिळण होय जावै। मन सदैव थिर कोनी रैवै बो अचपळो हावै। मन नै अेक जागां राखणो ही मन नै पकावणो है।

काचा मन देह दिसिफिरै, चंचळ चहूँ दिसि जाई।
जब दिल मिला दयाल सो, तब अन्तर कुछ नाहि।
ज्यौं पाता प्राणि को मिला, ज्यो हरिजन हरि मांहि।।

दादू मानै है कै जगत् रौ सिरजणहार ईस्वर ई है, पाँच तत्वां सूं सिस्टी रौ बणी है जिण मांय कै जगत् रा सिरजण हार ईस्वर री उपासना अर सत् करम सूं ई मानवी जीवण में मोखं (मोक्ष) मिलणौ संभव होवै। साचौ गुरू ही अग्यान रूपी अंधारों मिटावै, ईस्वर रा दरसण करावै अर आप रै सबदां सूं चेलां नै भवसागर सूं पार उतारै।

दादू सतगुरू अैसा कीजिये, राम रस माता।
पार उतारै पलक में, दरसन का दाता।।

अहं (म्है) रौ त्याग अर नास होवण सूं परमातमा रा दरसण होवै। साधु संगति सूं ग्यान अर भगती रै उदय होवै।

जहां राम तहँ मैं नही, मै तहँ नाही राम
दादू महल बारीक है, द्वै को नाही ठाम।।

दादू पंथ मांय च्यार तरै रा साधु होवै – (1) खाकी (2) विरक्त (3) थांभा धारी (4) नागा।

सगळा साधुआं मांय 'नरैणा' रै महंत रौ बड़ो रूतबो मानीजै। 'नरैणा' मांय फाल्गुन सुदि चौथ सूं द्वादसी ताई मेळौ लागै, जठै सगळा दादूपंथी आवै। 'दादूवाणी' पोथी मांय दादूजी रा उपदेस अर सीख भरपूर दियौड़ी है। दादू दयाल रा पदां अर साखिंया रौ घणो महत्त्व है।

संत दादू रा चेला मोकळा होया है जका घणी रचनावां लिखी है जिणा मांय 'भगती' प्रधान रैयी है। बखना जीः (1553–1623) दादू पंथ री 'नरैना' पीठ सूं जुड़योड़ा भगत हा। इणां सबद वाणी रै जरियै ग्यान री सीख लोगां ताई पूगवायी। उणां री साखियां अर पदां री भासा सरल, सहज अर सुबोध है। देखीजै–

'बखना' हरि जल बरसिया, जल थल भरै अनेक।
करम कठोरां माणसां, रोम न भीगी एक।।
पय पाणी भैळा पीवै, नहीं ग्यान को अंस।
तजि पाणी पय नै पीवै, 'बखना' साधु हंस।
संत रज्जब – संत रज्जब सांगनेर रा पठान मुसलमान हा।

बठै बे व्यांव सारू 'आमेर' पूग्या। उणां दादू दयाल री 'साखियां' सुणी अर व्यांव रौ विचार छोड़'र दादूजी रा चेला बणग्या। दादूजी रै निर्वाण पछै बे आख्यां बंद कर ली अर मिरतू लग खोली ही कोनी। रज्जब जी रो

स्वर्गवास सन् 1689 में होयौ। इणां री रचनावां 'वाणी' अर सर्वंगी घणी चावी है बां मांय दर्सण, ग्यान अर कवित्व रौ परिचै मिळै।

डॉ. मोतीलाल मेनारिया, रज्जब रै बारै में लिखै है ''इनकी कवित्व शक्ति, ज्ञान गरिमा और गुरु भक्ति का अच्छा परिचय मिलता है। इणां री भाषा पिंगल अर कविता हृदयग्राही है।''

सुन्दरदास (जनम सन् 1595 अर निधन सन् 1689) इणां रौ जलम दौसा (जैपर) मांय होयो। फतहपुर मांय गुरू भाई प्रयागदास सागै रिया। रचनावां मांय ग्यान अर दर्सण भर्‌यौ पड़ियौ है। बै अूंचै दरजै रा संत अर कवि हा। बै बाल ब्रह्मचारी हा। इणारी रचनावां 'ज्ञान समुद्र, सर्वांग योग पंचेन्द्रिया चरित्र, सुख समाधि, स्वप्न प्रबोध, वेद विचार' आद प्रमुख रैयी है। इणां नै केशवदास री 'रसिक प्रिया' आछी कोनी लागी।' बे लिख्यौ है–

'रसिकप्रिया', रस मंजरी और सिंगारहि जानि।
चतुराई करि बहुविधि, विषै बनाई आनि।।

गरीबदास – गरीबदास दादू रा बेटा अर उत्तराधिकारी हा। इणां री रचनावां मांय साखी, पद, अणभै प्रबोध, अध्यात्म बोध आद प्रसिद्ध है। साहित्य री दीठ सूं इणां री रचनावां अूंचै दरजै री है।

जनगोपाल – जनगोपाल फतहपुर सीकरी रा वैस्य हा, अर दादूजी सूं दीक्षा लीवी। इणां री रचनावां मांय 'दादू जन्म लीला, परची, ध्रुव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, भरत चरित्र, मोह विवेक, साखियां, पद' आद प्रमुख है। संत कवियां री रचनावां सूं दादू पंथ रौ घणो विस्तार होयो।

दादू पंथ रै कविया मांय जगन्नाथदास, जगजीवन, दामोदरजी, भीखजन, संतदास, खेमदास, राघवदास, वाजिदजी, अर मंगलराम आद खास है। इण समै संत–साहित्य भण्डार मांय बढोत्तरी हुई अर ग्यान अर भगती रौ प्रभाव जनता रै माथै घणो पड़ियो।

8.3 राम स्नेही सम्प्रदाय :

'राम' री भगती अर भगती सारू समपरण भाव ई राम स्नेही, सम्प्रदाय रौ महताऊ आधार। मान्यौ जावै है के रामानन्दजी 1299–1410 रै विचाळै इण सम्प्रदाय नै सरू कर्‌यौ, जिण मांय ग्यान, सत करम अर समरपण भगती भाव रौ मूळ सरूप राखीज्यौ। रामानंद जी रै चेला मायं 'अनन्तानंद अर सुखानन्द नामी हुया। आं दोनुवां री मंडळी मोकळा चेला नै रामानन्द जी रै राम–स्नेही सम्प्रदाय में दीक्षा दिरावता रैया। राजस्थान मांय चारपीठा री थरपणा सारू आचार्य होया जिणा में अनन्तानंद जी री मंडळी मांय कृष्ण पयाहारी, कील्हदास (गलता), अग्रदास (रैवास), नारायणदास, प्रेम–भूरा, रामदास, नारायणदास (छोटे), संतदास (दांतड़ा, मेवाड़, प्रेमदास कृपाराम) दिवाकर, पूरणमलवजी, दामोदरदास, मोहनदास, माधोदास, सुन्दरदास, चरणदास (कोडमदेसर), जयमलदास (रोड़), हरिरामदास (सिंहथळपीठ) राम–स्नेही सम्प्रदाय नै अे संत आगै बढावता रैया।

इण सम्प्रदाय रा प्रमुख गढ़–शाहपुरा, खेड़ापा अर रैण बतावै। इणां रा अनुयायी निरगुण परमेसर राम नै ई मानै। राम–स्नेही साधु 'रामद्वारे' मांय ई रैवै। अै साधु लंगोटी रै सिवाय सरीर माथै काई कपड़ौ नीं ओढ़ै। अे भीख मांग'र भोजन करता रैवे। सिंथळ रौ राम–स्नेही सम्प्रदाय हरिरामदास मांय सूं निसयोड़ा मान्यौ जावै। अै सिंथल (बीकानेर) मांय जलम्या अर वि. सं.1743 मांय रामानन्दी साधु जैसलदास जी सूं (दुलचासर) बीकानेर मांय दीक्षा लिवी।

रैण (मेड़ता) रा रामस्नेही 'दरियावाजी' नै आपरा आदि गुरु मानै। दरियावाजी रा दरसण करण सारू उणां री भगत चैत सुदी पूर्णिमा नै भैळा होवै। दरियावजी री रच्योड़ी 'वाणी' नांव री पोथी मांय दस हजार पद अर दूहा मिळै।

'खेड़ापा रा राम स्नेही' सम्प्रदाय रामदास जी सूं संबंध राखै। उणां वि. सं. 1752 मांय सिंथल साखा रै हरिरामदास जी सूं दीक्षा लीवी अर वि. सं. 1763 मांय खेड़ापा साखा री थरपणा करी। रामदास जी री 'वाणी' सरल राजस्थानी भासा मांय रचीज्योड़ी है। इण मांय 1700 साखी (दूहा), 72 हरजस अर 24 कवितावां हैं। पछै

उणां रा पुत्र दयालुदास गद्दी रा मालिक बण्या।

रामस्नेही सम्प्रदाय रै सिद्धान्तां मांय सगळां सूं पैला गुरु–वंदना अर गुरु–भगती माथै जोर दियौ है अर रामनाम सुमरण ई सबसूं बत्तौ लखावै। मूर्तिपूजा बाहरी आडम्बर, तीरथ–स्नान माला, छापा अर तिलक सारू कबीर री तरै विरोध करै। संत दरियाव जी कैवै –

कंठी माला काठकी, तिलक गार का होय।

जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुंचे कोय।।

स्वामी रामरचण जी री मान्यता ही कै राम ई सगळी जागां रमण करण वाळा है। उणां रौ सरूप निरगुण निराकार होवै। बां संत्सग माथै घणौ जोर दिरायौ। बै लिखै –

रामचरण आनन्द अति, निर्भय आठू जाम।

सो सुख है सत्संग में, सो नहीं दूसरी ठाम।।

सिंहथळ साखा रा प्रवर्तक हरिराम दास जी गुरुपद रौ महताऊ भाव दरसायौ। ईस्वर रै पछै गुरु री पूजा ई करणी चाहिजै।

हरिदास जी कैवै 'रा' अर 'म' नै जाण्या बिना वेद–पुराणं रो ग्यान थोथो अर खोखलौ बाजै।

''एक ररै ममै बिन जाण्यां, थोथां वेद पुराणी।'' जीव रौ मिळण 'शिव' सूं होय जावै जद जलम–मरण रौ चक्र छूट जावै।

राम स्नेही संत अर उणांरी काव्य रचना न्यारी दीखै। इण–राम स्नेही सम्प्रदाय मांय मोकळा संत होया है, जिणामें रामचरणजी, हरिराम, नारायणदास, परशुराम, हरिदेवदास, पूरणदास, अर्जुनदास, सेवगराम अर बालकराम आद खास है।

रामचरणजी रै चेलां री संख्या घणी है। उणां रो वाणी ग्रंथ सगळां सूं महताऊ कहीजै–

''रामहि राम अखंडित ध्यावत, राम बिना सब लागत खारो।

रामहि राम लियां मुख बोलत, राम ज्ञान अरू राम विचारो।।

रामहि राम करै उपदेस हि, राम हि जोगरू जिग्य पसारो।

राम चरण इसे कोई साधु है, सो ही सिरोमणी प्राण हमारो।।''

रामदास – (जन्म वि. संवत् 17983) – रामदास जी रौ जलम् जोधपुर मांय होयौ। बे बालपणै सूं ई संसार सूं वैरागी हा अर सद्गुरू री सोध सारू लागग्या। उणां रा बारह गुरू होया। फैंरू ई सान्ति कोनी मिली। संत हरिरामदास जी री वाणी सुणतां पाण ई आप उणा रै कनै पूग्या अर बां नै गुरू बणायां। उणां 'खेड़ापा' पीठ री थरपणा की। वां रा ग्रंथ है 'गुरूमहिमा', भक्त माल, चेतावनी, जमफारगती आद।

दयालराम – संत दयालदास जी संत रामदास जी रा बेटा हा। बै खेड़ापा पीठ रा उत्तराधिकारी होया। संत अर कवि होवण रै साथै ही आपरी भगती अर काव्य–खिमता अद्भुत ही। आप 'करूणासागर' ग्रंथ रच्यो – जिणरो नमूनो देखीजै –

रामइया सरणं की प्रतिपाल।

अब लगि करी सोई अब कीजै अपने धर की चाल'

जो सूरज परकासै नहीं रात न कूंज विसाल,

ससि नहीं अमी द्रवै जो माधव तो निपजै को रसाल,

विरह कुमोदिनी जीवन सोई, सब लालों सिर लाल।

द्यालबाल कै सिमरथ स्वामी रामदास किरपाल।

संत दरियावाजी (जन्म वि. संवत् 1733) आप जोधपुर रै जैतारण गांव मांय जलम्या। इणा री जाति बाबत मत–मतान्तर है। केई आं नै मुसलमान अर केई धुनिया मानै। इणां राम स्नेही सम्प्रदाय री 'रैण' पीठ री थरपणा करी। आपरी वाणी मांय 10,000 पद अर साखियां मिळै – आप लिखै –

गुरु आए धन गरज करि, सबद किया परकास।

बीज पड़ा था भूमि में, भई फूल–फल आस।।

इण तरै रामस्नेही सम्प्रदायां रा दरियावजी (रैणपीठ) रामचरणजी (शाहपुरा पीठ) रामदासजी खेड़ापा पीठ, हरिरामदासजी (सिंहथळ पीठ) रा प्रवर्त्तक होया है। रामस्नेही सम्प्रदाय रा संत तनमन अर वचन सूं मानखै री सेवा सारू हमैस त्यार रैवे अर निरगुण–निराकार राम रो स्मरण करता रैवे।

8.4 बिश्नोई सम्प्रदाय (1451–1536 ई.) :

बिश्नोई सम्प्रदाय राजस्थान मांय घणो महताऊ सम्प्रदाय है। इण सम्प्रदाय मांय जात–पांत, ऊंच–नीच, छूत–अछूत अर धरम रै मत–भेदां नै भुलाय'र धरम नै मिनखपणै (मानवता) रै नजदीक लाय'र खड्यो करियौ है। बिश्नोई सम्प्रदाय रा संतां मिनख जमारै नै धरम री सही ओळखाण करायी और समाज रौ नैतिक स्तर ऊंचौ उठावण रौ काम करियौ।

बिश्नोई सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक जांभोजी रौ जलम नागौर रै पीपासर गांव मांय वि.स. 1508 (ई. 1451) री भादवा बदी अस्टमी सोमवार रै दिन होयौ। आप पंवार राजपूत हा। माता रौ नांव हांसादेवी भाटी अर पिता रौ नांव लोहट जी हौ। जांभोजी माता–पिता री अकला संतान हा। आप बालपण सूं ई चिन्तण, मनन सीळ धारी अर कम बोलणवाळा हा। 16 बरस री आयु मांय आप री गुरू सूं भेंट होयी। लोक मान्यता है कै जांभो जी गुरु गोरखनाथ जी सूं सीख लीवी। अै बाल ब्रह्मचारी हा। मां–बाप री मिरतू पाछै घर छोड्यो अर संभराथळ आय'र रैयग्या।

विक्रम संवत् 1542, कार्तिक बदी अस्टमी रै दिन आप विश्नोई सम्प्रदाय री थरपणा करी। पैली पीठ री थरपणा करता थंका आप सत्संग रै उपदेसा सूं सगळी जनता नै निरगुण भगती री महीमा बताई वि.सं. 1591, नवमी रै दिन आप स्वर्गारोहण करियौ। तालवा गांव रै नजीक समाधिस्थ हुया। इण धारमिक स्थळ नै ई 'मुकाम' कैवै। बिश्नोई सम्प्रदाय सारू ओ पावन–तीर्थ मानी जै।

जांभोजी रा भगती दरसण अर सीख सारू 'उणतीस बातां' घणा महताऊ है।

'उन्नीस धर्म की आंकड़ी, हृदय धरियो जोय।

जम्भेश्वर कृपा करे, बहुरि जनम न होय।।'

जांभोजी री रा 29 नियम नीचै मुजब है –

1. रोजाना स्नान करणो।
2. 30 दिन तक सूतक मानणो।
3. 5 दिन ऋतुमयी नारी नै घर का काम सूं दूर राखणी।
4. सील री पालन करणी।
5. सन्तोस नै अपनावणो।
6. बारै मन में अर बारै पवितत्रता राखणी।
7. तीन समय आरती अर हरिगुण गावणो।
8. सांभु रा आरती करणी।
9. निस्ठा अर प्रेम भाव सूं हवन करणो।
10. पाणी ईंधन अर दूध छवण'र काम में लैवणो।

11. वाणी रो संयम राखणो।

12. क्षमा, दया धारण करणो।

13. चोरी नहीं करणी।

14. निंदा नही करणी।

15. झूठ नहीं बोलणो।

16. वाद–विवाद नहीं करणो।

17. अमावस्या रा व्रत राखणो।

18. विष्णु रो भजन करणो।

19. जीवां पर दया राखणी (न हिंसा करणी अर न किणी नै करण दैवणी।

20. हरा पेड़ नै नहीं काटणो ।

21. काम, क्रोध, मोह छोडणो।

22. रसोई हाथ सूं बणावणी।

23. परोपकारी पशुवां री रक्षा करणी।

24. बैल नै कस्सी नहीं करणो।

25. अमल नहीं खावणो।

26. तम्बाकू रो त्याग कारणो।

27. भांग नहीं पीवणी।

28. दारू में करणो।

29. नील रो त्याग करणो।

जांभोजी नै उणतीस नियमां सूं मानव नै आदर्स वणावण री कोसीस करो।

इण भांत बिश्नोई सम्प्रदाय मांय मोकळा संत होया जिणा जांभोजी री ''सबदवाणी'' 'जम्भवाणी' अर 'जम्भगीता' आद रचीजी।

विल्हौली जी इण सम्प्रदाय सारू साहित्य रच्यौ जिणमांय सात कथावां (धढाबंध, औतार पन, गुगळिये की, पुळोजी री, दोणपुररी, जैसलमेर री अर झोरदान री) ही अर जांभो जी रौ जीवण चरित आखरां ढळ्यो। कथा ज्ञान चारी, सच अखरी विगतावली बिसन छतीसी अर हरजस, साखियां अर छप्पय री सिरजणा हुई। जांभोजी सम्प्रदाय मांय दूजा कवि संत भी हुया यूं – तेजोजी चारण, समसदीन, शिवदास, अभियादीन कान्होजी बारठ, केसोदास गोदारा, सुन्दरदास पूनिया, हरजी बनियाल, परमानंद, हरचंद दुखिया आद। इण रै सागै दीन सुन्दरदास दुरगादास, रामू खोड़, गोकल रामजी अर गोविन्दराम आद सामिल है।

8.5 नाथ सम्प्रदाय :

(11वीं सदी) भगवान शिव ने आदिनाथ मानता थकां नाथ सम्प्रदाय री थापणा होयी। गौरखनाथ जी इण सम्प्रदाय रा प्रमुख प्रर्वत्तक हा। पैलां साधना पद्धति बणी अर पाछै सम्प्रदाय रौ सरूप धारण हुयो। इण पंथ मांय हठ योग अर काया सिद्ध माथै जोर दियौ गयौ।

गौरखनाथ सूं सरू हुयी परम्परा बारह भागां मांय बटगी – बां रौ नांव नीचे मुजब है–

(1) सत्यनाथी (2) रामनाथी (3) पाकल नाथी (4) पावपंथी (5) धर्मनाथी (6) माननाथ (7) कपीलानी (8) गंगानाथी (9) नाटेस्वरी (10) आई पंथी (11) वैराग्यपंथी (12) रावलपंथी

नाथपंथरी अे साखवां अलग अलग लागै पण मूळभावना एकसी है। इतिहास अर साहित्य मांय नाथ परम्परा रौ महताऊ योगदान रैयो है।

गोरखनाथ, चटपटनाथ, जलधंरनाथ आद–संत नाथ पंथ रा जोग अर सिद्ध पुरस हा। नाथ सम्प्रदाय मांय पृथ्वीनाथ नामी कवि होया है। नाथ कवेसरां रा पैलां कम ग्रंथ मिळ्या पण अबार लगैटगै 25 ग्रंथ ओर सामी आया है जकां में – साध्य परीख्या, निरंजन निर्वाण, भक्ति वैकुण्ड, प्राण पच्चीसी, सीख सम्बोध आत्म परची, ज्ञान पच्चीसी अर भरम विधूंस आद। अे ग्रंथ नाथ साधना अर दरसाण री जाणकारी करावै।

19वीं सदी रा नाथपंथ रा कवियों मांय बनानाथ, नवलनाथ, उत्तमनाथ अर विवेकनाथ रौ नांव धणैमान उल्लेखण जोग लागै। राजस्थान री धरा संता–भगतां री धरा है। इतिहास अर साहित्यरी दीठ सूं इण सम्प्रदायं रौ घणौ महत्व है।

8.6 जसनाथी सम्प्रदाय :

संत–जसनाथ कतरियासर गांव (बीकानेर) मांय 1500 ई. रै लगैटगै जसनाथी सम्प्रदाय री थारपणा करी। इण सम्प्रदाय मांय 35 सिद्धान्त होवै। जसनाथ जी रोजीना हवन–यग्य करण री बात कैवता अर अवतारवाद मांय भरोसौ राखता। योग अर वैष्णव विचारधारा माथै आस्था राखता थकां उणां री विसेसतावां ही कै जसनाथी नंगे पांव आग माथै निरत करता रैवै। 'आग माथै नाचणै री साधना सूं ओ पंथ जग चावो हुयो।

जसनाथ जी रा पद ही जंसनाथी वाणी रै रूप में चावा हुया।

जसनाथ जी री वाणी मांय 50 'सबद' मिळै। जसनाथ जी जांभो जी रै समकालीन हा। इणां रौ जलम वि.सं. 1539 (कार्तिक शुक्ला एकादशी) नै कतरियासर मांय होयौ। आप हमीर जी जाट अर उणां री जोड़ायत रूपादे रा पाळयौड़ा बेटा हा। मान्यौ जावै कै जसनाथजी मारग मांय पड्या मिळ्या। 12 बरस री अवस्था मांय इणां गुरू गोरखनाथ सूं दीक्षा लीवी ही। इण बाबत दूहौ है –

संवत पनरै सौ इक्यानवै, आसोजी सुदपाय'

वां दिन गोरखनाथ सूं, जसवंत जोग पठाय''

योग साधना मांय लीन होयोड़ा वि.सं. 1563 (आश्विनी शुक्ला सप्तमी) रै दिन 24 बरस री अवस्था मांय आप समाधिस्थ होया। कतरियासर जसनाथियों रौ पावन तीरथ स्थळ है। इणां रौ उपदेस हौ कै गुरू री सेवा अर निरगुण निराकर री उपासना अर करम मनुज खातर जरूरी है।

खरड़िया गांव रा करमदास इणी परम्परा रा कवि हुया जिका 'हरिकथा' रची। कवि देवो जी ई इणी परम्परा रा कवि हा। उणांरी रचनावां गुणमाला, देसूंठौ, नारायण लीला, धरमपुराणा, सूरजलीला अर ओलांबोआद प्रमुख बाजै।

18वीं सदी मांय कवि लालनाथ जी जसनाथी सम्प्रदाय रा प्रसिद्ध कवि होया है। इणां री रचनावां मांय जीव समझोत्तरी, 'वरण विद्या हररस, हरलीला, निकलंग पुराण अर सूरज स्रोत सागै फुटकर पद मिळै। ग्यान, करम अर भगती री त्रिवेणी उणां प्रवाहित करी। इणी भांत कवि चोखनाथजी, हारोजी, सोभोजी सोनी, करमोजी भांभू, पंचोजी अर नाथो जी जसनाथी सम्प्रदाय सारू रचनावां लिखता थका उणां रै गरूवां रै चरित्र माथै लेखणी चलायी।

8.7 निरंजनी सम्प्रदाय :

इण सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक हरिदास जी हा उणांरा चेला भगवान नै निरंजन निराकार मानै। हरिदासजी सांखला राजपूत हा। निरंजन पथ नै मानणवाळा मूरतीपूजा मांय विस्वास कोनी राखै। डीडवाणा (नागौर) रै नजीक ''गाढ़ा'' नांव रै गांव मांय निरंजनी साधु फागुण सुदी अेकम सूं बारहस ताई भेळा होवै। बठै मेळौ भरीजै। जातरी दरसण सारू पूगै।

हरिदासजी 1499 मांय आपरौ सरीर छोड़ दियौ। इणां रौ 'व्याहला' साखी, नाम निरूपण ग्रंथ, चालीस

पदी, चौदहपदी अर उणांरा अनुयायियां री रचनावां मांय राजस्थानी अर ब्रज रो असर मिळै जगजीवनदास, ध्यानदास, नागरीदास, सेवादास, मनोहरदास, भगवानदास, निरंजनी आद कवि नामी होया है जिकां इण सम्प्रदाय सारू मोकळा साहित्य सिरजण करी।

8.8 निम्बार्क सम्प्रदाय :

परशुराम देवाचार्य इण सम्प्रदाय रा हा। उणां री भगती सगुण सम्प्रदाय सारू जाणीजै। परशुराम देवजी सीकर जिले रै ठीकरिय गांय रै गुर्जर गौड़ ब्राह्मण कुळ मांय जलम्या हा। इणां रा पद ''वाणी'' कहीजै। इणां रै काव्य मांय 2225 साखियां, 15 चरित्र, 13 लीला कविता अर लगैटगै 600 पद मिळै। सगळी काव्य सिरजणा भगवत् प्रेम सूं भर्योड़ी है। निम्बार्क सम्प्रदाय रा लोकचावा कवि 'तत्ववेता' (टिकमदास) 16वीं सदी मांय होया। इणां री गद्दी जैतारण (पाली) मांय है। उणांरी 'तत्ववेतावाणी', रौ संकलन घणौ। इणरी भासा ब्रज मिश्रित राजस्थानी है। परशुराम देवाचार्य रै समै बाबत मत–मतान्तर है। केई उणां रौ समै 1393 सूं 1450 रै मध्य मानै तो कई 1543 सूं 1623 रै बिचाळै मानै। इणां रै पदां मांय निरगुण अर सगुण भगती रा पद मिळै।

8.9 लालदासी सम्प्रदाय :

संत लालदास दादू दयाल रै समकालीन संत हा। इणां रौ प्रभाव मेवात मांय रैयो। इणारौ जलम अलवर रै नजीक धोलीदूब गांव मांय वि. सं. 1597, सावण बदी पंचमी नै होयौ। इणां रै पिता रौ नांव चांदमल अर माता रौ नांव 'समदा' हौ। जाति सूं अै 'मेव' हा। बालपणै सूं आप रे मांय आध्यात्मिक सगती बढ़ता रैयी अर आपरी मुलाकात मुसलमान फकीर गदनचिश्ती सूं होयी। आप गिरस्थ धरम निभावता थकां तपस्या करता रैवता। आपरी साधना सूं लोगों नै जलण होवण लागी। ईं खातर आप स्थान बदळता रैया। लालदास 'नागला' रैया अर 108 बरस री उमर में सं. 1705 मांय स्वर्गारोहण करियौ। आपरी विचार धारा मांय ईस्वर अजर–अमर अखंड अर निराकार है। जीव अर बह्म अेक ई है अर माया रै कारण आं मांय लागै। आप सत्संग माथै धणौ जोर दिरायौ।

लालदास री वाणी मांय राम सुमरण माथै घणौ जोर दियोड़ो है। राम निरगुण अर निराकार है हरिदास इण सम्प्रदाय रा प्रमुख कवि है। उणां री रचनावां मांय विवेकगीत, सार संग्रह, ध्यान जोग संवद हरिदास–प्रेमदास संवाद' प्रमुख है।

सेरपुरा रा डूंगरजी साद लालदासजी महाराज री परिचयावळी री रचना करी। इण सम्प्रदाय रै कवियां मांय भीखणदास, सोमणदास, अलहद, ठाकुरदास, प्रभुदास, महानंद, नाथू साधु, जनकंवर बक्ष, वांद साद, मंगली साद, बाजू अर संत कवि होया है।

8.10 चरणदासी सम्प्रदाय :

संत चरणदास मेवात रा महान संत होया है। उणां रौ जलम मेवात रै ''डेहरा'' नामक गांव मांय वि. संवत 1760 भादवा सुदी तीज नै होयौ। आपरै पिता रौ नांव मुरलीधर अर माता'रौ नांव कुंजी हो। आप रौ परिवार ढूसर वैस्य हो। 19 वर्ष री अवस्था मांय शुकदेव मुनि सूं आपरी भेंट होयी अर आप उणां सूं दीक्षा लीवी। वि. संवत् 1839 मांय दिल्ली में आप समाधि लीवी। आपरी विचार धारा सगुण अर निरगुण दोनूं ई भांत री ही। आप ब्रह्म री सगती नै गुणातीत मानता। ईस्वर सगळी जगह व्याप्त है। बैन साकार है अर न निराकार है। गुरू भगती माथै अर सत्संग करणै माथै जोर दियो। ईस्वर मिनखां घट–घट मांय व्याप्त है। ईस्वर तीरथ मांय कोनी रैवे। आप नैतिकता अर सुद्धता माथै जोर दियो। इणारी भासा ब्रज–मिश्रित राजस्थानी है। चरणदासी सम्प्रदाय रै संत कवियां मांय जोगजीत, रामरूप, रूपाराम, अखैरामदास, मनमोहनदास, सरस माधुरी सरण आद प्रमुख है।

8.11 गूदड़ पंथ –

संत अग्रदास री सिष्य परम्परा में उणां रा चेला संतदास होया। उणां रो भेख गूदड़ा हो। बे गुदड़ ओढयोड़ी रैवता हा। इणां रै पाछै गूदड़ पंथ आरंभ होयौ, इण पंथरी प्रमुख पीठ दांतड़ा (भीलवाड़ा) मांय है। संतदास बाहरी आडंबरां माथै विस्वास कोनी करता। झूठ बोलणै रै आचरण री निन्दा करता अर राम–स्मरण माथै

जोर राखता। इणांरी साधना–उपासना रामस्नेही सम्प्रदाय सूं मिळती–जुळती है।

गूदड़ पंथ मांय संतदास री वाणियां अर साखियां रौ महताऊ है। संतदास जी री साखियां 55 अंगा मांय बांट्योड़ी है। निरगुण भगती धारा सूं सगळी साखियां जुड़योड़ी है।

8.12 अलखिया सम्प्रदाय :

इण सम्प्रदाय रा प्रवर्त्तक लालगिरि जी हा। उणां रौ जलम चुरू जिला रै 'सुलखनियां' गांव मांय होयौ। 1829 मांय जद अै पन्द्रह बरस रा हा तद बीकानेर आया। इणा री प्रेरणा सूं गै'रो कुवौ'' अलख सागर बण्यौ। एकर लालगिरि बीकानेर रा महाराजा रतनसिंह जी नै लिछमी नारायण रै मन्दिर जावता थकां देख्यौ तो बां उणां नै रोक'र कैयौ – अलख रो सुमरण करो। मूर्ति पूजा बेकार है। इण बात माथै महाराजा नाराज होयग्या अर उणां नै देस–निकाळौ दियौ। लालगिरि जी जद ताई जीवित रैया, बै जैपर मांय 'गलताजी में रैया' इणां री 'वाणी' सरल अर सरस सबदावळी सूं भरी पूरी है।

इण मायं 29 सबद है। इण पंथ रा अनुयायी योग साधना अर हठयोग माथै जोर। 'अलखिया सम्प्रदाय' रा संत मिळै जद कैवे – अलख मौला, अर आपस में अभिनन्दन करै। इण सम्प्रदाय रौ बीकानेर मांय घणो प्रभाव रैयो। नीची जात रा लोग इण सम्प्रदाय में आया अर इणनै चावो करियौ।

8.13 आई पंथ :

आई जी – आई पंथ री प्रवर्त्तक जीजीदेवी (आईजी) हा। 'शाक्त' परंपरां रै रूप में आई पंथ सामी आयौ। आपरौ जलम राजपूत जाति रै ढ़ाबी गोत्र रै बीकाजी री पुत्री रूप में होयौ। आईजी री भगती सगती रूप मांय मानीजै। जोधपुर रै बिलाड़ा तहसील मांय आपरौ मन्दिर अर पीठ है। आई जी रौ प्रभाव मध्यप्रदेश अर राजस्थान ताई फैल्योड़ौ है।

'आई आनंद विलास'' ''आई उग्रप्रकास''

''आई मातारी बेलि'' ईं पंथ री महताऊ रचना वा है। जीजीबाई 15वीं सदी में हुया अर 1504 मांय आपरो सुरगवास होयौ। आई पंथी मांस मदिरा रौ सेबन कोनी करै।

जीजीदेवी सन् 1500 मांय आपरी गद्दी गोबन्द नै सूंपी अर 'आई पंथ' रौ प्रचार–प्रसार करण सारू पाली अर जोधपुर मांय घणा लोगां नै इण पंथ रा अनुयायी बणाया।

8.14 इकाई रो सार

संत–साहित्य रा आचार्य अर संत कवियां समाज सुधार सारू– नैतिक आचरण माथै घणौ जोर दियौ। उणां रा खास सिद्धान्त हा –

1. निरगुण–निराकार 'राम' ही नै इस्ट मान'र उणा रो स्मरण करता रैवणो।
2. मूरति पूजा, बाहरी आडम्बर, मिथ्याचार रौ विरोध करणौ अर थोथै अभिमान रौ त्याग करणौ।
3. सीळ, संतोख, त्याग, दया, वैराग रौ पालण करणो अर काम, क्रोध, लोभ मोह, घमंड, रौ त्याग करणौ।
4. गुरू रौ सबसूं अूंचौ पद मानणौ।
5. तन–मन अर वचन सूं मानखै री सेवा करणी।
6. मिनख समाज मांय – अेकता, भाईचारौ अर प्रेम रो विस्तार करणो।

इणभांत आखै मानव–समाज सारू संतां रौ घणमोळो योगदान रैयो।

8.15 अभ्यास रा प्रस्न

1. 'संत' सबद री लिखो।
2. 'आदिनाथ शिवजी' नै मानता थकां कुण सौ सम्प्रदाय आगै बध्यौ, उण सम्प्रदाय रौ परिचै देवो।

3. दादू पंथ रा प्रवर्त्तक कुण हा ? उणां रा काई सिद्धान्त हा?
4. राम–स्नेही सम्प्रदाय 'राम रै किण स्वरूप नै मान'र आपरौ पंथ चलायो हा? समझावो।
5. बिश्नोई सम्प्रदाय रा प्रवर्तक रौ नांव बतावो।
6. निम्बार्क सम्प्रदाय रा प्रवर्तक रौ नांव अर उण पंथ री पीठ कठै है? बतावो।
7. 'अलखिया सम्प्रदाय' रा प्रवर्तक कुण हा अर साधुवां री पिछाण काईं ही ?
8. 'जसनाथी सम्प्रदाय' रौ पवित्र तीरथ कुण सौ गांव है अर इण पंथ रा प्रवर्तक कुण हा?
9. 'लालदासी पंथ' रा संत लालदास जी रा उपदेस मेवाती समाज सारू किण भांत उपयोगी रिया?
10. जोधपुर रा महाराजा मानसिंह कुण सा सम्प्रदाय मांय दीक्षा ग्रहण करी?
11. 'आई पंथ' रा प्रवर्तक कुण हा ? इणां री प्रमुख पीठ कुणसी जगां है?
12. आई माता जीजीबाई री चरित गाथा मांडो।
13. राजस्थानी साहित्य रा इतिहास मांय मध्यकाल नै स्वर्णयुग क्यूं कयौ जावे?

8.16 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्तिकालीन काव्य।
2. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भक्ति और रीतिकालीन मुक्तक काव्य।
3. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में रामकथा।
4. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहीत्य।
5. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा और साहित्य।

इकाई – 9

पश्चिम राजस्थान रा संत सम्प्रदाय

इकाई रो मंडाण

9.0 उद्देस्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 जाम्भोजी (बिश्नोई) सम्प्रदाय

9.2.1 संत जाम्भोजी रो जीवण परिचै

9.2.2 संत जाम्भोजी री रचनावां रो परिचै

9.2.3 संत जाम्भोजी री सिस्य परम्परा

9.2.4 संत जाम्भोजी री वाणियां

9.3 जसनाथी सम्प्रदाय–

9.3.1 संत जसनाथ रो जीवण परिचै

9.3.2 संत जसनाथ री रचनावां रो परिचै

9.3.3 संत जसनाथ रा चेलां री परम्परा

9.3.4 संत जसनाथ री वाणियां

9.4 रामस्नेही सम्प्रदाय –

9.4.1 संत रामचरण अर शाहपुरा पीठ

9.4.2 संत दरियाव अर रेण पीठ

9.4.3 संत रामदास अर खेड़ाया पीठ

9.4.4 संत हरिरामदास अर सिंथळ पीठ

9.5 आई पंथ

9.5.1 आईजी रो जीवण परिचै–

9.5.2 आईजी पंथ रा प्रमुख चेला

9.5.3 आई पंथ रो साहित्य

9.6 इकाई रो सार

9.7 सबदावली

9.8 अभ्यास रा प्रस्न

9.9 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

9.0 उद्देस्य

इण इकाई रो मूळ उद्देस्य आथूणै (पश्चिमी) राजस्थन री मरूधरा भोम माथै फैल्योड़ा अर परसर्योड़ां कैई लूंठा संत सम्प्रदायां (पंथां) री जाणकारी करावणौ है। मध्यकाल री उण विकट घड़ी में अै संत लोग जकां परोपकार, अर भलाई रा काम, नैतिकता, रो प्रचार करमकांड रो खण्डन–मण्डन कर्यो है अर मानव समाज सारू अेक सांचौ संदेस दिया। इणा हिन्दू–मुसळमान दोनूं जातियां रा आपसी वैमनस्य नै छोड'र प्रेम मारग रो रास्तो बतायो। संत बतायौ राम अर रहीम में कोई भेद नीं है, संत ईस रै नाम सुमिरण नै घणौ महत्व दियौ। संता री

वाणियां आज भी मानव मिनखां नै सद्मारग माथै चालण रो संदेस देवै है। आं सगळी बातां रो खुलासौ इण इकाई में हुवैला। इण इकाई रो उद्देस्य मारवाड़ रा खास–खास संत पंथां (सम्प्रदायां) री जाणंकारी कराणो है। इणमें जाम्भोजी रो विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय अर आई पंथ री जांणकारी दी जाय रैई है।

9.1 प्रस्तावना

मध्यकाल में राजस्थान में कैई संत, भगत अर विचारक हुया है जकां आपरै लोकहितकारी कामां री वजह सूं जयचावा हुया अर उण बखत री सामाजिक रूढ़ियां रो खातमा कर्‌यो हो। इणामें लोक देवतावां रै अलावा जांम्भोजी, रामचरणदास, जसनाथ, संत दरियाव, विल्होजी, अर आईमाता जैड़ां संतां समाज री रूढ़ियां नै चुनौती दी अर मानव मूल्यां रो महातम बढ़ायो। अै लोग भगत अर संत रै अलावां समाज सुधार रो महताऊ काम भी कर्‌यो। राजस्थानी समाज रै जनमानस माथै आ संतां री घणी पैठ ही। अै लोग जन–सामान्य नै सद्मारग अर आध्यात्मिक मारग दिखायो। संतां री अे वाणियां आज भी घणीं प्रासंगिक है। राजस्थानी संत साहित्य भांत–भांत रों हैं। इण इकाई में विसय मुजब पश्चिमी राजस्थान रै न्यारै–न्यारै पंथां (सम्प्रदायां) री जांणकारी कराई जावैला।

9.2 जाम्भोजी रो (बिश्नोई) सम्प्रदाय–

राजस्थान में पर्यावरण–चेतना रा प्रणेता संत जाम्भोजी मान्या जावै है। रूंखां अर वन रा जीवां री महत्ता समझण वाळा जाम्भोजी आपरै इण पंथ सारू 29 नियम बणाया। अे गुणतीस नियम 'बिश्नोई सम्प्रदाय' रा आधार थम्भ है, जिणामें खास गिणावण जोग नियम इण भांत है– रोज सिनान करणों, अमल नीं पीवणौ, तम्बाकू नीं खावणो, सगळा प्राणियां माथै दया करणी, संसार सूं मोह नीं करणों, कदैई झूठ नीं बोलणों, दारू नीं पीवणी, कदैई किणी री बुराई नीं करणी, क्रोध नीं करणो, नीला वस्त्र नीं छूवणा, हर्‌यां रूखां नै नीं कांटणां, पांचू बखत विष्णु रो नाम लेवणों, पाणी छाण'र पीवणो, कदैई चोरी नीं करणी, अमावस रै दिन व्रत राखणो आद।

इण सम्प्रदाय में हिन्दू–मुसळमान दोनूं वां रो समन्वय देख्यौ जा सकै है। इण तरै जाम्भोजी रा इण पंथ में वैष्णव, जैन अर इस्लाम धरम अर नाथपंथ रा सिद्धान्तां रो समन्वय देखण नै मिळै है। जाम्भोजी अेक समाज सुधारक व्हैतां थकां आचरण री सुदी माथै घणौ जोर दियो है। भगवान् रै रूप बणाव रै सम्बन्ध में जाम्भोजी रो कैवणो औ है कै – ''ईसर रो सुरूप रो बरणाव इमरत रै स्वाद री भांत वाणी सूं नीं कर्‌यौ जा सकै है। सागर में माछली रै मारग री भांत उणारौ भेद नीं पायो जा सकै।''

इण सम्प्रदाय में दीक्षा लैवण खातर इणारा गुणतीस नियमां री पालणा जरूरी है। अभिवादन में नवण प्रणाम अर भगवान् विस्णु रो नाम सुमिरण जरूरी है। इण पंथ में मूरत–पूजा नीं करी जावै है।

बीकानेर रै कनै मुकाम में जाम्भोजी रो मिन्दर है। अठै फागुण मईना री अमावस नै मोटो मेळो भरीजै अठै हजारां री तादाद में मिनख भेळा होवै है। मुकाम रै अलावा जाम्भोळाव, पीपासर, समराथळ, लोहावट, बिश्नोई समाज रा तीरथ–स्थल मान्या जावै।

इण सम्प्रदाय में जीव हत्या रो खण्डन कर्‌यो गयौ है अर हर्‌यां रूंखा रै बचाव रो महत्व दरसायौ गयो है।

9.2.1 संत जाम्भोजी रो जीवण परिचै

संत जाम्भोजी रो जळम वि.सं. 1508 (1451 ई.) री भादवा बदी 8 (आठम) नै नागौर रै पीपासर गांव में व्हीयों हो, अै जात रा पंवार राजपूत हा, इणारै पिता रो नाम लोहटजी अर माता रो नाम हांसा देवी हो, टाबरपणै में अै घणा चिन्तनसील अर कम बोलणमाळा हा, सात बरस सूं लैय'र सोलह बरस री उमर तांई अै जंगळ में गायां चरावता हां, जाम्भोजी नै गुरु गोरखनाथ दीक्षा दी ही। जाम्भोजी जीवण भर ब्रह्मचारी रैया हा, सम्मराथळ में रैय'र अै सत्संग करता, अठै रैवता थकां इणा 1483 ई. (1540 सं.) में 'बिश्नोई सम्प्रदाय' री थरपणां करी, 51 बरस री उमर में 1591 सं. (1536 ई.) में मिंगसर बदी 9 नै इणा देह त्यागी ही। इणा री समाधि स्थळ तालवा गांव में है जको मुकाम रै नाम सूं घणौ चावौ है। इणारो आखी मानवता रै खातर घणौ योगदान है।

9.2.2 संत जाम्भोजी री रचनावां रो परिचै –

जाम्भोजी रै मत रा अनुयायियां कालान्तर में जायनै इणा री साखिया अर सबदां रो सकंलन, सम्पादन अर कैई टीकावां सूं इण सम्प्रदाय रै साहित्य में बढोतरी करी। जाम्भोजी री रचना ''सबदवाणी'' है। ''सबदवाणी'' मानखै नै नैतिकता रो पाठ पढ़ावै। जाम्भोजी सूं पछै घणखरां विद्वाना नै इणारी वाणियां रो संकलन कर्‌यो है, जिणामें ''जम्भ सार'', ''जम्भसागर'', 'जम्भगीता', ''जम्भसार साखी'' आद जाम्भोजी सूं सम्बन्धित है।

आं सगळी रचनावां में जाम्भोजी रै जीवण–चरित्र री महिमा रै अलावा इणारै धरम साधना रो बरणाव मिळै है। ''सबदावली'' 16वीं सदी रै मरुभोम री लोकभासा राजस्थानी में रचित सरस अर सरल वाणियां रो संग्रै है। इणमें जाम्भोजी रा भगती दरसण अर आध्यात्म विसयक विचार हुयौ है।

9.2.3 संत जाम्भोजी री सिस्य परम्परा

संत जाम्भोजी रै चेलां में विल्होजी, कैसोजी गोदारा, ऊदौजी नैण, तेजोजी चारण, समसदीन, डेल्हजी, कील्हजी चारण, अल्लूनाथ कविया, आलमजी, सुरजनदास पूनिया आद खास है। अै सगळा चेला अलग–अलग जातियां रा हा।

संत वील्होजी अे बहुआयामी व्यक्तित्व रा धणी हा, इणारौ जळम रेवाड़ी (हरियाणा) में अेक खाती परिवार में व्हीयो। इणा पिता रोनाम श्रीचन्द्र अर माता रो नाम आन्दाबाई हो। विश्नोई सम्प्रदाय में अै घणा चावा है। अै सुरू में चेचक रै कारण आंख्यां सूं आंधा हा, पण जाम्भोजी री किरपासूं आंरी आंख्यां में जोत आयगी ही, इणारी रचनावां में 'कथा गुगळिये की, कथा घड़ाबंध, कथा झोरड़ा की बतीसी, आखड़ी कथा, ग्यानचारी' आद प्रसिद्ध है। वील्होजी रा दूहा अर सोरण, कवित तो घणा नीतिपरक अर सटीक है। इणारा हरजसां में हरि रै निरगुण अर सगुण दोनूं रूपा रो बरणाव मिळै है। अै जात–पांत सूं दूर, राम अर रहीम नै अेक मानण वाळा हा, अेक उदाहरण देखण जोग है–

''राम रहीम विसन विस्मिल्ला, किसन करीम हमारै,

कुकरम जुलम गाय बकरी परि, रूस्य मीसल्य तुम्हारो।।''

9.2.4 संत जाम्भोजी री वाणियां

संत जाम्भोजी अेक महान् योगी अर विचारक हा। जाम्भोजी रा साहित्य में कैई दारसनिक, आध्यात्मिक, धारमिक पहलूवां माथै चरचा करी गयी है। इणरों भगवान् निरगुण निराकार है, वौ घट–घट व्यापी है। इणा हिन्दू–मुसळमान दोनूं वां नै समान रूप सूं अहिंसा रो उपदेस दियो है। इणा संसार रै सै करमां अर धरमा रो संचालक हरि नै मान्यो है। इणारै मुजब हरि किरपा सूं असम्भव भी संभव व्है सकै है। इणा सत्संग नै भी घणौ महत्व दियो है। इणा भी पाखण्ड अर मूरत–पूजा रो विरोध कर्‌यो है। इणारी वाणियां रा उदाहरण नीचै दिया जा रैया है–

तीरथ जातरावां रो विरोध–

(1) ''अङसठि तीरथ हिरदै भीतर, बाहरि लोकाचारूं।''(जंभवाणी–सबद–62)

ईस नाम सुमिरण माथै जोर –

(1) ''भूला प्राणी विसन जपो रे, मरण विसारो केहूं।''(सबद–23)

सत्संग–महिमा –

(1) ''लोहो नीर किसी परि तरिबा, उतिम संग स्नेहूं।'' (सबद–14)

गुरु री महिमा –

(1) ''सतगुरु ऐसा तंत बतावै, जुगि–जुगि जीवै जलमि न आवै।''(सबद–107)

जात–पात रो विरोध–

(1) ''उतिम कुली का उतिम न कहिवा, कारण किरिया सारूं।''(सबद–26)

ब्रह्म री महिमा–

(1) ''जां कुछि हुंता नां कुछि होयसी, बलि कुछि होयसी तांहि।''(सबद–16)

अहंकार रो त्याग –

(1) ''जां जां घमण्ड सूं मंड्यौ, ताकै ताव न छायौ।''(सबद–18)

परब्रह्म सर्वव्यापी–

(1) ''दिल खोजो दरवेस भईलो।''(सबद–67)

(2) ''तांह के भूले छोति न होई,

दिल–दिल आप खुदायबंद जागै, सब दिल जाग्यो लोई।''(सबद–6–7)

आडम्बरा रो खण्डन–

(1) दिल साबिति हज काबो नेड़ौ, क्या उलवंग पुकारो?''(सबद–11)

इण तरै सारांस रूप सूं कैयो जा सकै है कै जाम्भोजी री ''जम्भ–वाणी'' रा सबद घणा निराळा है। मूरत–पूजा रो विरोध, धारमिक पाखण्डा रो खण्डन, जात–पात रो विरोध, अहंकार रो त्याग, गुरु री महिमा, सत्संग री महिमा, आद कैई गुणां नै ध्यान में राख'जम्भवाणी रो सिरजण हुयौ है।

9.3 जसनाथी सम्प्रदाय –

संत जसनाथ आपरै उपदेसा रै लैय'र खास'कर 36 नियमां रै कारण ''जसनाथी–सम्प्रदाय'' री थरपणा करी ही। इण सम्प्रदाय रा अनुयायियां में करसा अर जाट वरग रा लोग घणै है। इण सम्प्रदाय रा 36 नियमां में गिणावण जोग इण भांत है– चोखौ काम करणों, हिंसा नी करणी, सिनान रै पछै भोजन करणों, दोनूं समै ईसर री वंदना करणी, हवन करणो, ईसर में विस्वास राखणो, धूम्रपान अर लेसण रो त्याग अर अहिंसा री पालणां करणी, मांस नीं खावणौ आद कैई सरावण जोग नियम है। अ नियमां नै ध्यान में राखतां थकां जसनाथ जी आचरण री सुद्धता, जीव–दया अर भगती रा महत्व माथै जोर देवै है। इण सम्प्रदाय री खास गादी बीकानेर रै कनै कतरियासर गाँव में है। इण सम्प्रदाय रा लोग भगवा गाभा पैहरै अर जसनाथजी रै सबदां रो पाठ भी करै है। ईं सम्प्रदाय रा लोग गळै में काळी ऊन रो धागो भी बाधै है अर गंगा सिनान, अर मोर–पांख नै घणौ महत्व देवै है। इणारौ 'अग्नि' निरत्य भी घणौ चावौ मानीजै है। आग रा बळबळता खीरां पर नाचती बखत रिगुण पद भी गाया जावै है, अगन निरत्य में वळता खीरा माथै सिद्ध पुरुस रूस्तम जी रो नाम लैय'र भांत–भांत रा सांग भी संतगण करै। बीकानेर रै कतरियासर, बमलू, लिखमादेसर, मालासर आद गांव जसनाथी सम्प्रदाय रा तीरथ धाम है। बीकूसरां में जसनाथ जी रो मिन्दर भी मिळै है। 16वीं सदी में औ सम्प्रदाय घणौ फल्यो–फूल्यौ हो, इण सम्प्रदाय रा अनुयायी अजै भी आपरै धरम रा नियमां री पालणा करता देख्या जा सकै है।

9.3.1 संत जसनाथ रो जीवण परिचै –

संत जसनाथ जी रो जळम वि.सं. 1539 (1482 ई.) में काति सुदी ग्यारस नै बीकानेर रै कतरियासर गांव में व्हीयों हो हम्मीर जी जांणी जाट नै अै जंगळ में पड़्या मिल्या निः संतान हम्मीर जी अर उणारी पत्नी रूपांदे इणारौ पालन–पोसण कर्यो अर इणारो जसवंत नाम धर्यो हो। इणारा चमत्कारां सूं प्रभावित व्है'र देहली रा सुलतान सिकन्दर लोदी इणानै कतरियासर गांव रै नैड़े भूमि करीदी ही। बारह बरस री उमर में कठोर तपस्या करणै सूं सिद्धि प्राप्त कर अै सिद्ध जसनाथ कहलाया। जसनाथ जी री आ साधना भोम गोरखमाळियां रै नाम सूं घणी चावी है। इण सम्प्रदाय में ''यशोनाथ पुराण'' नामक ग्रन्थ में इण घटना रो उल्लेख है–

''संवत् पनरै इकावने, आसोजी सुद पाय,

वा दिन गोरखनाथ सूं, जसवंत जोग पठाय।''

24 बरस री उमर में आसोज सुदी सातम नै वि.सं. 1563 में इणारी मिरत्यु व्हीं ही। फैर इणा कतरियासर में समाधि ली ही।

9.3.2 संत जसनाथ री रचनावां रो परिचै–

जसनाथी सम्प्रदाय रै मतानुसार इणा री तीन रचनावां देखण नै मिळै है, जिणमें गोरख छंद, झाड़ा, सिंभूधड़ा उल्लेख जोग है।

''सिंभूधड़ा'' जसनाथी सम्प्रदाय रो महताऊ ग्रन्थ है। ओ जसनाथ री विसेस छंदोमयी रचना है। इणमें भगवान् रै सर्वव्यापी होवण रो संकेत भी मिळै है–

''ईसवर जाटे जटुओं, रोज रजुओं बनी रड़ै बिन जारूं,

इसर सारा दुंता, खोकरक फल्यै, सोकर कहल्यै सारूं।''

इणारी वाणियां में ब्रह्म, विष्णु, महेस, राम, किस्सन आद रा नाम भी मिळै, पण मुगती खातर इणा निरगुण निराकार प्रभु री उपासना माथै घणौ जोर दियो है।

9.3.3 संत जसनाथ रा चेलां री परम्परा –

संत जसनाथ जी रै अलावा इण सम्प्रदाया रा चावा संतां में हारोजी, हांसोजी, रूस्तम जी, दूदोजी, पालोजी, देवो जी, लालनाथ जी, धानोजी आद रा नाम उल्लेखजोग है। रूस्तम जी री रचनावां में सिव ब्यावलों अर क्रिस्सन ब्यावलो मिळै है। बीकानेर रै लालभदेसर गांव रा लालनाथ भी इणारा खास चेला हा। इणारी रचनावां में हरिरास, हरलील, निष्कलंक परवाण, जीव समझोतरी खास रचना है। देवो जी भी सिद्ध पुरुस व्हीयां है, अै बीकानेर रै सोनियासर रा निवासी हा, इणा 1724 सं. में करणूं गांव रै रोही (जंगळ) में जीवित समाधि ली ही। इणारीं रचनावां में 'देसूड़ो, धरत परवाण, नारायण, लीला' सराहण जोग कृतियां है।

रूस्तम जी औरंगजेब रै समै रा सिद्ध पुरुस हा। आं ही इण सम्प्रदाय में अगत निरत्य री सुरुवात करी ही।

9.3.4 संत जसनाथ री वाणियां–

संत जसनाथ आपरी वांणियां सूं प्रेम योग अर भगती योग नै घणौ महत्व दियो है। इणा ईसर नाम सुमिरण री महिमा रो बखाण भी कर्‌यो है। इणा सगळा जीव जिनावरां रै प्रति अहिंसा रो भाव दरसायो है। इणा आपरै सम्प्रदाय रै अनुयायियों रै सारू उतम काम, पवित्रता, सील, संतोस, दया, धरम–निस्ठा, क्षमा, सहिस्णुता आद नै धारण करणै, निन्दा, विवाद अर चोरी आद दुष्करमां रो मन, वचन, करम सूं त्याग करण रो संदेस दियो है। अै करमवाद माथै घणौ जोर दियो है। इणा भी गुरु री महता सर्वोपरि मानी है।

इणा आचरण ही सुद्धि अर पाखण्डां रो विरोध भी जतायो है। इणा परमेस्वर रो अेक रूप ही मान्यो है। आं सगळी बातां रो खुलासौ इणारी वाणियां में मिळै है, ज्यां रा कुछैई उदाहरण देखी जै–

जीव हत्या रो विरोध–

(1) ''सांभळ मुल्ला सांभळ काजी, सांभळ बकर कसाई।
किण फरमाई बकरी बिरघो, किण फरमाई गाई।।''

पाखण्डां रो विरोध–

(1) ''भूखा झरड़ा कान फड़ावै, सेवै मड़ा मसांणी।
कांधे पाछै मेखळ धाजै, कोरा रह्या अगाणी।।''

प्रेम भावना–

(1) ''अमी चवै मुख इमरत बोलो, हालो गुरु फरमाणी।
.....राम नाम मोटो रतन।।''

(2) ''गिगन मण्डळ में प्रेम सुन, जहाँ हीरा री खान।
बिरला पूंचै पारखू, सिल सांसै री भान।।''

नाम सुमिरण नै महत्व–

(1) ''अलख अगोचर नांव है, कर लीजै मन स्याही।
दिन दस पीछे नी सर्‌या, बापरसी मुंगाई।।''

मानवी देह री नैस्वरता–

(1) काची काया गळ गळ जासी, कूं–कूं बरणी दोहा।
हाडां ऊपर धूम ढुळैली, घणा हर बरसे मेहा।
माटी में माटी मिल जासी, भसम पड़ै है खेहा।।''

9.4 रामस्नेही सम्प्रदाय–

''राम स्नेही'' सबद राम अर ''सनेही'' दोनूं सबदां रै मेळ सूं बण्यों है। रामस्नेही रा दोय अरथ निकळै है– रामसूं स्नेह राखण वाळा भगत अर भगता सूं स्नेह राखण वाळा राम, भगता नै इण सबद रो प्रयोग घणखरां भगतां स्नेही राम रै अरथ में कर्‌यो है। संत कबीर अर तुलसीदास भी आपरी कृतियां में 'राम' नाम रो गुणगान कर्‌यो है। ''रामस्नेही सम्प्रदाय'' रो प्रसार मारवाड़ में घणौ रैयो है। इण सम्प्रदाय में निरगुण निराकार 'राम' रै नाम रो जाप कर्‌यो जावै है। 'रामस्नेही' सम्प्रदाय रामानंद सूं सुरु व्हीयौ है। इणा ब्रह्म ग्यान माथै घणौ जोर दियो है।

डॉ. हीरालाल माहेश्वरी–इणनै रसिक सम्प्रदाय रो नाम दियो है अर इणरो प्रारम्भ रामानंद सूं मानै है। रामानंद री आ परम्परा आगै चाल'र राजस्थान में च्यार साखावां में बंटगी संत रामचरण री सिस्य परम्परा इण पंथ नै आगे विकसित करी ही, राजस्थान में इण सम्प्रदाय री च्यार पीठ री थरपनणा अर उणारा आचाया री तालिका इणगत है–

रामस्नेही सम्प्रदाय

रेण साख (दरियाव) शाहपुरा (रामचरण) सिंहथळ (हरिरामदास) खैड़ाया (रामदास)

रामस्नेही सम्प्रदाया रा सिद्धान्तां में सबसूं पैलां गुरुवंदना अर गुरु भगती माथै घणौ जोर दियो गयो है, 'राम' सुमिरण नै महत्व, मूरत–पूजा, तीरथ–जातरा, माळा, छापा अर तिलक रो विरोध भी कर्‌यो गयो है। काम, क्रोध, लोभ, मोह रो त्याग करणौ बतायो है।

इण सम्प्रदाय रा लोग गुलाबी रंग री चादर रो प्रयोग करै अर कोपीन धारण करै सुबै संध्या राम रो ध्यान करै है अर पाणी नै छाण'र पीवै, जीव हत्या रो विरोध करै। इणामें 'फूळ डोळ' उच्छव भी मनायो जावै, पंथ रा गुरुवां रा चितराम भी देखण नै मिळै है।

9.4.1 संत रामचरण अर शाहपुरा पीठ –

संत रामचरण शाहपुरा रै रामस्नेही सम्प्रदाय रा मूळ आचार्य मान्या जावै है। इणा निरगुण भगती अर राम महामंत्र रो उपदेस दियो है। इण साखा रा साधु लंगोट बांधै, तूम्बी, चादरमाळ अर पोथी रै अलावा कोई दूजी वस्तु नीं राखै। संत रामचरण रो जळम जैपुर रै कनै सोडा गांव में माघ सुदी 14, 1719 ई. में व्हीयों। इणारा पिता चकतरामजी अर माता रो नाम देऊजी हो, इणारां गुरु क्रिस्सन रामजी हा, इणारो बचपन रो नाम रामकिसन हो। इणारी मिरत्यु 1798 ई. में शाहपुरा में व्ही, इणारा 225 चेला हां, जिणामें 12 चेला खास हा।

रचनावां – स्वामी रामचरण री 'अनभैवाणी' चाकी है।

इणारी वाणी में भगती रो पख घणौ जोरदार अर साहित्यिक पख गौण है। इणारै मुजब राम सुख रो

सागर है अर दुःख रो भंजणहार है। अै आपरी वाणी में कैवै है–

''सुख का सागर राम है, दुःख का भंजनहार।

रामचरण तजिये नहीं, भजिये बारम्बार।।''

चेलां री परम्परा– संत रामचरण री सिस्य परम्परा में भगवानदास (भीलवाड़ा), वल्लभदास (बीकानेर), रामसेवक (उदैपुर), रामप्रताप (माधोपुर), चेतनदास (कोटा), कान्हड़दास (सांगवाड़ा), द्वारकादास (धलपट), देवादास (प्रतापगढ़), मुरलीराम (रायपुर), तुलसीदास (खानपुर) आद खास है।

वाणिया– संत रामचरण री वाणियां में गुरु नै घणौ महत्व दियो गयो है। संसार रूपी सागर सूं गुरु ही पार लगा सकै है। इणा री वाणी में सत्संग नाम सुमिरण माथै जोर दियो है। इणा समाज में चावी मूरत–पूजा, तीरथ–यात्रा, बहुदेवपासना अर कन्या–विक्रय, हिन्दू–मुसळमान रो भेदभाव, कपटी साधुवां अर आडम्बरां रो भी विरोध कर्‌यो है।

हिन्दू–मुसळमान भेदभाव–

(1) ''वे मसीत वे देवरे, भरम्या फिरे निराट।
रामचरण हिन्दू तुरक, निकस्या एके घाट।।''

बारला आडम्बरा रो खण्डन–

(1) ''सकल जिहांन में रमि रह्मा, मुल्ला एक रहीम।
बांग सुणावै कूंण कूं, बहरा नाहि रहीम।।''

पतिव्रता नारी–

(1) ''पतिवरता नहचल रहै, पति को धर विस्वास।
रामचरण विभचारिणी घण पुरुसां की आस।।''

करमकाण्डा रो विरोध

(1) ''रामचरण यूं वेद में करमकांड अरू राम।
कर्मकाण्ड संसार ले, साधू सुमरै राम।।''

सगुण निरगुण–

(1) ''कोई सेवै आकार कूं कोई निराकार का भाव।
रामचरण वै संत जन वाही का करै उपाव।।''

9.4.2 संत दरियाव अर रेण साखा–

रामस्नेही सम्प्रदाय री च्यारु साखावां में सबसूं जूंनी अर पैली पीठ रेण मानी जावै है। इण रा प्रवर्तक संत दरियाव जी मान्या जावै। इण सम्प्रदाय रा रैहण–सैहण, उपासना पद्धति शाहपुरा अर खैड़ापा रै रामस्नेहियां सूं घणी मिळै है।

संत दरियाव रो जळम जैतारण गांव में वि.सं. 1733 (1676 ई.) में व्हीयौ हो। इणारै पिता रो नाम मानसा अर माता रो नाम गीगी हो, अै जात रा धुनियां मुसळमान हां, इणा 1769 वि.सं. में पेमदासजी सूं सीख ली। सात बरस री उमर में इणारै पिता री मिरत्यु पछै अै आपरै नाना कमीस रै साथै रेण आया हा, अठै ही राम भगती रो प्रचार करतां वि.सं. 1815 (1759 ई.) में रेण में ही देवलोक व्हीयां हा, अठै ही इणारी लाखासागर रै कनै संगमरमर री समाधि बण्योड़ी है।

रचनावां–दरयाब वाणी

इण वाणी में 1000 पद अर साखियां है अर इणारी भासा घणी प्रोढ़ है। भासा रा उदाहरण देखण जोग

है–

''जो काया कंचन भई, रतनों जड़िया चाम।

दरिया कहै किस काम का, जो मुख नांही नाम।।''

सिस्य परम्परा– संत दरियाव जी रा 72 चेला अर 9 चेलियां ही, जका राजस्थान रै न्यारै–न्यारै भागां में इण रो प्रचार कर्‌यो है जिणामें हरखाराम (नागौर), सुख रामदास (मेड़ता), हेमदास (डीडवाना), गंगाराम (जोधपुर), सिरमेल (साम्भर), देवदास (मूण्डवा), भगवानदास (रोल), सरदारराम (बुटाटी), नवलराम (निम्बड़ी), आद खास गिणावण जोग है।

वाणिया– संत दरियाव री वाणियां में पाखण्ड रो विरोध, सत्संग नै महत्व, गुरु नै महत्व, सम्प्रदायवाद रो विरोध, तीरथ यात्रा रो विरोध, नैतिकता माथै जोर, मूरत पूजा रो विरोध, नाम सुमिरण माथै जोर आद बातां रा बरणाव देखण मिळै है। इणारी वाणियां रा उदाहरण–

हिन्दू–मुसळमान रो समन्वय–

(1) ''र री तो रब आप है, ममा महोम्मद जान।
दोय हरफ में माइना, सबही वेद पुरान''।।

नारी नै सम्मान–

(1) ''नारी जननी जगत् की, पाल पोस दे पोष।
मूरख राम बिसार कर, ताहि लगावै दोष।।''

पाखण्ड रो विरोध–

(1) ''तन देवल बिच आतम पूजा, देव निरंजन ओर न दूजा।
दीपक ज्ञान पांच कर बाती, धूप ध्यान खेवो दिन राती।।''

(2) ''कंठी माला काठ की, तिलक गार का होय।
जन दरिया निज नाम बिन, पार न पहुँचे कोय।।''

सगुण अर निरगुण रो समन्वय–

(1) ''जन दरिया में दोय पख, दोनूं उत्तम सार।
निरगुण मेरा सीस पर, सगुण उर आधार।।''

सत्संग माथै जोर–

(1) दरिया संगत साध की, सहजै पलटै बंस।
कीट छोड़ मुक्त चुगै, होय काग से हंस।''

कथनी अर करणी री अेकता–

(1) बाहर से उज्जवल दसा, भीतर मैला अंग।
ता से तो कौवा भला, तन–मन एकहि रंग।।''

9.4.3 संत रामदास अर खेड़ाया पीठ–

खैड़ाया पीठ रा प्रवर्तक संत हरिरामदास रा चेला संत रामदास रो चल्‌यौडो ओ सम्प्रदाय है। संत रामदास रो जळम बिकमकोर गांव में वि.सं. 1783 (1726 ई.) में व्हीयो हो। इणारै पिता रो नाम सादूल अर माता रो नाम अणभी हो, अे जात रा मेघवाळ हा, रामदास री परची में इणारै 12 गुरुवां रो उल्लेख मिळै है। संत रामदास री ख्याति मारवाड़ रै अलावां मेवाड़, बीकानेर आद रियासतां में फैल्योड़ी ही।

इणारी मिरत्यु वि.सं. 1855 (1789 ई.) में व्हीं ही तद इणारै पुत्र दयालदास इणारी गादी सम्भाळी ही,

दयालदास सम्प्रदाय रै अनुयायी साधुवां रा पांच भेद कर्‌या, जिणामें विरक्त, विदेही, परमहंस, प्रवृति अर घरबारी कायम कर्‌या हा।

रचनावां– इणारी गुरु महिमा, भक्तमाल, चैतावनी, जम फारगती, अंगबद अनुभव वाणी जैड़ी पोथ्यां जग चावां है।

सिस्य परम्परा– संत रामदास री सिस्य परम्परा में इणारा बेटा दयालदास, पोतो पूरणदास, अर परसराम खास है। दयालदास नै रामदास री गादी सम्भाली ही। इणानै ''करुणा सागर'' रचना भी रची ही, परसराम जोधपुर आयर साधना करी ही।

वाणियां– संत रामदास गुरु भगती माथै घणौ जोर दियो है। बे गुरुवर नै भवसागर सूं पार करण वाळौ बतायो है। बे बतायो राम नाम सुमिरण सबसूं मोटौ है। रामदास मूरत पूजा रो खण्डन भी कर्‌यो है अै कैवै कै दुनिया किती आंधी है। कै घट में निवास करण वाळा ब्रह्म नै नीं देख पावै अर जळ, भाटा रो पूजन करै –

''कै तो पूजै पत्थर कूं, कै जल पूजण जाय।
रामां सांई घट में ताकू लखे न कोय।।''

रामदास गुरु रूपी रूंख री ठंडी छाया में विश्राम करता मुगती फळ रो पान करायो है–

''सतगुरु ऐसा रामदास, जैसी तरुवर छांहि।
सीतल छाया मुक्ति फल, ता विच केलि करांहि।।''

रामदास पोथी ग्यान नै अधूरो मान्यौ है। बै कैवै है–

''पिंढ़त पढ़कर रामदास, बौत करै गुमांन।
दोय आखर पढ़ीया बिनां, अंत हुवैगी हांन।।''

9.4.4 संत हरिरामदास अर सिंथळ पीठ–

सिंहथळ पीठ रा प्रवर्तक संत हरिरामदास हा। आ पीठ बीकानेर रै कनै सिंहथळ गांव में है। हरिरामदास रो जळम सिंहथळ रै भागचंद जोसी रै घरै व्हीयो। इणारी माता रो नाम रामी हो, अै बाळपणै में तेज बुद्धि रा हा, अर 1800 वि.सं. में बीकानेर रै दुलचासर गांव रै जैमलदास रामानंदी वैस्णवी साधु सूं दीक्षा ली ही। आं रो सुरगवास 1835 वि.सं. में हुयो, हरिरामदास गृहस्थ हां, इणारी जोड़ायत रो नाम चंपा हो, इणारै अेक बेटो हो, जिणरौ नाम बिहारीदास हो।

आं री पोथ्यां में हठयोग, समाधि, प्राणायाम आद प्रक्रियावां रो भी बरणाव मिळै है। इणारी भासा राजस्थानी है अर विचार उच्च ऊंचा है।

चेलां री विगत– हरिरामदास रै सात चेला घणा चावा है जिणामें नारायणदास, रामदास, बिहारीदास, अमीराम, दईदास, लक्ष्मणदास, आदूराम आद खास है।

रामदास नै खेड़ापा में गादी थापी लक्ष्मणदास नै मुलतान में, आदूराम लालमदेसर में रामद्वारा री थापना करी ही। आदूराम री सिस्य परम्परा में पीतमदास, चतुरदास अर तिलोकराम हां।

संत साहित्य– संत हरिरामदास राम नाम रै सुमिरण माथै घणौ जोर दियो अर कैयो है कै योग, यज्ञ, दान, तप, नियम, तीरथ, व्रत आद कोई भी इण जगत् में राम नाम री बराबरी नीं कर सकै है। इणा गुरु नै भी घणौ महत्व दियो है।

''गुरु गोविन्द बिनु मुक्ति न, जीवन की कहियो वेद सुनीजै।
जन हरिराम और सब कूकस राम सबद सत बीजै।।

हरिरामदास नै हिन्दू–मुसळमान दोनूं वां री हिंसकव्ति री घणी आलोचना करी है। उदाहरण देखीजै–

''संतौ दोनूं राह हरामी, खून करै बिन खामी।
हिन्दू घात करै अजया का, हरि सूं बेफरमाणी।।

इणानै राम नाम सुमिरण माथै भी घणौ जोर दियो है, अै कैवै है–

''राम कहै सेई भला, जगत् कहा भेख।

तै औरां की क्या पड़ी हरीया दिल में देख।।''

इण तरै 'रामस्नेही सम्प्रदाय' में राम–नाम री महिमा रो गुणगान कर्‌यो गयो है। इणा रा संत काव्य में छुआछूत, जात–पात रो विरोध अर हिन्दू–मुस्लिम अेकता, निरगुण अर सगुण रो समन्वय देखण नै मिळै है।

9.5 आई पंथ –

नाथ पंथ सूं निकळयौड़ो आई पंथ मानीजै, 'आई पंथ' गोरखनाथ री चेली विमलादेवी रो चलायो मान्यो जावै है। आई रो अरथ माता होवै है। मारवाड़ में कैई नाथ 'आई पंथी' व्हीया है। जोधपुर सूं 75 किलोमीटर दूरी माथै बिलाड़ो गांव है। औ गांव जोधपुर रो अेक परगनो भी रैयो है, अठै राठौड़ां रो राज हो, आईपंथ रो मत तवरेज हो, जिणरौ मतलब है–तनरेज सूरज, मुसळमानां री परम्परागत बातां में इणरौ मतलब महान् संत अर औलियों सूं मान्यो गयो है। बिलाड़ा में आईजी रो मिन्दर भी लूंठौ है। इण पंथ बाबत डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी रो मानणो है कै ओ पंथ 13वीं सदी में घणौ चावौ हो।

9.5.1 आईजी रो जीवण परिचै–

अेक जनश्रुति बाबत कैवणो है कै आईजी नै किणी नारी रै उदर (पेट) सूं जलम नीं लियो, वै खुद नव दुरगा ही, वै सुरग सूं मुलतान नैड़े कठै अवतरित व्हीया हां अर सिन्ध रा इलाकां में घूमता फिरता हा, सहसा उणानै अेक छोटी–सी लड़की (छोटी) रो रूप धारण'र लियो अर बै भीखा नाम री डाबी राजपूत रै घरै पधार्‌या हां, डाबी सीसोदिया री अेक उपसाखा है। भीख रो घर अम्बागढ़ में हो, जको आबू रेलवे टेंसण सूं 52 मील पूरब में हो, उणारै असाधारण फुटरापै री प्रसंसा माण्डू रै सुलतान रै काना तांई पूग गई अर उणानै बैगो ई हीज विवाह सम्बन्ध रो प्रस्ताव राख्यौ पण भीखा प्रस्ताव नामंजूर कर दियो, फैर भी आईजी ब्या'व खातर तैयार व्हीया, उणानै सिंहै (सिंध) रो रूप धारण' कर उणनै परचो दियो, जदै जाय'र वौ उणारौ अनुयायी बण गयो। वि.सं. 1521 में आईजी बिलाड़ा पधार्‌या हा। आईजी रा कैई परचा उण समै तक घणा चावा व्हीयां। वि.सं. 1561 में आईजी री मिरत्यु व्ही।

'आई पंथ' रा अनुयायी 'डोरा बन्ध' होवै है अर्थात् बै आपरै डांवै हाथ री कलाई माथै डोरे री ग्यारह गांठा बांधै है। डोरा बांधण रै कारण अै 'डोराबन्ध' कैहीजै, पण लुगाई कळाई माथै डोरा नीं बाद्य'र गळै में डोरा बाँधै है। 'डोरा बन्ध' नै हरैक बरस छः पैसईयां अर आईजी रै रथ री बैल्यां खातर कुछ दूजो चढ़ावो चढ़णो पड़ै है।

9.5.2 आईजी पंथ रा प्रमुख चेला

आईजी री सिस्य परम्परा में माधव रो बेटो गोविन्द दीवान, करकाई, भूस्यई आद खास है। आई पंथ रा अनुयायी सिरवी जात रा है। आईपंथ में सबसूं पैलां प्रहलाद, हरिश्चन्द्र, नारद जन्मजेय, आईजी व्हीयां इणीज परम्परा में आगै कैई चेला व्हीयां है।

9.5.3 आई पंथ रो साहित्य–

आई पंथ रै सम्बन्ध में मोकळो साहित्य देखण में आवै पैलो ग्रन्थ ''आई–आनन्द–प्रकाश'' है। वि.सं. 1793 में लिखीज्यों दूजी रचना ''आई–उग्र–प्रकाश'' है जकी महाराजा मानसिंह रा दीवान शिवदानजी रै समकालीन चंद कवि री रचना है। लूम्बा बाबा री ''आई माता री वेलि'' भी महताऊ रचना है। इणारै अलावा 'आई आनन्दपुराण', 'सती कागणजी', 'आई जसभजनावली' आद उल्लेखजोग पोथ्यां है। आं सगळी पोथ्यां में आईजी रै जीवण चरित, भगती साधना अर सीख री जाणकारी है।

9.6 इकाई रो सार

पश्चिमी राजस्थान रै संत सम्प्रदाय रो सार औ है कै अै च्यारू संत सम्प्रदाय आथूणै राजस्थान रै मारवाड़

री मरुभोम में फैल्या है। अै निरगुणी सम्प्रदाय है। आ लोगां री वाणियां में मानव समाज री भांत–भांत री कुरुतियां रो खण्डन कर्‌यो गयो है। अै लोग गुरु नै घणौ महत्व दियो है, गुरु ही संसार रूपी भवसागर सूं पार उतारण वाळा है। अै संत धारमिक अेकता रो संदेस देवै है। असंतां रो रुप अेक समाज सुधारक रो घणौ रैयो है। आ सम्प्रदायां में गुरु सिस्य री परम्परा भी देखण मिळै है। अै लोग जनभासा में आपरै सम्प्रदायां रो प्रचार अर प्रसार करता रैया है। वरतमान युग में भी आं संतारी प्रासंगिकता घणी है।

9.7 सबदावली

आ संतां री वाणियां में जकी न्यांरी–न्यांरी भासावां री सबदावली है, वां में ब्रज, राजस्थानी, अवधी अर अरबी–फारसी भासा रा घणखरा सबद मिळै है। ज्यां री विगत इण गत है–

ब्रज भासा रा सबद – कुछि, जोरि, काहूं, बसन, ताकू।

राजस्थानी भासा रा सबद – हिरदै, स्याम, सतगुरु, कूड़ दांणो, दरसण, प्रीतड़ी, दरद, पछतावौ।

अवधी भासा रा सबद – करहुं जेहि, जदपि।

अरबी–फारसी रा सबद– बिस्मिल्ला, करीम, जुलम दरवेस, मुल्ला, बेफरमाणी।

9.8 अभ्यास रा प्रस्न

नीचै लिख्योड़ां सवालां रा पडूतर 500 सबदां में देवो–

1. संत जाम्भोजी रै बिश्नोई सम्प्रदाय री ओळखाण करावौ?
2. संत जसनाथ रा जसनाथी सम्प्रदाय रा योगदान नै अर उणारी वाणियां नै समझावौ?
3. रामस्नेही सम्प्रदाय री जाणकारी देवता थकां इण सम्प्रदाय री च्यारू साखावां री विस्तार सूं जाणकारी दिरावौ।
4. आई पंथ री जाणकारी दिरावौ।

नीचै लिख्योड़ा सवालां रो पडूतर 150 सबदां में देवो–

1. पर्यावरण चेतना रा संत जाम्भोजी रो जीवण परिचै दिरावौ।
2. संत जाम्भोजी री वाणियां में समाज सुधार रूप नै दरसावौ।
3. जसनाथी सम्प्रदाय रो अगन नाच री जांणकारी दिरावौ।
4. रामस्नेही सम्प्रदाय में संत दरियाव रै जी योगदान नै समझावौ।
5. आईपंथ माथै टिप्पणी लिखो।

9.9 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. राजस्थानी भाषा साहित्य–डॉ. मोतीलाल मेनारिया।
2. संत साहित्य और परम्परा– डॉ. ओकारनाथ चतुर्वेदी।
3. मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन–डॉ. पेमाराम।
4. राजस्थान के प्रमुख संत एवं लोकदेवता–डॉ. दिनेश चन्द्र शुक्ल।
5. राजस्थानी भाषा–साहित्य संस्कृति–डॉ. कल्याण सिंह शेखावत।
6. जाम्भोजी, विश्नोई सम्प्रदाय और साहित्य–डॉ. हीरालाल माहेश्वरी।
7. राजस्थानी भाषा–साहित्य संस्कृति–डॉ. राम प्रसाद दाधीच।
8. रामस्नेही सम्प्रदाय– डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी।
9. राजस्थान में राजस्थानी साहित्य की खोज–डॉ. नारायण सिंह भाटी।

इकाई – 10

दादू पंथ दादू दयाल उणा रा चेला–दादू वाणी अर संत साहित्य

इकाई रो मंडाण –

10.0 उद्देस्य

10.1 प्रस्तावना

10.2. दादू पंथ रो परिचै – निरगुण पंथ

10.2.1 जलम अर बाळपण

10.2.2 ग्यान जोत रो जागणो

10.2.3 साहित्य

10.3 दादू पंथ का सिद्धान्त

10.3.1 निरगुण – सगुण

10.3.2 नाम सुमरण

10.3.3 जगत मिथ्या

10.3.4 मन अर इंद्रिया

10.3.5 चेतण रो हेलो

10.3.6 निरवैरता

10.3.7 ऊंच नीच रो भेद बिरथा

10.4 दादूवाणी

10.5 दादू पंथ रा उप सम्प्रदाय

10.5.1 'खालसा'

10.5.2 'विरक्त'

10.5.3 'उतराधा'

10.5.4 'नागा'

10.6 इकाई रो सार

10.7 अभ्यास रा प्रस्न

10.8 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

10.0 उद्देस्य

इण इकाई रै तहत, फगत राजस्थान ही नीं आखै मुलक मांय पनपी अर विगसी, भगती सम्प्रदाय री जाणकारी दिरीज रैयी है, जिणरा प्रणेता विरक्त संत दादूदयालजी हा, ओ सम्प्रदाय दादू पंथ रै नांव सूं चावो होयो।

दादूजी अर बांरा चेला समुदाय जिण संत साहित्य री सिरजणा करी उण माथै इण आलेख मांय च्यानणो नाखीज रैयौ है।

10.1 प्रस्तावना

साहित्य रै इतिहास मांय भगतीकाळ नै सुवरण काळ जियांकलो मान दिरीज्यो है। उतराधै भारत मांय जिकी भगती री लैर फैली, उण सूं अछूतो राजस्थान ई नीं रैयो। सगती अर भगती रै भावां सूं भरीज्योड़ी इण भौम माथै कितरा ई संतां अर सूरां रो जलम होयो। सूरां रीठ बजाई तो भगतां री अमोलक वाणी रै पांण भौम री पवितरताई सवाई होयी। गोरख अर कबीर री भगती प्रेरणा अठै पण फळी–फूली। अठै न्यारा–न्यारा हलकां मांय बिस्नोई, जसनाथी, लालनाथी, रामस्नेही, निरंजण पंथ, वैराग पंथ, आई पंथ, अलखिया, कामड़ पंथ अर दादू पंथ जियांकला घणाई भगती सम्प्रदायां री थापना होई अर पांच सईकां रै पछै ई आं सम्प्रदायां री भगती भावना मौळी नीं पड़ी है।

10.2. दादू पंथ रो परिचै – निरगुण पंथ

संतां–भगतां सारू राजस्थान री भौम घणी उपजाऊ कही जा सकै। रामानंद रा बारह चेलां मांय खासा इण राजस्थान भौम रा हा। अठै रा अग्यात भगतां–संतां री तो कोई गिणती नीं करीजी, पण एक सैकड़ै सूं बती तो बै संत है जकां री वाणी चौखळै चावी होई। दादू अर बांरै सिस्यां रो रच्यौड़ौ साहित्य इतै प्रमाण मांय है कै समूळो तो आज लग ई छप नीं सक्यो है।

भगतीकाळ रा निरगुण करमजोग मांय अणूतो विस्वास राखता अर सद् गिरस्थ रो सांग पूरो उतारण री चेस्टा मांय रैवता। मोहमाया सूं अळघा रैवता थकां भी गिरस्थ रो करतब निभावण मांय नीं कबीर लारै रैया, नीं दादूदयाल। दादूदयाल रो जळम तो गुजरात रै अहमदाबाद सहर मांय होयो। कैयो जावै कै अठारह बरस री औस्था तांई बै बठै ई रैया पण उणरै पछै बै मध्य प्रदेस होवता राजस्थान तक जवानी (पच्चीस–तीस बरस री उमर) मांय ई आयग्या हा।

10.2.1 जलम अर बाळपण – दादूजी रो जलम किण परिवार मांय होयो, इणरी जाणकारी आज तांई नीं होय सकी है। जात–पांत मांय विस्वास नीं राखणवाळा दादूजी खुदरी वाणियां मांय अन्तरसाखी रै रूप इणरी कीं जाणकारी नीं दिन्ही। दादूजी रो जलम सन् 1544 ईस्वीं अर निरवाण बरस सन् 1603 ईस्वीं मान्यो जावै। अहमदाबाद रै अेक सद्सभावी पिंजारै रै घरां आप नैना–मोटा होया। मझ अहमदाबाद रै कांकरिया तळाव आप अेक ओड़ी मांय मांय तिरता पिंजारै नै मिल्या। खुदरी जात पेटै दादूजी कैयो – 'जांति हमारी जगत्गुरु, परमेस्वर परिवार' – अरथाव ओ कै – आखै जगत री जकी जात है बा ई म्हारी है, जिण परमेसर सगळां नै उपाया है, म्हैं बांरै ई कड़ूंबै रो हूं।

कैयो जावै कै निरमळ हिरदै रै बाळक दादू नै ग्यारह बरस री अैस्थ्या मांय खुद भगवान गुरु रुप मांय भेंटिया अर बांनै संसार समदर सूं तिरणै री अटकळ बताई। उण भेंट रै पछै दिन–दिन दादू री वैराग भावना पक्की होवती गई।

10.2.2 ग्यानजोत रो जागणो – राजस्थान रो सांभर खेतर दादूजी नै खुदरी भगती–जातरा सारु उत्तम लाग्यो। अठै दादूजी री जस जोत जागी तो अैड़ी जागी कै बै आखै चोखळै मांय चावा होयग्या। सांभर सूं चिपती खासी लाम्बी भांय मांय श्रद्धावान लोग बांरा चेला बणता गया। दादूजी रा बावन चेला नामी होया। आं मायं सूं गरीबदास, मिसकीनदास (दोनूं ई दादू पुत्र) सुंदरदास, प्रयागदास, जग्गा, जैमल, जगजीवण रो रच्योड़ो साहित्य आज च्यार सईकां सूं अध्यात्म मांय रूचि राखणवाळा लोगां खातर ग्यान जोत रो काम करै।

10.2.3 साहित्य –

दादूजी रै साहित्य उपर राजस्थानी भासा रो गहरो प्रभाव है। तत्कालीन राजस्थानी भासा मांय रच्योड़ै बांरै साहित्य पेटै कैयो जावै कै बै आपरी धुन मांय बोलता अर चेला बांरी वाणी नै श्रद्धावस कागद उपरां उतार लेता। दादूजी कोई अणूता भणियोड़ा कोनी हा, पण बै गुणियोड़ा हा। बांरै कनै अणभव री हेमांणी ही। बांरै होठां सूं जीवण रो साच ई सबदं रूप में उघड़तो। वाणी री सरसता अर हरैक हिवड़ै उपरां गहरो असर छोडणवाळै अपणास रै कारण जिको ई बांरै कनै घड़ी दोय घड़ी बैठतो बो प्रभावित होयां बिना कोनी रैवतो। बांरै कनै जावण

ताळै हरैक जणै नै बै हैत अर दया री दीठ सूं देखतां। अणूती दयालुता अर हरैक सारू कल्याण रा भाव होवण रै कारण लोग बांनै दादूदयाल कैवण लायग्या।

दादू रै व्यक्तित्व मांय इत्तो गैरो आकरसण हो कै जको ई अेकर बां रै कानै जाय पूगतो बो जीवण रो भेद जाण लैवतो अर बांनै आपरा गुरु बणायंर बांरै बतायै मारग चालण री सोच लैवतो। खुद रा चेलां सूं हैत रै कारण बां आपरा सगळा चेलां रै गावां री जातरावां ई करी अर खुद ई अळगै–अळगै तांई रमण करनै आया, पण बांरो ठावो ठायो सांभर अर नरेणा मांय ई रयो। जीवण रा छैकड़ला बरसां मांय बै नरेणा मांय ई बिराज्या। कल्याणपुर, सांभर, आमेर, नरेणा अर भैराणा अै 'दादूपंथ' रा पांच तीरथ मान्या जावै। राजस्थान सूं छेड़ै दादूजी कासी, लाहौर, बिहार, बंगाल लग दूर दराज जातरावां ई करी। अंतकाळ रै बगत दादूजी नै भैराणा री पहाड़ी माथै बांनै समधी दिरीजी। इण पहाड़ी नै अबै 'दादूखोळ' कैवै।

'दादूपंथ' रो मतलब दादूजी री बै सीख है जिण माथै बांरा अनुयायी चाल'र आपरो कल्याण करै। आपरै जीवण मांय दादूजी किणी दादूपंथ री थापना नीं करी। ओ जरूर कैयो जावै कै बै अगम, अगोचर पार ब्रह्म परमेसर नै हरेक प्राणि रै मांय देखता। हर कोई उण परम तत्व नै जाण लैवै इण वास्तै बां, 'परब्रह्म सम्प्रदाय' री थापना करी। इण खातर बां जिण सिद्धातां नै ब्यौहार मांय लावण रौ कयो–बै ई दादूजी रै पछै दादू पंथ रै नांव सूं चावा होयग्या।

10.3 दादू पंथ का सिद्वान्त

दादू दयाल री रैणी, बहणी अर करणी री हरैक बात अंगेजण लायक समझी गई। दादूजी री अेक साखी मांय इण पंथ री घणकरी बातां आय जावै। संत जिण बात माथै चालण री उम्मीद राखता, बो ई बांरो सिद्धान्त होंवतो। आपरो मतो बतावतां बै कैयो –

'आपो मेटै, हरि भजै, तन–मन तजै विकार।
निखैरी सब जीव सूं, दादू यह मत सार।।'

अरथाव ओ कै अध्यात्म मारग ऊपरां बैवण वाळो साधक सबसूं पैली आपरै अहंकार नै गाळ देवै अर सदीव ई हरि री चितार राखै। बारला–मांयला वैवारगत जिती ई भांत रा विकार होवै, बां रो निवेड़ो कर लैवै। इतो ई नीं, आखी जीव जात नै आपरी मानै, किणी सूं ईसखो या बैर नीं राखै। दादूजी इणनै ई जीवण रो सार बतावै।

10.3.1 निरगुण–सगुण

अवस ई दादूजी निराकार, निरविकार, तिरगुणातीत सत सरुप, अविनासी, पारब्रह्म, परमेस्वर री उपासना करण रो सन्देसो दिन्हो। सगुण अर निरगुण जियांकला बारला भेदां मांय बांरो नीं तो विस्वास हो अर नीं ई इण सारू बै कोई आग्रह दुराग्रह राखता। बै कैवता परमेसर उपाधि नै लैय'र सगुण अर निरुपाथी रुप निरगुण है। उणनै कोई कियां ई भजो; पण भजो। बै कैवता नांव लेणै मांय मोड़ो मत करो–

दादू राम अगाध है, अविगति लखै न कोई।
निरगुण–सगुण का कहै, नांऊ विलंव न होई।।

निरगुण–सगुण रो निवैड़ो करतां अेक समता पुरस री दीठ कांई होवै ? ई पेटै आपरा विचार बे इण भांत प्रगट कर्या –

भाई रै ऐसा पंथ हमारा।
द्वै पख रहित पंथ गह पूरा, अवरण अेक आधारा।
बाद–बिवाद काहु सौं नाहीं, मैं हूं जग ते न्यारा।
समदृस्टि सूं भई सहज में, आपहि आप विचारा।
मैं, तैं, मेरी यह मति नाहीं, निखैरी निर विकारा।
काम कल्पना कदै न कीजै, पूरन ब्रह्म पियारा।

एहि पंथ पहुंचि पार गहि दादू सो तत सहज हमारा।

10.3.2 नाम सुमरण

दादूजी रो विचार हो जिण परमात्मा नै पकड़णौ है बो तो घणो सोरो काम है। फगत नांव सुमरण राखणो है। परमेसर नै खुद सूं न्यारो जाणो ही मत।

दादू नीका नांव है, हरि हिरदै न बिसारि।

मूरति मन मांहे बसै, सांसै सांस संभारि।।

10.3.3 जगत मिथ्या

संसार री असारत बतावतां दादू जीवण सूं भाजण रो तो नीं कैवै पण बै पदारथ अर विसयां सूं बंधणै नै ई बंधण मानै। जिको सांसारिक विसयां सूं मुगत है – उणनै माया बांध कोनी हो सकै। मिनख जूण अमोलक है, उणनै फगत विसयां मांय रमाई। राखणो तो घणो घाटै रो सौदो है। मिनख होवै तो सचिदानंद सरुप ही है, पण माया उण री आंख्या आडो कच फैर देवै अर बो खुद री साची ओळख नीं कर सकै। दादू कैवै इण भांत विसय रस अर माया में रंगीज्योड़ै मिनख री भगवान किण तरै सूं सहाय करै –

दादू माया का बळ देखि करि, आया अति अहंकार

अंध भया सूझै नहीं, का करिह सिरजणहार।।

10.3.4 मन अर इंद्रियां

मिनख रो सुभाव है, वो विसयां अर विनासी चीजां रै कांनी बतो ढुळै। मन अर इंद्रियां खुलै घोड़ै री दांई होवै, बै चावै जठीनै दौड़ै। साधना रै कारज मांय सबसूं पैली मन–इन्द्रियां नै बस मांय करण री कोसीस करीजै जद ई भगती रो आगलो पांवडो भरीजै। मन रो ठैरणो ई मन रो निरमळ होवणो है। मन निरमळ होयां सूं विकार दूर होय जावै। दादू ठौड़–ठौड़ मन नै उपदेस करतो दीखै

मन रे देखत जनम गयौ, ताथैं काज न कोइ भयौ।

मन रे इन्द्री ग्यांन विचारा, ताथैं जनम जुवा ज्यूं हारा।

मन झूंठ साच करि जानै, हरि साध कहै नहीं मानै।।

मन वादि गैहं चतुराई, ताथै मन मुखि बात बनाई।

मन आप आपरौं थापै, करता होइ बैठा आपै।।

10.3.5 चेतण रो हेलो

दादू इण जीवात्मा नै चेतण रो हेलो पाड़ै। विसय वासना मांय पड़योड़ो ओ जीव जुगां–जुगां सूं अग्यान री नींद मांय सोय रैयो है। जलम–मरण री चौरासी मांय पड़योड़ो ओ फगत इण संसार रा बिरथा गड़का काटै। पसु–पांखी री जूण तो भोग जूणी होवै, पण मिनखा जूण मुगति सारू मिल्योड़ी है। मिनखा जूण अमोलक है। अग्यान री नीदं मांय गाफल सूना मिनखां नै दादू चेतावै–

जोगीरै! सब रैणि विहाणी, जलम जाय अंजुरि नो पाणी।

अबै ई जे ओ जीव नीं जाग्यो तो इण नै ओजूं जम री तास भोगणी पड़सी अर मिनख जमारो पाछो मोड़ो घणो मिलैला।

दादूदयाल समझावै–

जागि'र! किम नींदड़ी सूता।

रैण विहाणी सब गई, दिन आय पहुंता।।

सो क्यूं सोवै नींदड़ी, जिस मरणा होवै रे।

जौरां बेरी जागणा, जीव नूं क्यूं सोवैरे।।
ज्यांरै सिर जम खड़ा सर सांधै मारै रे।
सो क्यूं सोवै नींदड़ी, कहि क्यों न पुकारे रे।।
दिन प्रति निस काळ झंपै, जीव न जागै रे।
दादू सूता नीदड़ी, उस अंगि न लागै रे।।

10.3.6 निरवैरता

दादू मिनखाजूण में निरवैरता माथै जोर देवै। बै कैवै जद जीवण कीं पण थिर नीं है – सो कीं मतैई बदळ रैयो है, पछै किणी सागै बैरभाव राख'र मिनख आपरा करम क्यूं बिगाड़ै। हरैक जीव मतै ई काळ रो ग्रास है। दादूजी मानै कै दया अर निरवैरता मिनख रा आदू गुण है। बिस्नोई सम्प्रदाय मांय जीव रिक्षा रो सिद्धान्त है, पण दादू उण सूं आगै बधर निरवैरता सब जीव सूं कैय'र दया नांव री प्रवृति रो बतो विस्तार करै।

10.3.7 ऊंच नीच रो भेद बिरथा

दादू दयाल रो मत हो कै कण–कण मांय परमेसर रो वास है, किसो कुल तो ऊंचो अर कुण नीचो? 'राव रंक सब मरहिंगे जीवै नांही कोई'। इण मरण धरमी जुग में मिनख रो बंटवाड़ जात, कुळ, धनवान, गरीब, जियांकली संग्या मांय करणो उचित कोनी। समता री दीठ सूं सै अेक जियां ई है। दादू इण विचार माथै जोर दिन्हो–

नीच ऊंच मपिम को नांही, देखो राम सवनि कै मांही।
दादू साय सवनि में सोई, पेड़ पकड़ि जन निरभै होई।।

विसय रूप देखां तो दादू री वाणियां मांय आया विचार कबीर री ज्यूं ई अेक ग्यानी भगत रा विचार है, पण दादू अर कबीर री अभिव्यक्ति (कैणगत) मांय कीं फरक है। कबीर री तीव्र कहुंन प्रवृत्ति दादू मांय नीं है। बां मांय तार्किकता री ठौड़ साधूता बैसी है। दादू धीरज सूं समझावै, आग्रह कोनी राखै। दादू री समता, सरलता, अर भावां सूं भर्योड़ी है। बांरै कोमल सभाव रै कारण ई साचो जिग्यासु दादू रा विचार जीवतो अर चावतो। दादू पंथ रो फैलाव ई दूजा आध्यात्मिक पंथां नांय सूं बतो ई इण वास्तै होयो कै बां रा विचार हरैक है हियै माथै गैरो असर करण वाळा है।

10.4 दादू वांणी

दादूजी री रचनावां बांरी सहज हीयै री अभिव्यक्ति है। अेक भगत साधक रै रूप त्रिण वगत जिका विचार अर उकत, बांरै ऊपजी बा ई कयाजगी। बांरा चेला उण उकत नै उतार लैवता। काव्य रचना करणो बांरै जीवण रो उद्देस्य कोनी हो। काव्य रै रूप दादू आपरा आध्यात्मिक अनुभव सिस्यां अर अनुयायियां नै बांटता। इण 'अणयै वाणी' नै उपयोगी जाण वांरा चेला भेळी करणी सरू करदी। दादूजी रो आपरै हाथ सूं लिखयोड़ो कोई ग्रंथ मिल्यो कोनी। दादू री रचनावां 'साखी' अर 'पद' दो रूप मांय मिलै। दादू री सगळी रचनावां बीस हजार सूं बैसी बताई जावै पण आचार्य परशुराम चतुर्वेदी कांनी सूं सम्पादित 'दादू दयाल ग्रंथावली' मांय 37 आध्यात्मिक अंगां मांय भेळी कर्योड़ी साख्यां सगळी 2453 है अर न्यारी–न्यारी रागां मांय रच्योड़ा सगळा पद 438 है। दादूजी अर बांरै पंथ रा दूजा संतां–भगतां री रचनावां रो सबसूं मोटो संग्रह नरेणा रै दादू द्वारै मांय है। अठै हजारां री गिणत मांय हस्तलिखित ग्रंथ ई जतन सूं राख्योड़ा है।

दादूजी रा बावन सिस्यां मांय सुन्दरदास बूसर घणा नामी अर विस्व स्तरीय चिंतक–विचारक संत होया। अै फतेहपुर–सेखावाटी रै दादू द्वारै मांय रैय'र बयाळीस ग्रंथां री रचना करी जिकी सुंदर–ग्रंथावली मांय छप चुकी है। डॉ. मोतीलाल मेनारिया रै उल्लेख मुजब दादू रा चेला खेमदास 17 ग्रंथ, वाजिंद 16 ग्रंथ, जगगोपाल 13 ग्रंथ, जगन्नाथदास 4 ग्रंथ, सरुपदास 3 ग्रंथ, रसपुंजदास 3 ग्रंथ, भीखजन 2 ग्रंथ, जगजीवन 2 ग्रंथ, रज्जब 2 ग्रंथ, राघवदास 1 ग्रंथ, बखना 1 ग्रंथ, गरीबदास 1 ग्रंथ, माधौदास 1 ग्रंथ, संतदास 1 ग्रंथ अर मंगळादास 3 ग्रंथां री रचना करी इणरै अलावा ई प्रयागदास, अर चतरदास जियांकला संतां पुटकर रचनावां लिखी।

दूजा संतां रो आदर

दादूदयाल आप सूं आगै रा संतां रो घणो आदर करता। निरगुणी संत नामदेव, कबीर अर रैदास खातर आप आपरी वाणियां मांय ई आदर भाव प्रगट कर्‌यो है। दादू री वाणियां माथै नाथ पंथ रो ई खास प्रभाव दीखै। निरगुण संतां री वाणियां मांय केई ठौड़–थोड़ै सै फरक सूं समानता ई लखावै। कबीर अर रैदास सारू सम्मान प्रगट करतां दादूजी कैयो –

हरमत राम रसायण पीया, ताथैं अमर कबीरा कीया

राम राम कहि राम समाना, जन रैदास मिलै अगवाना।।

10.5 दादू पंथ रा उप–सम्प्रदाय

दादूजी री सिक्षावां, उपदेस अर धारणावां नै सिद्धान्त रूप बरत'र बांरा चेला दादूजी रै ब्रह्म सम्प्रदाय नै दादू पंथ रो नांव दिन्हो। सिस्यां री ई आपरी गुरु परम्परा थापित होई। न्यारा–न्यारा थांबां री थापना होई। दादूजी रा व्हाला चेला रज्जब आजीवण बींद रै भैख मांय रैया, अर आज लग इण थांमै रा सिस्य सिरमाथै मौड़ बांध्योड़ो राखै अर रज्जब री परम्परा रो पालण करै।

बियां पछै जावतां दादू पंथ च्यार उप सम्प्रदाय मांय फंटग्यो।

अै उप सम्प्रदाय इण भांत है – (1) खालसा (2) विरक्त (3) उतराया (4) नागा बियां अेक पंथ खाखी और मान्यो जावै।

10.5.1 खालसा :

ओ मूळ पंथ है। दादूजी रै पछै बांरा बेटा गरीबदास इण री आचार्य गद्दी माथै बैठ्या। आ नरेक री गद्दी है। खालसा वरग मांय गुरु सिस्य परम्परा है। आज भी आ परम्परा चाल रैयी है। आज तांई इण गद्दी माथै कैइ विद्‌वान संत महंत परम्परा रो पालक कर चुक्या है।

10.5.2 विरक्त :

'हर्ष' वरग रा साधुवां री कोई ठावी ठौड़ या द्वारो नीं होवै। अै मनमौजी रमंता रैवै। 'विरक्ति' एक प्रवृति है जिण कारण अे संत ई विरक्त कहावै। अै साधु अेक भांत सूं दादू पंथ रै प्रचार रो काम करै अर दादू वाणी रो, उपदेस अर पाठ करै।

10.5.3 उतराधा :

उतराधै भारत मांय दादूजी अर वांरै दूजा सिस्यां री वणियां रो प्रचार–प्रसार अर उपदेस करणवाळा दादू पंथी संत 'उतराधा' कहीज्या। हरियाण अर पंजाब मांय उतराधा संत घणा होया। हिसार (हरियाणा) रै रतियां गांव मांय 'उतराधां' संता री मोटी गादी है।

10.5.4 नागा :

नागा साधु बगत री मांग रै मुजब हुया छै। 'दसनामी सम्प्रदाय' मांय नागा साधुवां री टोळी नै देख'र दादू पंथ मांय ई 'नागा सम्प्रदाय' री थापना होई। नागा साधु साधु धर्म रो तो पालण करै ई हवन सागै धरम रिछ्या खातर बे जुध विद्‌या अर मल्ल विद्‌या मांय ई पारंगत होवै। मोको पड़यां पंथ रिछ्या खातर बै आपरा पिराण ई दैय देवै।

दादू पंथ रो विगसाव दूजा पंथां सूं बैसी इण वास्तै होयो कै दादूजी री सिक्षावां पाखंड सूं परै, साचै धरम अर अध्यात्म री थापना करण वाळी ही। दादू साचै मिनख री घड़त (सिरजण) मांय लाग्योड़ा हा। बै कैवता अेक परमेसर रै सिवाय दूजो सो कीं कूड़ो है –

दादू दूजा कछु नहीं, अेक सति करि जाणि।

दादू दूजा क्या करै, जिण अेक लीय पिछाणी।।

10.6 इकाई रो सार :

दादू पंथ मांय उप सम्प्रदाय तो बण्या, पण बांरी मूळ ध्यावना दादू उपदेस माथै ई रैयी। च्यारूं उप सम्प्रदायां रा दादू पंथी गृहस्थी नीं होवै। गृहस्थी अनुयायी होवै। जप, माळा, छापा, तिलक आं परम्परावां सूं दादूपंथी मुगत होवै। जठै–जठै ई 'दादूद्वारा' बण्योड़ा है बठै दादू वाणी रो पाठ चालतो रैवै। नरेणा मांय तो दादू वाणी रो अखंड पाठ चालै।

दादू पंथी आपसरी मांय 'सत्य राम' रो अभिवादक करै।

10.7 अभ्यास रा प्रस्न

1. दादूदयाल कुण हा अर उणारी कांई देन है।
2. दादूपंथ री जाणकारी करावो।
3. दादूवाणीं– में कांई है – उदाहरण सूं समझावो।
4. दादूजी स प्रमुख चेलांरी विगत मांडो।

10.8 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. डॉ. विष्णुदत राकेश – उत्तर भारत के निर्गुण पंथ साहित्य का इतिहास।
2. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी – उत्तर भारत की संत परम्परा।
3. डॉ. पेमाराम – मध्यकालीन धार्मिक आंदोलन।
4. डॉ. मदन कुमारी जानी – राजस्थान एवं गुजरात मे मध्यकालीन संत एवं भक्त कवि।
5. रमेश चन्द्र मिश्र – हिन्दी संतों का उलवाँसी साहित्य।
6. Dr. Hiralal Maheshwari - History of Rajasthani Literature
7. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
8. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति।

इकाई – 11

राजस्थान रा संत–सम्प्रदाय अरवारो साहित्य

इकाई रो मंडाण

11.0 उद्देस्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 **लालदासी सम्प्रदाय**

11.2.1 संत लालदास रो जीवण परिचै

11.2.2 संत लालदास री रचनावां रो परिचै

11.2.3 लालदास रा चेलां परम्परा रो परिचै

11.2.4 संत लालदास री वाणियों में समाज अर लोक जीवण

11.3 **चरणदासी सम्प्रदाय**

11.3.1 संत चरणदास रो जीवण परिचै

11.3.2 संत चरणदास री रचनावां रो परिचै

11.3.3 संत चरणदास रा चैलां री परम्परा

11.3.4 संत चरणदास री वाणियां में समाज, धरम अर संस्कृति

11.4 **निरंजनी सम्प्रदाय**

11.4.1 संत हरिदास रो जीवण परिचै

11.4.2 संत हरिदास री रचनावां रो परिचै

11.4.3 संत हरिदास रा चेला

11.4.4 संत हरिदास री वाणियां में समाज, धर्म अर संस्कृति

11.5 इकाई रो सार

11.6 संत सबदावली

11.7 अभ्यास रा प्रस्न

11.8 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

11.0 उद्देस्य

इण इकाई रो मूळ उद्देस्य राजस्थान रै (पूर्वी) (ऊगूंणै) खेतर रा खास–खास संत सम्प्रदायां री सामान्य जाणकारी जाणकारी करावणौ है। वरतमान समाज में इणा (पूर्वी) री वाणियां अजै भी नैतिकता, धरम, माया, समाज, जातियां, कुरुतियां रो खण्डन करती व्ही आज रै मानखै नै सद्मारग रो हेलो देवै है।

ईं सूं आपा औ जाण सका हां –

- पूर्वी खेतर मायं संत सम्प्रदाय रो उदय रो कारण कांई हो?
- संत लालदास परिचै अर वारै पंथ री आखी जाणकारी मिलैला।
- संत चरणदास रै जीवण परिचै रै सागै वारै पंथ री विगत मिलैला।
- संत हरिदास अर वारौ निरंजनी सम्प्रदाय री पुख्ता जाणकारी मिलैला।

- आं तीनूं सम्प्रदायां री समाज अर धरम नै में देन कांई ही?

आं बातां री विस्तार रै साथै घणी महाताऊ जाणकारी मिळैला अर संत साहित्य री महता रो बरणाव देख्यौ जा सकैला।

11.1 प्रस्तावना

जिण बखत दादूजी–मध्य राजस्थान में आपरा धरमोपदेस दे रैया हा, उणी बखत राजस्थान रै पूर्वी खेतर रा मेवात प्रदेस में संत लालदास अर संत चरणदास जैड़ा नामी संत व्हीया, जिणानै कबीरदास री भांत समाज में फैलयौड़ा आडम्बरां अर कुरुतियां रो खण्डन करता, भगती अर नैतिकता री महत्ता रो गुणगान कर्‌यौ है। साथै ही मारवाड़ रै उतरी–पूर्वी खेतर मायं संत हरिदास निरंजनी रो भी घणौ खासौ महत्व है। अे संतां ''सर्वजन हिताय'' रो उपदेस दियो ।

इण इकाई में विसय विवेचन री दीठ सूं राजस्थान रै पूर्वी खेतर रा खास–खास संत सम्प्रदायां री आखी जाणकारी दी जावैली, विसय री दीठ सूं योजना रै बाबत पूर्वी भाग में चावा संत सम्प्रदायां में लालदासी पंथ, चरणदासी–पंथ अर निरंजनी पंथ रो परिचै, वांरी वाणियां, रचनावां अर वांरी समाज नै देन रो विस्तार सागै बरणाव कर्‌यो जावैला।

11.2 लालदासी सम्प्रदाय

दादू दयाल रै समकालीन संत लालदास अर वारा लालदासी पंथ (सम्प्रदाय) रो प्रभाव अलवर रा मेवात में घणो रियो है। इणा आपरै जीवणकाल में मध्यम मारग रो प्रचार कर्‌यौ है। इणा हिन्दू अर मुसळमान दोनूं वां नै आपस में मेळ रो उपदेस दियो है। इण पंथ में महाजन, सुनार, जत्ती अर मेव जात रा लोग मिळै है। इण पंथ में मतानुयायी नीं तो हिन्दू है अर नीं मुसळमान है, पण आचार विचारां री दीठ सूं लालदासी पंथ हिन्दू धरम रै घणौ नेड़ै है।

इण पंथ में राम–नाम रै जप अर कीरतन नै घणौ महत्व दियो गयो है। इण पंथ रा लोग जदै मिलै तद ''जय राम'' जी कैवै है। इण पंथ में दीक्षित होण वाळा नै मुंडो काळौ करनै जूतां री माळा पैहरा'र सवारी काढ़'र सरबत रो प्यालो पिलायो जावै पछै जाय'र बौ सुद्ध रूप सूं पंथ रो अनुयायी बणै। इण पंथ रा अनुयायी माथै पर चोटी भी राखै। कुछैई अनुयायी गृहस्थी भी है।

इण पंथ में धोलीदूब संत लालदास रौ खास स्थान है। मेवात में अलवर, नगला अर शेरपुर भी चावा स्थान है।

11.2.1 संत लालदास रो जीवण परिचै–

संत लालदास रो जळम वि.सं. 1597 (1540 ई.) री सावन बदी 5 (पांचम) नै धौळी दूब गांव में हुयो हो, इणारै पिता रो नाम चांदमल अर माता रो नाम समदा हो। अै जात रा दूलोत गोत्र रा मेव मुसळमान हा, संत लालदासजी रो सरुवाती जीवण घणौ दुःखदायी अर कस्टमयी हो, अै जंगळ मांय लकड़ियां काट'र आपरो जीवण व्यतीत करता हा, इणी बखत तिजारा रा फकीर 'गदन चिश्ती' सूं अै दीक्षित व्हीया इणासूं प्रेरणा पाय'र अै धोळीदूब छोड़'र बाघोली री भाखरी 'सिंह'शिला' माथै कुटिया बणा'र रैवण लागा। पछै नगला में आपरो जीवण व्यतीत करता व्हीया 108 बरस री उम्र में 1705 वि.सं. में आप सरीर छोड दियो हो, पछै इणारी समाधि शेरपुर गांव में बणायी गयी ही। संत लालदास री जोड़ायत रो नाम मोगरी हो। इणा'री बेटी रो नाम सुरुपा है अर इणारै पहाड़ा अर कुतब नाम रा दो लड़का व्हीयां हां।

11.2.2 संत लालदास री रचनावां रो परिचै

संत लालदास रो घणखरौ साहित्य अप्रकासित है। श्री परशुराम चतुर्वेदी रै मुजब स्व. श्री हरिनारायण पुरोहित रै संग्रै में ''लालदास जी री चेतावणी'' नामक रचना देखण नै मिळै है। ''लालदास री वाणी'' रा तीन च्यार हाथ लिख्या ग्रन्थ अलवर में देखण में आया है। इणारी वाणी में खड़ी बोली अर ब्रज–मिश्रित राजस्थानी

रा रूप देखण मिळै है। इणारी वाणी रा छ भेद है–

(1) पद

(2) साखी

(3) गीता पद्यानुवाद

(4) आत्मज्ञान

(5) योगसार संवाद

11.2.3 संत लालदास रा चेलां परम्परा रो परिचै

लालदासी पंथ रै अनुयायी खासतौर सूं मेव अर वणिक जात रा है। लालदासी पंथ अेक जीवित सम्प्रदाय है। संत लालदास रा चेलां में ठाकुरदास, हरीदास, भीखनदास, वहोतदास, प्रानीदास, शोभनदास, ठाकरियादास, प्रभुदास, अध्हैदास, लालूदास, बेगादास, भारूदास, निहालदास, ग्यानदास, मलूकदास, मल्हड़दास, चंदनदास, गरीबदास, बालकदास, मंशादास, हरिजनदास अर धरमदास आद खास है।

11.2.4 संत लालदास री वाणियां में समाज अर लोक जीवण

संत लालदास री वाणियां में समाज री कुरुतियां रो खण्डन कर्‌यो गयो है। इणा सदाचार माथै घणौ जोर दियो है। इणारी वाणियां में ठौड़–ठौड़ काम, क्रोध, निन्दा, मोह, हिंसा, चोरी, अभिमान आद रो परित्याग करनै सांच, सील, दया, संतोस, क्षमा, निरलोभ आद नै धारण करण रो आग्रह कर्‌यो गयो है। राम अर रहीम री आराधना समान रूप सूं मानखै रै जीवण रो लक्ष्य मान्यो गयो है। धारमिक भेदभाव अर उणसूं पैदा सामाजिक असन्तुलन अर तनाव नै खतम करण री सीख दी गई है।

नाम सुमिरण –

''हिन्दू तुरक है दोउन का, येकहि राम रहीम खुदाजी।''

इणा मन री पवित्रता–रूपी साध्य री सिद्धि तीरथ जात्रा अर व्रत–उपवास री अपेक्षा सत्संग अर नाम–सुमिरण माथै घणौ जोर दियो है–

''लालजी दिल भीतर दरियाव है, तू क्यों तीरथ जाय।
पांचू इन्द्र बस करी, घट ही भीतर न्हाय।।''
मेरा मन राम सूं राजी,
सुनभाई पंडित काजी मुल्ला, तुम क्या मांडी बाजी।''

नैतिकता –

इणा परोपकार नै आपनावण में मानखै रो कल्याण मान्यो है। इणरै अलावा कथनी अर करणी री अेकरूपता माथै भी बळ दियो है, जिणसूं आखौ समाज सैद्धांतिक नै व्यवहारिक दीठ सूं अेकरूप रैय'र नैतिक आदर्सा रै विद्रपीकरण अर गळत काम करण सूं परे रैवै–

''लालजी शील गया तब क्या रहा, सत गया सब हार।
भक्ति खेत कैसे बचे, टूट गई सब बार।।''

गुरु महत्ता–

लालदास जी नै मोक्ष खातर गुरु री सत्ता नै स्वीकार करै। गुरु रा दियोड़ौ ग्यान सूं इण देह रा सै पाप खुद ही खतम व्है जावै। इणारै मुजब परमात्मा अर सद्‌गुरु दोनूं अेक है। सद्‌गुरु रै बिना ब्रह्म री प्राप्ति नीं व्है सकै है–

''लालजी साहिब सत्‌गुरु एक है, यामें संसय नाहिं,
सतगुरु बिन पावै नहीं, ज्ञान, ध्यान की राह।।''

स्वावलम्बन रो महत्व–

संत लालदास समाज में रैय'र भी स्वावलम्बन माथै घणौ जोर दियो है। इणारौ लोककल्याणकारी चिन्तन मूळतः ''स्वान्तः सुखाय'' हो, संत लालदास किणी रो आसरो नीं लियो बे जीवन भर स्वालम्बी रिया।

''लालजी भगत भीख न मांगिये, मांगत आवे शरम।

घर–घर टाडत दुःख है, क्या बादशाह क्या हरम।।''

हिन्दू–मुसळमान रो मेळ

संत लालदास हिन्दू अर मुस्लिम दोनूं वां में अेकता चावता हा, इण खातर बै दोनूं नै सम्बोधित करता कैवै कै बे दोनूं ब्रह्म नै घणौ गूढ़ समझ'र उदासीन व्है रैया है अर दूजा बारला आडम्बरा में ही फंस्योड़ौ है। सांच तो औ है कै ग्यान अर ध्यान रै सूं ब्रह्म आसानी सूं मिक सकै है।

''लालजी ज्ञान ध्यान मीठे चना, पेलो कल के देव।

हिन्दू तुरक दोऊं भरमे रहे, राम मिलो कलभेव।।''

इण तरै लालदास मूरत–पूजा करणौ, मूंड–मुंडाणौ, व्रत–उपवास रो भी विरोध कर्‌यो है। उणारी सूं पतो लागै कै लालदास भी कबीर री भांत अेक समाज सुधारक हा। इणारै मुजब मिनख में अन्तःकरण री सुद्धता, नाम सुमिरण अर आचरण री पवित्रता व्हैणी चाहिजै। इणांरी रचनावां में हिन्दू–मुस्लिम अेकता रो मेळ भी देखण मिळै है।

11.3 चरणदासी सम्प्रदाय

संत चरणदास रो चलायोड़ौ सगुण अर निरगुण दोनूं विचारधारा रो मैळ रो औ पंथ अलवर अर मेवात खास पिछाण राखै है। इण पंथ री परम्परा अर दरसण जिता गूढ़ अर गम्भीर है, ऊतो ई हिज गूढ़ चरणवासी पंथ रो साहित्य है। औ पंथ 1780–1785 वि.सं. रै लगैटगै रो है। नादिरशाह रो आक्रमण 1796 वि.सं. में व्हीयों हो, चरणदास रो रचनाकाल वि.सं. 1781 मान्यो जावै है। सम्प्रदाय री परम्परा धारमिक दीठ सूं –बिन्दु कुल परम्परा अर नाद कुल परम्परा लियौड़ी है। नाद कुल परम्परा श्री मन्नारायण सूं सरू होवै है, इण परम्परा रै विसय में नीचै लिख्यौ कवितांस चावो है।

''पुराण सहित मेता ऋषि नारायणो व्यय

नारदायपुरा प्राह कृष्ण दै पायनायसः

सर्वे महं महाराज भगवान् बादरायण।

इमां भागवतीं प्रतिः संहिता वेद सामिंताम्।।''

11.3.1 संत चरणदास रो जीवण परिचै–

संत ता रो नाम मुरलीधर अर माता रो नाम कुंजा हो, अै जात रा ढूसर बणिया हा, आ गुरु रो नाम शुकदेव बत ायो जावै है। इणारै बाळपणै रो नाम रणजीत हो, इणानै 19 बरस री उम्र में दीक्षा मिली अर सुखानंद इणारौ नाम रणजीत सूं बदल'र चरणदास राख दियो हो, पण चरणदास रै मतानुसार इणारै गुरु व्यास सुत शुकदेव ही हा, तीस बरस री अवस्था में इणा उपदेस देणा सुरू कर दिया हो, घणा दिनां पछै अै दिल्ली में ही रैवण लागा। अठै ही 14 बरस तांई योगाभ्यास कर्‌यो। चरणदास रो समै भारत में मुगलां रै पतन–काल रो समै हो, नादिरशाह अर अब्दाली रो आक्रमण इणी समय व्हीया हा। इणारौ देहान्त फागुण सुदी 4 (चौथ) वि.सं. 1834 नै व्हीयो हो, दिल्ली में इणारी समाधि है अर डेहरा में इणारी अेक छतरी है। डेहार में ही इणारौ मिन्दर भी है।

11.3.2 संत चरणदास री रचनावां रो परिचै

संत चरणदास रचित साहित्य भी बिखरयौड़ो मिळै हैं। इणारी 21 रचनावां रो पतो लागौ है, पण प्रामाणिक रचनावां 12 ही है।

बारह पोथ्या–ब्रज चरित्र, अष्टांग योग वर्णन, योग संदेह सागर, पंचोपनिषद्, भक्ति पदार्थ वर्णन, ब्रह्मज्ञान सागर, धर्म जहाज वर्णन, अमरलोक अखण्ड धाम वर्णन, ज्ञान स्वरोदय, मन विकृत करण गुटका सार, सबद अर भक्तिसागर।

डॉ. त्रिलोकीनारायण दीक्षित ऊपर लिख्या ग्रन्थां रै अलावा रास–लीला, माखन–चोरी–लीला, मटकी–लीला, चीरहरण–लीला, कालीनथन–लीला, कुरुक्षेत्र–लीला, जागरण–महात्म्य, श्रीधर ब्राह्मण–लीला, नाम क आठ ग्रन्थ चरणदास कृत मान्यां है।

11.3.3 संत चरणदास रा चेला री परम्परा

चरणदासी पंथ में चरणदास जी रा चेलां री संख्या घणखरी है। सिस्य परम्परा सूं सम्बन्धित सै सूं पैलो उल्लेख इणारी मिरत्यु सन् 1782 रै लगैटगै हुई सैजाबाई 10 चेला बताया है। डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल रै मुजब 52 री न्यारी–न्यारी साखावां ही, जकी अजै भी में है। 52 चेला री न्यांरी–न्यांरी गादियां भी ही। इण 52 चेलां में खास गिणावण जोग है– श्रीरामरूपजी, श्री रामसखीजी, सैजाबाई, हरिप्रसाद जी, श्री आत्मारामजी, परमस्नेही जी, दयावाबाई, जीवणदासजी, निरमलदासजी, श्री चरणखाक श्री साधुरामजी खास रैया है।

अे बावन चेला नै चरणदास जी सूं सिक्षा–दीक्षा लैय'र आप–आपरै थान अर प्रदेस में इण पंथ रो प्रचार–प्रसार कर रैया है। श्री राम रूपजी नै चरणदासी पंथ रो विसेस प्रचार कर्‌यौं। इणारै 70 स्थानां माथै पीठ थापित है।

कालान्तर में चरणदासी पंथ रो प्रचार अर विकसाव दिल्ली, आगरा, जयपुर, अलवर, पटना, मुंगेर, चरखारी, उज्जैण, ग्वालियर, कानपुर, सहारनपुर, पटियाला, मेरठ आद स्थानां लग व्हीयों है। वरतमान में दिल्ली चरणदासी पंथ रो खास केन्द्र है।

खास चेलां रो परिचै –

1. **सहजोबाई** – चरणदास री सजातीय चेली ही बे वि.सं. 1800 रै लगैटगै मेवात रै डेहरा गांव में जळमी बाल ब्रह्मचारी रैयी ही, डॉ. सावित्री सिन्हा नै इणारौ जळम 1743 ई. रै लगैटगै दिल्ली में बतायो है। इण बावत अै कैयो भी है–

   ''हरिप्रसाद की सुता, नाम है सहजोबाई।

   दूसर कुल में जन्म, सदा गुरु चरण सहाई ।।''

   सैजाबाईरी रचना 'सहज प्रकाश'नाम री है।

   इण में इणारी हाथ लिखी न्यांरी–न्यांरी वाणियां मिळै है। इणमें सद्‌गुरु महिमा, साधु–महिमा, दसावां, अंग, सोळह तिथि निर्णय आद विसय भी मिळै है।

2. **दयाबाई** – डॉ. पीताम्बरदत बड़थ्वाल इणानै चरणदास री चचेरी भाण मानै है। इणारौ जळम 1750–1775 वि.सं. रै लगैटगै डेहरा गांव में व्हीयौं हो। इणारौ रचनाकाल वि.स. 1818 मान्यो जावै है।

रचनावां – दयाबोध अर विनय पत्रिका –अे रचनावा दयार्वादूरी है।

'दयाबोध' में गुरु महिमा, सुमिरण, प्रेम, वैराग, साध आद कैई अंगा रा दूहा अर चौपायां छंद में लिखी मिळै है। 'विनय पत्रिका' में सुमिरण रो अंग मिळै है। इण में इणारौ नाम दयादास मिळै है।

11.3.4 संत चरणदास री वाणियां में समाज, धरम अर संस्कृति –

संत चरणदास री वाणियां में समाज री कुरुतियां, पाखण्ड, आडम्बरां, जातिभेद आद रो खण्डन कर्‌यो गयो है। सागै ई गुरु री महता, नाम सुमिरण माथै घणौ जोर दियो है। चरणदास जी नैतिक सुद्धि माथै भी बार–बार जोर दियो है। अर निस्काम भगती रो प्रतिपादन भी कर्‌यो गयो है। इणारै पंथ नै चरित्र प्रधान भी कैयो जावै। इणारी साधना में योग, ब्रह्म अर ग्यान रो सुन्दर समन्वय है। इणा हरैक मिनख रै खातर दस खास करम

बताया है, जिणामें सद्‌गुरु सेवा, परिवार, अर समाज खातर फरज, सत्संग, अर ईस्वर सारू विस्वास आद खास गिणावण जोग है।

प्रेम अर भगती इणारो आधार है जिणमें में आडम्बरा रो कोई महत्व नीं है।

गुरु की महिमा–

1. ''कहै चरनदास गुरु मिले, सोई हाँ रहु बौरी,
   सब सुखसागर के बीच, कलहरी ह्यै रहु री।'' – संत सुधसागर (वियोगी हरि)
2. ''सद्‌गुरु मेरा सूरमा, करे सबद की चोट,
   मारे गोळा प्रेम का, ढहै मरम का कोट।'' – (चरणदास)
3. सहजो गुरु ऐसा मिलै, जैसे धोबी होय,
   दै–दै साबुन ज्ञान का, मलमल डारै धोय।'' – (सहजोबाई)
4. परमेस्वर सूं गुरु बड़े गांवत वेद पुरान,
   सहजो हरि के मुक्ति है, गुरु के घर भगवान्।'' – (सहजोबाई)

सत्संग की महिमा–

1. ''तप के बरस हजार हँ, सतसंगत घड़ी एक,
   तो भी सरवर ना करे, शुकदेव किया विवेक।'' – (चरणदास)
2. ''साधु संगत बिन गति नहीं होनी,
   क्या तपसी अरु क्या भया मौनी।'' – (चरणदास)
3. जब–जब दरसन राम दे, तब मांगो सतसंग,
   चाहो पदवी भगत की, चढ़े सुनवधा रंग।'' – (चरणदास)

नाम सुमिरण–

1. ''तप तीरथ व्रत साधना, राम नाम सम नाहिं।'' – (चरणदास)

नैतिकता–

1. ''दया, नम्रता, दीनता, क्षमा, शील, संतोष,
   इणकूं ले सुमिरण करे, निश्चय पावै मोक्ष।'' – (चरणदास)

कथनी अर करनी–

1. ''जो जैसी करणी कर लेवे, हरि तैसा ही बदला देवे।'' – (चरणदास)
2. ''कौटि यही उपदेश है, यही जु सगरी बात,
   करणी ही बलवन्त है, यों शुकदेव दिखात।'' – (चरणदास)

इण तरै चरणदासी पंथ री अै सरस, सरल अर सुबोध वाणियां समाज में नैतिकता, गुरु की महत्ता, करम री प्रधानता आद सूं सद्‌मारग माथै चालण रो उपदेस करै। चरणदासी पंथ में निरगुण परब्रह्म री सत्ता नै स्वीकार करीजी है।

11.4 निरंजनी सम्प्रदाय–

निरंजनी सम्प्रदाय रै बारे में सै सूं पैला जाणकारी डॉ. पीताम्बरदत बड़थ्वाल सूं मिली। इण पंथ रै बारे में कयो जावै कै इणरा प्रवर्तक स्वामी निरंजन भगवान् निरगुण रा उपासक रैया हा, इण पंथ रो पैलो सम्बन्ध उड़ीसा सूं मान्या जावै है पण राजस्थान रै निरंजनी सम्प्रदाय रो सम्बन्ध किणी दूजे निरंजनी सम्प्रदाय सूं नीं

मिळै। औ पंथ नाथपंथ सूं जुड्यों थको हो।

राजस्थान रो निरंजनी सम्प्रदाय डीडवाणा में स्थित है। संत हरिदास सूं चाल्योड़ौ अै पंथ निरगुणी पंथ कहलावै है। रामदासजी री वाणी में साफ उल्लेख मिळै है कै हरिदासजी ही निरंजनी पंथ री थरपणा करी ही–

''गौरखनाथ मछंदर जोगी, रग रग भेद लिया रसभोगी,
क्रोड़ निनाणवराजा हुया, गाया राम अगम घर बुवा,
हरिदास पूरा गुरु पाया, नाम निरंजन पंथ चलाया।''

निरंजनी पंथ री थरपणा वि.सं. 1565 तांई व्है चुकी ही अर –'गाढ़ा विहाणी' ही इणारा पैला चेला हा, राजस्थान में परिस्थिति मुजब निरंजनी पंथ रो धीरे–धीरे घणौ विस्तार व्हैतो गयो हो, ओ पंथ डीडवाणां रै कनै कापड़ोद गांव में है। निरंजनी पंथ रो परिचय देवता थकां डॉ. मोतीलाल मेनारिया लिखै है– ''यह पंथ हरिदासजी से चला है। इनके अनुयायी निरंजन निराकार की आराधना करते हैं। इनमें भी कुछ तो घरबारी और कुछ निंहग हैं। पहले तो ये लोग मूर्ति पूजा नहीं करते थे।''

11.4.1 संत हरिदास रो जीवण परिचै –

संत हरिदास रो जळम कापड़ोद गांव में सांखला राजपूत परिवार में 1455 ई. में बतायो गयो है। इणारो मूळ नाम हरिसिंह हो, इणारो जीवणकाळ ई. सन् 1417 सूं 1645 रै बिचाळै मान्यौ जावै है। इणरा जीवण रा तथ्य घणखरा बिवादास्पद है। अैड़ो मान्यों जावै कै अै पैलां अेक धड़वी (डाकू) हा, पछै अेक साधु रै सम्पर्क सूं इणारो जीवण बदळ गयो, कठोर साधना रै पछै 1513 ई. में अै डीडवाणा आया, हरिदास जी रा गुरु दादूपंथी प्रयागदास मान्या जावै है पण हरिदास जी री वाणी में, लिख्यौ है कै अै खुद गोरखनाथ सूं गुरु दीक्षा ली ही–

''गुरु हमारे गोरख बोलिये, पाडा हमारी चेली,
सत का शब्द घर खेलूं, इहि विधि दुरमति पैली।
मांई मूंडे सिद की, भजूं निरंजन नाथ,
हरिदास जन युं कहं सिर गोरख का हाथ।।''

इण पंथ रा अनुयायी इणानै 'हरिपुरुष' नाम सूं भी पुकारे है। हरिदासजी तीखी डूंगरी माथै कठोर साधना अर योग साधना करी ही। इणारो स्थान 'गाढ़ा' रै नाम सूं घणौ चावौ है। इणारी मिरत्यु फागण सुदी छः (छठ) 1543 ई. में डीडवाणा में हुई ही। औ पंथ अजै भी निरगुण निराकार री सत्ता नै स्वीकार करै है।

11.4.2 संत हरिदास री रचनावां रो परिचै–

डॉ. मोतीलाल मेनारिया संत हरिदासजी रा नौ ग्रंथां रो उल्लेख कर्यो है– ''भक्त विरदावली, भरथरी संवाद, साखी, पद, नाममाला, नाम निरूपण, ब्याहलो, जोग ग्रन्थ अर टोडरमल जोग।

साधु सेवादास ''हरिपुरुष री वाणी'' नामक ग्रन्थ रो प्रकासन करवायो हो। स्वामी मंगलदास भी जयपुर सूं इणारी वाणी छपवाई है। संत हरिदास री छोटी–छोटी 47 पोथ्यां भी मिळै है, जिणारा नाम इण गत है– ब्रह्म स्तुति, मूल मंत्र योग ग्रन्थ नाममाला, नाम निरूपण, निरंजन लीला, साधु चाल, अगाद्य अचरज, जौ संग्राम, अष्टपदी, वंदना, निराकार वंदना, निष्पक्ष मूल, समाधि जोग, प्राण प्रसिद्ध–परमात्मका पूजा, योगध्यान, प्राण मात्रा, आत्म अभ्यास, उत्पत्ति हेतु, अब्द परीक्षा, वीर रस वैराग, भ्रंम विध्वंस, उपदेश चिन्तावणी, मनचरित, मन मद विध्वंस, मनहर, ब्यावला, मान प्रसंग, मन मद प्रकास, मन उपदेस, टोडरमल, अमृतकाल, ज्ञान उपदेश, बारजोग हंस प्रमोद, बड़ी तिथि, लघु तिथि, चालीस पदी, चतुर्दश पदी, तीस पदी, बारह पदी, बावनी, सूर समाधि, सूर समाधि अर्थ, प्रवृति–निवृति, माय छंद, जोमूल सुख जोड़, ज्ञान, अज्ञान परीक्षा, आं पैताळीस रचनावां छंदोबद्ध रचनावां है, बाकी दो रचनावां में वंदना अर निराकार वंदना मिळै है।

11.4.3 संत हरिदास रा चेला –

संत हरिदास रा 52 चेला बताया गया है जिणामें खास गिणावण जोग चेलां में – खेमदास गोविन्ददास, सुन्दरदास, चरणदास, सारंगदास, दयालदास, रामदास, अमरदास, मोहनदास, राघोदास, पूर्णदास, पेखादास,

ध्यानदास, गोपालदास, महरवान, उद्योगदास, टीकूदास, कल्यावदास, नरहरिदास, नारायणदास, वानदास, केवलदास, भगवानदास, श्यामदास, राघवदास, परमानंदजी आद है।

11.4.4 संत हरिदास री वाणियां में समाज, धरम अर संस्कृति–

संत हरिदास भी समाज री कुरुतियां रो खण्डन कर्‌यौ है। इणा भी नैतिकता माथै जोर, सच नै महत्व, अनेकता में अेकता, सगुण–निरगुण रो समन्वय, मूरत पूजा रो खण्डन, मन री पवित्रता नै महत्व, तीरथ जातरा रो विरोध, सत्संग अर नाम सुमिरण नै महत्व, गुरु की महता, जाति भेद रो विरोध आद बातां रो खुलासौ सरस वाणियां रै माध्यम सूं कर्‌यौ है, जिणा रा उदाहरण इण गत है –

हिन्दू–मुस्लिम समन्वय–

1. ''हिन्दू तुरक एक कल लाई, राम रहीम दोय नहीं भाई।''

मूरत–पूजा रो खण्डन–

1. ''ज्यूं मूरति त्यूं ही सिला, राम बसे सब मांहि।''

सत्संग री महिमा –

1. ''भावे ठालो हिमालै जाइ, कासी जाय करवत लेहु।''

ईस नाम सुमिरण माथै जोर–

1. ''यहाँ बामण वहां मुल्ला करे, वेद कतेब कथे विसराम।
   राम संभारि दूर कर मैं तैं, आखरि एक अलाह सूं काम।''

नैतिकता माथै जोर–

1. ''काम, क्रोध, अभिमान, कुपह कांटा मत लावौ।
   अलख भजन उर धरौ, मरो मति मौत चुकावौ।''

जाति भेद रो विरोध–

1. ''एकै घाटी नीसर्‌यां, बामण क्षत्री सूद।''
2. ''जाति वरण कुल नांही जाके, सो निकुला निरधार।''

नाम सुमिरण माथै जोर–

1. ''हरि अपार पार को नांही।''

प्रेम भावना रो प्रसार–

1. ''..... राम नाम मोटोरतन,
   उर मंडण उर प्रेम प्रीति, दीजै जतन।।''

इण तरै औ पंथ करमकांड, मूरत पूजा, अवतारवाद, रो खण्डन करतो आयो है। दळबंदी री भावना री जागां औ सम्प्रदाय समन्वय री भवना नै लैय'र चालै है।

11.5 इकाई रो सार

इण सम्प्रदाय रो सार ज्यौ है कै अै तीनूं सम्प्रदाय राजस्थान रै पूर्वी भाग में घणा चावा है। अै निरगुण परब्रह्म री कल्पना नै दरसावै है। अै संत लोग सीधी सादी भासा में आपरी वाणियां सूं समाज नै अेक नूंवी दिसा प्रदान करै है। अै आपरी वाणियां सूं समाज री बुराईयां, जात–पांत छुआछूत जैड़ी हीन भावना रो विराध करै, अै संत लोग नैतिकता माथै जोर देवै अर गुरु री महत्ता नै घणौ महताऊ मानै है। गुरु री किर्‌पा सूं मोक्ष मिळ सकै है। अै सच्चा गुरु री सरण में जावण रो संदेस देवै। अै समाज में अेकता अर हिन्दू–मुस्लिम रो समन्वय भी थारपित करै है।

11.6 संत सबदावली

अै संत आपरी वाणियां में जकी भासा अपणाई है, बां 'मिश्रित' भासा कहलावै है। इणारी भासा में ब्रज, खड़ी बोली, राजस्थानी, पंजाबी, अरबी–फारसी री सबदावली रो मेळ है। ज्यां रा उदाहरण है–

ब्रज भासा रा सबद – हते, हुते, हुजिये, जनकूं, तिनको, दरसणि, विलंबै, जाके, डारै, यामें।

अवधि भासा रा सबद – तै, जे, काहे, नाहीं, चढ़ाये, निकसी, सहाई।

राजस्थानी भासा रा सबद– मनख, दन, मांणस, हाजर, मालम, कहणी, रहणी, सुगड़ी, तीरथ, न्हाय, सूरमा, सबद, मरम, नीसर्यां, मंडण, जतन।

अरबी–फारसी रा सबद – जिमीं, खुदी, पीरा, दीदार, बैहाल, खुदाई, नमाज, हाजिर, सबूरी, बादशाह, हरम, तुरक, मुल्लव।

11.7 अभ्यास रा प्रस्न

नीचै लिख्योड़ा सवालां रा पडूतर 500 सबदां में दिरावौ–

1. संत लालदास री वाणियां में समाज सुधारक रा रूप नै दरसावो।
2. चरणदासी पंथ री जाणकारी करावो।
3. संत हरिदास रो परिचै देवतां थकां 'निरंजनी पंथ' में उणारौ योगदान बतावो।

नीचै लिख्योड़ा सवालां रो पडूतर 150 सबदां में दिरावौ–

1. संत लालदास रो जीवण परिचै देवतां थकां उणारी रचनावां री जाणकारी करावौ।
2. चरणदासी पंथ में सहजोबाई अर दयाबाई रो योगदान बतावौ।
3. संत हरिदास री रचनावां री जाणकारी देवतां थकां वारै चेलां परम्परा रा नामोल्लेख करो।

11.8 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति।
2. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।
3. डॉ. सुदर्शनसिंह मजीठियां –संत साहित्य।
4. डॉ. ओंकारनाथ चतुर्वेदी – संत साहित्य और परम्परा।
5. डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल – संत साहित्य।
6. डॉ. पेमाराम – मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन।
7. परशुराम चतुर्वेदी – संत साहित्य के प्रेरणा स्रोत।
8. डॉ. त्रिलोकी नारायण दीक्षित – हिन्दी संत साहित्य।
9. डॉ. पीताम्बरदत बड़थ्वाल – हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय।
10. सीताराम लालस – राजस्थानी सबदकोस (भाग–1)
11. डॉ. राकेश कुमार शर्मा – संत लालदास व्यक्तित्व और कृतित्व।

इकाई – 12

राजस्थानी भासा रा भगती साहित्य री विसेसतावां

इकाई रो मंडाण

12.0 उद्देस्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 उपयोगिता

12.3 महत्त्व

12.4 भगती साहित्य : सामान्य परिचै :

12.4.1 सगुण भगती काव्य

(i) राम भगती काव्य

(ii) क्रिसण भगती काव्य

12.4.2 निर्गुण भगती काव्य

(i) ग्यान मारगी

(ii) प्रेम मारगी

12.4.3 जैन काव्य

12.4.4 सैव अर साक्त काव्य

12.4.5 लोक देवी–देवता

12.5 राजस्थान रा भगती पंथ

12.6 भगती काव्य री विसेसतावां

12.6.1 राम भगती काव्य

12.6.2 क्रिसण भगती काव्य

12.6.3 ग्यान मारगी निरगुण काव्य

12.7 ईकाई रो सार

12.8 अभ्यास रा प्रस्न

12.9 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

12.0 उद्देस्य–

इण इकाई रो उद्देस्य है–

- भगती आन्दोलन रै दौरान राजस्थान में चालणियां अलग–अलग पंथा री जाणकारी करावणी।
- राजस्थान रो भक्ति आन्दोलन समग्र भगती आन्दोलन सूं किण मायना में अलग हो ?
- भगती आन्दोलन रो वां दिनां रा समाज पर कांई प्रभाव पड़्यो ?
- परम सत्ता अेक है उण रा नांव अर सिमरण रा तरीका चाये न्यारा–न्यारा है।

12.1 प्रस्तावना

किणी देस अर काल खण्ड नै भली–भांत जाणबा तांई उणरै रै साहित्य रो अध्ययन जरूरी है। अेम.अे.

राजस्थानी रै इण प्रस्न–पत्र में विद्यार्थी साहित्य रै मध्यकाळ रो इतिहास भणैला जिणनै 'भगतीकाल' री संज्ञा दिरीजी है। कई पिच्छमी (पाश्चात्य) आलोचकां अर पंडित रामचन्द्र शुक्ल री मानता है कै भारत में भगती आन्दोलन रो कारण विदेसी सत्ता रै यी है। जदकै आचार्य नगेन्द्र मुजब, ''वैदिक भगती परम्परा के समानान्तर दक्षिणी भारत में द्रविड़ संस्कृति गर्भित पृथक भगती परम्परा का सूत्रपात हो चुका था। यह परम्परा ईसा पूर्व कई शताब्दियों से चली आ रही थी, जिसमें शरणागति और समर्पण की भावना प्रबल रूप में पाई जाती थी और जो कालान्तर में दाक्षिणात्य आचार्यों द्वारा उत्तर भारत में भी लोकप्रिय बनी।'' डॉ. राम विलास शर्मा रा भी अैड़ा ई विचार है। उणां रो कैवणो है कै अगर विदेसी लोग भारत में नीं आंवता तो भी भगती आन्दोलन रो स्वरूप कीं इण भांत ई रैंवतो। सोचणै री बात है कै राजस्थान में तो राजावां रो राज ई रैयो। फैर अठै भगती आन्दोलन कीकर पनप्यो ? जठै तांई विदेसी सत्ता रो सवाल है तो इण आन्दोलन री सुरुआत दक्षिणी भारत सूं होय'र ओ उत्तर भारत में फैल्यो। दक्षिणी भारत में तो विदेसी सत्ता कोनी ही। इण भांत कैयो जा सकै कै भगती आन्दोलन अेक लाम्बी अर सनातन परम्परा रो परिणाम है। कबीरदास तो पैली ई कैग्या –

'भगती द्रविड़ उपजी, लाये रामानन्द !'

12.2 उपयोगिता –

भगती काल री विसेसतावां रो अध्ययन करणै सूं विद्यार्थी इण बात नै भली भांत जाण सकैला कै पूजा, सुमरन या भगती रा तरीका चाये अलग है पण परम सत्ता अेक है। भारत न्यारा–न्यारा धर्मां, सम्प्रदायां, जातियाँ अर भासावां रो देस है। भगती साहित्य रै अध्ययन सूं विद्यार्थी में मानवीय गुणां रो विकास हुवैलो। भगती काल रा कवि चाये हिन्दू हा या मुसलमान, बै चाये किणी सम्प्रदाय सूं जुड़ेड़ा हा पण उणां री नजर में मिनख बराबर है। ''जाती–पांती पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि को होई।'' कैय'र मिनख नै जात–धरम सूं ऊँचा उठा'र आपसी भेदभाव खतम करणै री कोसीस करीजी। संत कवियां आप री वाणी सूं समाज में व्याप्त जिण बुराइयाँ अर अंध विश्वासां पर चोट करी, उण री आज भी दरकार है। आज भी भारतीय समाज में ऊँच–नीच रो भेद, जाति भेद, अंध विस्वास खूब है। भगती साहित्य रै अध्ययन सूं बां नै अेक नई दिसा मिलैली।

12.3 महत्त्व –

भगती साहित्य रो आज रै जुग में महत्त्व निर्विवाद है। सगळै भगत कवियां आपसी सद्भावना, प्रेम अर भाईचारै पर घणौ जोर दियो हो। आज रै जुगमें मिनख चाये कितरीं ई उन्नति कर ली पण धीरै–धीरै उण री संवेदनावां मर्‌यां जावै। बारूद रै ढेर पर बैठ्यै आज रै मानव नै भगती साहित्य री घणी जरूरत है।

12.4 भगती साहित्य : सामान्य परिचै

सन् 1318 सूं सन् 1643 तक पूर्व मध्यकाल नै भगतीकाल री संज्ञा दिरीजी है। इण दौरान अनेक भगती रचनावां सामी आई। इण काल री रचनावां नै विद्वानां इण भांत बांटी है –

12.4.1 सगुण भगती काव्य :–

'निर्गुण' री भगती में मन बेसहारा होय'र भटक सकै। इण कारण भगत सगुण भगती नै मन रै अनुरूप मानै। 'वैष्णव मत' रै मुजब राम अर 'कृष्ण' दोन्यूं ई भगवान विष्णु रा औतार है। धरती पर जद–जद पाप बधै, धरम री ग्लानी हुवै, पाप अर पापियां रो खातमो करण तांई भगवान विष्णु खुद औतार धारण कर आप रै भगतां रो उद्धार करै। सगुण भगती री दो धारावां है – (i) राम भगती काव्य (ii) 'कृष्ण' भगती काव्य

12.4.1.1 राम भगती काव्य :– अयोध्यापति दशरथ रा बेटा श्रीराम भगतां रा आराध्य देव है। धरती सूं पापां रो भार हरणै तांईं भगवान विष्णु राम रै रूप में औतार धार्‌यो। राजस्थानी भासा में मेहोजी गोदारा 'रामायण', माधोदास दधवाड़िया 'राम रासौ', सूरजदास पूनिया 'राम रास', मुंहता रुघनाथ 'रुघरास' रै अलावा नरहरिदास बारहठ, कविया करणीदान, कविराजा ठाकुर बुधसिंह कुंवर हरराज, कवि मंछ, चारण किसना आढ़ा आद कवियां भी प्रकारान्तर सूं राम कथा री रचना करी है। जैन कवियां में भी राम कथा घणी चावी है। आं रचनाकारां री कथावां रो मूळ आधार तो 'वाल्मीकि

रामायण' ही पण इणा आप री मानतावां अर लोक रुचि मुजब मूळ कथा में बदळाव भी करिया है।

12.4.1.2 कृष्ण भगती काव्य :– कृष्ण भगती रा प्रेरणा स्रोत वल्लभाचार्य हा पण कृष्ण लीला रै पदां रो गायन तो पैली सूं प्रचलित हो। इण बाबत आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी रो कैवणो है, ''लीलागान कब से लिखा जाने लगा यह कहना तो कठिन है, किन्तु दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी में मात्रिक छन्दों में गेय पदों में कृष्ण लीला गान करने की प्रथा अवश्य चल पड़ी थी।'' इण भांत कृष्ण भगती रा मूळ सूत्र पैली दक्खणी भारत में मिलै। कृष्ण भगती में कृष्ण लीला रै पदां रो गायन करीज्यो। कृष्ण रो लोक रंजक रूप उभर'र लोगां सामी आयो। कृष्ण भगती रा बियां तो कैई रूप है पण राजस्थान में मीरां बाई री 'मधुरा' भगती प्रसिद्ध है। मीराँबाई रै पदां में भावां री गैराई, सरलता अर दृढ़ता रो जैड़ो रूप मिलै बो ओर कठैई कोनी मिलै। मीराँ रै पदां में प्रेम निवेदन, आत्म समर्पण अर विरह री व्याकुलता बेजोड़ है।

12.4.2 निर्गुण भगती काव्य :–

परमात्मा रा साकार रूप रै बजाय निर्गुण रूप में उपासना करण वाळा 'निर्गुण संत' रै नावं सूं प्रसिद्ध हुया। इण रै मुजब परमात्मा अजर, अमर, अजन्मो अर अविनासी है। निर्गुण पंथ री दो धारावां हैं – (i) ज्ञान मारगी साखा अर (ii) प्रेम मारगी साखा या सूफी काव्य

12.4.2.1 ज्ञान मारगी साखा :– जिकै भगत कवियां ज्ञान सूं नै ईस्वर री प्राप्ति बताई बै ज्ञान मारगी संत कैया गया। निर्गुण काव्य धारा में कबीर सूं पैली नामदेव रो नांव लियो जावै। नामदेव महाराष्ट्र रा संत हा। ज्ञान मारगी साखा रै संत कवियां भी राम नांव रै सिमरण पर जोर दियो पण उणां रो राम अजर, अजन्मो अर अविनासी हो। कबीर साफ सब्दां में कैयो–

ना वह दशरथ के घर जाया।
ना जसोदा ने गोद खिलाया।

बां बतायो कै ईस्वर अेक है अर सगळा उण रा अंस है। आत्मा अर परमात्मा बिचाळै माया है जकी दोनुवां नै मिळण नीं देवै। कबीर जीव, माया अर ब्रह्म नै जळ अर कुंभ रै प्रतीकां रै माध्यम सूं बड़ी चोखी तरियां समझायो है –

जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल, जल ही समाना, ओ तत्त कथ्यो ज्ञानी।

राजस्थान में निर्गुण पंथ रो प्रभावा ज्यादा रैयो जिण में ज्ञान मार्ग प्रमुख है। ज्ञान मार्ग रा घणकरा पंथ आज भी राजस्थान में सक्रिय है।

12.4.2.2 प्रेम मारगी शाखा :– राजस्थानी साहित्य में प्रेमाख्यानक काव्य नीं लिख्या गया पण अजमेर, नागौर आद स्थान सूफी मत रा केन्द्र भी रैया है। सूफी संतां अर प्रेमाख्यानां रो प्रभाव राजस्थानी काव्य पर पड्यो। सूफी 'दर्शन' में परमसत्ता री 'जोत' अर सुदरता रै रूप में कल्पना करी गई है। इण में लौकिक प्रेम री गैराई में अलौकिक प्रेम देख्यो जावै। राजस्थानी संत काव्य पर सूफी प्रेम अर विरह रो साफ प्रभाव देख्यो जा सकै। डॉ. नारायण सिंह भाटी रै मुजब, ''जिस प्रकार सूफी अद्वैत वादी दर्शन तथा योग साधना सम्बन्धी अनेक मान्यताओं के लिए भारतीय वेदान्त और योग शास्त्र के ऋणी हैं उसी प्रकार निर्गुण संत भी प्रेम की प्रगाढ़ अनुभूति तथा आराध्य के प्रति उत्कट विरह भावना के लिए सूफी साधकों के ऋणी हैं।''

12.4.3 जैन काव्य :–

राजस्थानी साहित्य में जैन कवियाँ अनेक रचनावां करी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल 'जैन, शैव अर शाक्त' काव्य नै धार्मिक काव्य कैय'र साहित्य में कोनी लियो पण राजस्थानी भासा में जैन कवियां घणी ई रचनावा रो सिरजण करियौ है। आम आदमी सूं सम्पर्क में होणै रै कारण इणां कवियां लोक साहित्य भी रच्यौ है। इणा रै

साहित्य रो मुख स्वर सुधार, अहिंसा अर मिनख रा जीवन नै बेहतर बणाणै रो है।

12.4.4 सैव अर साक्त काव्य :–

राजस्थान सैव अर साक्त धरम रो केन्द्र रैयो है। राजस्थान री धरम साधना में अर संस्कृति रै विकास में सैव मत रो महताऊ योगदान है। कालान्तर में तंत्र–मंत्र अर वाम पंथी साधना अपणावणै रै कारण इण रो पतन हुयो। इण रै समानान्तर सक्ति उपासना भी अठै खूब होंवती। मातृदेवी री पूजा री परम्परा इण प्रदेस में घणी जूनी है। दुर्गा, चामुण्डा, चण्डी, भवानी, 'महिषासुर मर्दिनी' रै रूप में देवी या सक्ति पूजा पुराणै जमानै सूं प्रचलित ही। राजस्थान रण बांकुरां अर जोधावां रो रण खेत रैयो है। इण कारण सक्ति री मानता भी अठै घणी ही।

12.4.5 लोक देवी–देवता :–

राजस्थान में जागां–जागां लोक देवी–देवतावां मिन्दर, देवळ या थान मिलै। लोग इणां री पूजा उपासना करै। आं महापुरखां आप री जिन्दगी लोक सेवा तांई होम कर दी इण कारण लोक इणां नै आज भी याद करै। रामदेवजी, गोगा जी, पाबूजी, तेजोजी, हड़बू जी नै लोग सरधा सूं याद करै। रामदेव जी रो 'जम्मों' जगावै। पाबू जी री 'पड़' बांची जावै। पाँच लोक देवता जिकां नै पीर भी कैयो जावै। हिन्दू अर मुसलमान उणां नै बराबर मानै। बै आज भी राष्ट्र अेकता रा थंअ है –

पाबू हड़भू राम दे, मांगळिया मेहा।
पांचूं पीर पधारज्यो, गोगादे जेहा।।

आं लोक देवतावां री प्रसंसा में खूब साहित्य रचीज्यो है।

12.5 राजस्थान रा भगती पंथ :–

राजस्थान में भगती आंदोलन रो अध्ययन करणै तांई अर उण री विसेसतावां जाणणै तांई अठै री धरती पर फळतै फूलतै पंथां रो जिक्र भी जरूरी है। बे भगत कवि होणै रै साथै–साथै समाज सुधारक भी हा। इण कारण जनता बां सूं फगन धरम अर दरसा रो ग्यान ही ग्रहण नीं करती बल्कि दुनियांदारी रै मामलां में भी बै लोगां री मदद करता। राजस्थान में चालणाळा प्रमुख संत पंथ इण भांत है –

(i) बिश्नोई सम्प्रदाय :– इण सम्प्रदाय रा प्रवर्तक जंभनाथ या जांभोजी है। बां आत्मा, परमात्मा, जीव, मोक्ष, स्वर्ग–नरक, पाप, पुन्न पर विचार दरसाया है। इण रा अनुयायी आगै चाल'र बिस्नोई कहलाया। इणां उणतीस नियम बणाया बै सामाजिक समरसता खातर उपयोगी। जीव हत्या नीं करणी अर दरखत नहीं काटणै रो उपदेस देय'र बां आप रै अनुयाइयां नै परयावरण री रक्षा तांई त्यार कर्‌या। इण निरगुणी सम्प्रदाय में जात–पांत अर मूरत पूजा रो विरोध है। इण सम्प्रदाय नै मुसलमान भी मानै।

(ii) जसनाथी सम्प्रदाय :– जसनाथी सम्प्रदाय निर्गुण, निराकार ईस्वर री उपासना पर जोर देवै। जगत री उत्पत, विस्तार, जलम, मरण, मोक्ष, पुरनजन्म आद नै लैय'र इण में खूब चिन्तन हुयो है। साधना रै मार्ग पर आगै बधणै तांई गुरु री मदद जरूरी है। इण सम्प्रदाय में मिनख रै व्यक्तिगत नैतिक आचरण पर खूब जोर दियो गयो है। विश्नोई सम्प्रदाय री भांत इण सम्प्रदाय री भी अेक आचार संहिता है जिण नै प्रत्येक अनुयायी नै मानणी चायजै। इण सम्प्रदाय समाज सुधार में खूब योगदान दियो।

(iii) दादू पंथ :– दादू पंथ भी निर्गुण पंथ है। इणरी समाज सुधार री भूमिका बड़ी महताऊ रैयी है। तत्कालीन समाज में प्रचलित ऊँच–नीच, वर्ग भेद, आडम्बर, ढोंग, अंधविश्वास आद पर खूब चोट करी गई है। मिनख री बराबरी में इण रा अनुयायी विश्वास करै। मूर्ति पूजा अर बाह्मचार नै दादू पंथी कोनी मानै। जिकै नै अभिमान नीं हुवै। परमात्मा रो सिमरन हिड़दै में करै। दिखावो नीं कर सगळां नै बराबर मानै। किणी दर्शन या विचार रो आसरो नीं लेय'र राम में आस्था राखै अर आपरै मन नै जीत लेवै बो ई सांचो दादूपंथी है। दादू पंथी साधु गिरस्त कोनी हुवै व्यै दादूदुआरां में रैवै। समाज सुधार में दादू पंथ री भूमिका घणी महताऊ रैयी है। राजस्थान रै संत सम्प्रदायां में दादू पंथ री अळगी पिछाण है।

(iv) लालदासी पंथ :– संत लालदास, दादू रा समकालीन हा। लालदासी पंथ भी निर्गुण पंथ है।

लालदास री कर्मभोम मेवात ही। संत लालदास अेक ईश्वर नै मानता। बिणां मुजब ईश्वर सर्वव्यापी, सब घटवासी है। सांचो गुरु ही चेलै री मदद कर सकै। ओ पंथ साध संगत पर घणो जोर देवै। हियै री शुद्धता, शील, दया, अपरिग्रह अहिंसा, समानता आद पर घणो जोर दियो। समाज सुधार री दिशा में भी इण पंथ आपरी महताऊ भूमिका निभाई।

(v) चरणदासी पंथ :– इण पंथ रा प्रवर्तक संत चरणदास हा। इण रो कार्यक्षेत्र अलवर–भरतपुर रैयो। इण पंथ में सगुण अर निर्गुण दोनुवां री उपासना हुवै। इण पंथ रा अनुयायी श्रीकृष्ण नै परब्रह्म रो सरूप मानै। नवधा भगती रो समर्थन भी इण पंथ रा अनुयायी करै पण जादा जोर निर्गुण भगती पर दैवै। इण मत में जीव, जगत, ब्रह्म, मोक्ष आद पर खूब चर्चा हुई है अर गुरु रो महत्त्व सबसूं ऊपर बतायो गयो है। सदाचार पर जोर देंतां थकां इण मत में कर्म रो महत्त्व भी बतायो गयो है। मिनख जैड़ा कर्म करैगा। बिणां रो फळ बिण नै जरूर भोगणो पड़ैलो। इण सम्प्रदाय री मुख गादी दिल्ली में है।

(vi) राम स्नेही सम्प्रदाय :– रामस्नेही सम्प्रदाय ईश्वर रै निर्गुण सरूप नै मानै। राजस्थान में इण नाम सूं तीन मत चालै जिण रा नांव है – 1. सिंहथळ खेड़ाया 2. रेण 3. शाहपुरा। बीजै संप्रदायां री भांत इण में भी हरेक चोखी बात नै अपणाई गई। मूर्ति पूजा अर बाहरलै आडम्बरां रो विरोध कर्‌यो गयो। हालांकि राम स्नेही संतां री वाणी में अवतारां रै सरूप रो वर्णन भी मिलै पण बिणां रो राम अचल, अखंड अर निराकार है। रामस्नेही सम्प्रदाय री साधना पद्धति में योग शास्त्र री पारिभाषिक शब्दावली रो प्रयोग हुयो है। इण सम्प्रदाय में सुरति–निरति शब्दां रो प्रयोग विशिष्ट रूप मं हुयो है।

(vii) निरंजनी सम्प्रदाय :– निरंजनी सम्प्रदाय निरंजनी सम्प्रदाय रो प्रवर्तन विक्रम री सोळवीं सदी में हरिदास महाराज कर्‌यो। ओ सम्प्रदाय मूळ रूप सूं साधना पद्धति अर विचारों में नाथ पंथ अर कबीर पंथ सूं प्रभावित है। इण सम्प्रदाय में परमात्म तत्त्व नै आमतौर पर राम निरंजन, हरि निरंजन अर अलख निरंजन आद नांवां सूं पुकार्‌यो जावै। निरंजन सम्प्रदाय वादियां री मान्यता है कै ना तो बो पैदा हुवै अर ना नष्ट हुवै। बो हमेशा आमै री भांत अेकरस रैवै। निर्गुण सम्प्रदाय होंतां थकां भी इस सम्प्रदाय में नवधा भगती अर प्रेमा भगती री छूट है। मूर्ति पूजा रो भी इण सम्प्रदाय में खण्डन कोनी मिलै। जात, वणश्रिम आद नै लेय'र भी इण में विरोध रो भाव कोनी। दरअसल ओ संप्रदाय समन्यवादी सम्प्रदाय है। ओ सम्प्रदाय सह अस्तित्व अर सहिष्णुता रै सिद्धान्तां नै पूरी तरां सूं आत्मसात् कर आगै बधै।

12.6 भगती काव्य री विसेसतावां :–

भगत कवियां काव्य रचना स्वान्तः सुखाय करी है। कविता रचना करणो बिणां रो मूल उद्देस्य नीं हो। बिणां रो मूल उद्देस्य तो परम पिता री आराधना हो। निर्गुण या सगुण या संत, भगत में बै इतरों भेद कोनी मानता। बो मार्ग जैड़ो बिणां री परमात्मा सूं नजदीकी बधावै बिणां नै स्वीकार्य हो। इणीज कारण बै चाये संत कवि हुवै या भगत बिणां रै काव्य में घणकारी'क बातां अेक जैड़ी है। अठै आपां अळगी–अळगी काव्य धारावां री विसेसतावां रो अध्ययन करांगा। ऊपर सूं दीखणै में राजस्थान में घणां ई धार्मिक सम्प्रदाय हा पण बिणां में मूल बातां अर सिद्धान्त अेक जैड़ा है। इणीज कारण सगळै सम्प्रदायां री विसेसतावा नीं बता'र प्रमुख सम्प्रदायां विसेसतावां रो विवेचन करस्यां। इण में सबरी विसेसतावां समाहित है –

12.6.1 राम भगती काव्य :–

सगुण भगती काव्य धारा में राम भगती काव्य धारा रो खास महत्त्व है। इण काव्य धारा री आ विसिस्टता है कै आ धारा बीजी धारावां भांत अेकांगी दृष्टिकोण लेयर कोनी चाली। आ भगती धारा साख्य, दास्य, अनुग्रह, पुष्टि, ज्ञान भगती प्रेम योग सब नै अेक साथै लेय'र आगै बधी। इण धारा री विसेसतावां इण भांत है –

(i) राम रो सरुप :– राम भगती में भगतगणां नै राम रो मर्यादा–पुरुसोत्तम रूप घणो भायो है इणीज कारण बिणां में सील, सक्ति अर सौन्दर्य तीनुवां रो समन्वय दिखायो है। श्रीराम पुरुसोत्तम रै रूप में विष्णु रा औतार है जिका धरती पर सूं पापियां रो बोझ हटावणै तांई अवतर्‌या है। राम रो लोक रक्षक रूप ई बिणां रै भगतां नै घणो पिसन आयो है। हालांकि आगै चाल'र कृष्ण भगती रै प्रभाव

सूं सखी सम्प्रदाय रो उद्‌भव हुयो पण बिण रो विकास आगै नीं बध्यो।

(ii) भगती रो सरूप :– राम भगती सेवक–सेव्य भाव पर आधारित है। राम भगती में भगती, ज्ञान अर कर्म रो सोवणो समन्वय हुयो है। तुलसी रै शब्दां में –

सेवक सेव्य भाव बिन, भव न तरिय उरगारि।

राम काव्य में निरगुण–सगुण, अद्वैत वाद–विशिष्टाद्वैतवाद आद रो समन्वय सहज अर सुभाविक ढंग सूं हुयो है। राम भगती में नवधा भगती पूरै मान–सम्मान साथै अभिव्यक्त हुई है। भगती रा अै नौ रूप मन अर सगळी इन्द्रियाँ नै भगवान में लगाणै री सहज कोसीस करै।

(iii) समन्वय री भावना :– राम भगती साहित्य समन्वय री विराट चेस्टा है। राम भगती काव्य रै रचनाकारां सगुण–निर्गुण, द्वैत–अद्वैत, वैस्णव–सैव, ज्ञान–भगती, छूत–अछूत, राजा–प्रजा आद में जिण भांत समन्वय री कोसीस करी है बा आप रै बखत में ई नईं आज भी घणी महताऊ है। इण रै साथै इण में लोक अर सास्त्र रो भी अैड़ो सोवणो समन्वय है कै दोन्यूं अेक में होय'र जन–जन रो मारग प्रसस्त करै। वैराग्य अर गिरस्त धर्म, भाषा अर संस्कृति रो पुराण अर काव्य रो, भावावेग अर अनासक्त चिन्तन रो, ब्राह्मण–सूदर, पंडत–अपंडत रो समन्वय राम भगती काव्य रो अैड़ो उज्जव पख है जिण रै कारण आज भी हो जण–जण रो कण्ठ हार है। इण में लोक हित री भावना कूट–कूट'र भरेड़ी है।

(iv) चरित्र–चित्रण :– राम भगती काव्य धारा में राम अेक आदर्श चरित्र है। बै विस्णु रा औतार, सील सौन्दर्य अर सक्ति री खान है। बिणां आपरै भगतां री रच्छ्या अर दुष्टां रो विनाश करणै तांईं औतार धारण कर्‌यो है। राम काव्य में राम रो जादातर सगुण रूप चित्रित हुयो है। भगत लोग भी राम रो सगुण रूप देख'र बिणां रा दरसण कर खुद नै धन्य समझै। राम री नर लीला रा मनोवैज्ञानिक, सोवणा अर मनभावन चितराम भगतां नै आप कानी आकृस्ट करै। राम–सीता री सोवणी छब नै भगतगण सदीव–सदीव खातर आपरै मन में बसाणी चावै। बिणां रो सौन्दर्य तीन्यूं लोकां नै लजावणाळो है। राम रै चरित्र रै अलावा भरत, लक्ष्मण, सीता, हनुमान आद चरित्र भी आदर्श चरित्र है। इण चरित्रां री आदर्स भावना समाज नै प्रेरित करै, अेक दिशा देवै। आज भारतीय समाज पर जितरों प्रभाव रामायण रै चरित्रां रो है और किणी रो कोनी।

(v) रस योजना :– राम काव्य रो प्रमुख रस तो शान्त रस है पण जरूरत मुजब बाकी सगळै रसां रो समावेश भी है। वाटिका प्रसंग में संयोग सिणगार, सीता हरण रै बखत वियोग सिणगार नारद मोह में हास्य री प्रधानता, लक्ष्मण मूर्च्छा रै बखत करुण रस री योजना है। बाकी रस भी प्रसंग मुजब आया है।

(vi) काव्य रूप :– राम काव्य में प्रबन्ध एवं मुक्तक दोन्यूं भांत रै काव्य रूपां री रचना हुई है। राजस्थानी में रचैड़ै राम काव्यां में तो राम रै चरित्र री व्याख्या है ई साथै ई फुटकर गीतां अर भजनां में भी राम काव्य री रचना हुई है।

(vii) भाषा :– मेहोजी गोदारा, माधोदास दधवाड़िया, सूरज दास पूनियां आद मध्य कालीन कवियां राजस्थानी में राम चरित्र नै लेय'र जैड़ा ग्रन्थ रच्या बिणां री भाषा आम मिनख रै समझ में आवणाळी है। अै कवि जन रै घणा नेड़ै हा। इण रो उद्देस्य राम रै चरित्र रै माध्यम सूं लोगां सामी आदर्स री थापनां करणी भी ही इण कारण इण ग्रन्थां री भासा अैड़ी राजस्थानी है जैड़ी सहज रूप सूं समझ में आवैं।

12.6.2 कृसण भगती काव्य :–

सगुण भगती काव्य धारा में कृष्ण भगती काव्य रो घणो महत्त्व है। इण भगती धारा लोगां रै हियै में भगवान श्री कृष्ण री लीलावां अर प्रेम माधुर्य रो रस भर्‌यो है। कृस्ण भगती री राजस्थानी भाषा में अेक अळगी

विसेसता आ भी है कै भगती रै माध्यम सूं विद्रोह। भगत शिरोमणि मीरां बाई कृष्ण भगती रै माध्यम सूं परिवार, समाज अर राजसत्ता सूं जिण भांत विद्रोह प्रदर्शन कर्‌यो बो अद्वितीय है। बिण बखत जद नारी नै 'असूर्यपश्या' कैय'र घर री चारदीवारी में बंद राखता मीरां रो ओ कैवणो –

मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।

भोत बड़ो क्रान्तिकारी कदम हो जैड़ो भगती रै माध्यम सूं उठायो गयो। कैवण रो मतलब है कै भगती नै ताकत बणा'र अत्याचारी अर अत्याचार सूं मुकाबलो कर्‌यो अर अखीर में जीत भी हुई। इण भांत भगती काव्य, दमित, सोषित, पीड़ित लोगां नै जुलमां सूं लड़णै री ताकत दी। कृष्ण भगती काव्य री बीजी विसेसतावां इण भांत है –

(i) पुष्टि मार्गीय भगती भावना :– पुष्टि मार्गीय भगती भावना जीव अर ब्रह्म री अभिन्नता नै प्रकट करै। जीव ब्रह्म रो ई अंश है। पुष्टि रो मतलब भगवान रो अनुग्रह, कृपा। अर्थात् भगवान हर हालत में आप रै भगत रो हर स्थिति में पोषण करै। जिण भांत टाबर माँ री गोदी में निश्चित हुवै बिण भांत ई भगत नै भगवान मुजब समर्पित होणो ई पुष्टि है।

(ii) सख्य भाव :– कृष्ण भगती में भगवान अर भगत में सख्य भाव है। जिण भांत अेक मींत आपरै दूजै मींत नै बड़ी बेबाकी सूं बिण री शिकायत कर देवै। सख्य भाव में भी भगवान अर भगत में बराबरी रो दर्जो हुवै। जद ई सूरदास स्पस्ट शब्दां में भगवान श्री कृष्ण नै कै'वा देवै–

खेलन में को काको गुसैंयाँ।

इण भांत भगत भगवान सूं सखा भाव बणा'र आप रो दुःख–दर्द शिकायत खुलै रूप सूं कैय'र आप री समस्यावां रो समाधान करा लेवै।

(iii) अळगै–अळगै सम्प्रदायां पर आधारित भगती काव्य :– कृष्ण भगती काव्य री विसेसता भी है कै कृष्ण लीला री अभिव्यक्ति तांई अळगा–अळगा सम्प्रदायां री सृष्टि हुई जिण में वल्लभ सम्प्रदाय, सखी सम्प्रदाय, राधा वल्लभ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय आद प्रमुख है।

(iv) श्री कृष्ण रो सरूप :– भगवान श्री कृष्ण कंस सिरखै क्रूर राक्षसां रै वध तांई औतार धारण कर्‌यो है। बिणां वीरता साथै अनेक राक्षसां नै मार्‌या। जरासंध सिरखै अहंकारी अर ताकतवर शासक साथै भिड़ग्या। महाभारत जुद्ध में अर्जुन रो रथ संचालन कर अेक–अेक आततायी नै चुण–चुण खतम करायो। पण बिणां रो ओ लोक रक्षक रूप भगतां नै कोनी पिसन आयो। बै तो गोपियां साथै रास रचावंतै, गवाळ्यां साथै गउआँ चरावंतै, माखन री चोरी करतै श्री कृष्ण रै रूप सूं प्रभावित हा। इण भगत कवियां मुजब ब्रज प्रदेश में पुरुष सिर्फ श्री कृष्ण बाकी सब जीव आत्मावां है। इण भांत भगवान श्री कृष्ण अर बिणां रै भगतां में अंश–अंशी भाव है। इण रै साथै ई श्री कृष्ण रो बाल सरूप भी बिणां रै भगतां नै मुग्ध करै। इणी'ज कारण श्री कृष्ण री बाल लीलावां रौ चितरांम रचणै मं इण कविगणां जादा रुचि प्रकट करी है। बीजै शब्दां में कैयो जा सकै कै श्री कृष्ण रै लोक रक्षक रूप पर बिणा रो लोक रंजक रूप भारी पड़ै। चाये माखन चोरी हुवै या माँ जसोदा सूं झगड़ो या गडआं चराणो आद भगतां रो मन बिणां री इण लीलावां में खूब रम्यो है।

(v) रस चित्रण :– कृष्ण भगती काव्य धारा रो प्रमुख रस शांत है पण सिणगार अर वात्सल्य भी पूरी शिद्दत सूं प्रस्तुत हुया। भ्रमर गीत में गोपियाँ रा विरह चितरां दर्शनीय है बठैई श्री कृष्ण री बाल लीला में वात्सल्य रस भरपूर आणंद प्रदान करै। गोपियाँ–उद्धव संवाद में विरह सिणगार रै ब्याज सूं ज्ञान सूं भगती श्रेष्ठ साबित करीजी है।

(vi) वात्सल्य चित्रण :– रस अर भावां रै चितरांम में कृष्ण भगती काव्य में श्री कृष्ण री बाल लीलावां रो जैड़ो हृदयहारी चितरांम हुयो है बो किणी बीजी भाषा में दुर्लभ है। कृष्ण भगत कवियाँ, खासकर

सूरदास जी श्री कृष्ण रै बाल सुभाय रो सुभाविक वर्णन कर्‌यो है बिण री जितरीं प्रशंसा करी जावै कम है। श्री कृष्ण रै बाल व्यक्तित्व री अेकू अेक विशेषता सूरदास जी चित्रण करी है।

(vii) मधुरा भगती :– निर्गुण काव्य में हालांकि कबीरदास जी खुद नै 'राम की बहुरिया' घोषित करै। 'दुलहनी गावहु मंगलाचार' कैय'र राम साथै भांवर भी लेवै पण पाठक इण बात नै कदे नीं भूलै कै कबीर पुरुष है। बिण नै आ बात पचाणै में जोर भी लगाणो पड़ै कै कबीर राम री बहुरिया 'आत्मा' नै बतावै। कृष्ण भगती धारा में मीरां बाई जद कैवै –

माई म्हें तो लियो री सांवरियो मोल।
कोई कैवै मूंगो कोई कैवै सूंगो, लियो री तराजू तोल।।

अै ओळ्यां भण'र पाठक भाव विभोर हो ज्यावै। जद मीरां बाई 'जोगिया जी, थां री म्हांरी प्रीत पुराणी' कैय'र आप रै विरह री अभिव्यक्ति करै तो पाठक विगलित हुयां बिना नीं रै सकै। भगत–भगवान बीचाळै ओ मधुर भाव कृष्ण भगती काव्य नै और सरस बणावै।

(viii) काव्य रूप :– कृष्ण भगती काव्य जादातर मुक्तक अर गेय है। हालांकि गण मुक्त गीतां में प्रबन्धात्मकता भी मिल जावै पण ओ अनायास है। वेलि क्रिसन रुकमणी री जैड़ी काव्य कृतियाँ में प्रबन्धात्मकता भी है अगर 'भगती या सिणगार' रो सवाल नीं उठायो जावै। मूलतः तो इण ग्रन्थ में भी कवि री श्री कृष्ण मुजब भगत भगवान री भावना ई है। वास्तव में तो श्री कृष्ण री जिनगी मुजब अळगी–अळगी घटनावां नै गीतां रै माध्यम सूं अभिव्यक्ति देणै री कवियां री प्रवृत्ति रैयी है।

(ix) अलौकिकता रो समावेश :– कृष्ण भगत कवियाँ रो प्रमुख प्रतिपाद्य पारब्रह्म रै रूप में चित्रण करणो नीं होय'र श्री कृष्ण नै आप रो मीत या सखा रै रूप में आराध्य मानणो हो। इण भगत कवियाँ निर्गुण री बजाय सगुण रूप नै जादा महत्त्व दियो है। सूरदास जी तो स्पष्ट कैयो–

रूप रेख गुन जाति जुगत बिन, निरालंब मन चक्रित धावै।
सब विधि अगम विचारहि ता तें सूर सगुन लीला पद गावै।।

सखा रूप में श्री कृष्ण दूसरै गवाळ्याँ साथै गायां चरावै, खेलै, माखन चुरावै पण साथै ई बिणा री रक्षा तांई भी जतन करै। गोवरधन धारण, इन्द्र गर्व हरण, कालिदह में कूदणो अैड़ी घटनावां है जिण में अलौकिकता रो समावेश है। श्री कृष्ण पारब्रह्म रै रूप में जीवात्मा रूपी गोपियाँ, गवाळ्यां पर कृपा पर बां री बखत–बखत पर रक्षा करै।

(x) प्रकृति चित्रण :– श्री कृष्ण भगती काव्य में प्रकृति रै आलम्बन अर उद्दीपन दोन्यूं रूपां है। बे सगळो ब्रज, प्रकृति, पेड़–पौधा, कदंब, जमना, बंसीवट आद काव्य री विसयवस्तु बण्या है। 'बेलि क्रिसन रुकमणी री' में बरखा रुत रो सोवणो चितराम देखणजोग है –

वरसतै दहड़ नड़ अनड़ वाजिया,
सघण गाजियो गुहिर सदि।
जळनिधि ही समाई नहीं जळ,
जळबाळा न समाई जळदि।

इणीज भांत मीराँ बाई रै काव्य में प्रकृति रो उद्दीपन रूप में चित्रण हुयो है। रात, चातक, रुत, च्यानणी, रात आद प्रकृति रा अै सगळा उपकरण मीराँ री विरह व्यथा नै बढाबै। कृष्ण काव्य में गोपियां जद उद्धव नै श्री कृष्ण बाबत ओळमो देवै तो बै प्राकृतिक उपमानां री झड़ी लगा देवै। इण भांत प्रकृति रै आलम्बन अर उद्दीपन रूपां रो बरणाव सांगोपांग हुयो है।

12.6.3 ज्ञान मार्गी निर्गुण काव्य :–

भगती साहित्य में निर्गुण भगती धारा रै कवियॉ रो योगदान कदैई भुलायो नीं जा सकै। संतां, भगती रो गेलो सगळै लोगां तांई खोल दियो। लोगां री जिन्दगी नै दुःखां सूं मुगत करांवतां हुयां आं संतां री सहज वाणी

साहित्य में भी आपरी जगां बणाई। इण संतां आत्मा, परमात्मा, जीव, जगत, माया, बाबत जिको कीं कैयो है उण री जोत में आज तांईं भटकेड़ो मिनख आप रो मार्ग सोधतो आयो है। इण काव्य धारा री प्रमुख विसेसतावां इण भांत है –

(i) निराकार ब्रह्म में विस्वास :– संतां रै विस्वास मुजब ईस्वर निराकार है। बो जात–पांत, रूप–रंग सगळां सूं अळगो है। बो ना कदै जलमै अर ना मरै। सर्व सगती मान, अगम, अगोचर ईस ही इण जगत रो आधार है। बो गूंगै रै गुड़ री भांत है अर फूल री महक सूं भी पतळो है–

जाके मुँह माथा नहिं, जाको रूप अरूप।
पुहुप बास तें पातरा, ऐसा तत्त अनूप।।

अैड़ै ईस नै प्राप्त करणै तांई गुरु री कृपा जरूरी है। उज नै कोई सांचो गुरु ई बता सकै अर अनुभव करवा सकै। बो घट–घट वासी है। बीं नै खोजणै तांई कठैई बारै जाणै री जरूरत कोनी –

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूंढ़ै वन मांहि।
ऐसे घट–घट राम हैं, दुनिया खोजत नांहि।

(ii) अेकेस्वर वाद री भावना :– हिन्दू धरम में तैतीस करोड़ देवी–देवता है पण संत अेक ईस्वर नै मानै। उण रा नांव अलग–अलग हो सकै। संतां आप रै काव्य में राम रै नांव रो खूब जिक्र कर्‌यो है पण बीं रो राम अजन्मो, अमर अर अविनासी है। संतां रो राम ना तो दसरथ घरां जलमेड़ो है अर ना ही माता जसोदा गोदी में खिलायो है (ना वह दशरथ के घर जाया। ना जसोदा ने गोद खिलाया।) ओ कैय'र संतां अवतारवाद रो भी विरोध कर्‌यो। संत लोग मुसलमानां री भांत अेक ईस्वर नै मानै पण वेदांत री भांत 'एकोऽहं बहुस्यामि' री भांत इण नै भी मानै कै परम तत्त्व जद विस्तार करणो चावै तो जगत बणै।

अखै पुरुस इक पेड़ है, निरंजन वा की डार।
त्रिदेवा साखा भये, पात भया संसार।।

(iii) खंडन–मंडन री प्रवृत्ति :– मध्यकाल में भारतीय समाज में ऊँच–नीच, छूआ छूत रो बड़ो भेद भाव हो। इण रै कारण भारतीय समाज में गहरी फूट ही। संतजन सामाजिक अेकता री दिसा में बड़ो योगदान दियो।

'जाति–पांति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि को होई।'

कैय'र मिनख–मिनख नै अेक धरातल पर ल्यावणै री कोसीस करी। ऊँची जात रै लोगां नै फटकारतां थकां कैयो –

जे तू बाम्हन, बाम्हनी जाया।
आन बाट तैं क्यों न है आया।

इणीज भांत 'जे तू तुर्क तुर्कनी जाया, भीतर खतना क्यो न कराया।' कैय'र भी मुसळमाना नै फटकार लगाई। बां रो कैवणो हो कै स्वार्थ रै कारण मिनख जात–पांत बणाई है। जद तांईं 'करणी ऊँची' नीं हुवै, ऊँची जात बेकार है। संत परम्परा रा घणकरा संत पिछड़ी अर निम्न जातियां सूं हा। इण कारण बै समाज रा तिरस्कार अर जहर नै घणो ने ड़ै सूं जाणै हा। इणीज कारण बां जात–पांतरो विरोध कर पूरी मानवता तांईं भगती रा दरवाजा खोल दिया।

(v) गुरु रो महत्त्व :– संत काव्य में गुरु रो महत्त्व सगळां सूं बध'र है। गुरु रो महत्त्व गोविन्द सूं भी जादा है क्यूं कै सांचो गुरु ई आप रै चेलां नै गोविन्द सूं मिला सकै। सांचै गुरु री दरकार हरेक नै हुवै क्यूं कै गुरु अगर आधो है तो चेलै नै कांई राह बतासी ? 'अंधे अधा ठेलिया, दोन्यूं कूप पड़ंत' सांचो गुरु अगर 'सिर साटै' भी मिळै तो भी सस्तो है। अैड़ो गुरु आप रै चेला नै अज्ञान रूपी अंधार सूं बारै काढ़'र परगास सूं साक्षात्कार करावै –

पाछे लागा जाय था, लोक वेद के साथ।
आगे सतगुरु मिल्या, दीपक दिया हाथ।।

(vi) नांव स्मरण री मैहमा :– संत काव्य में नांव सुमिरण रो घणो बखाण है। साधक नै नांव सुमिरण उणीज भांत करणो चायजै जिण भांत पिणहारी बातां करती रैवै पण उण्रो ध्यान घड़ै कानी रैवै। नांव सुमरण घणो दोरौ है। मन नै बार–बार सावचेत करणो पड़ै –

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख मांहि।
मनुआ तो चहुँ दिसि फिरै, ये तो सुमिरन नाहिं।

विसय–वासनावां सूं दूर हट'र इन्द्रियां नै वस में कर्यां पछै ई नांव सुमिरन कर्यो जा सकै–

सहज–सहज सबको कहै, सहज न चीन्है कोई।
पांचों राखै पर सती, सहज कहिजै सोई।।

ओ 'नांव' गुरु सूं चेला मिलै अर चेलो साधना सूं इण नांव नै सिद्ध कर ईस्वर कानी जावण तांई आप रा पग आगै बधावै।

(vii) प्रेम–भाव :– परमात्मा सूं मिलण रो साधन सिर्फ प्रेम है। इण प्रेम री मैहमा संत काव्य में खूब गाई गई है। कबीर तो कैवै, ''जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जानि मसानि। जिन प्रेम कियो, प्रभु पायो।'' पण ओ प्रेम करणो इतरो सोरो कोनी क्यूं कै –

प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो न समाय।
मन तो मैंगल होई रहा, क्यूं कर सकै समाय।।

प्रेम रै मार्ग में बड़ी अबखायां है। परमात्मा रूपी प्रीतम री सेज सूळी पर है। भगत नै सूली चढणो पड़ै। मीराँ बाई कैवै –

सूळी ऊपर सेज पिया की, किस विध मिलणो होय।

(viii) माया सूं सावधान :– संत काव्य में साधक नै भगती मारग सूं विचलित करणावाळी माया है। माया सूं कोई बिरलो ई बच सकै। माया रै रूपक नै कबीर जळ में तिरतै घड़ै रै रूप में अभिव्यक्त करै। 'जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी''। सरीर माया है अर आत्मा पाणी।' जिण भांत घड़ो फूट्यां पाणी में पाणी मिल ज्यावै बियां ई सरीर री माया खतम हुयां आत्मा–परमात्मा में विलीन हो ज्यावै। माया कठैई तीर्थ में पाणी रै रूप में रै वै। बा आप रै करतब सूं मिनख नै भरम में राखै। इण कारण ई कबीर कैवै –

माया महाठगिनी हम जान
त्रिगुण फांस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बाणी।

(ix) नारी रो बरणाव :– संत काव्य में नारी रै कुळटा रूप री बड़ी निंदा करीजी है। बा मायारी भांत मिनख नै ठगणवाळी है। नारी रै कामणी रूप री निंदा करता संत कवि कैवै –

नारी की झांईं परत, अंधा होत भुजंग।
कबीरा तिनकी कौन गति, जो नित नारी संग।।

इण रै विपरीत पतिव्रता री घणी बड़ाई करी गई है। पतिव्रता रो आदस संत साधना रै अनुकूल है –

पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप।
पतिव्रता के रूप पर, वारूं कोटि सरूप।।

(x) रहस्य भावना :– संत काव्य में आत्मा, परमात्मा, जीव, जगत बाबत रहस्य री भावना री अभिव्यक्ति हुई है। कठै–कठै ई तो उलट बंसियाँ रै प्रयोग रै कारण काव्य रै संवेदन पख रो खातमो हुयो है अर संप्रेसण में रुकावट आई है।

(xi) भासा, छन्द अर अलंकार :– संत कवि कम भण्या–लिख्या हा पण उणां नै दुनियां रो तुजरबो

घणो हो। बै घुमक्कड़ हा इण कारण उणा भासा 'सधुक्कड़ी' कहीजी। जकी भासा रो सबद ठीक लाग्यो, प्रयोग कर लियौ। बांनै छंदां रो ज्ञान नीं हो पण बो काव्य संगीतात्मकता सूं सराबोर है। अलंकारां रो प्रयोग भी सहज रूप सूं कर्‌यो गयौ है। सहजता काव्य रो खास गुण है। भासा भावां री अनुगामिनी है। इण भांत संत कवि तीन–साढ़े तीन सो बरसां तक आप री बाणी में ईस्वर आराधना साथै, जन जागरण रो काम करता रैया।

राजस्थानी भासा में सूफी काव्य रो बिगसाव नीं हुयो। हालांकि ख्वाजा साहब री दरगाह में संगीत रा भी होंवता पण सीधै रूप में राजस्थानी भासा में प्रेमाख्यानक काव्य कोनी लिख्या गया। इण रो अेक कारण तो ओईज हो सकै कै राजस्थानी काव्य री आपरी सबळी परम्परा ही। राजस्थानी भासा में सूफी संतां रै काव्य रो रूप चाये नीं अपणायो गयो पण उणां रै विचारां सूं मध्यकालीन निर्गुण भगती काव्य अछूतो कोनी रैयो।

12.7 इकाई रो सार

सार रूप में कयौ जा सकै कै दक्खणी भारत सूं आई भगती परम्परा सूं राजस्थानी भासा काव्य भी प्रभावित हुयौ। तीर तलवारां री भासा बोलण वाळी इण धरा पर भगती री धारा, सैंकड़ूं बरसां तक बैंवती रैयी अर इण में सगळा जन प्रेम सूं न्हावंता रैया। 'राम काव्य' री रचना में अठै रै कवियाँ आप री कल्पना मुजब राम कथा में बदळाव भी कर्‌यौ। क्रिसण भगती काव्य में मीराँ बाई प्रेम री अैड़ी धारा इण धरती पर बैवाई कै आज भी लोग उण में न्हावै। संत पंथ रा अलेकूं सम्प्रदाय राजस्थान री मरुधरा रो आसरो पकड़ जग चावा हुयां। आ परम्परा आज भी जारी है। इण निरगुणी धारा में विख्यात संत हुया है जकां रा पंथ इण प्रांत सूं बारै भी चालै। संत गरीब, पिछड़ेड़ै अर मजबूर लोगां में आतम विस्वास री भावना जगा'र उणा नै इज्जत साथै जीणो सिखायौ। संतजन सगळा लोगां रै दुःख–दरद नै सहला'र समता री अलख जगाई। अठै लोक देवतावां, सैव, वैस्णवर अर साक्त मत रो आधार लैय'र भी साहित्य रचनावां हुई।

12.8 अभ्यास रा प्रस्न

1. राजस्थान में निरगुण भगती रा प्रमुख सम्प्रदायां री सार रूप में जाणकारी दिरावो।
2. राम भगती काव्य री विसेसतावां बताओ।
3. क्रिसण भगती काव्य री विसेसतावां बतांवता थकां ओ भी बताओ कै राम अर क्रिसण भगती धारा में कांई अन्तर है।
4. निरगुण पंथ री ग्यान मारगी भगती री विसेसतावां बताओ।

12.9 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

1. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
2. डॉ. बहादुर सिंह – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. डॉ. जितेन्द्र नाथ पाठक – भक्ति और रीतिकालीन हिन्दी मुक्तक काव्य।
4. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भक्ति कालीन काव्य।
5. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में राम कथा।
6. डॉ. राम प्रसाद दाधीच – राजस्थानी संत परम्परा : सामाजिक अन्तश्चेतना।
7. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त – साहित्यिक निबंध।
8. डॉ. बच्चन सिंह – हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास।
9. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य।
10. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य।

इकाई – 13

राजस्थानी भासा नै भगती साहित्य री देन

इकाई रो मंडाण –

13.0 उद्देस्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 समन्वय री भावना

13.2.1 समाज में समन्वय भावना री थापनां

13.2.2 संस्कृति में समन्वय री भावना

13.2.3 धरम साधना में समन्वय री भावना

13.2.4 दरसण में समन्वय री भावना

13.3 परयावरण रक्षण

13.4 अहिंसा अर सद्भावना

13.5 लोक जीवन री बानगी

13.6 साहित्य रा तत्व

13.7 राजस्थानी साहित्य नै भगतां अर संतां रो योगदान

13.8 इकाई रो सार

13.9 अभ्यास रा प्रस्न

13.10 संदर्भ ग्रन्थां री पानड़ी

13.0 उद्देस्य

साहित्य रा इतिहास मुजब भगती काल री आखरी सींव चायै सन् 1650 रै लगैटगै रैयी हुवै पण उणरी जरूरत जितरीं उण बखत ही उण सूं ज्यादा आज है। राजस्थानी भगती साहित्य रा रचनाकार वीतरागी संत हा पण बै समाज सूं कटेड़ा कोनी हा। समाज में उणां री गैरी पैठ ही अर बै जनता रै कस्ट रै बखत में सिर्फ उणां नै राह ई कोनी दिखांवता बल्कै उणां रो साथ भी देंता। उणारी करणी अर कथनी अेक ही इणीज कारण समाज में उणां री बात रो असर हो। उणां भगती नै आत्म उद्धार रै साथै–साथै समाज सुधार रो माध्यम बणायो।

मध्य जुग में धर्मांधता अर अंध विस्वास रो वातावरण हो। सत्ताधारियां रै अत्याचार सूं सतायेड़ी जनता रै मन में धरमां नै लेय'र आपस में द्वैस री भावना ही। भांत–भांत रा सम्प्रदाय उण नै गुमराह करै हा। अैडै आड़ै बखत में संत कवियां धामिक विद्वैस नै खतम कर समन्वय करणै री कोसीस करी अर इण में बै सफल भी हुया। इण भावना री आज भी उतरीं ई दरकार है। संतां री वाणी जिन्दगी रै अनुभवां रो निचोड़ तो हुवै ई साथै ई उण में स्वाध्याय अर चिन्तन पुट भी हुवै। इणीज कारण उण रा सबद जुगां–जुगां तक असरकारी रैवै।

राजस्थान में भी दादू, रज्जब, सहजो बाई सिरिखा संत अर मीराँ बाई जैड़ी भगत हुयी है। जका आप री अमर वाणी सूं मिनख पणै रो रो मान बढ़ायो। उणां रै नांव सूं चलायेड़ा पंथ आज भी मौजूद है। आं सब भगतां अर संतां री राजस्थानी भासा नै कांई देन है अर उण रो कांई महत्व है ओईज जाणणो इण इकाई रो उद्देस्य है।

राजस्थानी भासा में जैड़ो भगती साहित्य रचीज्यो बो बीजी भारतीय भासावां रै भगती साहित्य सूं भाव, भासा अर कथ्य री दीठ सूं किणीं भांत कम कोनी। इणीज खातर भगती साहित्य री राजस्थानी साहित्य नै कांई देन है, जाणणो जरूरी है।

13.1 प्रस्तावना :

इण इकाई में विद्यार्थियां नै ओ भणणै तांई मिलसी कै राजस्थानी भगती साहित्य में केई अैड़ा तत्त्व है जका ना कदै जूना हुवै अर नाही अप्रासंगिक। सम्प्रदाय सद्भावना, पर्यावरण संरक्षण, अहिंसा आद अैड़ा तत्त्व है जिकां री दुनियां में सदैव दरकार रैवैली।

भगती आन्दोलन देसी भासावां रै माध्यम सूं आखै भारत में हुयो। आथूण सू अगूण अर उतराध सूं दिखणाद तक संतां अर भगतां ज्ञान री मसाल जगाई उण रो च्यानणो मिनखपणै नै हमैस राह दिखांवतो रैवैलो। विज्ञान रै इण जुग रो विद्यार्थी स्सै सूं पैली जिको कीं भणै उण री प्रासंगिकता देखै। जकै साहित्य में आप रै बखत अर जागां नै पार करणै री खिमता नीं हुवै बो कालातीत कोनी हो सकै। इण दीठ सूं जद राजस्थानी भगती साहित्य रो अध्ययन करां तो ओ जाण'र इचरज हुवै कै बां संतां में बखत रै पार देखणै'री अणूंती तागत ही। संत कवियां धरम अर सम्प्रदाय नै लैय'र जका वितंडावाद खड़्या हुवै हा उणां पर व्यंग कर, मिनख नै सांचो मारग दिखायो। परयावरण सुरक्षा अर अहिंसा रै सिद्धान्त री जरूरत जितरीं आज रै जुग नै है इण बात सूं कोई भी जागरूक मिनख अणजाण कोनी। समूची भासावां रै भगती साहित्य पर टिप्पणी करता प्रखर आलोचक राम विलाश शर्मा रो कैवणो है कै उणां कनै राजनीति शास्त्र रा कोई अैड़ा जाणेड़ा सिद्धान्त कोनी हा जिकां सूं बै जनता नै जोड़ता। उणां भावनात्मक रूप सूं जनता नै अेक करी। इण भावात्मक अेकता रो मुख भाव भगती हो।

इण इकाई में नीचै लिखेड़ै बिन्दुआं मुजब आप भणोला कै राजस्थानी साहित्य नै भगती साहित्य री कितरीं री बड़ी देन है। आप रै मारग सूं भटकेड़ै, डरेड़ै अर आसरो ढूंढते मिनख तांई ओ साहित्य कितरों बड़ो संबल बण सक्यो आ बात, आप जाण सकोला।

13.2 समन्वय री भावना :

राजस्थानी साहित्य अर समाज नै सब सूं बड़ी देन उणां री समन्वय री भावना है। मध्यकाल दो संस्कृतियां, दो धर्मां अर दो बड़ै समाजां (हिन्दू अर मुसलमान) रै टकराव रो जुग हो। अे भगत कवियां आप रै अनुभव अर ज्ञान सूं जनता नै सिखायो कै ''इक्को अल्ला नूर उपाया, कुदरत के सब बंदे, अेक नूर ते सब जग उपजेया, कौण भले कौण मंदे।'' भगत कवियां सामाजिक स्तर पर भी समन्वय थापना में महताऊ योगदान दियो जिण कारण हिन्दू–मुसलमान दोन्यूं कौम अेक–दूजै रै नेड़ै आई। बियां तो भगती साहित्य मिनख पणै, सद्भावना अर आपसी भाईचारै रौ जींवतो–जागतो दस्तावेज है पण जिण खास खेतर में समन्वय री भावना देखी जा सकै बै इण भांत है –

13.2.1 समाज में समन्वय भावना री थापना :

भारतीय समाज आदि काल सूं ई च्यार वरणा में बंटेड़ो हो। किणी बखत आं वर्णव्यवस्था समाज सारु जरूरी हुवैली पण मध्य काल में इण सूं समाज में ऊँच–नीच री खाई और गैरी होंती गई। समाज में छूआ छूत जबरदस्त ही। अेक साथै रैणो–खाणो तो दूर ही बात अछूत री छियां तक पड़णै सूं ऊँची जात रा लोग खुद नै अपवित्र समझण लागता। इण रै साथै ई सामन्तवाद रै सोसण रो चक्कर अैड़ो भयंकर हो कै गरीब अर अछूत लोगां री जिन्दगी नरक सूं बदतर ही। निचलै वर्ग में अंध विस्वास घणा पनप चुक्या हा। धरम रो मतलब अब करम कांड तक ई रैग्यो हो।

राजस्थानी समाज भी छोटी–मोटी जातियाँ अर वरणां में बंटेड़ो हो। धरम रो वितंडावाद, अलगै अलगै मतां अर सम्प्रदायां री विचारधारावां, जोगी, जतियाँ, पीर, पैगम्बरां अर तंत्र–मंत्र जाणणै वाळां रो माया जाळ अैड़ो पसरेड़ो हो कै इण में आखो राजस्थानी समाज फसेड़ो हो। धरम रै नांव पर छोटी जात रै लोगां रो सोसण तो होवै ई हो साथै ई सामंत अर जागीरदार वरग रै हाथां सूं अैड़ी जात रै लोगां रो जीवण नरक बण चुक्यो ही। जदकै 'पूजिये विप्रसील गुन हीना' कैय'र ब्राह्मणां रो पक्ष लियो जावै हो अैड़ै बखत में संतां रो अवतरण तपती लूआं पछै बरखा री बौछार ज्यूं हो। कबीर अगर ''जे तूं बाम्हन बाम्हनी जाया, आन राह तैं क्यूं नहिं आया, जे तूं तुर्क तुर्कनी जाया, भीतर खतना क्यूं न कराया।'' कैय'र हिन्दू–मुसलमानां री ऊँची जातियां नै फटकार लगाई

तो राजस्थान रा संत कवि भी किणी बात में लारै कोनी हा। उणां भी जात–पांत सूं ऊपर मिनख रै करमां नै मान दियो। जांभो जी, जसनाथ जी, दादू, रज्जब, रामचरण जी, चरणदास जी आद संतां रै काव्य में अणगिण अैड़ा छन्द है जैड़ा जात–पांत अर वर्ण वैवस्था पर चोट कर मिनख रै आचरण अर करमां री सुद्धि पर जोर देवै–

(1) उत्तिइ कुली का उत्तम न कहिबा,

कारण किरिया सा सू ..... (जसगीत)

जो कोई जात हुवै जसनाथी

उत्तम करणी हाले आछी (जसनाथ पुराण)

चार बरन आस्रम नहीं, नाहीं कर्मना को ईस। (चरणदास की वाणी)

हरीया आतम अेक है, सब ही घट–घट बीच।

बाकुं देखे दोय करि, सोई मिनखा नीच।। (हरिरामदास की बाणी)

आं संतां रो ओईज मानणो हो कै मिनख अेक है अर जात–पांत अर ऊँच–नीच रा झगड़ा झूठा है। आं संतां री वाणी सूं विखंडित होंवतै समाज नै अेक दिसा मिली जिण सूं आगै चाल'र जातीय अेकता मजबूत हुयी। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी संतां री वाणी रो महत्त्व बतांवता कैवै, ''संतों की एकेश्वरवादी भावना, सामाजिक भेदभाव विहीनता तथा धार्मिक समानता के वैशिष्टय ने यहाँ की दलित, परिगणित एवं पिछड़ी हुई जातियों में एक नवीन आशा का संचार कर दिया जिससे उनमें नव जागरण एवं स्वावलम्बन का भाव उठने लगा और उसकी प्रतिक्रिया में यहाँ के उच्चवर्गीय लोगों को भी अपने नियंत्रण के नियम ढ़ीले करने पड़ गए। फलतः भारतीय समाज की सामूहिक मनोवृत्ति का झुकाव क्रमशः लोकोन्मुख हो गया।''

भारत में इस्लाम अेक हमलावार रै रूप में दाखल हुयो पण इण में भाईचारै अर समानता रा जैड़ा गुण हा उण रै कारण अछूत अर नीची कैयीजण वाळी जातियाँ रा लोग इण कानी खूब आकर्सित हुया। हालांकि इण धर्मान्तरण में राज कानी सूं भी खूब जोर जबरदस्ती हुयी जिण कारण अठै रै लोगां रै मन में नफरत अर डर जलम लियो। हालांकि इस्लाम सूं पैली घणै ई धर्मां रा हमलावार भारत में आया पण बै अठै री संस्कृति अर सामाजिक जीवण में रचबस गया पण इस्लाम गैराई सूं नहीं पैठ सक्यो। हारयौड़ो जन मानस विदेसी सत्ता तो स्वीकार कर जी पण धरम रै मामलै में दूरियां सत्ता बणायांई राखी। इण खाई नै पाटणै तांई संतां अर भगतां री वाणी कारगर हुयी। भगत कवि इण बात नै भली भांत समझ चुक्या हा कै सामाजिक समरसता जरूरी है। इण कारण उणां जात, धरम, सम्प्रदाय आद री भावना सूं ऊपर उठ ईस्वर–अल्ला नै अेक बतांवतां थकां दोनुवां नै अेक बाप री संतान बताई। इण सूं हिन्दू–मुस्लिम अेकता नै खूब तागत मिली अर दोन्यूं कौम अेक दूजै रै नेड़ै आई जिण सूं सद्भावना बधी।

संत दादू दयाल हिन्दू–मुसलमान नै अेक बतांवतां कैयो –

हम सब देख्या सोध कर, दूजा नाहीं आन।
अेक घट अेकै आतमा, क्या हिन्दू मुसलमान।।

इणीज भांत बै आगै कैवै –

दादू करणी हिन्दू तुरकी, अपणी–अपणी ठौर।
दूहूं बीच मारग साधु का, यहु संतों की और।।

दादू तो कैवै हिन्दू–मुसलमान या 'षटदर्शन' सब सूं ऊपर राम है –

दादू हिन्दू तुरक न होइबा, साहिब सेती काम।
षट दर्सन के संग न जाइबा, निरपख कहिबा राम।।
दादू ना हम हिन्दू होहिगे, ना हम मुसलमान।
षट दर्सन में हम नहीं, हम राते रहमान।।

लालदास जी संत राम–रहीम नै अेक बतांवता कैवै –

हिन्दू तुरक अेक कल लाई।

राम रहीम दोय नहीं भाई।।

हिन्दू तुरक को अेकहि सांई।

दुमना दोजख जाई।।

संत लालदास जी कैवै कै राम–रहीम अेक है तो पंडत अर मुल्ला, काजी क्यूं आपस में लड़–लड़'र मरै–

सुन भाई पंडित काजी, मुल्ला, तुम क्या मांडी बाजी।

मेरी तेरी दुविधा अंदर, याहि दूर करो बताजी।।

राजस्थानी में जितरा संत, भगत कवि हुया है उणां सगळां धारमिक सद्भावना रो वातावरण बणावणै री पुरजोर कोसीस करी है। संत राम चरण हिन्दू, मुसलमान दोनुवां नै अेक ईं जागां सूं आयेड़ा बतावै –

वे मसीत, वे देवरे, भर्म्या फिरै निराट।
राम चरण हिन्दू तुरक, निकस्या अेकै घाट।।

बाबा हरि रामदास कबीर री भांत लताड़ लगावंता कैवै –

सकल जहान में रमिरह्या, मुल्ला अेक रहीम।
बांग सुणाये कूंण कूं, बहरा नाहि करीम।।

सुन्दरदास जी तो कैवै कै उण ब्रह्म नै पावण तांई हिन्दू अर मुसलमान दोनुवां री राह छोड म्हूँ उण नै सहजै–सहजै खोज लियो। कैवै –

हिन्दू की हद छांड़ि कै, तजी तुरक की राह।
सुन्दर सहजै चीन्हिया, अेकै राम अल्लाह।।

उण खुदा या राम नै पावण री अणगिण राह है जिण भांत किणी नगर में जाणो हुवै तो कई राह हुवै। ओ तो जावणवाळै सारु है कै बो किसो मारग चुणै। रज्जब कैवै –

नारायण अरु नगर के, रज्जब पंथ अनेक।
कोई आवा कहीं दिसि, आगे अस्थल अेक।।

संत दादू दयाल बतावै कै ईस्वर तो उणीज भांत कण–कण में रमेड़ो है जियां, ''दूध घी में रमि रह्या, व्यापक सबही ठौर।'' उणां समझायो कै हिन्दू मुसलमान अेक है अळगा कोनी –

दादू दोनूं भाई हाथ–पग, दोनूं भाई कान।
दोनूं भाई नैन हैं, हिन्दू मुसलमान।।

अै सगळा उदाहरण बतावै कै संत कवियां रो सोच जात, धरम अर सम्प्रदाय सूं ऊपर उठ'र मानवीय हो। बै कैवै के आखै धर्मा रो लक्ष्य सिर्फ अेक है मानखै रो कल्याण अर ईस्वर नै पावणो (आयां नै जको अळगोपण दीसै बो करम कांड है। जुगां–जुगां सूं भटकेड़ै मानखै नै संतां जैड़ी राह दिखाई उण पर चाल'र मिनख आप री आतमा रो कल्याण कर लेसी।

आज जद विज्ञान रै जुग में भी मिनख अर समाज आपसी भेद भाव, अंध विस्वास अर आडम्बरां में घिर'र कदै–कदै हिंसा रो तांडव करण लाग ज्यावै कै मिनखपणै रो सिर सरम सूं झुक ज्यावै। अैड़ै वातावरण में भगत कवियां री कितरी बड़ी देन है बे भटकेड़ै मिनख नै आंगळी पकड़ा'र रास्तै पर ल्यावणै री कोसीस करै। समाज में अेकता अर समन्वय री भावना पैदा करणै तांई संतां री वाणी री हमैस दरकार रैवैली।

13.2.2 संस्कृति में समन्वय री भावना :

भारतीय संस्कृति घणी जूनी अर उण महानदी री भांत है जिण में जगां–जगां सूं आय'र अणगिण नदियां

रळ'र उण नै ओर बड़ी बणाद्यै पण इस्लाम संस्कृति रो अठै आगमन दो अळगी संस्कृतियां रो टकराव हो। आं दो संस्कृतियां में समन्वय री थापनां रो काम भगती कालीन कवियां कर्‌यो। राजस्थान रा संत कवि भी इण समन्वय जिग में कठै ई लारै कोनी रैया। भारतीय अर इस्लामिक संस्कृति में जकी बातां उणा नै आछी लागी बां नै बिना लाग–लपेट रै संत कवियां अभिव्यक्ति दी। संत जण–जण में फैलेड़ा अंध–विस्वास, बलि, कुर्बानी मूर्ति पूजा आद पर कटाक्ष कर्‌या तो 'अेको ब्रह्म द्वितीयोनास्ति' नै अपणावंता अेक 'ब्रह्म' नै मान्यो। इस्लाम रै अेकेस्वर वाद नै तरजीह देंतां थकां बहुदेव वाद रो विरोध कर्‌यो। इण सूं पंडत अर मौलवियां री पकड़ जनता पर ढीली पड़ी क्यूं कै बै अजै तांईं लोगां नै भरमावंतां आवै हा। निर्गुण मत में जितरों कीं कबीर कैग्या उण री छियां ही राजस्थानी कवियां रै काव्य में देखी जा सकै।

सूफी कवियां सूं पैली जिण भांत आप री काव्य रचना लोक भासा में करी। अे संत कवियां भी आप रो निजी अनुभव अर ज्ञान लोक भासा में काव्य सूं देय'र दोन्यूं रो गंगा–जमनी मेळ करायो। इण भांत राजस्थानी भासा रा भगत कवियां री सांस्कृतिक समन्वय री कोसीस सरावण जोग कदम हो।

13.2.3 धरम साधना में समन्वय री भावना :

भारत में जद इस्लाम आयो अठै हिन्दू या वैदिक धरम, शैव, साकत, गाणपत्य, बौद्ध, जैन आद धर्मां रो दबदबो हो। इण रै अलावा सिद्ध अर नाथ सम्प्रदायां रै साथै–साथै अणगिण देवी–देवता अर लोक देवतावां री पूजा अर्चना रो बोलबालो हो। इस्लाम अेकेस्वरवाद रो समर्थक हो। हालांकि वैदिक धरम में 'सर्व खलुविदं ब्रह्म' कैय'र अठै भी अेक ब्रह्म नै मानता ही पण अवतारवाद भी चालै हो अर्थात् कैंणी अर कथणी में फर्क हो। धरम रै नांव पर वरण वैवस्था में मिनख रो जिण भांत सोसण हुवै हो, ऊँच–नीच अर छुआछूत री भावना रै कारण मिनखपणै रो जितरों पतन हुवै हो इस्लाम में ओ भेद कोनी हो। भाईचारो, समानता अर अेक अल्लाह रै सिद्धान्त नै सगळा मानणियां हा। इण विच्चारधारा रो असर भारतीय मनीसा पर पड़णो सुभाविक हो।

राजस्थान रा अै संत कवि 'बहु पठित' चाये कोनी हा पण 'बहुस्रुत' जरूर हा सगळै धर्मां रो सार लैय'र कर अै इण नतीजै पर पूग्या कै जद तक मिनख रो आचरण सुद्ध कोनी हुवै तद तक जप, तप, तीर्थ, व्रत सगळो कीं बेकार है। दादू दयाल जी कैवे –

मन निर्मल तन निर्मल होई।
दादू सांच विचारै कोई।।

आचरण री सुद्धता पर जोर देंतां संत लालदास जी कैवै –

लालजी, सील रतन सब सूं बड़ा, सब रतनन की खान।
इक्कीस लोक की सम्पदा, बसी सील में आन।।

इणी बात नै संत चरणदास इण भांत कैवै –

लाख यही उपदेस है, अेक सील कूं राख।
जन्म सुधारो हरि मिलौ, चरणदास की साख।।

मिनख आप रो आचरण सुद्ध राखै अर नांव जपै तो मोक्ष जरूर मिलै। चरणदास जी कैवै –

दया नम्रता दीनता, क्षमा सील संतोख।
इन कूं ले सुमिरन करै, निस्चै पावै मोख।।

संत कवियां आडम्बरां अर अंधविस्वासां नै तज'र मिनख नै नांव सिमरण पर जोर देणै रो कैयो। इण दुनियां में सिर्फ भगवान रो नांव ई सांचो हो। हिन्दू धरम ग्रंथां में कैयो गयो है – 'यथा ब्रह्मांडे तथा पिण्डे' अर्थात् जिकों कीं दुनिया में है बोईज इण सरीर में है। राम या अल्ला कठै ई बारै कोनी मिनख रै घट भीतर है। दादू कैवै –

दादू कोई दौड़ै द्वारिका, कोई कासी जाहि।
कोई मथुरा को चले, साहिब घर में नांहीं।।

हरिदास जी कैवै, ''ज्यूं मूरति, त्यूं हि सिल, राम बसे सब मांहीं।'' जको राम घट में बसै उण नै बारै ढूंढण जाणो मूर्खता कोनी तो कांई है। दादू जी कैवै –

''अलख देव अन्तर बसै, क्यों दूजी जगह जाई।''

मिनख नै सांची राह दिखावणाळो अर सांचो नावं बतावणाळो सिर्फ सांचो गुरु ई हो सकै। अैड़ो गुरु अगर मिनख नै 'सिर साटै' भी मिलै तो सस्तो हो। उण नांव री मैहमा बतांवता दादूदयाल जी रो कैवणो है –

अैसा नांव जाण के, मिटै कर्म का अंक।
दादू तब सांच पाइयै, जीवन होय निसंक।।
दिन–दिन राता नांव से, दिन–दिन अधिक सनेह।
दिन–दिन पीवै प्रेम रस, दिन–दिन दर्पन देह।।

नांव रै नाथ सूं ई वो घट–घट वासी आतम सरूप परमात्मा परतख रूप में अनुभव कर्‌यो जा सकै–

सांई भीतर बसत है, ज्यों फूलन में बास।
कस्तूरी के म्रिग ज्यों, फिरि–फिरि सूंघै घास।।
घट परचै सेवा करै, प्रतख देखै देव।
अविनासी दर्सन करै, दादू पूरी सेव।।

इण भांत भगती जुग रा संत कवियां धरम–साधना अर अध्यात्म नै पंडत, मौलवियां रै पंजै सूं छुडाय'र जण–जण तांई सुलभ कराई। आप रै साचै अर नैतिक आचरण सूं उणां आ बात भली भांत सिद्ध कर दिखाई कै 'जाति–पांति पूछै नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि को होई।।'

संत कवियां सगळै धर्मां राम रो नांव सब तांई सुलभ करायो। अै कवि इतरा जथार्थवादी है कै बां लोगां नै भी कोनी बखस्या जका मिनख नै मर्‌यां पछै मुगती दिरावै। उणां री दीठ में अगर मुगती मिलै तो जींवतै जी मिलै, मरयां पछै मुगती रो कांई मतलब है ? दादूदयाल जी कैवै –

मूवां पीछै बैकुंठ वासा, मूवां सुरग पठावै।
मूवां पीछै मुगती बतावै, दादू जग बोरावै।।
दादू जीवत ही दूतर तिरै, जीवित लंघै पार।
जीवत पाया जगत गुरु, दादू ग्यान विचार।।

13.2.4 दर्सन में समन्वय री भावना :

राजस्थानी भासा रा ज्यादातर भगत कवियां किणी विद्यापीठ या पोसाळा सूं औपचारिक भणाई कोनी करी। उणां जैड़ो की सीख्यो जीवण री पोसाळा में तप'र सीख्यो। भगतीकाल में जकी दार्सनिक विचार धारावां प्रचलित ही बां चाये अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, अेकेस्वर वाद, बुद्ध रो सून्यवाद हुवै उण री ठीक–ठीक जाणकारी उण नै ही। काव्य में सीधी भांत सूं किणी दार्सनिक तत्वां री दरकार भी कोनी हुवै। बै जद अनुभव में ढळ'र कविता में उतरै तो कवि रो जीवण दर्सन सामी आवै। भगत कवियां रै काव्य में अलगी–अलगी विचार धारावां इण भांत आय'र रळगी है जियां समन्दर में नदियां। कबीर री मानता ही कै ब्रह्म तो अेक है पण माया रै कारण दो नजर आवै। घड़ै रै प्रतीक सूं बै समझावै –

जल में कुंभ, कुंभ में जल है बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल, जल ही समाना का तत कथ्यो ज्ञानी।

इण माया सूं कोई बचेड़ो कोनी। संत, रज अर तम तीन्यूं गुणां में माया बिराजै। ब्रह्मा, विस्णु, महेस त्रिदेव भी माया रै चक्कर सूं अछूता कोनी। माया जीव नै किण–किणभांत भरमावै, दादूदयाल जी कैवै –

मन रे तूं देखे सो नाहीं।
है सो अगम अगोचर माहीं।।
निस अंधियारी कछु नहिं सूझै, संसय सर्प दिखावा।

अैसे अंधा जगत नहिं जाणै, जीव जेवड़ी खावा।।
मृग जळ देखा तहॉ मन धावे दिन–दिन झूठी आसा।
जहॉ–जहॉ जाय तहॉ जल नाहीं, निस्चय मरे प्यासा।।
भ्रम विलास बहुत विधि कीन्हा, ज्यूं सुपने सुख पावै।
जागे हानि लाभ कुछ नाहीं, फिर पीछै पछतावै।।
जब लग सूता तब लग देखे, जागत भ्रम भुलाना।
दादू अंत यहॉ कछु नाहीं, है सो सोच सयाना।।

इणीज भांत दादू 'अेकोऽहं बहुस्यामि' रै सिद्धान्त नै इण भांत बखाणै –

पसु पक्षी जलचर कीट पतंग राय,
दादू परमेस्वर के पेट का सब जीव अंस अवतार।

डॉ. राम प्रसाद दाधीच रो संत मत री विचार धारा मुजब कैवणो है, ''जीवात्मा जगत और ब्रह्मानुभूति के विषय में भी संतों ने जो विचार और अनुभव प्रकट किए हैं। वे भी 'उपनिषदों, भागवत पुराण और श्रीमद्भगवद्गीता' में वर्णित विचारों के अनुसार ही है। नया कुछ भी नहीं है।'' संत कवियां सब सूं ज्यादा महत्त्व आप री 'ऑखन देखी' नै दियो है 'कागद री लेखी' नै नही। 'सर्वत्र ब्रह्म है' उपनिसद रै सर्वात्मवाद रै दर्सन नै सुन्दर दास जी आं सबदां में कैवै–

मृत्तिकां समाय रही, भाजन के रूप मांहीं।
मृत्तिकां को नाम मिटि, भाजन ही गह्यो है।

राजस्थानी संतां रा प्रेरणा स्रोत पैली वाळा संत वेद, पुराण, उपनिसद् आद रैया है। इणा री विचार ध ाारावां नै उणां आप रै जीवन में ढाळ अर, परख कर पछै अभिव्यक्ति दी है। इण कारण अलग–अलग, दर्सन अर विचारधारावां समन्वित होय'र संत–मत में ढळी है।

इण भांत निर्विवाद रूप सूं कैयो जा सकै कै संत काव्य में समन्वय री भावना री पुरजोर कोसीस नै पूरी–पूरी सफलता मिली है। आचार्य विनोबा भावे रै सबदां में कैय सकां, ''हमारे संतों की पाचन शक्ति प्रखर होने के कारण से सारे भिन्न–भिन्न दर्शन उनको विरोधी नहीं मालूम होते, बल्कि इन सबको वे एक साथ हजम कर लेते हैं।''

13.3 परयावरण रक्षण :

पर्यावरण रक्षण नै भारतीय चिन्तकां अर रीसी–मुनियां आदिकाल सूं ई धर्म साथै जोड्यो है। सास्त्रां में अठै पींपळ पूजा, वट सावित्री रो व्रत, तुळसी री पूजा आद रो घणो महत्त्व दर्सायो गयो है। भगवान क्रिसन आप रै विराट रूप रो वर्णन करतां थकां सब जीवां अर पेड़–पौधां में खुद रो अंस बतायो है।

भगती काल रा राजस्थानी संत कवि पर्यावरण बाबत भली–भांत जागरूक हा, साथै ई बै भगत भी हा। उणां पर्यावरण बाबत जो की कैयो, अगर मिनख उण नै अपणांवतो तो आज हालात इतरा खराब नीं होंवता। बिस्नोई सम्प्रदाय रा संस्थापक जांभो जी आप रै उणतीस नियमां में दरखत नीं काटणै रा आदेस दिया। इणीज भांत जीव–जंत भी पर्यावरण रा हिस्सा है उणां री जीव हत्या नै भी पाप बतांवतां मिनख नै हिंसा करण सूं रोक्यो गयो। इणीज भांत जसनाथी सम्प्रदाय रै छत्तीस नियमां में दरखत नीं काटणा अर जीव हत्या नीं करणी, प्रमुख नियम है। राम स्नेही सम्प्रदाय में भी पर्यावरण रक्षण तांई नियम बणाया गया। कैयो जा सकै कै अै संत कवि आप री वाणी सूं सिर्फ आतमा रै उद्धार रो मार्ग ई नीं दिखावंता बल्कै समाज री समस्यावां बाबत भी उणा री पैनी निजर ही। 'सर्वं खलु विदं ब्रह्मं' उणां आपरै जीवन में चरितार्थ कर दिखायो। संत कवियां रै सबदां में पर्यावरण री रक्षा सारू मिनख नै खूब सावचेत कर्यो गयो है।

13.4 अहिंसा अर सद्भावना :

मध्यकाल में जुद्ध री हिंसा रै अलावा जन जीवन में भी हिंसा रो खूब प्रचार हो। तंत्र साधना में पंच मकार

री प्रधानता रै कारण बलि प्रथा रो जोर हो। सम्प्रदायां रै आपसी टकराव में हिंसा आम बात ही। संत कवियां ओ मैसूस कर्‌यो कै हिंसा पर आधारित कोई भी समाज हमैस टिक कोनी सकै। सब जीव–जंत बाबत 'सर्वात्म भाव' राखण वाळा संतां अहिंसा नै परम धर्म बता'र इण नै अपणावणे पर जोर दियो। कबीरदास खुलै सबदां में इण हिंसा रो विरोध करतां केयो –

''दिन में रोजा रखत है रात हनत है गाय !''

अेक कानी तो खुदा री बन्दगी अर दूजै कानी उणी खुदा रै जीवां री हत्या। कैड़ी विडम्बना। सिर्फ जीभ रै स्वाद तांई जीवां री हत्या पाप है। मिनख नै सावधान करतां संत कैयो –

बकरी पाती खात है, ताकी काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है, तिनको कौन हवाल।

अहिंसा अर आपसी सद्‌भावना रै प्रचार–प्रसार में राजस्थानी संत कवि भी किणी सूं लारै कोनी हा। जांभो जी आपरै उणतीस नियमां में 'जीव हत्या' नीं करणै रो आदेस दियो है। इणीज भांत जसनाथी अर राम स्नेही सम्प्रदाय में जीव हत्या रो विरोध है। सगळा संत कवि 'जैसा खाय अन्न, वैसा होय मन' रै सिद्धान्त नै मानता हुया 'किरत करो अर वंट चलो' अर्थात् कर्म करो अर बांट'र खाओ रो उपदेस दियो। संत कवियां मांस खाणो, दारू पीणो या किणी भांत रो नसो करणो, पर नारी गमन, चुगली करणो आद नै पाप मानता। उणां मिनख रै आचरण री सुद्धता पर जोर दियो आपसी प्रेम अर सद्‌भाव अपणावणै तांईं कैयो। कबीर तो प्रेम हीण हीयै नै 'मुसाण' तक कै दियो। दादू रो कैवणो है कै व्यसन करणाळै अर मांस खावणाळै में दया कद हुवै। जिण हिरदै में दया ई नीं हुवै बठै राम किण भांत हो सकै –

मांस अहारी मद पीवै, विसै विकारी सोइ।
दादू आतम राम बिन, दया कहाँ थी होइ।।

13.5 लोक जीवन री बानगी

भगतीकाल रो साहित्य सिर्फ आत्म उद्धार करणै तांईं सीमित कोनी हो बल्कै उण में लोक जीवन रा चितराम भी है। संत समाज रै मध्यम वर्ग या निचलै वर्ग सूं आया। बै उण रै दुःख–सुख अर अबखायां सूं भली भांत जाणकार हा। तत्कालीन समाज में ज्यादातर लोग नसे रा सिकार हा। भांग, चरस, गांजो, दारु, अम्मल आद रो सेवन आम बात ही। आं कुप्रवृत्तियाँ नै खतम करणै तांई संतां उपदेस दिया–

भंग तमाखू दारू अमल, सुल्फा चर्स प्रमाद।
इनको पीवै अधम नर, जन्म गमावै बाद।।

मध्यकाल में राजस्थान रै लोगां रा आर्थिक हालात ठीक कोनी हा। ज्यादातर समाज गरीबी अर मजबूरियां में जकड़ेड़ो हो। सामन्ती सत्ता में लोग घणा दुःखी हा। पूंजीपती, सेठ अर धनी लोग गरीबां रो खूब सोसण करता। जमींदार किसानां नै खूब सतांवता अर उण सूं बेगार लेंवता।

समाज में कामचोर, आळसी लोग मेहनत मजूरी सूं डरता बै साधु बण'र लोगां नै ठग्या करता। इण खातर संत दादूदयाल रो कैवणो है –

भूखा भरड़ा कान पड़ावै, सेवै मड़ी मसाणी।
कांधै पाछै मेंखळ धाजै, कोरा रह्या अयांणी।

या – दादू स्वांगी सब संसार साध कोई अेक।

लोक जीवन में लोक देवतावां री भी आछी मानता ही। पाबूजी, हड़भू जी, रामदेवजी गोगाजी आद लोक देवतावां नै लोग लोकेसणा पूरी करणै तांई पूजता। इण भाव रो अेक दूहो प्रचलित है –

पाबू हड़भू राम दे, मांगळिया मेहा।
पांचूं पीर पधारज्यो, गोगादे जेहा।।

लोक विस्वास, उणां री आस्था, जात–पांत, छुआ छूत, नारी री दयनीय स्थिति आद रा चितरांम राजस्थानी भगती साहित्य में घणा है।

13.6 साहित्य रा तत्व :

राजस्थान रा भगती साहित्य रो आकलन करतां अेक बात सामी आवै कै सगुण भगती धारा सूं जुड़ेड़ा कवि लिख्या–भणेड़ा हा पण निर्गुण भगती धारा रा संत कवियां में सुन्दरदास, रज्जब आद नै छोड़'र बाकी सगळा भोत कम पढ़योड़ा हा। संत साहित्य बाबत विचार करतां थकां आ बात भी ध्यान में राखणै जोग है।

सगुण भगती काव्य री रामभगती धारा में मेहोजी गोदारा, माधोदास दधवाड़िया, सुरजनदास पूनियां, सरवण भूकर, मुहंता रुघनाथ, नरहरिदास बारहठ, कविया करणीदान आद प्रमुख कवि हुया है। अै सगळा कवि काव्य मर्मज्ञ होणै रै साथै साथै ऊँचै दर्जै रा भगत भी हा। इणा री कथा री विसय वस्तु राम रो आदर्स जीवण है पण मौकै मुजब आं कथा वां में लोक जीवन रा चितरांम भी प्रकट हुया है। छन्दां अर भासा पर इणा रो अधकार है। अंगीरस सांत रस' है। आं रै अलावा राम भगती काव्य रा रचनाकार जैन कवि भी हुया है जिणा रो मुख उद्देस्य निज धरम रो प्रचार हो। उणां राम कथा में आप रै धरम मुजब मोड़ देय'र अहिंसा पर जोर दियो है।

क्रिसन भगती धारा री भगत सिरोमणी मीराँ बाई पद रच्या है। भासा, भावां, अलंकार अर रस री, दीठ सूं मीराँ ऊँचै दर्जै री कवयित्री है। इणीज भांत 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' रा कवि प्रथ्वी राज राठौड़ री रचयौड़ी कथ्य, भाव, भासा, अलंकार री दीठ सूं ऊँचै दर्जै री रचना है। आ भगती काल अर रीतिकाल बिचाळै संधीकाल री रचना है।

निर्गुण काव्य धारा री राजस्थानी भासा में 'हंसावली' अर 'लखन सेन पद्मावती' दो रचनावां अैड़ी है जिणा पर सूफी प्रभाव है। इणा रा रचनाकार हिन्दू है भासा, कथ्य, अलंकार, रस आद री दीठ सूं अै रचनावां ऊँचै दर्जै री है।

राजस्थानी रै संत कवियां अर उणा रै काव्य रो विवेचन करतां आ बात ध्यान में राखणी जरूरी है कै इणा रो पैलो उद्देस्य काव्य रचना नीं होय'र मानव कल्याण री भावना है। मानव कल्याण री भावना रै कारण ही आं री वाणी रा फूल खिल्या बाईज कविता बणगी है। दरअसल अै संत कवि आप रै समय री उपज है। दुःखी अर त्रस्त जण–जण नै संतवाणी धीरज बंधा'र अंधारै रास्तां पर भटकणै सूं बंचाया। काव्य सास्त्र अर भासा सास्त्र रा नियम इण रै काव्य पर लागू नहीं करया जा सकै परदुःखं सूं विचलित होय'र आप री सहज वाणी में इणां जैड़ा उद्गार प्रकट कर्‌या, बा कविता बणगी। हाँ ! सुन्दरदास अर रज्जब इण में अपवाद है। अै दोन्यूं संत कवि भासा अर काव्य सास्त्र दोनुवां पर जबरदस्त अधिकार राखता।

संत कवियां री कविता री विसय वस्तु आत्मा, परमात्मा, जीव, जगत अर ब्रह्म आद है। बाहरी आडम्बरां रो विरोध कर सहज नांव सिमरण पर जोर दियो। इणां री वृत्ति यायावरी ही। आं कारण इण री भासा में राजस्थानी रै अलावा पंजाबी, गुजराती, मराठी, अरबी, फारसी आद भासावां रै सबदां रो प्रयोग धड़ल्लै सूं हुयो है। इणरी भासा नै 'सधुक्कड़ी' कैवणो न्याय संगत है।

संत कवियाँ साखी, सबद, रमैणी, पद आद रो प्रयोग कर्‌यो है। इणां लोक छंदां रो भी प्रयोग कर्‌यो हो। पण इण रै बावजूद आं रै छन्दां में लय अर संगीत रा तत्त्व मौजूद है जका जन नै सीधा प्रभावित करै। जठै तक अलंकारां रै प्रयोग री बात है उणां रो सहज प्रयोग हुयो है। हालांकि रज्जब अर सुंदरदास री वाणी में सायास प्रयोग भी देख्या जा सकै। कठै–कठै ई परम्परा मुजब उलट बंसियाँ में कठिन प्रतीकां रो प्रयोग भी हुयो है पण आम तौर पर संत वाणी सीधी अर हिरदै नै प्रभावित करणाळी है। कविता में संवेदना ई उण नै कविता बणावै छन्द–बंद, अलंकार, प्रतीक, भासा आद अैड़ा उपकरण है जका संवेदना रै अभाव में मुर्दा सरीर पर कफन री भांत लागै। इण नजर सूं संता री कविता में संवेदना री गैराई है जिंण में मिनख रै हिरदै नै प्रभावित करणै री खिमता है।

13.7 राजस्थानी साहित्य नै भक्तांअर संतां रो योगदान :

राजस्थानी भगती साहित्य रो विवेचन करतां थकां अेक बात सामी आवै कै इण साहित्य रो 'राजस्थानी

भासा' नै कांई योगदान है ? डॉ. रामविलास शर्मा तुलसी रा सामाजिक मूल्यां रो जिक्र करता कैवै कै तुलसी भगती आन्दोलन रा अेक मानीता थंब हा। अगर भगती आन्दोलन रो कीं महत्त्व है तो तुलसी रै महत्त्व नै भुलायो नीं जा सकै। दरअसल किणी भी भासा रा लिखारा या चिन्तक आप रै जुग सूं निरपेख नीं रैय सकै। बै जरूर जुग री समस्यावां नै देखी अर झेली है। संत वाणी सूं बै जन जागरण रा काम करै बै उण भासा रा ऐतिहासिक दस्तावेज हुया करै। भगती आन्दोलन आप रै समय री माँग हो। राजस्थानी कवि उण आन्दोलन सूं जुड़्या अर केई सईकां तांई जनता नै भगतीरो मारग दिखायो आ साहित्य अर समाज नै संता री सबसू बड़ी देन है।

राजस्थानी संतां दुनियां में उण बखत पैली बार पर्यावरण रक्षण रो मुद्दो उठायो जद अैड़ी बात कैवणो तो दूर किणीरै मन में भी कोनी। राजस्थानी भासा आज इण बात पर गर्व कर सकै कै उण रा कवि चिंतक चिन्तक इण खतरै सूं दुनियां नै केई सईकां पैली सावचेत कर चुक्या है। कवि, कलाकार अर चिन्तक आपरै जुग री मसाल हुवै जका खुद बळ'र दुनियां नै च्यानणो देवै। राजस्थानी भासा रा अै मानीता कवि लम्बै समै तांई जनता न

अंध विस्वासां में नीं पड़णै री, ईस्वर अेक है, जात–पांत झूठी है, सोसण सूं मुगती री सीख देंता रैया। इणा री वाणी री ठंडी तासीर सूं लाखूं भटकेड़ै लोगां नै आतम सान्ति मिळी इण भांत राजस्थानी भगत अर संत कवियां री राजस्थानी भासा नै अमोली देन है। जिण नै कदे भुलाई नीं जा सकै।

13.8 इकाई रो सार

समाज में जात, धरम अर सम्प्रदायां रै नांव पर फैलेड़ी कुरीतियां अर अंध विस्वासां नै दूर करतां थकां संत अर भगत कवियां सामाजिक, रूप सूं, सांस्कृतिक, अर धरम री दीठ सूं अलग–अलग दार्सनिक विचारां सूं बंटेड़ै लोगां में समन्वय थापना री कोसीस करी। भगती जुग रा राजस्थानी कवि पर्यावरण सारू जागरूक हा। उणां पर्यावरण रक्षण नै आप रै उपदेसां रो हिस्सो बणायो। इणी भांत आचरण सुद्धता पर जोर देय'र सामाजिक सद्भावना कायम करी। बै लोक में अहिंसा रो उपदेस देंता अर प्रेम सूं रैवण रो सनेसो देंता। उणां रै काव्य में लोक जीवन अभिव्यक्ति भी हुयी है। संवेदना री दीठ सूं उणा रो काव्य ऊँचै दर्जै रो है।

13.9 अभ्यास रा प्रस्न

1. राजस्थानी संतां अर भगत कवियाँ री समन्वय भावना पर अेक निबंध लिखो।
2. भगती काव्य में पर्यावरण रक्षण खातर संत कवियां रा विचार लिखो।
3. भासा–सैली री दीठ सूं राजस्थानी भगती काव्य रो विवेचन करो।
4. राजस्थानी साहित्य नै भगतां अर संतां रो कांई योगदान है ? उदाहरणा सूं समझावो।

13.10 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. डॉ. मनमोहन सहगल – हिन्दी साहित्य का भगती कालीन काव्य।
2. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास।
3. उद्भव और विकास आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिन्दी साहित्य।
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – कबीर।
5. प्रेम नारायण टंडन – हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिगत इतिहास।
6. डॉ. मदन सैनी – राजस्थानी काव्य में राम कथा।
7. डॉ. राम प्रसाद दाधीच – राजस्थानी संत परम्परा।
8. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त – साहित्यिक निबन्ध।
9. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहितय।

इकाई – 14

राजस्थान रा लोक देवी–देवता

ईकाई रो मंडाण

14.0 उद्देस्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 जुग रो दरसाव

14.3 लोक देवता

पाबूजी राठौड़, देवनारायण बगड़ावत, मल्लीनाथजी, रामदेवजी (तंवर), गोगाजी, तेजाजी, मेहाजी (मांगाळिया), हड़बूजी (सांखला)

14.4 लोक देवियां

हिगळाजमाता, आवड़जी, करणीजी, आई माता, जीणमाता

14.5 लोक देवी देवता री समाज नै देन

14.6 इकाई रो सार

14.7 अभ्यास रा प्रस्न

14.8 संदर्भ ग्रंथां री पानड़ी

14.0 उद्देस्य

इण इकाई रौ खास उदेस्य विद्यार्थियां नै लोक देवी–देवतावां अर उणां रै जीवन–चरित री ओळखाण करावणौ है जिकै सूं उणां नै खुद री संस्कृति री घणमोली जाणकारी मिळ सकै।

14.1 प्रस्तावना

मरूधरा रै कण कण मांय भगती अर सगती री धारा अेक–मेक हुय'र बरसां सूं बैंवती आय रैयी है। इण धरा पर अैड़ी पुण्यात्मावां जलम लियो जिणा आपरै बगत में मरूधरा रै समाज नै आततार्इयां सूं बचायौ, गऊमाता री रिक्षा करी, गरीब–गुरबां रै जीवण नै आणंदकारी बणायौ। अै पुण्यात्मावां सदा ई 'स्वहित' नै त्याग'र 'लोकहित' खातर ई आपरौ जीवण लगाय दियौ। इण कारण सूं अै पुण्यात्मावां मरूधरा रै जनमानस में इण तरियां घुळमिळगी कै जागां–जागां आं री पूजा हुवण लागगी, इणां री वातां, फड़ां, पवाड़ां इत्याद रचीजण अर गावीजण लागग्या अर इणां रा मिंदर, देवरा, थान, पगल्या, समाध्यां इत्याद बणग्या जठै लोग–लुगायां जात, झडूला चढावै अर दरसण करण नै जावै, मिनतां मांगै अर पूरी हूवण पाछै सिरधा सारू परसादी चढावै। आं कारणां सूं आं पुण्यात्मावां नै 'लोक देवी–देवता' रै रूप में ख्यात मिळी।

1. लोक देव– पाबूजी राठौड देवना राणजी, मल्लीनाथजी, बाबा रामदेवजी, गोगाजी, तेजाजी, मेहाजी, हड़बूजी इत्याद अैड़ी ही पुण्यात्मावां ही जिकी लोक देवतावां रै रूप मांय आज भी पूजीजै है।

2. लोक देवियां– इणी भांत हिंगळाज माता, आवड़ माता, करणी माता, जीण माता, आई माता इत्याद नै लोक देवियां रै रूप मांय मान मिल्यौ अर वांरी आज भी पूजा हुवै है।

इण इकाई मांय आं लोक देवी–देवतावां री जाणकारी देवण री कोसिस करीजी है।

14.2 जुग रो दरसाव

राजस्थान रो सामाजिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक दरसाव घणौ ई अमोलो अर जगचावो है। इण भौम माथै सगती अर भगती रौ अजब मेळ सदा सूं ई एकमेक हुय'र चालतो आय रैयौ है। राजस्थानी जोधा जुध रै मैदानां

मांय रणचण्डी रै झण्डे तळै ई आपरो जीवण सारथक मानता हा, तो दूजी कानीं भगती री लहरां मांय डूबता उतरता अठै रा मिनख जीवण रो आनन्द लैंवता हा।

राजस्थान री इणी पुण्य धरा पर लारला सैकड़ां हजारां बरसां मांय अनेकूं पुण्यात्मावां जलम अर अवतार लियो अर उणां आप आपरै बगत में सदा ही लोकहित रै कामां मांय आपरो जीवन लगाय दियौ। आं पुणयात्मावां रै बारै में आज भी घणखरी किंवदंतियां, वातां, पवाड़ां, पड़ां इत्याद रै रूप चलण मांय है अर आज भी उणां री याद में अनेकूं मिंदर, देवरा, थान, पगल्या, समाध्यां इत्याद मिळ जावैला जठै मानखो आपरी तकलीफां अर पीड़ावां सूं मुगती पावण खातर धोक लगावण नै जावै।

'राजस्थान रा लोक देवी–देवता' नांव री ईं इकाई मांय राजस्थान री ग्रामीण संस्कृति, लोक आस्था, लोक चाह, लोक उच्छब–परब अर लोक देवी–देवतां री भगती–सगती माथै विस्वास अर भरोसो बधै, जनजीवण सुख–सान्ती सूं रैवै, लोक मरजादावां थरपीजै। लोक परम्परा सूं घणमोलो लोक जुड़ाव बधै। मिनख–मानवी जमारै मांय पीड़ा, अमूजौ मिटावण सारू लोक संस्कृति रौ फैलाव, मेळा–मगरिया, तीज–तिंवांर, लोक देवी–देवतावां रै सारू सरधा–भगती राखतां हरख–कोड, सुख उपजावै अर जीवण–जातरा बधावतां रैवै। पाबूजी, हड़बूजी, रामदेवजी, मेहाजी, गोगाजी, मल्लीनाथजी, करणीजी, हिंगळाज माता, आवड़जी इत्याद सूं प्रेरणा लेवतां थका बालक–बालिकावां री निजू प्रदेस सारू पहचाण बधती जावै। इण धरती माथै पितर–भोमियां, खेतरपाळ, लोक देवता अर लोक देवियां रौ मोकळौ प्रभाव है। लोक देवी–देवतावां रै मेळां सारू लोग–लुगायां में हरख–उच्छाव अर आछा संस्कार ऊपजै, विद्यार्थियां मांय सद्भाव, सद्प्रेरणा अर संयम रा गुण थरपीजै।

14.3 लोक देवता

1. पाबूजी राठौड़

पाबू, हड़बू, रामदेव–मांगलिया मेहा।
पांचू पीर पधारज्यो गूगा जी जेहा।।

इण दोहे में जिके पांच पीरां नै आवण रौ न्यूंतौ दियौ गयौ है उणमें पाबूजी सबसूं पैली न्यूंतीजै है। पाबूजी रो जलम जोधपुर जिले री फलौदी तहसील रै ठिकाणे कोळू में विक्रमी संवत् 1313 में हुयौ बतावै। हालांकि पाबूजी री जलम तिथ रै समय रै बारे में इतिहासकार एक मत नीं है। कैई इणा रौ जलम विक्रमी संवत् 1296 बतावै तो केई विक्रमी संवत् 1356 बतावै। मारवाड़ रै राठौड़ां री चौथी पीढी मांय धांधळजी राठौड़ हुया हा जिकां री दूसरी घरवाळी री कोख सूं पाबूजी रौ जलम हुयौ। पाबूजी बाळपणै सूं ही घणे जीवट अर हिम्मतवाळा हा। अेकला ही सांडणी माथै चढ'र सिकार करण नै चल्या जावतां अर तीर–कमाण सूं सिंग रौ सिकार कर लैवता। बाळपण सूं ई वे जांत–पांत रै भेद रै खिलाफ हा। वै नीची जात रै लोगां रै घरां जांवता अर वांरै टाबरां नै आपरा भायला बणाय लेंवता। उण बगत रै एक सामन्त आना बाघेला रै डर सूं भाग्यौड़ा सात भीलां नै कठैई सरण नीं मिल रैयी ही, पाबूजी बां सातूं भील भाईयां नै आपरै डेरे में सरण दीवी। इण कारण भील सरदार चांदो पाबूजी कनै आयग्यौ अर अंत बगत ताईं पाबूजी रै साथै इ'ज रैयो।

पाबूजी री वीरता रा किस्सा –

पाबूजी राठौड़ री वीरता रा घणाई किस्सा है, पण अठै कीं खास किस्सा जाणकारी खातर दिया जाय रैया है। बां दिनां में मारवाड़ री चारणी देवळ दे खनै एक चमत्कारी घोड़ी हुया करती जिकी रौ नांव हो 'केसर'। उण बगत रै हरैक राजा–महाराजारी आ इंच्छा रैंवती कै केसर उणानैं मिळ जावै, पण देवळदे सगळां नै मना कर देंवती। पाबूजी नै जद आ बात ठा पड़ी तो बै भी देवळदे कनै पूग्या अर 'केसर' मांगी। देवळदे पैला सूं ई पाबूजी री वीरता रा केई किस्सा सुण राख्या हा, इण कारण वा पाबूजी नै 'केसर' देवण नै त्यार हुगी पण वा एक सरत राखी कै पाबूजी नै सदा ई गऊ माता री रक्षा करणी पड़सी। पाबूजी इण खातर त्यार हुयग्या अर 'केसर' नै लै'र आपरै ठिकाणै आयग्या।

उण बगत हिन्दुस्तान में पठान, तुरक, अफगान इत्याद मुसळमान आततांई अत्याचार करता हा। अे लोग किसानां री फसलां लूट लेंवता, गऊवां नै उठा'र ले देवतां, मिंदर तोड़ जांवता अर लुगायां नै भी उठा'र लैय

जांवता। पाबूजी आं आततार्ईयां नै मिटावण रौ संकळप लियौ अर धीरै धीरै बै कैई लुटेरां रो खातमो कर दियौ। बै बधता–बधता ठेठ मुलतान तांई पूग्या। मुलतान सूं पाछा आंवती बगत पाबूजी अमरकोट रूक्या (अमरकोट अबै पाकिस्तान मांय है)। अमरकोट रा सोढ़ा राणा सूरजमल पाबूजी री वीरता सूं घणा प्रभावित हा। बै पाबूजी रै सामनै आपरी बेटी फूलमदे सूं ब्याव करण रौ प्रस्ताव राख्यौ। पाबूजी इण प्रस्ताव नै मान लियौ अर कह्यौ कै पैली म्हारी भतीजी रौ ब्यांव हुय जावै, पछै म्हें बरात ले'र आसूं।

पाबूजी पाछा काळू आयग्या। भतीजी रौ ब्यांव बड़े ठाठ–बाट सूं करयौ। पछै पाबूजी री बरात अमरकोट पूगी। बरात मांय जांवतां वेळा भी पाबूजी रस्ते में गऊवां री रिक्षा करता गिया। सरूआती रीति–रिवाजां रै पूरो हुयौ पाछै पाबूजी ब्याव रै मण्डप मांय बैठ्या। हाल तांई चौथौ फेरौ ई नीं हुयौ हो'कै खबर मिळी कै दूदो सूमरा अमरकोट माथै हमलो कर दियौ है अर सूमरा रा सिपाई गऊवां नै ले जाय रैया है। पाबूजी नै चारणी देवळदे नै दियाड़ौ गऊ रिक्षा रो वचन याद हो, बै उणी बगत फैरा छोड़'र उठग्या अर 'केसर' माथै चढ'र दूदा सूमरा सूं जुध करण खातर रणभूमि जा पूग्या। अमरकोट रा सिपाई भी जुध में मिळग्या पण फैर भी सूमरा रा सिपाई बेसी हा। पाबूजी घणी वीरता सूं सूमरा अर उणरै सिपाईयां रो मुकाबलो कर्यौ। अंत मांय सूमरा नै गऊवां छोड'र भागणौ पड़्यौ। ईं जुध में पाबूजी वीरगति पाई। लोक कथावां मांय सूमरा नै 'रावण' अर पाबूजी नै 'लिछमण' रौ अवतार मान'र कथावां सुणाई जावै।

इण भांत गऊ माता री रक्षा रै वचन रौ पालण करता थकां पाबूजी वीरगति पाई। समाज सूं भेदभाव अर समाज में समरसता लावण सारू करीजी उणां री कोसिसां रै कारण ई पाबूजी राठौड़ जनमानस मांय लोक देवता रै रूप में थरपीजग्या अर पूजीजण लाग्या। पाबूजी री कोसिसां सूं ई उण बगत मुसळमान आततार्ईयां सूं नीची जातवाळा लोगां री रक्षा हुई अर उणां नै हिन्दू समाज मांय बराबरी रौ दरजौ मिळयौ।

2. देवजी बगड़ावत

देवजी यानि देवनारायणजी रा देवरा आखै राजस्थान मांय फैल्यौड़ा है। देवजी रौ खास देवरो सवाईभोज नांव री जागां पर है जिकी भीलवाड़ा जिले रै आसीन्द कनै है। दूजी खास जागांवा मांय फरणौ (मध्यप्रदेश रै उज्जैन जिले मांय) अर राजस्थान रै टोंक जिले मांय दांता गांव है। चमत्कारी सगती सूं सराबोर देवनारायणजी रो जलम गोठा गांव रै जागीरदार सवाई भोज री दूजी घरवाळी सोढी खटाणी री कोख सूं हुयौ बतावै। ओ कहीजै कै सोढी खटाणी नै गुरु रूपनाथ आसीरवाद दियौ कै थारै बेटो हुसी अर ओ बेटो चमत्कारी हुवैला अर सवाई भोज रै खानदान माथै हुवै अत्याचार रौ बदळौ लेवेला। चूंकि राण रा राणा दुरजनसाल सवाईभोज रै गांव अर पूरै खानदान रौ सफायौ कर दियौ हौ इण कारण सोढी खटाणी मालासेरी रै जंगळा मांय गयी परी अर वठै इ'ज माघ महीने री सातम (सूरज सप्तमी) नै देवनारायणजी रौ जलम हुयौ। देवजी रै जलम रै बरस बाबत इतिहासकारां में मतभेद है। कुछ ख्यातकार जलम रौ बरस विक्रमी संवत 1167 अर कैई वि.स. 1097 तो कैई ईस्वी सन् 1243 रै लगै टगै बतावै। दुरजनसाल रै सागै हुवै जुध मांय सवाई भोज रै खानदान रा फगत पांच टाबर बच्या हा जिकै मांय अेक तो देवनारायणजी हा, बाकी चार हा मदनसिंह, महेन्द्र, मानसिंह (कान भांगी) अर भूणा। गोठा सूं पाछो जांवती बेळा दुरजनसिंह भूणा नै आपरै सागै लेयग्यौ हौ।

बाळपणै मांय देवजी रौ नांव उदयसिंह राखीज्यौ। राणा दुरजनसिंह नै उणां रै जलम बाबत ठा पड़गी अर वौ देवनारायण नै मारण सारू आपरा सिपाई भेज्या अर दूजा केई जतन कर्या पण देवजोग सूं देवनारायण हरैक बार बचतो रयो। मालासेरी रै जंगळा मांय देवनारायण माथै खतरौ बधतो देख'र सोढी खटाणी आपरै पीहर देवास आयगी। वठै इ'ज देवनारायण री सीक्सा–दीक्सा हुई। जवान हुंवता हुंवता देवनारायण भोत हूंसयार घुड़सवार अर जोधा बणनै रै सागै–सागै आयुर्वेद अर तंत्र सास्त्र रौ ज्ञाता हुयग्यो। उण तय कर लियौ कै म्हारै जीवण रौ अेक इ'ज ध्येय है अन्याव अर अत्याचार रौ अंत अर धरम री थरपना।

सवाईभोज रौ अेक खास भायलो हो छोछू भाट। बौ लगातार देवनारायण माथै निजर राख रैयौ हो। जद देवनारायण हरैक विद्या मांय पारंगत हुयग्यो तद छोछू भाट देवास आयौ अर देवनारायण नै 'गोठा' चालण सारू कैयौ। सोढी खटाणी रै मन मांय कैई संकावां ही पण देवनारायण री जिद देख'र वा भी गोठा जावण सारू त्यार

हुगी। छोछू भाट, देवनारायणजी, सोढी खटाणी अर कुछैक रखवाळा गोठा खातर रवाना हुयग्या। मारग मांय धार रै महाकाळी री अराधना री बखत देवनारायणजी वठै रै राजा जयसिंह री बीमार बेटी पीपळ दे री जान बचाई। जद राजा जयसिंह आपरी बेटी रौ ब्याव देवजी सूं कर दियौ। धार मांय ही देवजी रौ ब्याव अेक नागकन्या सूं भी हुयौ हौ।

समै निकळते–निकळते देवनारायणजी री सगती बधतीगी अर वांरो जस बी च्यारूंमेर फैलण लागग्यौ। 'गोठा' पूगते पूगते वांरी मुलाकात भूणा सूं हुई अर बै भूणा नै रणनीति मुजब दुरजनसाल सागै रैवण रौ कयौ। गोठा पूग्यां पछै मदनसिंह, महेन्द्र अर कान भांगी उणां सूं मिळग्या। पैली तो सगळा जणा मिळ'र गोठा मांय पाछी सांती रो वातावरण बणायो अर लोगां नै ढाढस बंधायो फैर धीरै धीरै अेक रणनीति बणाय'र दुरजनसाल रै आदमियां नै अेक अेक कर'र मारणो सरू कर्‌यौ अर आखिर मांय खुद दुरजनसाल नै मार'र बींरै आंतक नै खतम करियौ। नूंवै बणायौड़े गोठा राज री बागडोर आपरै बडे भाई महेन्द्र नै सूंप'र खुद देवनारायणजी पाछा लोक कल्याण रै कामां में लागग्या। बै मानीज्यौड़ा सिधपुरूस हा अर आपरी सगती नै सदा ई लोक कल्याण सारू लगाई। इण कारण वांरी ख्याति लोकदेवता रै रूप मांय हुई। छोछू भाट नै पाछो जलम दिरावणो, घरआळी पीपळ दे री कुरूपता नै दूर करणौ, तंत्र रै प्रभाव सूं सूखियौड़ै दरियाव मांय पाछौ पाणी बैवाणौ, सारंग सेठ रो पुनरजलम इत्याद अेड़ा चमत्कार हुया जिकां सूं देवजी नै लोकदेवता री ख्याति मिळी। वै भगवान किसनजी रा अवतार मानीज्या।

देवलोकगमन –

देवनारायणजी रै जद देवलोक जावण रौ बखत आयौ तो वांरी जोड़ायत कयो कै म्हें किणरै साहरै जीवूंला। तद देवजी उणांनै कैयौ कै जद भी तूं गोबर थाप'र दीयौ जळा'र म्हारौ सिमरण करैला, म्हूं थारै सामी आ जाऊंला। जद तांई गोबर गीलो रैवेला, म्हे थारै कनै होवूंला अर गोबर सूखतां पाण ई पाछो अन्तरधान हुय जासूं।

देवजी रै देवलोकगमन हुया पाछै पीपलदे वां रौ रोज रात नै सिमरण करती अर वां सूं बातां करती। अेक दिन देवजी री माता सोढी पीपलदे रै कमरे मांय सूं बातां री आवाज सुणी तो वा पीपल दे नै इण बाबत पूछ्यौ। पीपलदे डरगी अर आ सोची कै कठै म्हारै चरितर माथै कोई दाग नीं लाग जावै, अर बा सगळी बात सासू नै बताय दी। जद सोढी भी कयो कै अबकी म्हनै बी म्हारै बेटे रा दरसण कराईजै। गोठा रौ राजपिरोहित भी अे बातां सुण रैयौ हो, बो आ सोची कै गोबर मांय जे तेल घाल देवांला तो बो सूखेला ई कोनी अर देवजी नै पछै अठै इ'ज रैवणो पड़सी। रात नै अे सगळा आ ई जुगत लगाई। देवजी रा दरसण हुयग्या। वठीनै जद गोबर सूखतौ नीं लाग्यौ तो देवजी नै कीं संका हुई, वै ध्यान लगायौ तो वां नै ठा पड़गी कै कांई खुराफात करीजी है। देवजी घणा नाराज हुया अर कैयो कै अबै म्हूं कदैई कोनी आवूं पण म्हारी पूजा रो अधिकार अबै गूजरां नै हुवैला ब्राह्मणा नै नहीं अर गूजर म्हारी पूजा नीम रा पत्ता सूं करैला। इण भांत देवजी गोबर अर नीम री परतिस्ठा भी बढाय दीनी।

चूंकि देवनारायणजी रो जलम गूजर जात री सोढी खटाणी री कोख सूं हुयौ, इण कारण गूजर जात मांय देवजी री घणी मान्यता है। भादवे री छठ अर माघ सुदी सातम नै देवजी री पूजा घणै धूमधाम सूं करीजै अर इणां रै नांव रा भजन गाईजै। देवनारायणजी रौ सिमरण देवजी, ऊदाजी (उदयसिंह), क्रस्णजी, धरमराज अर नारायण – आंई पांच नांवा सूं करीजै। मुसळमान लोग आं नै 'ऊदळसार' नांव सूं पूजै।

देवजी री पूजा री विधी सरल अर सैज है। पूजा खातर मूरत बणावण री कोई जरूरत नीं है, गांववाळा छोटोसो'क देवरो बणाय'र पांच इंटा रै रूप मांय इणां री थापना करै अर पेड़ रा पत्ता ईं माथै राख'र गूगळ इत्याद रौ धूप दिरीजै अर परसाद रूप में अे पत्ता ई बांटीजै।

3. मल्लीनाथजी –

आपरै बगत रा सिधपुरूस बाबा मल्लीनाथजी रो जलम विक्रमी वि. संवत 1365 मांय मारवाड़ इलाकै रै सिवाणा रै गांव गोपड़ी रै रावळ सलखा अर जाणीदे रै बडै बेटे रै रूप में हुयौ। मल्लीनाथजी बाळपणै सूं ई वीर

अर पराकरमी हा। बापजी सलखा रै देवलोक हुयां पछै बै आपरे काकोसा कान्हड़दे कनै महेवा आयग्या अर उणां री मदद करण लागग्या। बाद में उणां रै छोटे भाई त्रिभुवनसी नै हटाय'र 1374 ईसवी में बै बठां रा स्वामी बणग्या। कैवत आ है कै 1378 ईसवी में उण बगत रै नवाब फिरोज तुगलक रै मालवा रै सूबेदार निजामुद्दीन री फौज नै मल्लीनाथजी मार भगाय दीनी। इण सूं वांरी ख्याति और बधगी। धीरै धीरै मल्लीनाथजी आपरौ खेतर बधावतां गया। आपरै भतीजे चूण्डा नै मण्डोर अर नागौर जीतायो। मारवाड़ इलाके रा सीवाणा, खेड़ अर ओसियां रा डेरा आपरै सगै–सबंधियां नै जागीर में दीया। ईस्वी सन् 1378 मांय मंडोर, मेवाड़, आबू अर सिंध रै बिचाळै लूट–मार करण वाळा मुसळमांना नै जद मल्लीनाथजी तंग करणा सरू कर्या तद मुसळमान तेहर दळां री फौज लैय'र जुध करण सारू आया। मल्लीनाथजी बां दळा री फौज नै हराय दियौ। फैर माळवै रौ सूबेदार खुद जुध करण नै आयौ पण मल्लीनाथजी उणनै भी हराय दियौ। मल्लीनाथजी अेक महान वीर अर नीतिवान राजा हा। उणां नीं सिर्फ राठौड़ी राज रौ विस्तार कर्यौ, बल्कै उणनै मजबूती भी दीनी।

लोकधारणा मुजब 1389 ईस्वी में मल्लीनाथजी आपरी राणी रूपांदे रै कैवण सूं उगमसी भाटी कनै दीक्षा ली अर योग साधना सूं सिधपुरूस बणग्या। धीरै–धीरै मल्लीनाथजी कनै कैई चमत्कारी सिधियां आयगी। अबै मल्लीनाथ पूरी तर्यां सन्त–मातमा रो जीवण बितावण लाग्या। 1399 ईस्वी मांय पूरै हलके रै साधु–सन्तां रौ एक जलसो राख्यौ। इणी बरस री चैत सुदी दूज नै मल्लीनाथजी सुरग सिधारग्या।

बाड़मेर जिले रै तिलवाड़ा गांव मांय लूणी नदी रै किनारै उणां रौ एक मिंदर है जठै आज भी मेळौ भरीजै अर मानखो बठै मल्लीनाथजी रा दरसण करण सारू आवै। मल्लीनाथजी सगती अर भगती री अनूठी मिसाल हा। आपरै पूरै जीवणकाल मांय मल्लीनाथजी मुसळमान अर आतताईयां सूं लोगां अर ढोर–डांगरा री रिक्षा करी। बाद मांय हरी कीरतन अर योग साधना मांय लीन हुयग्या अर हलके रै लोगां रै उद्धार सारू कारज करता रैया। मल्लीनाथजी निरगुण पंथी हा।

मल्लीनाथजी रै सिमरण मात्र सूं ही मिनख जमारो सुधर जावै। इणी कारण मरूधरा रै आथूणै इलाके बाड़मेर नै मालाणी भी कैयो जावै।

4. रामदेवजी (तंवर) –

मरूभोम रा ख्यातनाम लोक देवता बाबा रामदेवजी रौ जलम जैसळमेर जिलै रै पोकरण हलके रै गांव रूणीचै मांय तंवर वंसी ठाकर अजमालजी अर माता मैणादे रै घरां भादवा सुदी दूज नै हुयौ। रामदेवजी रै जलम री तिथ बाबत इतिहासकारां में मतभेद है। कोई उणां रो जलम विक्रमी 1462 बतावै तो कोई 1465 बतावै पण अजमालजी अर उणां री राणी मैणादै किसन भगवान रा भगत हा अर किसनजी री घणी पूजा अराधना कर्या पछै उणां रै दो बेटा हुया बीरमदेव अर रामदेव। कैवत आ है कै दोन्यू बेटा बलरामजी अर किसनजी रा अवतार हा।

अेकर ठाकर अजमालजी घूमफिर'र पाछा महल कानीं आय रैया हा। उणी बगत कैई किसान आपरै काम सारू खेतां कानीं जाय रैया हा पण अजमालजी नै देख'र बै किसान पाछा घूमग्या। अजमालजी जद उणांनै पूछ्यौ कै पाछा क्यूं जाय रैया हो। तद बै किसानां कैयो कै महाराज थे निपूता हो अर दिनूगै दिनूगै थांरो मूंडौ देखण रो धरम कोनी। आ बात सुण'र अजमालजी नै भोत दुख हुयौ। उणी बगत बै द्वारका रवाना हुयग्या, भगवान किसनजी रै दरसण सारू। द्वारकाजी पूग'र उंतावळ में मिंदर में पगरखी पैर्योड़ा ही घुसण लाग्या। मिंदर रा पुजारी टोका–टोकी करी जद बै उणा सूं लड़ण लाग्या अर किसनजी री मूरत माथै भाटो मार दियौ। पुजारी देख्यौ कै ओ पागल कठै सूं आयग्यौ तद बै भागण लाग्या। जद अजमाल जी पुजारियां नै पकड़'र कयो'कै म्हनैं तो असली भगवान सूं मिळणो है आ तो भाटे री मूरत है जै आ भगवान हूंती तो म्हारे भाटो मारणे रै बाद कीं न कीं तो करती। पुजारी बापड़ा डरग्या अर अजमालजी नै कैयो कै भगवान किसनजी तो इण बगत समन्दर मांय सोय रैया है। अजमालजी कीं सोच्यौ न देख्यौ अर समन्दर मांय कूदग्या। जद प्रभु किरपा कर'र उणां नै दरसण दिया तो अजमालजी देख्यौ कै प्रभु रै माथै कपड़े री पाटी बांध्योड़ी है। उणां पूछ्यौ भगवान ओ कींकर, तो किसनजी कह्यौ कै थें म्हारी मूरत रै भाटो मार्यौ हो नीं, ओ उणरो फळ है। अजमालजी रोवण लाग्या अर गळती

री माफी मांगी। पछै कैयो कै प्रभु म्हूं हाल ताईं निपूतों हूं इण कारण लोग म्हारो मूंडो ही नीं देखणो चावै। जद भगवान किसनजी अजमलजी नै कैयो कै थे चिन्ता ना करो थांरै एक बेटो तो राणी मैणादे री कोख सूं पैदा होसी जिकै रो नांव बीरमदेव हुवैला अर म्हें खुद पालणै मांय परगट होवूंला। इणी वचन रै कारण कालान्तर मांय राणी मैणादे री कोख सूं बीरमदेव रो जलम हुयौ अर भादवा सुदी दूज नै रामदेवजी पालणै मांय परगट हुया। अे दोन्यूं भाई बलरामजी अर किसनजी रा अवतार मानीजै।

दोनूं भायां री पढ़ाई गुरु बालकनाथ रै अठै हुयी। गुरुजी कनै बै दोन्यूं इतिहास, धरम, दरसण अर अस्त्र–सस्त्र री सीख लीवी। रामदेवजी योग साधना भी कर्‌या करता हा अर बचपन सूं ही ध्यान करण सारू साधना करता हा। बाळपणै सूं ही रामदेवजी इण बात सूं भलीभांत परिचित हुयग्या कै पूरौ देस मुसळमान आततांईयां सूं जूझ रैयो है, उणां नै इण बात री भी तकलीफ ही कै तलवार रै जोर माथै मुसळमान लोगां रौ धरम बदळी करा'र उणा नै मुसळमान बणाय रैया है। इण रै अलावा रामदेवजी समाज में फैल्योड़ी ऊंच–नीच अर भेदभाव री भावना सूं भी चिंतित रैंवता हा। आं सब समस्यावां रै निराकरण वास्तै रामदेवजी सोचणो सरू कर्‌यौ अर बां सोच्यौ कै सबसूं पैली समाज नै अेक करणो पड़सी। इण सारू रामदेवजी उण बगत री नीची जात्यां रै लोगां सूं दोस्ती करणी सरू कर दी, उणां रै घरां जांवता परा। इण काम में हड़बूजी अर पाबूजी उणां रौ साथ दीयौ।

इणी बखत रामदेवजी नै खबर मिळी कै रूणीचे रै जंगळ मांय एक तांत्रिक साधु भैरूं हुया करै जिको आपरी तांत्रिक विद्‌या रै कारण लोगां नै डरांवतो रैवै अर उणां पर अत्याचार करै। इण कारण लोग आपरा घर–बार छोड'र जावण लाग्या है। रामदेवजी सोच्यो कै म्है रूणीचै रै ठाकर रो बेटो हूं इण कारण म्हारो फरज बणै कै म्हैं लोगां नै इण तांत्रिक भैरूं सूं मुगती दिराऊं। आ सोच'र बै भैरूं तांत्रिक सूं लड़न खातर जंगळ पूगग्या। कैई देर ताईं माया जुध चाल्यौ। रामदेवजी नै भी कैई सिद्धयां प्राप्त ही, इण कारण भैरूं माया जुध मांय उणां सूं जीत नीं सक्यौ। फैर भैरूं तलवार उठा ली, पण रामदेवजी उणनै तलवार जुध में भी हराय दियौ। जद भैरूं भागण लाग्यौ तद रामदेवजी उण नै मार दियौ। भैरूं री मरण री खबर सुणता ई इलाके रा लोग घणा राजी हुया अर रामदेवजी रो जस एक जोधा अर सिद्धपुरूस रै रूप मांय फैलग्यो।

तांत्रिक भैरूं री मौत रौ इत्तो असर हुयौ कै इलाके रै आसे–पासे सूं सगळा मुसळमान आततांई भागग्या अर पूरे इलाके में सान्ति हुयगी। इण रै बाद रामदेवजी समाज में सोसण अर भेदभाव खतम करण सारू कारज करणो सरू कर्‌यौ। बै गांव गांव घूमण लाग्या, अछूत अर नीची जात रै लोगां रै घरां मांय रूकता अर बठैइ'ज जीमता। रात नै भजन कीरतन करवावता। बाद में बे 'जम्मे' रै नांव सूं जगचावा हुया। आं कारजां रै कारण लोग उणां नै 'बाबा रामदेव' कैवण लागग्या। मेघवाळ जात री एक कन्या डाली बाई नै बै आपरी बैन बणायी। बाबा रामदेव रै इण कारजां सूं उणां री ख्यात समूचे देस मांय फैलती गयी। परिणाम ओ निकळ्‌यौ कै समाज मांय सोसण रै खिलाफ आवाज उठण लागी, छोटी जात वाळां नै भी पूरौ सम्मान मिलण लाग्यौ। इणी कारण सूं जिका लोग धरम बदळ'र मुसळमान बणण लाग्या हा वै भी पाछा हिन्दू हुयग्या।

बाबा रामदेवजी रा परचा –

बाबा रामदेव रै चमत्कारां नै लोग 'परचा' कैवै। उणां रै परचां रा कैई किस्सा है, पण अठै कुछैक खास–खास ही आपरी निजर कर्‌या जाय रैया है।

एकर मुसळमानां रै तीरथ मक्का सूं पांच पीर बाबा रामदेवजी नै परखण सारू रूणीचे आया। रामदेवजी उण बखत जंगळ मांय आपरै घोड़े नै घास चराय रैया हा। बै पांच पीर उण बखत रामदेवजी नै आपरा कैई करतब दिखाया। बाबा रामदेव उणां नै देखता रैया। पछै रामदेव जी उणां नै जीमण सारू न्यूंतो दीयौ। जद बै पांच पीर बोल्या कै म्हैं म्हारा बरतण मक्का सूं लावणा भूलग्या। म्हैं म्हारै बरतणा मांय ही जीमां इण कारण आपरै घरां जीम नीं सकां। उणी समै रामदेवजी आपरौ हाथ लाम्बो कर्‌यौ अर पीरां रा बरतण उठाय लाया। आ देख'र पांचू पीर रामदेवजी रा पग पकड़ लिया अर माफी मांगण लाग्या। जद बै पीर कैयो कै ***'म्हैं तो खाली पीर हां, थे पीरां रा पीर'***। अे पांचू पीर पाछा मक्का नहीं जा'र अठै ई बसग्या अर रामसा पीर री सेवा करण लाग्या।

इणी भांत री अेक ओर कथावां है। रूणीचै रो एक ब्यौपारी लखी बिणजारौ बोर्यां भर'र मीसरी बेचण नै जाय रैयौ हो। मारग मांय उणनै रामदेवजी मिलग्या। रामदेवजी पूछ्यौ कै थारी बोर्यां मांय कांई भर्यौड़ौ है। जद लखी वांनै जवाब दियौ कै बापजी आं मांय सांभर रौ लूण भर्यौड़ो है। लखी झूठ इण खातर बोल्यो कै टैक्स नीं देवणो पड़ै। आ बात सुण'र रामदेवजी मुळकण लाग्या अर कैयौ कै जैड़ी थारी मरजी। थोड़ी'क देर बाद लखी बिणजारो जद आपरी बोर्यां संभाळी तो उणमें मीसरी री जागां लूण ही लूण भर्यौड़ौ देख्यौ। जद उणरी समझ मांय आयौ कै म्हें झूठ बोल्यौ इण खातर मीसरी लूण बणगी। बो दौड़्तो दौड़्तौ रामदेवजी कनै आयौ अर माफी मांगी। जद रामदेवजी उण नै समझायौ कै आगे सूं झूठ मती बोलजै।

रामदेवजी रो ब्याव अमरकोट रै राजा दलजी सोढ़ा री बेटी नेतलदे रै सागै हुवणो तय हुयौ। नेतलदे नै अेकर लकवो हुयौ जिके सूं वा पांगळी हुयगी। ब्याव री बगत चंवरी में जद नेतलदे बैठी तो रामदेवजी रै सागे बैठण सूं ही वां रो पांगळो पण दूर हुयग्यो अर बा आपरै पगां चाल'र रामदेवजी सागै फैरा लिया।

ब्याव री बगत ही रामदेवजी आपरी घरवाळी नेतलदे री सहलियां नै परचो दीयौ। ब्याव रै पछै नेतलदे री सहलियां रामदेवजी नै कंवर कलेवे मांय अेक थाळ में कपड़ो ढांक'र मर्योड़ी बिल्ली पुरस दी। रामदेवजी आपरी दिव्य निजर सूं आ देख ली अर ज्यूंही थाळ रो कपड़ो उठायो वा बिल्ली जींवती हुय'र दौड़गी अर सगळो महल बिल्लियां सू भरीजग्यौ। जद बै सहलियां रामदेवजी सूं माफी मांगी।

इणी भांत अमरकोट में रामदेवजी रै ब्याव री बगत रूणीचे में उणां री बैन सुगना बाई रै बेटे री मौत हुयगी। सुगना बाई ई बात नै किणनै ई बताई कोनी क्यूं'कै घर मांय ब्याव रा मंगळ गीत चाल रैया हा पण रामदेवजी आपरी दिव्य निजर सूं आ बात देखली अर ब्याव पाछै रवाना हुवण री उंतावळ करी। रामदेवजी आपरी घरवाळी नेतलदे अर दूजा बरातियां सागै दिन उगण सूं पैली रूणीचे पूंगग्या। बीन–बीनणी नै बधावण सारू जद बैन सुगना बारै नीं आई तो रामदेवजी सुगना नै बुलायो अर कारण पूछ्यो पण बा बोली कोनी अर रोवण लागी। रामदेवजी बधावै सूं पैली ही मांयनै गया अर आपरै भाणजे नै हेलौ करता थकां आपरै हाथां सूं उठाय लियो। उणां री दिव्य सगती रै प्रभाव सूं बो टाबर फेरूं जीयग्यौ अर किलकारियां मारण लाग्यो।

बाबा रामदेवजी री समाधि –

बाबा रामदेवजी जींवतां थका ई समाधि ले लीनी ही। इण बारै में लोकधारणा है'कै रामसरोवर तळाब री पाळ माथै जद बाबा रै समाधि लेवण खातर गुफा खोदी जाय रैयी ही, उणा री धरमबैन अर परम भगत डाली बाई बठै पूंगी अर उणां रामदेवजी नै कैयो कै जठै आ गुफा खुद रैयी है उण जागां पर तो खुद म्हारो हक है। रामदेवजी पूछ्यो कै आ बात कींया हुय सकै। जद डाली बाई कैयो'कै जिण जागां मांय सूं आंटी, डोरा, कांगसी इत्याद चीजां निकळेला बठै म्हारी समाधि हुवैला। चमत्कार री बात आ हुयी कै उण गुफा मांय सूं अे ही चीजां निकळी जद रामदेवजी इण नै डाली बाई खातर छोड़ दी। इण रै बाद भादवा सुदी दसम विक्रमी 1442 रै दिन डाली बाई उण गुफा मांय समाधि ले लीनी। इण रै एक दिन बाद ही उण रै कनै ई दूजी गुफा खुदवाय नै रामदेवजी भी समाधि ले लीनी। समाधि लेवण सूं पैली बै आपरी जोड़ायत राणी नेतलदे, माता–पिता अर भाई समेत सगळा लोगां नै उपदेस दीयौ अर वांनै मोह माया ममता छोड़'र जींवण रो मारग दिखायौ। रामदेवजी कैयो'कै म्हारी समाधि कदैई खोद्या मती, थांरै कुळ मांय हमेसा कोई न कोई म्हारे जिसौ अवतार हुंवतो रैवेला। इण भांत वरदान देय'र भादवा सुदी ग्यारस विक्रमी 1442 रै दिन रामदेवजी समाधि ले लीनी। समाधि लेवण रै बाद आज भी बाबा रामदेवजी आपरै भगतां नै नित परचा देवै।

हिन्दु मुसळमान अेकता रा प्रतीक बाबा रामदेवजी रौ जीवण सदा ई अछूतां अर नीची जात रै उद्धार अर साम्प्रदायिक अेकता नै समरपित रैयो। वै सदा ही दलितां रै विकास खातर काम करता रैया, गऊ माता री सेवा करता, दुरबळ री रिक्षा करता अर प्रेम, भाईचारै अर ईमानदारी रौ पाठ पढावतां। इणी कारण सूं बाबा रामदेवजी हिन्दुवां वास्तै देवता हा तो मुसळमाना वास्ते पीर हा अर साधु–सन्ता वास्तै बाबा हा। इण खातर उणां रो सबसूं चावो नांव है 'बाबा रामसा पीर'।

आज भी रूणीचे मांय माघ अर भादवे महीने मांय हर बरस मेळो भरीजे जिण मांय राजस्थान रा ई नीं

पूरे हिन्दुस्तान रा लोग बाबे री जैजैकार करता आवै।

5. गोगाजी –

राजस्थान राज्य के चुरू जिले रै 'ददरेवा' मांय अेक राजा हुया करता हो जिणरो नाम हो राणा जीवराज चौहान। इणां री राणी बाछल देवी नामी भगत ही। जिणरै नाम हो कोई औलाद नीं ही। अेकर ख्यातनांव भगत बाबा गोरखनाथजी घूमता–फिरता उणरै ददरेवा आया तद राणी बाछल देवी उणां री खूब सेवा करी। गोरखनाथजी राजी हुय'र बाछल देवी नै वरदान दीयौ कै थारै अेक बेटो हुसी जिको पराक्रमी, वीर अर चमत्कारी लोकदेव हुसी। बाबो उणनै परसादी मांय थोड़ो'क गूगळ दीयो। भादवे बदी री नौंवी तिथ नै राणी बाछल देवी अेक बेटे नै जलम दीयो जिकै रौ नांव राख्यौ 'गूगो'। 'गू' रौ अर्थाव गुरु सूं है अर 'गो' रो अर्थाव गोरखनाथ सूं। ओ 'गूगो' सबद ही बाद मांय 'गोगो' बणग्यो।

गोगाजी रै जलम रै समै बाबत इतिहासकार एकमत नीं है। फैर बी घणकरा इतिहासकार उणा रो जलम ग्यारवीं सदी मानै क्यूं'कै बै मुसळमान राजा महमूद गजनवी सागै लड़ाई करी ही अर इण लड़ाई रो बगत ईस्वी सन् 1026 मान्यौ जावै।

गोगाजी बाळपण सूं ही वीर, पराक्रमी अर धार्मिक विचारां रा हा। बै सदा ई लोगां नै प्रेम, भाईचारै अर देस भगती री सीख देंवता। गोगाजी समाज मांय सूं भेदभाव अर जात–पांत रै भेद नै मिटावण सारू सदा ई कारज कर्‌या।

दसवीं सदी मांय जद महमूद गजनवी सोमनाथ मिंदर माथै हमलो कर'र मिंदर नै तोड़'र बठै रो धन लैय'र पाछौ गजनी जाय रैयो हो तद मारग में गोगाजी चौहान महमूद गजनवी नै लड़ण वास्तै ललकार्‌यौ अर भयंकर हुया जुध मांय उणां री फौज महमूद गजनवी नै हराय दियौ। इण जुध मांय चौहान वंस रा सैंताळीस बेटा अर साठ भतीजा आपरै प्राणां री आहूति दे दीनी अर राणियां जौहर करियौ।

जुध करती वेळा जिण जागां माथै गोगाजी रो सरीर पड़्यौ बठै आज भी उणां री समाधि है अर उण जागां नै गोगामेड़ी कैवै। इण रै कनै ई 'गोरख' टीबो है जठै नाथ सम्प्रदाय रो देवळ है। आ जागां राजस्थान रै श्रीगंगानगर जिले री नोहर तहसील मांय है। बीकानेर रा महाराजा गंगासिंहजी अठै गोगाजी री मूरत लगाय'र फूटरो सो मिंदर बणवा दीयौ हो। इण बगत अठै कायमखानी मुसळमान परिवार रैवै। इण मिंदर मांय हिन्दुआं नै बरस मांय अेक महीने ई पूजा करण रो हक है बाकी ग्यारह महीना मांय कायमखानी मुसलमान ही अठां री सार संभाळ करै।

गोगाजी चौहान बाबा गोरखनाथ रा चेला हा, इण कारण उणां नै घणकरी तांत्रिक सगतियां री सिधि भी हांसिल ही। गोगाजी सांप रौ जैर उतारण मांय माहिर हा। इण रै अलावा भी गोगाजी नै ओर भी कई चमत्कारी सिद्धियां रौ ज्ञान हो। वै सदा ही लोक मंगळ रै कामा मांय आपरौ जीवण लगायोड़ौ राख्यौ।

गोगाजी वीर या पीर –

गोगाजी रै नांव सागै केई लोगां अेक विवाद जोड़्योड़ो है। बां लोगां रो ओ मानणो है'कै आपरै जीवण रै अन्त बगत गोगाजी मुसळमान बणग्या हा अर कलमा पढण लाग्या। अे लोग गोगाजी री समाधि रौ आकार मजार जैड़ो बणाय दीनौ अर उणनै कब्र साबित करण री कोसिस करी। अे ई लोग उणां नै 'गोगा वीर' री जगां 'गोगा पीर' कैवणो सरू कर दीयौ।

हालांकि इण बारै मांय इतिहासकारां कनै कोई सबूत अर जाणकारी नीं है पण घणकरा इतिहासकार इणनै गळत बतावै। उणां रौ मानणो है'कै जिको मिनख सदा ही मुसळमाना रै अत्याचारां रै खिलाफ लड़यौ, हिन्दू धर्म री रिक्षा करण खातर जिको ग्यारै बार मुसळमानां सूं जुध कर्‌यौ, जिको बाबा गोरखनाथ रौ भगत हो अर जिको मुसळमाना सूं जुध करती बगत आपरै पूरै परिवार रौ बलिदान कर दीनौ, वो गोगाजी चौहान मुसळमान कींकर बणग्यौ। गोगाजी री सत्रहवीं पीढी मांय करमसिंह नांव रो राजा हुयौ जिकै नै उण बगत रा मुसळमान आतताई जबरदस्ती मुसळमान बणाय दीनौं। इण रै बावजूद भी करमसिंह हिन्दू धरम नै नीं त्याग्यौ अर मुसळमान

बण जावण रै बाद भी पूजा पाठ करतौ रैयो। इणी करमसिंह नै कायमसिंह नांव सूं भी जाण्यौ जावै। इणी करमसिंह या कायमसिंह रा वंसज आज री बगत रा कायमखानी मुसळमान है जिका मुसळमान हूंवता थकां भी हिन्दू रीति रिवाजां नै मानै। अे कायमखानी ही गोगाजी रै मिंदर मांय पूजा करै अर मेळे री बगत पूरे महीने री पूजा रो भार हिन्दू पुजार्यां नै दे देवै।

राजस्थान रै अलावा गुजरात, मालवा, उत्तर प्रदेस, पंजाब, हरियाणा इत्याद राज्यां मांय भी गोगाजी री घणी मानता है। आ जागां माथै भी गोगाजी रा मिंदर अर थान है। राजस्थान रै गोगामेड़ी गांव रै गोगाजी रै मिंदर मांय भादवे महीने री सुदी अर बदी री नौवीं तिथ नै गोगाजी रौ मेळो भरीजे जिकै मांय दूर दूर सूं सिरधाळू आवै अर मनौत्यां मांगै। गोगाजी रा भजन गावै अर खीर चूरमे री परसादी बांटै।

गोगाजी रै देवलोकगमन रै बाबत भी इतिहासकार अेक राय नीं है। आ लोक धारणा है कै गोगाजी री मासी रा बेटा अरजुन अर सुरजन गोगाजी रा राणी साथै छेड़छाड़ करी। गोगाजी नै जद इण बात री ठा लागी तो वै रीस में आय'नै आपरी मासी रै बेटा नै मार दीया। इण बात रो गुस्सो कर'र गोगाजी री माता रूसगी अर उणा रो मूंडो नीं देखण रो संकळप कर लीनौ। इण बात सूं गोगाजी बौत दुखी हुया अर उणां जींवत समाधि ले लीनी।

6. तेजाजी

राजस्थान रै हर जिले मांय लगभग हरैक गांव रै मांय अेक चबूतरो बण्योड़ो है, जठै एक पत्थर माथे बणायोड़ी अेक तसवीर है जिकी मांय अेक घुड़सवार उकेरोड़ो व्है अर अेक सांप व्है। गांव मांय जै किणी नै सांप काट लेवे तद गांव वाळा उणनै ईं चबूतरे माथै ले जावै। फैर गांव रा भोपा ढ़ोल–नगाड़ा बजावंता आवै। गऊ मूत अर गोबर री राख सूं भरयोड़ी अेक कढाई ल्यावै। भोपा गऊ मूत सूं कुरळो कर'र राख आपरै होठां माथै लगाय लेवै अर जठै सांप काट्योड़ो व्है उण जागां नै चूसणो सरू कर'र सांप रै ज़हर नै चूंस–चूंस'र काढ़ देवै। उण बखत भोपे रै मांय तेजाजी री आत्मा आय जावै अर तेजाजी ही उणनै ठीक कर देवै। इण चबूतरे नै तेजाजी रौ थान कैवीजे।

'मारवाड़ा रै जाटां रौ इतिहास' मांय भाट छोटूजी री बही रै मुजब नागौर जिले रै खरना (अबै खरनाळ) गांव रै ताहड़ जाट रै घरां विक्रमी 1130 री माघ सुदी चौदस नै तेजाजी रो जलम हुयौ। इणा री माताजी रौ नांव राजकंवर बतायौ गयौ है। अे नागवंसी जाट हा। नागवंसी जाटां मांय दो गोत हुया करै 'धौळया' अर 'काळा', तेजाजी रौ गोत धौळ्या बतायौ गयौ है।

उण बखत री परम्परावां मुजब बाळक तेजा री पढ़ाई सरू हुई जिणमें अस्त्र–सस्त्र चलावणो महताऊ हो। तेजाजी मांय बाळपण सूं ही दो बातां री ललक ही – अेक तो अस्त्र–सस्त्र मांय महारत हासिल करणी अर दूजी ईस्वर री अराधना करणी। अेकानीं वे जनमानस नै दुखी करण वाळा आततार्ईयां रौ नास करता, दूजी कानीं लोगां रा संकट अर रोग दूर करण सारू भांत भांत री जड़ी बूंट्या री खोज करता अर वांरौ इलाज करता। सोसित अर पीड़ित री सेवा करण नै ई वै सांची पूजा मानता हा। इण तरै तेजाजी मांय वीरता अर पराक्रम रै सागै दया, प्रेम, भगती अर परहित री भावना चेतन ही।

उण बखत री परम्परावां मुजब तेजाजी रौ ब्यांव भी बाळपण में ही अजमेर जिले रै पनेर गांव रै रायमल जाट री बेटी पेमल सूं हुयग्यौ। तेजाजी बचपन सूं ही लोक कल्याण रै कामां मांय उळझयौड़ा रैंवता हा, इण कारण बखत माथै उणारो 'गौणे' कानीं ध्यान ई'ज नीं गयौ। तेजाजी रै घरवाळा रौ उणा रै सासरैवाळा सूं मनमुटाव भी हुयग्यौ हो जिण कारण घरवाळा भी गौणे खातर जोर कोनी दीयौ। बाद

में भौजाई रै ताना मारण सूं तेजाजी नै घरवाळी रै खातर आपरी जिम्मेदारी रौ ग्यान हुयौ अर बै 'गौणो' करावण खातर आपरै सासरै जावण नै व्हीर हुया। व्हीर हुवण सूं पैली कैई अपसकुन हुया, पण तेजाजी उण तरफ ध्यान नीं दीयौ।

तेजाजी रै आपरै सासरै जावण रै मारग मांय आयी बाधावां बाबत इतिहासकारां मांय विचार भेद है।

कईयां रौ मानणौ है'कै मारग मांय अेक अधबळ्यौ सांप दीस्यौ जिकै नै तेजाजी बचायौ पण इणसूं बो सांप नाराज हुग्यौ अर तेजाजी नै काटणो चायौ, पण तेजाजी उण सांप नै कैयो'कै म्हूं म्हारै सासरै जाय रैयौ हूं घरवाळी नै लावण खातर, पाछौ आंवती बखत थूं म्हंनै डस लीजै। दूजै इतिहासकारां रौ मानणौ है'कै 'काळा' नागवंस रो बालू जाट तेजाजी सूं सत्रुता राखतो हो, जद उणनै ठा पड़ी कै तेजाजी आपरी परणेतर नै लेवण सारू पनेर जाय रैया है अर उणां सागै कम सिपाई है, तो बो मारग मांय आ'र तेजाजी नै ललकार्यौ। तेजाजी उणां नै कैयो'कै अबार तो म्हूं म्हारै सासरै जाय रैयो हूं पाछो आंवती वेळा थांसू जुध करसूं।

सासरै वाळा रौ तेजाजी रै परिवारवाळा सूं मनमुटाव हुय चुक्यौ हो इण कारण वै तेजाजी रो घणौ मान नीं कर्यौ, जिणसू तेजाजी वठै सूं पाछा व्हीर हुवण लाग्या। तेजाजी री घरवाळी पेमल भी उणां रै सागै हुयगी। इण बिचाळै पनेर गांव री गूजरी लांछा रोंवती–रोंवती तेजाजी कनै आयी अर बोली कै म्हारी गायां नै लुटेरा घेर लेयग्या है अर गांव मांय कोई बी म्हारी मदद करण सारू त्यार कोनी। तद तेजाजी अर वांरी घरवाळी लांछा गूजरी रै घरां गया, पेमल नै वठै छोड'र तेजाजी लुटेरां रै लारै गया। जुध कर'र तेजाजी सगळी गायां नै छोडा'र ले आया। इण जुध मांय तेजाजी घायल हुयग्या पण वै पनेर रूक्या नहीं अर पेमल नै ले'र घरां कानी रवाना हुयग्या।

लोकधारणा मुजब मारग मांय बालू जाट आपरी फौज सागै खड़ौ वांनै उडीकतो हो। तेजाजी भी उणनै दीयौड़े वचन री खातर बालू नै जुध सारू ललकारयो। जुध हुयौ, तेजाजी पैला सूं ई घायल हा, इण कारण घणी देर तांई बालू रौ मुकाबलो नीं कर सक्या अर वीरगति पाई। आ देख वांरी घरवाळी पेमल नै रीस आयगी अर वा रणचण्डी बण'र बालू माथै टूट पड़ी अर बालू नै मार गिरायौ। दूजी लोक कथा मुजब मारग मांय बो सांप तेजाजी नै अडीक रैयो हो जिकै नै तेजाजी बळण सूं बचायौ हौ। तेजाजी उण सांप नै कैयो'कै म्हूं आयग्यौ हूं अबै म्हनै डस ले। सांप उणा नै कैयौ'कै थारी देह पर तो जख्म हुयौड़ा है म्हूं कठै काटू। तद तेजाजी आपरी जीभ बारै निकाळ'र कैयौ कै अठै डस लेवो। जद सांप वांनै जीभ माथै काट लियौ अर तेजाजी वीरगति पायग्या। उणा री वचन निभावण री बात सूं प्रभावित हुय'र नागराज उणां नै वरदान दीयौ कै थांरै नांव री तांती जिकौ मिनख धारण करैला उणनै नागदंस रौ असर नीं हुवैला।

गऊ माता री रिक्षा करण सारू अर आपरै दियौड़े वचन नै निभावण सारू तेजाजी आपरौ जीवण बळिदान कर दियौ अर इणी कारण वै लोगां री निजरां मांय लोक देवता रै रूप में पूजीजण लाग्या।

जिकी जागां माथै तेजाजी वीरगति पायी बा आज पुजीजै। कैई विद्वान ईं जगां रौ नांव 'पनेर' बतावै, केई 'उकलाना' गांव, केई 'सैदरिया' बतावै अर केई 'सुरसरा'। घणखरां इतिहासकार आपरी कथावां अर गीतां मांय सुरसरा रो ही नांव लियौ है, इण कारण 'सुरसरा' नै ही तेजाजी रो वीरगति पावण री जगां मान्यौ जावै इणी कारण 'सैदरिया' अर 'सुरसरा' मांय जिका तेजाजी रा थान है वठै ही हरैक बरस भादवे सुदी दसम नै मेळौ भरीजे अर दूर दूर सूं लोग तेजाजी रा दरसण करण नै आवै, मनोतियां मांगै अर परसादी बांटे।

गऊ रिक्षा रौ संकळप, वचन निभावण री सगती, प्रेम, भाइचारै अर सदभाव री धार बैवावण री बातां रै कारण ही तेजाजी नै लोकदेवता रौ मान मिळयौ अर आज भी जनता लोगबाग घणां मान सूं वांनै ध्यावै अर पूजै है।

7. मेहाजी (मांगळिया)

राजस्थान रै पांच पीरां मांय सूं अेक है मेहाजी सांखला। अे पंवार क्षत्रिय हा, पण क्यूं'कै जलम सूं इ'ज आं रौ पाळण–पोसण नानाणै मांय आपरी माता कनै इ'ज हुयौ हो, अर माता रो गोत मांगळिया हो, इण कारण अे मेहाजी मांगळिया नांव सूं जगचावा व्हिया। मेहाजी रै पिताजी रौ नांव गोपालराज सांखला हौ। गोपालराज री आपरै भाई ऊदा सूं बणती कोनी ही, इण कारण दोन्यूं में सदा ही झौड़ हुवंतौ रैतो। अेक'र जोरदार लड़ाई व्हीं जिकै मांय गोपाळदासजी मार्या गया। उण वखत वांरी घरवाळी गरभवती ही, जिण नै चारण वीठू उणां रै पीरै पूगाय दी इण कारण मेहाजी रो जलम नानाणै हुयौ अर वठै इ'ज वांरी परवरिस व्ही। कालान्तर मांय मेहाजी आपरै नानाजी रा उत्तराधिकारी भी बण्या।

चवदै बरस रा हुयां पछै मेहाजी आपरै संगी–साथ्यां रौ अेक दळ बणायो अर सबसूं पैलो काम ओ कर्‌यौ कै जांगळ प्रदेस माथै हमलो कर'र आपरै पिताजी री हत्या करण वाळै आपरै चाचा ऊदा रो वध कर्‌यौ। उणरै पछै मेहाजी पहिलाप गांव में बसग्या अर वै च्यारूमेर 'ऊजळ खत्री' रै नांव सूं मानीजण लाग्या। 'पहिलाप' मांय वै तीन तळाब बणवाया।

उणी वखत राव चूंडा मुसळमानां नै मार'र नागौर माथै कब्जौ कर लियौ हौ इण करण मेहाजी नागौर जाय'र राव चूंडा सूं मिळ्या। पछै वे पहिलाप गांव छोड'र नागौर रै भूंडेल गांव मांय आपरौ ठिकाणौ बणायौ। राव चूंडा रौ जद जोइयां सरदारां सूं जुध हुयौ तद चूंडा री फौज में मेहाजी रो बेटो आल्हणसी घणी वीरता सूं लड़यौ अर वीरगति पाई। इण घटना सूं मेहाजी भोत दुखी हुया।

मेहाजी नै सुगनसास्त्र रो तकड़ौ ग्यान हो अर वै सुगन देख'र बडी सूं बडी विपती नै देख लेंवता अर सावचेत हुय जाया करता। इण विधा रौ उपयोग वै जनकल्याण रै कामां मांय कर्‌यौ अर खासा जगचावा बणग्या। आखिर मांय जैसळमेर रै राव राणगदेव भाटी सूं जुध करता थकां वै वीरगति पाई।

मेहाजी रौ सगळौ जीवण धरम री रिक्षा करण सारू अर क्षत्रिय धर्म रौ पालण करण सारू बीत्यौ, उणां जनकल्याण रा केई कारज कीना, इणी कारण सूं मेहाजी नै लोकदेवता मान्या जावै अर पूज्या जावै है।

8. हड़बूजी (सांखला)

लोकदेवता हड़बूजी सांखला रै जलम अर मरण रै बाबत कोई जाणकारी इतिहासकारां कनै कोनी। ना ही किणी भाट री बही मांय इण बाबत जिकर मिळै। इतरी'क जाणकारी जरूर मिळै है'कै हड़बूजी रो असल नांव हरभजन हो अर चावो नांव हर भू हौ जिकौ बिगड़'र 'हड़बू' बणग्यौ। अै मेहाजी सांखला रा बेटा हा। आथूणै राजस्थान रै पांच चावा पीरां मांय दो अेड़ा पीर है जिका मांय बाप–बेटे रौ रिस्तो व्हियो यानि मेहाजी अर हड़बूजी। आपरै पिताजी मेहाजी रै देवलोक हुया पाछै हड़बूजी दुखी हुयग्या हा अर भूंडेल छोड'र निकळग्या। चालता–चालता फळौदी कनै हरभमजाळ गांव मांय आपरौ डेरौ लगायौ, अठै वांरी भेंट बाबा रामदेवजी सूं हुई। हड़बूजी बाबा रामदेवजी री मासी रा बेटा हा अर बाबा रामदेव रा घणा ही नैड़ा रैवण वाळा संगी हा। बाबा रामदेव हड़बूजी रै सारू अेक दूहो कैया करता हा –

हडबू जी सांखला हर दम हाजिर, गांव बांगटी माही।
दूजी देह म्हारी ही जाणों, हां मौसी जाया भाई।।

इण दूहे सूं आ जाणकारी व्है कै हड़बूजी 'बैंगटी' गांव रा रैवण वाळा अर बाबा रामदेव री उमर रा ही हा। हड़बूजी अर बाबा रामदेव जी हरेक जुध में साथै लड़या अर वांरै हरैक कारज में साथ निभायो। इण कारण जनमानस मांय हड़बूजी रौ भी बो ही मान है जकौ बाबा रामदेवजी रौ है।

लोक धारण है'कै जिण बगत बाबा रामदेव समाधि लीनी ही, हड़बू कठैई दूजी जागां गयौड़ा हा। गांव आया पछै वांनै इण बाबत जाणकारी मिळी कै बाबा रामदेव समाधि ले लीनी है। वां नै भोत दुख हुयौ अर वै उणी बखत रूणीचै रवानै हुयग्या। हड़बूजी जिण बखत रूणीचे री ओरण मांय पूग्या उण बखत वांनै रामदेवजी अेक पेड़ नीचे खड़ा मिळ्या। हड़बूजी राजी हुया। थोड़ी'क देर उणां सूं बातां करण रै बाद बाबा रामदेवजी उणां नै अेक रतन कटोरो अर अेक सोहन चुटियो दीयो अर कैयो कै अे घरां दे दीजौ म्हूं थोड़ी'क देर में आवूं हूं। अे दोन्यूं चीजां बाबा री समाधि रै मांय उणां रै सागै ही राखीजी ही।

अे दोन्यूं चीजां ले'र हड़बूजी बाबा रामदेवजी रै घरां पूग्या अर वांनै कैयो कै थे क्यूं दुखी हुय रैया हो बाबा रामदेवजी हाल तांई जीवै है म्हूं अबार इ'ज वां सूं मिळ'र आयो हूं अर ओ कटोरो अर चुटियो उणां इ'ज म्हनै दीयो है। उणी बखत सगळा जणां ओरण कांनी भाग्या पण उण बखत तांईं बाबा रामदेव पाछा अन्तरधान हुयगा।

हड़बूजी सदा ई बाबा रामदेव री सीख नै आगे बधावण रौ काम कर्‌यौ। वांनै बौत बडौ सुगनी, वचनसिध अर चमत्कारी पुरूस मान्यौ जावै। इणी कारण सूं कालान्तर मांय उणां नै भी लोक देवता रो मान

मिल्यौ। हड़बूजी री अेक विसाळ मूरत आज भी मडोर मांय बण्यौड़ी देवतांवां री साळ मांय लाग्योड़ी है। इणां रो खास थान बैंगटी गांव में है जठै आज भी लोग दरसण करण सारू जावै अर आपरी मनौती पूरी हुया पछै इण मिंदर मांय थापित 'हड़बूजी री गाडी' री पूजा करै।

14.4 लोक देवियां

1. हिंगळाज माता

भारत रै सगती पीठां मांय हिंगळाज री मोटी मानता है। देस रै इक्यावन सक्ति पीठां मांय पैलो सक्ति पीठ हिंगळाज रौ गिणीजै। 'तंत्रचूड़ामणि' अर 'वृहन्नीलतंत्र' मांय ओ थान 'हिंगुळा' अर 'शिवचरित' तंत्र ग्रंथ मांय भी 'हिंगुळा' नांव सूं जाणीजै।

ओ कहीजै कै जिण वखत भगवान 'शिव' सती री ल्हास आपरै कांधे लियां अठी–वठी घूम रैया हा तो भगवान 'विष्णु' आपरै सुदर्सण चक्र सूं सती री देह रौ छेदन कर्‌यौ। उण वखत उण जागां सती रै कट्‌यौड़े माथै रै पड़ण री मानता है। क्यूं'कै सतीजी री मांग मांय हिंगळू (कुमकुम) भर्‌यौड़ो हो इण कारण इण 'शक्ति पीठ' रौ नांव हिंगुळाज पड़यौ। त्रेताजुग मांय श्रीराम जद रावण रो वध कर्‌यौ तद ब्रह्म हत्या रै पाप सूं मुगति पावण खातर हिंगळाज तीरथ री जात्रा कर्‌यां पछै इ'ज वै पाप सूं मुगत हुया।

मां हिंगळाज बाबत चारण समाज मांय ओ विस्वास है कै वां 'आद्य शक्ति' रै रूप मांय थट्‌ठे सै'र (सिन्ध पाकिस्तान) मांय 'गोरबिया' साख रै चारण हरिदास रै घरां अवतार लीनो अर चारण समाज मांय आज ई आ मानता है कै थट्‌ठे सै'र री जात्र अर हिंगळाज री जात्रा रो पुन बरोबर है। इण तरै 'आद्य शक्ति' मां हिंगळाज अर चारण देवी हिंगळाज इण भांत एकाकार है दोन्यां नै न्यारी–न्यारी कोनी करी जाय सकै।

हिंगळाज तीरथ सिन्धु नदी रै छोर सूं 80 मील आथूणै अर अरब सागर सूं 12 मील उतरादै आयोड़ो है। जिण जागां गिरिमाळा, मकरान अर लूस नै अळगा करै, उणी जागां गिरिमाळा रै छोर माथै हिंगळाज तीरथ है। पहाड़ री अेक अंधेरी गुफा मांय मिंदर है, बठै बिराजै है महामाया हिंगळाज देवी। जद पाकिस्तान रौ जलम नीं हुयौ हो अर भारत री आथूणी सीमा अफगानिस्तान अर ईरान तांई ही, उण वखत हिंगळाज तीरथ हिन्दुवां रौ प्रमुख तीरथ मान्यो जावतो हो। बलुचिस्तान रा रैवासी मुसळमान श्री हिंगळाज देवी री पूजा बड़े चाव सूं करता अर मां हिंगळाज नै 'नानी' कैंवता अर उठै री तरथ जात्रा नै 'नानी रौ हज' कैंवता। मिंदर मांय लाल कपड़ो, अगरबती, मोमबती, इतर अर परसाद चढांवता। पाकिस्तान बणणै सूं पैला 'हिंगळाज शक्ति पीठ' हिन्दुवां अर मुसळमानां रो अेक ई महातीरथ हुया करतौ हौ। पैली हिंगळाज देवी री जात्रा कराची (सिन्ध पाकिस्तान) सूं ऊंटा माथै या फैर पैदल हुया करती ही। ऊंटां माथै आ जात्रा चन्द्रकूप हुय'र 25 दिनां मांय हिंगळाज पूगती अर पाछा आंवती वेळा चन्द्रकूप नीं जाणै सूं 20 दिनां मांय कराची पूगती। कराची रै नागनाथ रै अखाड़ै सूं आ जात्रा सरू हुंवती। चाळीस–चाळीस मिनखां रो झुंड अेके सागै जात्रा माथै निकळतो। जात्रा री अगुआई करण वाळे तीरथ पुरोहित या पण्डे नै छड़ीदार कैंवता। कराची सूं छै–सात मील रै आंतरै माथै 'हाव' नदी बैवै। 'हाव' नदी रै इण किनारे सिन्ध प्रान्त री सीमा समाप्त हुवै अर नदी पार करणै पर बलुचिस्तान रै 'लासबेला' राज्य री सीमा सरू हुवै। 'लासबेला' सुतंतर राज्य हौ। उणी लासबेला राज्य मांय देवी हिंगळाज बिराजै।

'हाव' नदी सूं जात्रा सरू करणै सूं पैलां जात्रियां नै सौगन लेणी पड़ै –

'जद तांई म्हैं लोग हिंगळाज माता रा दरसण कर'र पाछा इण जागां नीं पूगां तद ताईं म्हैं संन्यास धरम रौ पालण करसां। अेक दूजै री सगती सारू सहायता करसां। किणी साथै ईसखो द्वैस कोनी राखां अर किणी खातर अपणै मन मांय निंदा भाव नीं राखां पण किणी हालत मांय अपणी केतली रौ पाणी कोई नै नीं देवां। अठां ताईं कै धणी आपरी लुगाई नै, लुगाइ–धणी नै, बेटो–बाप नै, बाप–बेटे नै, मां–बेटे नै अर बेटो–मां तकाद नै अपणी केतली रौ पाणी कोनी देवे। जै इण नियम नै तोड़सी तो उण री मौत निस्चित हुवैगी।'

हिंगळाज जात्रा रौ ओ भी नियम है कै हर जातरी अेक–अेक रोटी ऊंटवाळे नै ई देवेला अर जै मारग मांय कोई कुओ आवै अर जात्री उठै ठैर'र रोटी बणावै–खावै तो अेक–अेक रोटी कुअेवाळे नै भी देवेला। साथै

ई दस–बीस कोस रै ओळे–दोळे जै कदास कोई घटना हुवै तो उण री सूचना बो कुअेवाळो ई पुलिस चौकी तांईं पुगावैला। मरूथळ रा अे जळ केन्द्र लासबेला राज्य रा सूचणा केन्द्र हुया करता हा। जातरा रै मारग मांय चन्द्रकूप रो थान आवै जठै हिंगळाज जातरा रौ हुकम लेवणो पड़ै। चन्द्रकूप भस्मी–भभूती रौ मिंदर है। च्यारूंमेर डरावणो अर भयानक दरस निजर जावै जितै तांईं माटी रा पहाड़ दीसै, बिचाळै अेक ऊंचे पहाड़ रै सिरवर सूं धुंओ निकळतो रेवै। ओ इज है हर वखत धुंओ उगळतो चन्द्रकूप सरोवर जठै सबरै पापां रो नास हुवै। चन्द्रकूप अेक दळदळी सरोवर है। सरोवर रै मांय धधकती आग खदबदतै दळदळ नै ऊपर उछाळै। इण ठौड़ जातरी आप–आपरै हाथ मांय नाळेर लेय'र अपणी जिंदगी मांय कर्‌यौड़ा पापां री सगळां सामी जोर–जोर सूं बोल'र हामळ भरतां थकां उण दळदळ मांय आपरो नाळेर फैंके। जै कोई जातरी कर्‌यौड़ौ पाप छिपावण री कोसिस करी हुवै तो फैंक्योड़ा नाळैर उण दळदळ माथै इज तिरतो रैवै। इसा जात्रियां नै आगै भगवती हिंगळाज रा दरसणा सारू जावण रौ हुकम कोनी मिळै पण जिणां जात्रियां रो नाळेर दळदळ मांय गुम जावै उणां नै आगै री जातरा करण रौ हुकम मिळै। जै कदास किणी जातरी रौ नाळेर दळदळ पाछो बारै फेंक देवे तो बो जातरी बड़ौ ई भागवान मानीजै।

माता हिंगळाज रै म्हैल तांईं पूगण रै मारग मांय अघोर नदी केई बार आवै। मां हिंगळाज री लीला न्यारी है। नदी रौ पाणी कठैई खारो मिळे तो कठैई मीठौ। नदी रै परलै पासी जिका डूंगर दीसै उणां मांय इज मां हिंगळाज री गुफा है इण किनारै जातरी रातीजगो करै अर दूजै दिन अघोर नदी मांय सिनान करै अर हिंगळाज महापीठ रै पीठाधिपति अघोरी बाबा नै दान–दखिणा देय'र नदी रै उण पार पूग'र माई रै म्हैल नै पार करै। दूजै दिन अघोर कुंड मांय सिनान कर गीलै कपड़ा मांय ही चालणो पड़ै। पछै कपड़ा निचौड़'र म्हैल मांय लोग बड़ै। हिंगळाज देवी रा कुदरती म्हैल, यक्षा रा बणायोड़ा माई रा म्हैल बाजै। चाळीस हाथ ऊंची रंगरंगीलै लटकतै भाटां री कुदरती छात। रंगरंगीलो आंगणो जिण माथै भांत–भांत रा रंगीन चितराम। हरी हरी दूब रौ आंगणौ अर सौरम री घमरोळ मचांवतां फूलां रा झाड़। खळखळ करतौ निरमळ पाणी रो झरणो अेक जादूनगरी–सी लखावै। उण नै गुफा कैवां कै म्हैल कैवां कै ईस री अनोखी कळा।

माता हिंगळाज री गुफा मांय गुडाळिया चाल'र बड़णौ पड़ै। मां 'आद्य शक्ति', 'ज्योतिर्मय' जगजननी मां हिंगळाज रा दरसण। अद्‌भुत दरस, अकथ अनुभव। जनम–जनम रा पाप–साप–ताप रौ नास हुय जावै अर आत्मा सूं अंधारौ लोप हुवण लागै अर हिरदौ अेक अद्‌भुत उजास सूं भर जावै। अेक बड़े थान माथै सिंदूर अर लाल बसतां सूं सिंणगारयौड़ौ मां हिंगळाज देवी रौ प्रस्तर है जिण आगै अखंड जोत जगै।

हिंगळाज देवी रा दरसण कर'र पाछी आंवती वेळा भी अेक संकड़े मारग सूं आवणौ पड़ै जिकै सूं बारै निकळण सारू जात्रियां नै पेट रै बळ रेंग'र बारै निकळनौ पड़ै जाणै मां री गर्भ जूण सूं निकळ्‌या व्है। बारै निकळता ई अघोरी बाबो माळा पैरावै अर कैवे कै 'जो कुछ भी आप अठै देख्यौ है या मैसूस कर्‌यौ है वो भूल सूं भी किणनै ई बतावणौ कोनी।'

मां हिंगळाज 'शक्ति पीठ' 51 'शक्ति पीठां' मांय सूं पैलो मानीजै। इण री जातरा करण वाळे रौ बो ई सनमान जितौ कै अेक मुसळमान री 'मक्का शरीफ' री जातरा करणै पर मिळै। चारण समाज मांय आ मानता है कै जद भी कोई चारण जलम लेवे तो मिंदर रा घंटा आपौ–आप बाजण लाग जावै।

2. आवड़ देवी

देवी श्री आवड़जी नै हिंगळाज माता रौ अवतार मानीजै। इणां रौ अवतार चारण कुळ मांय उम्मटदे रै नांव सूं हुयौ हौ। चारण कुळ मां चार देवियां रौ अवतार हुयौ जिकै बाबत एक दूहो जग चावो है–

आवड़ तूठी भाटीयां, गीगाई गोड़ांह।
श्री ब्रिवड़ सिसोदियां, करणी राठोड़ांह।।

इण दूहे रौ मतलब है'कै चारणां मांय अवतारी आवड़जी, गींगाईजी, बरवड़जी अर करणीजी राजपूतां री चार जातियां भाटी, गौड़, सिसोदिया अर राठौड़ा री कुलदेवी बणी अर वांरै राजकाज रो विस्तार कर्‌यौ।

आवड़ देवी रा पूर्वज सऊवा साखा रा चारण चेलाजी माड़ प्रदेस रै चेलक हके मांय रैंवता हा। चेलाजी

रा वंसंज हा मामड़ियाजी। मामड़ियाजी देवी हिंगळाज रा परम भगत हा। माड़ प्रदेस री राजधानी ही लौद्रवपुर अर राजा हा जसभांण परमार। जसभांणजी मामड़ियाजी रो घणो आदर करता हा। जसभांणजी रो नैम हौ'कै जद भी वै पूजापाठ कर'र बारै निकळै उणां नै सगळां सूं पैली मामड़ियाजी रौ मूंडौ इ'ज दीखै क्यूं'कै वै देवीपुत्र है। अेक'र किणी काम सूं मामड़ियाजी बखत पर नहीं आय सक्या अर वांरी जागां जैनी बांठीयो सेठ आयग्यौ। बीं रौ मूंडौ देख'र जसभांणजी भोत नाराज हुया। जद सेठ कैयो कै म्हूं तो बेटेआळौ हूं फैर बी थे म्हारौ मूंडौ देख'र नाराज हुय रैया हौ, बो मामड़ियो तो निपूतौ है बीं रौ मूंडौ तो कोई भी नीं देखणो चावै। आ बात सुण'र मामड़ियाजी घणा दुखी व्हैया। वै ओ संकळप कर्‌यौ कै सात बार देवी हिंगळाज री पैदळ जातरा करस्यूं। सातवीं जात्रा पछै देवी हिंगळाज वां नै वरदान मांगण रौ कैयौ जद मामड़ियाजी देवी नै इ'ज आपरै घरां जलम लेवण री अरदास करी। देवी उणां नै वरदान दियौ कै तूं म्हारै अठै सात बार आयौ है इण कारण म्हूं थारै अठै सात छोरियां रै रूप में जलम लेसूं अर साथै अेक भाई भी लेय'र आसूं पण अेक बात ध्यान राखजै कै थारी घरवाळी सदा पवितर रैवै, खाखर रै रूंख रौ पालणौ बणाइजै, उणनै लाल रंग सूं रंग दीजै, घरवाळी नै कहीजै कै दिनूगै उठ'र सिनान कर'र सुध मन सूं म्हारौ सिमरण कर'र पालणै नै सात हींडा देवै अर पालणे नै लाल कपड़े सूं ढक देवै। ओ भी ध्यान कै इण बात रौ परचार नहीं करै। मामड़ियाजी घरां आय'र आपरी घरवाळी मोहवरती नै सगळी बात बताई। मोहवरती ज्यूं माताजी हिंगळाजजी कैयो उणी भांत सगळा कारज कर्‌या। इण तरे विक्रमी संवत 808 री चैत सुदी नौवमी नै श्री उम्मटदे रै रूप आवड़जी जलम लियौ। देवी हिंगळाज रै वचनां रै मुजब आवड़जी रै अवतार बाद मां मामड़ियाजी रै छ कन्यावां भळै व्ही अर आठवों बालक हुयौ।

लगोतार बारै बरसां ताई माड़ प्रदेस में काळ पड़्यौ जिकै सूं वठै रै लोगां रो जीवणो दूभर हुयग्यौ। जद बै लोगां मामड़ियाजी नै कैयौ कै जै थे सगळै परिवार अर आवड़जी नै सागै लेय'र चालो तो आपां सगळा नानणागढ़ चालां वठै घणी खुसहाळी है। नहीं तो म्है भी नीं जावां क्यूं वठै यवनां रो राज है। आवड़जी नै उण लोगां माथै दया आयगी अर वै आपरे घरवाळां नै नानणागढ चालण सारू त्यार कर लिया। कैई दिनां री जात्रा पछै अे लोग नानणागढ़ पूग्या। इण बिचाळै मारग में घणा ई लोग इणा रै सागै हुंवता गया जिका काळ री विभीसिका सूं पीड़ित हा। (नानणगढ अबार पाकिस्तान रै भावलपुर सूं उतराधे 20 कोस माथै बस्योड़ौ है।) नानणगढ़ पूग'र अे लोग नगर सूं 2 कोस दूर हकड़ा दरियाव खनै आपरी झोंपड़िया बणाई। भगवती आवड़जी री किरपा सूं लोग काम धंधा माथै लागग्या अर आणंद सूं रैवण लाग्या। मामड़ियाजी आपरी छोर्‌यां नै चरखा लाय'र दे दिया अर कैयो कै सूत कातता रैवौ इण सूं बखत भी निकळतो रैसी अर सूत सूं जिकौ कपड़ो बणसी उणनै बेच'र आंपां रौ गुजारौ चालतौ रैसी।

नानणगढ रौ बादसाह हो अदनसूमरा अर वठै रा दीवान हुया करता जैनी कुसलसाह बांठीया। दीवानजी री अेक कन्या ही कणती। कणती चारणा री झोपड़ियां कांनी आया करती ही अर आवड़जी रा दरसण करती। कणती निरी देर तांई आवड़जी खनै बैठी रैंवती। देवी सगती सूं चरखां माथै सूत आपौआप कततो रैंवतों अर कणती सागै अे सातूं बैना खेलती रैंवती। चरखा माथै सूत आपौआप कततो देख'र मामड़ियाजी अर वांरी घरवाळी नै विस्वास हुग्यौ कै आवड़जी देवी रौ इ'ज अवतार है।

कणती घणीबार हकड़ा दरियाव मांय सिनान करण सारू जाया करती ही। अेकर बा आवड़जी अर वांरी बैहना नै आपरै सागै सिनान करण सारू चालण रौ कैयो। मामड़ियाजी री घरवाळी मना कर दीनौ अर कैयो कै इणां रै बापू इणांनै घर सूं बारै निकळनै रौ मना कर्‌योड़ो है। कणजी कैयौ कै दरियाव खनै तो जंगळ है कोई मिनख तो वठै हुवै कोनी बो तो निरजण है अेकर चाल'र देख तो लो। बाकी सगळी बैना रौ मन देख'र आवड़जी दरियाव जावण सारू त्यार हुग्या। दरियाव खनै पूग'र वां देख्यौ कै जागां तो सूनी इ'ज है। जद बै सगळी बायां आपरा कपड़ा बड़ रै रूंख नीचे राख'र दरियाव में न्हावण लागगी।

उण बखत नानणागढ़ रै बादसाह अदरसूमरा रै बेटे नूरन रो भायलो लूंचियो नाई वठै इ'ज डोला खाय रैयो हो, वो इणानै न्हांवतां देख लिया अर वांरा कपड़ां नै आपरी छड़ी सूं छुआ दिया। जद सगळी बायां सिनान कर'र दरियाव सूं बारै आयी तो आवड़जी आपरी दिव्य निजर सूं सगळी बात रो ध्यान कर'र कैयो कै अठै किणी मिनख रै आवण रा निसाण है अर उण मिनख आं कपड़ा नै असुध कर दिया है इण कारण अे कपड़ा अबै पैरण

जोग नीं रैया है। अब जंगळ मांय नूंवा कपड़ा कींकर आवै? तद आवड़जी आपरी सगती सूं खुद समेत सगळी बैना नै सांप बणाय दिया अर झोपड़ी कांनी चाल पड़िया।

इण बिचाळै लूंचियो नाई महल मांय जाय'र आपरै भायले अर बादसाह रै बेटे नूरन नै सगळी बैना री खूबसूरती रै बाबत बतायौ। नूरन लूचिये नै लेय'र घोड़े माथै चढ'र दरियाव कांनी आयौ पण वठै बै बायां नै नहीं देख सक्या क्यूं'कै वै तो सांप बणगी ही। नूरन नै रीस आयी अर वो लूंचिये नै बकण लाग्यौ। लूंचियो नूरन नै वांरा कपड़ा देखाया अर आपरी बात पर जम्यो रैयो। कैई देर तांई नूरन वठै बालावां नै देखण सारू अडीकतो रैयो। फेर बो उण सात सांपा रै चालण रै निसाणा नै देखतो देखतो मामड़ियाजी री झोंपड़ी ताईं आयग्यौ। जद आवड़जी खुद अर वांरी बैना सिंहणी बण'र झोंपड़ी मांय बैठग्या। नूरन आ देख'र पाछो गयौ परौ अर आपरै बाप अदनसूमरा नै कैयो कै म्हूं मामड़ियाजी री बायां सूं ब्यांव करसूं। अदनसूमरा बीनै घणौ समझायो पण बो नीं मान्यो। जद बादसाह मामड़ियाजी नै बुलाया अर वांनै कैयो कै थारी बालावां रौ ब्यांव म्हारे बेटे सागै कर दै। मामड़ियाजी कैयो कै थे मुसळमान अर म्है हिन्दू औ ब्यांव कियां हुय सकै। जद बादसाह कैयो कै राजीखुसी करलौ तो ठीक है नहीं जणै म्हैं जबरदस्ती कर लेस्यां। मामड़ियाजी डरग्या अर आपरै घरां आयग्या। घरै आ'र घरवाळी अर बायां नै बकण लाग्या कै म्हें थानैं घर सूं बारै निकळण सारू मना कर्‌यौ हो फैर थे बारै गयी। बादसाह रै बेटे रा आदमी थांनै देख ली है अबै बादसाह जिद कर ली है कै थारौं ब्याव बीरै बेटे सागै कर दूं नहीं तो धमकी दी है। उणां म्हनै सात दिनां रौ बखत दियौ है निरणै करण खातर। आ बात सुण'र भगवती आवड़जी कैयौ कै माता हिंगळाज आपां रै सागै है उण दुस्ट री इती हिम्मत नीं हुय सकै कै वौ म्हारै सागै ब्याव कर सकै। म्हूं खुद जा'र बादसाह नै समझाऊंला।

इण बिचाळै बादसाह हकड़ा दरियाव रै नाविकां नै बुलाय'र कैय दियौ कै मामड़ियाजी अर उणां रै परिवारवाळा नै दरियाव पार न्हीं कराणो है। इण रै अलावा बादसाह आपरै सिपाईयां नै दरियाव रै किनारै तैनात कर दिया ताकि कोई दरियाव सूं भाग नहीं सकै।

भगवती आवड़जी सेराव भाटी नै सागै लेय'र बादसाह अदनसूमरा रै दरबार मांय गया अर पतसाह नै समझावण री कोसिस करी पण बो न्हीं मान्यौ तद आवड़जी जोरदार अट्टहास कर'र कैयो कै अदनसूमरा अबै थारो अंत आयग्यौ है, म्हांरै सागै अन्याव करण रौ मतलब है थारै सगळै कुळ रौ नास। वांरै अट्टहास सूं समूचौ भवन धूजण लागग्यौ अर लोगां मांय हाहाकार मचग्यौ। आ बात कैय'र आवड़जी सेरावजी भाटी सागै पाछा घरां आयग्या। घरै आय'र कैयौ कै सिंझ्यानै आपां सगळा आपांरै देस (जैसळमेर) माड़ खातर रवानै हुवांला अर कुसलसाह बांठया नै भी कैवाय दो कै बै भी चालणो चावै तो कणती नै लेय'र आपांरै सागै चाल सकै। लोगां नै संका हुयी कै कैई कोस चौड़ो हकड़ो दरियाव कीकर पार करांला।

सिंझ्या नै आवड़जी कुसलसाह री बेटी कणती अर माड़ सूं सागै आयोड़ा सगळा लोगां नै दरियाव रै किनारै माथै भेळा कर्‌या अर दरियाव सूं अरदास करी कै म्हैं सगळा जिण मुसीबत में हां अर धरम री रिक्षा खातर पाछा म्हारे देस जावणों चावां इण कारण म्हानै मारग देओ पण दरियाव आपरी मौज मांय ई चालतो रैया। आवड़जी आपरै सागै रै लोगां नै कैयो कै आगे रेगिस्तान मिळेला इण खातर आप–आपरा बरतण पाणी सूं भरल्यौ अर बैना नै कैयो कै पेट भर'र पाणी पील्यो आगे पीवण सारू पाणी नहीं मिळेला। फैर इण भांत आवड़जी सात चळू मांय सगळौ दरियाव खाली कर दियौ। पछै आवड़जी सगळां नै कैयौ कै अबै दरियाव पार कर'र आपां रै देस माड़ चालौ। वठै सूं रवाना हुयां पछै 20 कोस आगै जाय'र दिखण दिसा मांय एक बड़ रै नीचे विसराम करण सारू रूक्या।

आवड़जी रौ ओ पैलो चमत्कार हौ जिकौ वां लोगां नै दिखायौ।

दूजै दिन दिनूगै जद नानणागढ़ रा रैवासी हकड़ा दरियाव माथै गया तो उण मांय अेक टोपो भी पाणी नीं देख'र हैरान हुयग्या। बादसाह नै जद आ खबर मिळी तो वो भी डरग्यौ अर समझग्यौ कै आ आवड़जी री करामात है। उण बखत बीनै आपरै बेटे नूरन रै मरणे री खबर भी मिळी अर उणरै मूंडे सूं रगत निकळ रैयो हौ। फैर बी बादसाह आपरै सिपाईयां नै आवड़जी अर पूरे काफले रौ पीछो करण रौ हुकम दियौ। बादसाह रा सिपाई

जद वांरौ पीछौ करता–करता बाहला नांव माथै पूग्या तो आवड़जी वांनै भस्म हुवण रौ सिराप दियौ अर वै सगळा भस्म हुयग्या।

इण भांत सूमरा नै नस्ट कर'र देवी आवड़जी अर वांरो टोळो आगै रवानै हुय'र 'आंई तो' नांव री जगां पूग्या तो सागै रै लोगां अर माड़ प्रदेस रा लोगां उणा रौ जोरदार मान कर्‌यौ। बठै सूं दो कोस दूर काळे डूंगर माथै रैया जिण सूं उण रौ नाम काळडूंगर मानीज्यौ। आज बी काळे डूंगर माथै आवड़जी रो मिंदर बणयोड़ो है। इण बखत तांई आवड़जी री ख्यात दूर दूर तक फैलगी ही जिकै नै सुण सुण'र लोग वांरा दरसण सारू काळै डूंगर आवण लाग्या। लौद्रवपुर रा राजा जसभांण परमार उणां रा दरसण करणनै आया हा। वठै सूं चाल'र आवड़जी भोजासर तळाब किनारै आयग्या। उण जगां बी घणा ई लोग उणां रै दरसण सारू पूगण लाग्या। अठै आवड़जी भोजासरी देवी रै रूप में मानीज्या।

भोजासर सूं रवाने हुय'र आवड़जी 'ऐहप' नांव री जगां रूक्या। वठै किणी बात नै लेय'र वांरी आपरै भाई महरखेजी सूं बोलचाल हुयगी अर बै वांनै सराप दे दियौ। सराप रै परभाव सूं महरखेजी नै पीवणों सांप काट लियौ अर बै बेहोस हुयग्या। लोक धारणा है कै पीवणै सांप रै काट्‌यौड़ै रौ जै अगले दिन सूरज रै निकळनै सूं पैली इलाज नीं हुवै तो बो मर जावै। छोटी बैना अर दूजा घरवाळा आवड़जी नै कैयौ कै अबै कांई करां। जद आवड़जी कैयौ कै म्हैं इमरत लेय'र आऊं जिकै नै पीय'र महरेखजी पाछा जी जावैला। पण जै इमरत लावण नै बखत लागग्यौ तो सूरज भगवान नै ऊगण सूं कुण रोकेला। तद वांरी काकोसा री बेटी लांगदे कैयौ कै म्हूं पताळ लोक सूं इमरत ले आसूं थै सूरजजी नै रोक लिया। लांगदे रै रवाना हुयां पछै आवड़जी सूरज भगवान सूं अरदास करी कै म्हारी बैन इमरत लावण नै गयी है जद तांईं वा पाछी नहीं आवै थै उग्या मत। अरदास सुण'र सूरज भगवान सोलह घंटां तांईं रूक्या रैया अर धरती नै आपरी ऐडी सूं रोक्यो राख्यौ ताकि वा घूमन नहीं सकै। सोळह पहर बाद लांगदे इमरत लेय'र आयगी अर पछै महरखेजी नै इमरत पाय'र पाछो जींवतौ कर्‌यौ।

देगराय सूं 12 कोस उत्तर माथै बोर टीलो नांव री अेक जागां है जिकी तणोट रै मारग में आवै (आ जागां बाद में भादरिया रै नांव सूं मानीजी अर आवड़देवी भादरिया राय नाम सूं पूजीज्यौ)। उण टीले माथै तणोट रा राजा तणुराव अर उणां री राणी सारंगदे रूक्यौड़ा हा। वां आवड़जी नै सनेसो करायौ कै वै उणां रै दरसण सारू आवणा चावै। जद आवड़जी पाछौ कैवायो कै म्हूं खुद तणोट जावूंला अर मारग में बोर टीळै आय'र वांनै दरसण देवूंला। आवड़जी बोर टीले पधार्‌या जद वांरो खूब मान हुयौ। तणोट रा राजा अर वांरा घरवाळा आवड़देवी अर वांरी बैना री पूजा अरचना करी अर आसीस मांगी। राजा तणुराव बोर टीलै रै आस–पासे रै 24 कोस घेरे मांय देवी री ओरण थरपाई जिकी आज बी मौजूद है। अेक दिन आवड़जी तणुराव नै कैयौ कै जठै अबार थै रैय रैया हो वठै अेक किलो बणाओ अर बींरौ नांव तणौट राखो अर वठै इ'ज म्हारो अेक मिंदर बणावौ। म्हूं खुद आय'र किले अर मिंदर री 'परतिष्ठा' करूंली। अबार तो म्हूं पाछी माड़ प्रदेस जाऊं हूं वठै कैई राक्षस उत्पात मचाय रैया है वांनै मारणा है।

श्री तणोट राय दुर्ग अर वांरो मिंदर आज भी सिरधा सूं पूजीजै। हिन्दुस्तान पाकिस्तान री सीमा माथै बणयौड़े इण मिंदर री रूखाळी हिन्दुस्तानी फौजी करै। लोक धारण है कै ईस्वी सन् 1965 रै हिन्दुस्तान पाकिस्तान जुध मांय पाकिस्तानी सेना गोळाबारी कर'र इण मिंदर अर ईं जागा पर कब्जौ करण री कोसिस करी, पण माताजी री किरपा सूं अेक भी हिन्दुस्तानी फौजी सहीद नहीं हुयौ जदकै पाकिस्तान रा 400 फौजी मार्‌याग्या अर पाकिस्तानी फौज पाछी भाजगी।

भादरिया सूं पाछा आय'र आवड़ माता माड़ प्रदेस रै राक्षसा रौ अंत कर्‌यौ अर वठै सांति बणाई। पछै वांनै खबर मिळी कै जैसलमेर सूं सात कोस दखण दिसा मांय गरलाऊवे पहाड़ माथै अेक भयंकर राक्षस तेमड़े रो आतंक फैल्यौड़ो है। आवड़जी गरलाऊवे पहाड़ कांनी आपरी बैना सागै रवाना हुया। वठै पूग'र तेमड़े नै मार्‌यौ अर आपरी बैनां नै कैयौ 'ते मड़ो छै' यानि तेमड़ो राक्षस मर्‌यौड़ौ पड़्यौ है। पछै आवड़जी उण गुफा नै ई आपरौ ठिकाणौ बणाय लियौ। इलाके रै लोगां नै जद ठा पड़ी कै तेमड़ो मरग्यौ है तद वै देवी आवड़जी री पूजा करण सारू पहाड़ माथै पूगण लागा। आवड़जी 'तेमड़ा राय' रै नांव सूं मानीजण लागग्या।

आवड़जी रौ महाप्रयाण

आवड़जी आपरी मिनख जूण मांय इण धरती पर 191 बरसां ताईं रैया अर इण समै उणां कैई चमत्कार कर्‌या। माड़ प्रदेस रै दैत्या नै मार'र सांति बणायी, भाटिया राजपूतां रो राज थरपियो, अर आपरै वरदान स्यूं तणुराव रै पोते नै दिगूविजयी राजा बणायौ। विक्रमी संवत 999 मांय माड़ प्रदेस रै सिरधाळु भगतां, ब्राह्मणां, बाणियां, चारणा, क्षत्रियां अर दूजा लोगां नै आवड़जी तेमड़े राव पहाड़ माथै बुलायौ अर वांनै आसीस देय'र कैयौ कै अबै म्हारै पाछौ जावण रो बखत आयग्यौ है। भगत लोग घणौ ई मित्रत करि पण वै नहीं मान्या अर विक्रमी संवत 999 रै माघ सुदी सातम नै तेमड़े राय पहाड़ माथै आवड़जी अर वांरी बैना तारंग सिला माथै बैठ'र माता हिंगळाज रौ ध्यान करता–करता अलोप हुयग्या। इण बाबत अेक दूहो जग चावो है –

नव सौ ननाणवें गुण गावे चारण गोप ।
माहा सुदी सातम तिथरी, आवड़ हुई अलोप ।।

3. करणी माता

लोक धारण है कै जद जद धरती माथै पाप बधे तद तद भगवान मानखे री देह धारण कर'र अवतार लेवे अर धरती माथै सुख सांती लावै। विक्रमी संवत 1144 अेड़ो ही बरस हौ जद सगती री देवी श्री करणीजी रै रूप मांय फळोदी रै गांव सुबाप मांय मेहाजी अर देवल बाई रै घरां अवतार लियौ। करणीजी रौ बचपन रौ नांव ऋद्धिबाई हो अर अे आपरै पिता री छठी संतान हा। इणां सूं पैली मेहाजी रै पांचू कन्यावां ई ही। करणीजी रै प्रसव सूं पैली उणां री माता देवल बाई नै सपनो आयो कै थारी कोख सूं देवी अवतार लेवेला। देवल बाई इण बात माथै कैई बरसां तांई ध्यान नीं दीयौ।

करणीजी री भुआ इणां रै जलम नै कोसतां थकां आंगळियां भेळी कर'र मुक्को बणाय'र इणां रै माथै पर डुक्को मार्‌यौ जद उणां री आंगळियां भेळी ही रैयगी। इण घटना सूं देवल बाई नै सपनो पाछो याद आयो अर बै सोच्यो कै आ कन्या कीं न कीं करणी करसी, इण कारण सूं उणां रो नाम बीं बखत सूं ई 'करणी' पड़ग्यौ।

इण भांत करणीजी बचपन सूं ही चमत्कार देखावणां सरू कर दिया हा। वां री भुआ जद अेक बार पाछी आयी तो करणीजी उणां नै सिनान करावण सारू कैयो। जद भुआ कैयो कै आछी तरै सिनान कीकर कराऊं म्हारौ अेक हाथ तो भेळो हुयौड़ो है। तद करणीजी वां नै कैयो कै कठै भेळो हुयौड़ो है देखो तो सरी। ओ चमत्कार देख'र भुआजी अेकदम हैरान हुयग्या। इणी भांत अेकर करणीजी रा पिताजी मेहाजी नै जंगळ मांय सांप काट लियौ। करणीजी आपरै पिताजी रै उण अंग माथै आपरौ हाथ राख्यौ जठे सांप काट्‌यौ हो अर उणी बखत सगळो जैर सरीर मांय सूं निकळग्यौ।

उणां री ख्यात सुण'र पूंगळ रा राजा राव शेखा उणां रौ आसीरवाद लेवण सारू आया। उण बखत करणीजी आपरै पिताजी खातर दही अर रोटी ले'र खेतां में जा रैया हा। राव शेखा उणां नै नमन करयो अर जुध ा में जीत रौ आसीस मांग्यौ। करणीजी उणां नै घरां आवण रौ न्यूंतौ दीयौ तद राव माफी मांगी अर फेंरूं आवण रो कैयो। जद करणीजी उणां नै जीमण रौ न्यूंतौ दीयौ अर कैयो कै अबार जिकौ भोजन हाजर है वो इ'ज करलौ। रावजी देख्यौ कै भोजन तो थोड़ो सो'क है अर सिपाई घणा है, जद वां सिपाईयां नै कैयो कै बाईजी जितो देवे उतो इ'ज ले लिया दूसर मत मांग्या। सिपाई अेक अेक कर'र आपरा बरतण लेय'र करणीजी कनै जांवता अर करणीजी वांरै बरतण मांय आपरी छोटी हांडी रौ दही अर रोटियां भर देंवत। इण तरै वै सगळा सिपाईयां नै दही अर रोटियां रो जीमण जीमाय दीयौ। इण चमत्कार सूं सिपाई अर रावजी दंग रैयग्या। जुध में जीत'र रावजी पाछा आया अर करणीजी नै आपरी बैन बणाय लीनी।

इणी भांत करणीजी री भुआजी वांनै कैयौ कै मेहाजी नै बेटो हुवण रौ वरदान देवौ। करणीजी आपरै पिताजी नै आसीस दीयौ जद वांरै दो बेटा हुया जिकांरा नांव सातल अर सारंग राख्या गया।

करणीजी रौ ब्यांव अर चमत्कार

इतिहासकारां रै मुजब करणीजी रौ ब्याव विक्रमी संवत 1473 में हुयौ हौ। करणीजी री उमर बधती जाय

रैयी ही अर उणां रै मां–बाप नै वां रै ब्यांव री चिन्ता लाग्यौड़ी ही। आपरै माता–पिता री चिन्ता देख'र करणीजी खुद ही वां नै बतायौ कै साठिया गांव रै श्री केलूजी रै बेटे देपाजी सूं म्हारै ब्याव री बात चलाओ। मेहाजी साठियां गांव गया अर केलूजी सूं रिस्ते री बात करी। केलूजी राजीखुसी इणनै मान लियौ अर बरात लेय'र आया। इण दौरान करणीजी रै नानेरै आळा निराज हुयग्या अर वांरा मामोसा भात लेय'र न्हीं आया। इण सूं करणीजी दूखी हुया अर नानेरै वाळा ने सराप दे दियौ जिण सूं वां रौ गांव आढो छूटग्यौ अर वै अठीनै उठीनै फिरण लाग्या। करणीजी रै ब्याव री बखत उणां रा पिताजी मेहाजी घणौ दायजौ देवणो चांवता पण देपाजी दायजौ लेवण सूं मना कर दियौ। पण करणीजी जिद कर'र आपरै सागै 200 गायां ले लीनी।

देपाजी री बरात करणीजी नै लेय'र विदा हुयगी। मारग में करणीजी रा केई चमत्कार हुया। सुबाप गांव सूं 15 किलोमीटर आया पछै जद बरातियां अर जिनावरां नै तिस लागी तो ठा पड़ी कै पाणी रा सैं घड़ा तो खाली हुयग्या है। इण बात री जाणकारी जद करणीजी नै हुयी तो वां डोलीवाळे नै कैयो कै अठै कनै ई अेक तळाब है वठै सूं पाणी भर लावौ। जद देपाजी कैयो कै इण मारग में तो कठै आसे–पासे कोई तळाब है इ'ज कोनी। करणीजी वां नै कैयो कै लारै मुड़नै देखो, अर जद देपाजी लारै मुड़या तो उणां नै अेक पाणी रो तळाब दीस्यौ। देपाजी हैरान हुयग्या।

इण रै बाद जद देपाजी करणीजी नै पाणी पीवण सारू पूछण नै डोली मांय झांक्यो तो वां देख्यौ कै डोली मांय तो साक्षात देवी हाथां मांय त्रिसूळ लियोड़ी है अर वां रै कनै सिंहराज बैठ्या है। आ देख'र देपाजी फैरूं हैरान हुयग्या। थोड़ी'क ताळ बाद करणीजी पाछा मानव देह मांय आयग्या अर देपाजी नै कैयो कै म्हूं देवी रो अवतार हूं अर मानवी देह मांय संसार रा सुख भोगण सारू नहीं आयी हूं। म्हूं तो जनमानस रो कल्याण करण सारू अवतार लियौ है। आ म्हारी मिनखा देह थांरै कोई काम नहीं आवैला। इण कारण आप घर गिरस्थी चलावण सारू म्हारी छोटी बैन गुलाब सूं दूजो ब्याव करलो। आं सगळा चमत्कारां सूं देपाजी आ बात समझग्या कै करणीजी सगती रौ अवतार है।

बरात आगै चाली तो मारग में केलिया गांव आयो जिकौ आज काळू रै नांव सू जाण्यौ जावै। केलिया गांव रा लोग करणीजी नै कैयो के उणां रै गांव में अेक ही कुओ है अर उण मांय पाणी बौत कम रैवै इण कारण मानखे रै सागै सागै जिनावर भी तिसा या रैवे। वां करणीजी सूं अरदास करी कै म्हारे कुअे मांय पाणी बढ़ा दो। जद करणीजी वांनै वरदान दीनौ कै वे उणां री मूरत बणाय'र काचे चमड़े मांय राख'र कुअे में घाल देवे पाणी कदैई नीं खूटेला अर जिकै ई खेजड़े नीचे म्हूं ऊभी हूं इणनै कदैई काट्या मत। कालू गांव में ओ कुओ आज करणीसर नांव सूं जाणीजै अर पूजीजै। इण रै कनै आज बी वौ खेजड़ो लांबो चौड़ो हुयौड़ो मौजूद है। पुरातत्व विभाग आळा इण कुअे सूं चमड़े मांय ढक्यौड़ी करणीजी री मूरत बरामद कर लीनी पण गांव वाळा रै कैवण सूं पाछी कुअे मांय घाल दीनी।

करणीजी रा सुसरा केलूजी शिवजी रा भगत हा। जद उणां नै ठा पड़ी कै करणीजी सगती रा अवतार है तो वां उणां रौ स्वागत देवताआ रै स्वागत री भांत कर्‌यौ।

इतिहासकारां रै मुजब करणीजी आपरै सासरै दो बरस इ'ज रैया। विक्रमी संवत 1475 मांय इणां आपरै सासरै रौ त्याग कर दियौ। हालांकि इण बाबत भी इतिहासकारां मांय अेको कोनी। करणीजी जिती टैम आपरै सासरै रैया, वठै भी बखत सारू चमत्कार करता रैया।

करणीजी रै नानैरे वाळा उणां रै ब्याव री बखत भात भरण नै नीं आया जिके सूं नाराज हुय'र करणीजी उणां नै सराप दियौ हौ। कालान्तर मांय जद उणां रै मामा नै ठा पड़ी कै करणीजी सगती रो अवतार है तद वै साठिका गांव करणीजी रै सासरै आया अर उणां सूं माफी मांगी अर पस्चाताप मांय पूरे साठिका गांव नै आपरै गांव आढा चालण रौ न्यूंतौ दियौ। पण करणीजी कैयो कै दियौड़ो सराप कदैई खाली नहीं जावै वो तो पूरो व्हैला पण अबै थे लोग किणी पहाड़ी री तळी मांय जाय बस जाओ तो थांरो कल्याण हुय सकै। इतिहास साक्षी है कै जिका आढा चारण पहाड़ां री तळी मांय बस्योड़ा है वै आज सोरा सुखी है अर दूजा आज ताईं अठीनै बठीनै भटक रैया है।

साठीके सूं देसणोक

करणीजी रै सासरै साठिका गांव मांय पाणी रो अेक कुओ हुया करतौ जिके सूं गांववाळा री पाणी री जरूरतां पूरी हुंवती ही। ब्याव रै बाद करणीजी आपरै सागै 200 गायां लाया हा देपाजी उणां री छोटी बैन गुलाब बाई सूं ब्याव कर आया तो घणा सारा ढोर–डांगर फेर आयग्या। इण स कुअे रो पाणी पीवण नै ही कम पड़ण लागग्यो। इण कारण सूं गांववाळा जिनावरां नै कुअे सूं पाणी पिलावण रो विरोध करण लागा। इण बात सूं नाराज हुय'र करणीजी सराप दियौ कै कुअे रो पाणी खारो हुय जावै अर निरणै कर्‌यौ कै अबै नुंई जिग्यां आपारौ ठिकाणौ बणास्यां। दूजे दिन लोगां जद कुअे सूं पाणी भर्‌यो तो वां नै पाणी खारो लाग्यो। जद वै डर्‌या अर करणीजी सूं माफी मांग'र उणां नै अरज करी कै पाणी पाछो मीठो करौ। करणीजी कैयो'कै पाणी तो अबै खारौ इ'ज रैसी पण थांरी जरूरत रै हिसाब सूं स्वाद हुय जासी। पछै आपरौ गांव छोडण रो निरणै सुणाय दियौ। गांववाळा उणां नै मनावण री घणी कोसिस करीं पण वै नीं मान्या।

विक्रमी संवत 1475 री जेठ सुदी नवमी नै करणीजी आपरै सासू–सुसरा, धणी, अर दूजा संबंधियां रै सागै सगळा ढोर–डांगरा नै लेय'र गांव री ओरण माथै आयग्या अर कह्‌यौ कै दूजे दिन दिनूगै रवाना हुवांला अर सूरज भगवान रै अस्त हुवण री वेळा जिकी ठौड़ पोंचाला उठै इ'ज नयौ ठिकाणौ बणावांला। इण तरै विक्रमी संवत 1475 री जेठ सुदी दसमी नै ब्रह्म मूरत मांय करणीजी सगळा रै सागै रवानगी लीनी।

मारग मांय करणीजी आपरां चमत्कारां सूं लोक सेवा करता रैया। करणीजी अर वांरो टोळो थोड़ी दूर इ'ज चाल्यो हौ कै अेक लुगाई रोंवती मिळी। उण रै घरवाळै नै सांप काट लियौ हो अर बो मरग्यौ। उण टैम बा लुगाई गौणौ करा'र आपरै सासरै जाय रैयी ही। करणीजी नै जद इण बात री ठा पड़ी तद बै रथ माथै बैठा–बैठा ई बोल्या कै वीर उठ'र खड़ौ हुय जा। करणीजी रै इयां कैवंतैं इ'ज वो मिनख उठ'र खड़ो हुयग्यौ।

दोपारौ हुयां पाछै करणीजी अर वांरो टोळो जांगळू गांव पूग्यो। उण बखत जांगळू रा सरदार राव कान्हा हुया करता हा। उणी दिन वठै चांडासर रा राव रिड़मल आयौड़ा जिका करणीजी रा भगत हा। करणीजी जांगळू पूंग'र डांगरा नै कुअे माथै लेयग्या पाणी पिलावण सारू। कुअे री रूखाळी करण वाळा कैयो कै ओ कुओ राव कान्हा रौ है अर अठै सबसूं पैली उणां रा डांगरा इ'ज पाणी पी सकै। पण करणीजी इण बात रौ ध्यान नीं धर्‌यौ अर आपरै डांगरा नै पाणी पिलावंता रैया। उणां रै डांगरा रै पाणी पीया पाछै कुअे रो निकाळयोड़ो पाणी खतम हुयग्यौ। इण बात नै लेय'र बौत झगड़ो हुयौ अर बात राव कान्हा ताईं पूंचगी। राव कान्हा अर राव रिड़मल दोन्यूं ई वठै पूग्या। राव रिड़मल तो करणीजी नै देखतां ई उणां री भगती मांय लागग्या। करणीजी उणां नै आसीस दीवी कै आ जिकी धरती तूं देख रैयो है इण पर थारा वंसज राज करैला। आ बात राव कान्हा नै सुवाई कोनी क्यूंकै करणीजी जिकी धरती री बात कर रह्‌या हा वा राव कान्हा री ही अर बै करणीजी रै वास्ते दुसमणी री भावना राखण लाग्या।

इण रै पाछै करणीजी वठै सूं आगे चाल्या अर सूरज भगवान रै अस्त हुवण री वेळा तांई अबार जठै देसणोक है उणरै कनै जाळां रौ जंगळ हुया करतौ, वठै आ'र रूकग्या क्यूंकै करणीजी रौ प्रण हो कै जठै सूरज भगवान अस्त हुवैला वठै इ'ज नयौ ठिकाणो बणावांला। ओ जिको जाळ रो जंगळ हो अठै राव कान्हा रा जिनावर घास चर्‌या करता हा अर इण री रूखाळी करण सारू केई सिपाई वठै रैंवता। करणीजी जद वठै डेरो डाल्यौ तो वै सिपाईयां आ सोच्यो कै जे करणीजी अठै रेवैला तो इणां रा जिनावर सगळो घास चर जावैला पछै राव कान्हा रा जिनावर भूखा रेवैला। आ सोच'र बै करणीजी नै वठै जिनावर चरावण सूं मना कर्‌यौ पण करणीजी उण बात माथै ध्यान नीं दियौ। दूजे दिन करणीजी री गायां पाणी पीवण सारू जांगळू वाळे कुअे गयी तो राव कान्हा अर वांरा सिपाई गायां नै पाछौ टोर दि जिण कारण गायां रातभर तिसी रैयी। करणीजी री किरपा सूं उण रात जंगळ मांय बिरखा हुई अर चारूंमेर पाणी ही पाणी हुयग्यौ जिण सूं गायां री प्यास बुझी।

बाद मांय राव कान्हा आपरै दो मोटा दरबारियां नै करणीजी कनै भेज्या अर कैवायो कै म्हारौ जंगळ खाली करो। करणीजी मना कर्‌यौ अर समझायौ कै इण तरै वांनै तंग नीं करौ पण वै नीं मान्या अर करणीजी अर देपाजी नै अणूती बातां कैवण लाग्या। जद करणीजी नै रीस आयगी अर वै सराप देय'र बा दोन्यूं दरबारियां

रौ मूंडो सियाळिये जेड़ौ बणाय दियौ। आ देख'र राव कान्हा सोच्यो कै करणीजी कोई जादूगरणी है इण खातर बौ आपरै राज रै ओझा नै लेय'र खुद हाथी माथै चढ'र जंगळ आयौ करणीजी सूं झगड़ो करण लाग्यौ। करणीजी राव कान्हा नै कह्यौ कै म्हें अठै माताजी रा हुकम सूं आयी हूं अर उणां रो सामान ई संदूक मांय पड़्यौ है। उणां रावजी नै कह्यौ कै आ सन्दूक उठा'र म्हारे रथ मांय रखवाय दो म्हूं चली जासूं। फैर कांई हो, राव कान्हा अर वांरा सगळा सिपाई अर हाथी सैं लागग्या पण वो संदूक आपरी जागां सूं हिल्यौ ई कोनी। राव इण सूं फैर चिढग्यौ अर बोल्यो कै थांनै इती सगती है तो म्हारै मरण रो बखत बतावो। करणीजी वांनै मरणे रौ समै छ महीना बतायौ। राव फेरूं बैसबाजी करता रैया अर करणीजी मरणे रौ बखत घटावंता गया। अंत मांय करणीजी अेक लकीर खींच दीनी अर कैयो कै आ लकीर पार करतां ई तूं मर जासी। राव कान्हा नै विसवास हुयौ कोनी अर बो लकीर पार कर ली, अर पार करतां ई बो मरग्यौ। राव कान्हा रै मर्यां पछै करणीजी राव रिड़मल नै बुलायौ अर जांगळू रौ राजा बणाय दियौ।

इण तरै री कैई घटनावां हुई जिण सूं करणीजी री ख्यात दिनोदिन बधती गयी अर लोग वांरै दरसण सारू आवण लाग्या। कैई जणां तो वठै इ'ज आपरौ घर बणाय लियौ। अेड़ा घर आज श्री नैड़ीजी रै मिंदर कनै करणीजी री ढाणी रै नांव सूं जाण्या जावै। 'नैड़ी' रो मतलब हुवै दही बिलोवण री लकड़ी। इण रै लारै ओ विस्वास है कै करणीजी अेक भगत सूं दही बिलोवण आळी लकड़ी मंगाई अर बीं लकड़ी धरती मांय गाड़ दी अर बीं माथै दही रा छांटा न्हांख दिया। दही रा छांटा देंवता इ बा लकड़ी एक हर्यौ–भर्यो रूंख बणगी। आज भी आं रूंखा री जद पुराणी छाळ उतर नूंई आवैतो उण माथै दही रा छांटा दीसै। करणी माताजी रै भगतां रो आणो–जाणो नित रा बधण लाग्यौ, बठै ब्यौपार सरू हुयग्यौ, लोग रैवण लाग्या। इण भांत देसणोक रो विकास हुयौ। इण काळ मांय देसणोक द्वारका सूं दिल्ली जांवण रो मारग हुया करतौ हौ अर जांगळ देस री नाक कहीजतौ।

जोधपुर री थापना

राव जोधा अेकर करणीजी रा दरसण करण सारू आया अर उणां नै बतायौ कै किण तरै राव रिड़मल चितौड़ में आपरै भाणजा रौ राज हजम करण चाल्या है अर इण सारू किण–किण तरै रा पड़पंच कर रैया है। करणीजी राव जोधा नै करणी गांव मांय ई बसणे रौ आदेस दियौ अर कैयो कै जद तांई म्हूं नहीं कैऊं मंडोवर (मंडोर) माथै हमलो नीं करणौ है। राव जोधा 12 बरसां तांई करणी गांव मांय रैया। बाद करणीजी अेक दिन राव जोधा नै देसनोक बुलायौ अर मंडोवर माथै हमलों करण रौ कैयो। राव जोधा आदेस मान'र इण सारू रवाना हुयगौ। करणीजी री किरपा सूं मारग रा सगळा सरदार, जागीरदार अर डेरेवाळा उणां रा संगी बणता गया अर वां री फौज मांय भिळग्या। करणीजी रे आसीरवाद सूं विक्रमी संवत 1510 मांय राव जोधा अजमेर, मेड़ता, मंडोवर इत्याद माथे फतेह करी अर आपरो राजकाज सरू कर्यौ। विक्रमी संवत 1515 री बैसाख सुदी पांचम नै उणां रै मन में आपरै नांव सूं नगर बणावण रो बिचार आयौ। मंडोर सूं पांच किलोमीटर दूर अेक पहाड़ी सूं झरनो बैया करतौ जिकैरो पाणी मीठौ हौ। राव जोधा इण झरणे रै कनै ई आपरौ किलो बणावण री सोची। इण सारू जद बै बठै पूग्या तो उणां नै अेक योगी चिड़ियानाथ मिळयौ जिको रावजी नै बतायौ कै आ जागां तो म्हारी तपोभूमि है अर अठै किलों नहीं बणायो जाय पण राव जोधा नीं मान्या अर आपरी बात माथै अड़योड़ा रैया। इण बात सूं नाराज हुय'र बौ योगी सराप दियौ कै जे अठै किलो बणायौ गयौ तो ओ झरणो सूख जावैला अर अठै रा रैवण वाळा तिसा मरैला। ओ सराप सुण'र राव जोधा दुखी व्हैगा। उणां बाद मांय निरणै लियौ कै किले री नींव करणीजी रै हाथां सूं रखवावां जिकै सूं योगी रौ सराप असरदार नीं व्है। इण बात रौ निरणै हुवण रै बाद राव जोधा करणीजी नै किले री नींव राखण सारू आवण रौ न्यूंतौ भिजवायौ जिको माताजी मान लियौ। इण भांत माताजी खुद आपरै हाथां सूं विक्रमी संवत 1515 री जेठ सुदी ग्यारस नै जोधपुर नगर अर किले री नींव राखी। इण मौके राव जोधा अर वांरो राज परिवार करणीजी री खूब सेवा करी अर वांसूं अमर हुवण रौ वरदान मांग्यौ। करणीजी कैयो'कै जिको भी जीव इण धरती माथै जलम्यौ है उण रौ मरणी तय है इण कारण तूं अमर हुवण री बात ना कर। पछै बै वरदान दीयौ कै थारी 28 पीढियां जोधपुर माथै राज करैली पछै थे इण रा भोमिया बण'र जीवौला।

इण रै बाद जद करणीजी कैई दिनां पाछे देसणोक खातर रवाना हुया तद अमरा चारण वांनै आपरै गांव मथाणियां पधारण सारू अरज करी। माताजी दो दिन मथाणियां रिया उण बखत अमरा चारण वठै मिंदर बणावण री आग्या मांगी। माताजी वांनै कह्यौ कै तूं म्हारौ गुम्बदवाळौ मिंदर नीं बणाय'र तिबारीवाळो मिंदर बणा अर वठै म्हारी मूरत नीं लगाय'र खाली पगल्या लगा। सागै वांनै वरदान दीयौ कै कदैई थारै गांव मांय काळ नीं पड़ैला अर बीमारियां नीं फैलैला। माताजी रौ ओ तिबारीवाळो मिंदर आज बी गांव मांय मौजूद है अर वठै रा लोग सदां सूं ई खुसहाल रैंवता आय रैया है।

इण भांत जोधपुर नगर री थापना कर्यां पाछै माताजी करणीजी मथानियां सूं पैली सुधा परबत गया अर वठै सूं पाछा देसणोक आयगा।

बीकानेर री थापना

राव जोधा रा बेटा हा राव बीकाजी। राव बीकाजी भैरूंजी अर करणीजी रा उपासक हा। अेकर किणी बात नै लेय'र उणां रौ आपरै पिताजी राव जोधाजी सूं मनमुटाव हुयग्यौ अर वां न्यारौ राज बसावण री ठान ली। बीकाजी न्यारै राज बसावण रौ संकळप लेय'र विक्रमी संवत 1532 मांय दसहरे री पूजा कर'र भैंरूंजी री मूरत अर आपरा काकोसा राव कान्धळजी नै सागै लेय'र चाल पड़्या करणीजी रो आसीरवाद लेवण नै। देसणोक आय'र माताजी करणीजी सूं मिल्या अर वांनै आपरी न्यारौ राज्य बसावण री इंछा बतायी। करणीजी वांनै इंछा पूरी करण रौ आसीस दीनों अर कैयो कै भैंरूंजी री मूरत री थापना कोडमदेसर में करौ अर वठै इ'ज बस जावौ। बीकाजी माताजी रो आदेस मान'र कोडमदेसर गया परा अर वठै भैंरूंजी री मूरत री थापना कर दीनी अर नुवें राज बसावण री योजना बणावण लाग्या।

उण बगत रो बीकानेर केई छोटा छोटा टुकड़ा मांय बटयोड़ो हौ जिणमें हिन्दु अर मुसलमाना रा लगेटगे 16 छोटा छोटा राज हा। इणां में कुसल प्रसासन नहीं हो अर जनता मांय लूटमार री प्रवृतियां हावी ही। इण कारण जनमानस घणी बार आपरी समस्यावंवा नै लेय'र करणीजी री सरण में जाया करता। इण बात सूं करणीजी परेसान हुया करता अर सोचता कै आं छोटा छोटा राज नै मिळाय'र अेक नुंवी रियासत बणाय दी जाय। राव बीकाजी कोडमदेसर मांय आपरौ किलौ बणावण री सोची जिसूं आसे–पासे रा किलेदार अर सूबेदार नाराज हुयग्या अर सगळा मिळ'र बीकाजी रै खिलाफ जुध री त्यारी सरू करदी। इणां रै मांय पूगळ रा राव शेखा भी हा। राव बीकाजी आ बिपदा लेय'र करणी कनै गया। करणीजी उणी बगत राव शेखा नै देसनोक बुलायौ अर कैयो कै बीकाजी रै खिलाफ जुध नीं करणौ है। फेर बीकाजी नै इण जुध मांय जीतण रो वरदान दीयौं। माताजी रो हुकम मान'र राव शेखा इण जुध मांय नहीं लड़्या अर जुध मांय बीकाजी री जीत हुई पण इण रै बाद भी उण खेतरा रा सामन्त बीकाजी रै खिलाफ छोटी–छोटी गुरिल्ला लड़ाइयां लड़ता रैया। इण सूं परेसान हुय'र बीकाजी फेरूं करणीजी री सरण में गया। जद करणीजी वांनै जांगळू रैवण री सलाह दीनी। इण तरै बीकाजी विक्रमी संवत 1535 री असाढ सुदी पांचम तांईं जागळू रैया अर वठै रो राजकाज संम्भाळयौ।

ईं इलाकै मांय जाटां रा छोटा छोटा 6 राज हा। अेक'र किणी जाट लुगाई दूजे रै जाट सागै फेरूं ब्यांव कर लीनो इण कारण उणां में आपस मांय बैर बंधग्यौ। अेक पख बीकाजी कनै आयौ अर वां सूं मदद करण री अरदास करी। बीकाजी मदद करण सूं पैली कैई सरतां राखी जिकी जाट राजा पांडु गोदारो मानली। जद विक्रमी संवत 1540 रै असाढ सुदी चौदस नै करणीजी राव बीकाजी नै जाट राजा री मदद करण सारू आदेस फरमायौ। बाद में विक्रमी संवत 1540 रै सावण सुदी छठ नै जाटां में आपस में जुध हुयौ जिकै मांय बीकाजी रो पख जीतग्यौ। बीकाजी री इण जीत रौ औ परभाव पड़्यौ कै धीरे धीरे जाटां रै अलावा अन्य कैई दूजा भी उणां री आधीनता मानली। पछै करणीजी राव बीकाजी नै नूंवो किलो अर राज बसावण रो आदेस फरमायौ। जद अेक अेड़ी जागां जठै नागौर, अजमेर अर मुल्तान रा मारग आय'र आपस में मिलता हा अर जिणरो नांव 'रातीघाटी' हुया करतौ, उण जागां नै करणीजी किलो बणावण खातर चूण्यो। विक्रमी संवत 1542 में नगर री नींव राखीजी अर विक्रमी संवत 1545 रै बैसाख सुदी दूज नै इण नूंवे राज बीकानेर रै गढ री परतिस्ठा व्ही। उण जलसै में बीकाजी आपरै काका राव कान्धळजी अर उणां रै भाई राव बीदा खातर न्यारी न्यारी गदियां बैठण सारू लगवायी तद माताजी करणीजी कैयो कै अेक ही लगावौ अर राव बीका अर राव कान्धल नै साथी रै रूप मांय कारज करण

रौ आदेस देवो। इण भांत करणीजी बीकानेर राज री थापना करी अर उणनै आगे बधावण सारू बखत बखत माथै राव बीकाजी रौ मारग दरसण कर्‌यौ।

देवलोकगमन

विक्रमी संवत 1594 रै आसोज रौ महीनौ चाल रैयो हो। करणीजी आपरी बैना सूं मिलण खातर गांव खारोड़ा गया ह। वठै अेक खाती रैया करतौ जिकै रौ नांव बन्नो हौ। बन्नो जलम सूं ई देख नीं सकतौ हो, पण वौ करणीजी जो परम भगत हौ। करणीजी उण सूं अेकांत मांय मिळया अर उणनै कैयो कै म्हूं थने थोड़ी बखत वास्ते देखण री सगती देऊंला, उण बखत तूं म्हारौ असली रूप देख'र उण री मूरत बणाईजै फेर जद बा मूरत पूरी हुय जावै तो उण मूरत नै सिरांणै राख'र सो जाजे। थारी आंख जद खुलेला तद तूं देसनोक में हुवैला। वठै जिकौ गुम्भारो बणयोड़ो है उण में आ मूरत थाप दीजै। मूरत री थापना रै बाद थारी निजरां सदां खातर ठीक हुय जावैला। म्हैं थनै मूरत बणावण सारू इण खातर चुण्यौ है कै थारी निजरां पवितर है।

करणी रो रूप

बन्ना खाती इण भांत करणीजी सूं दिव्य निजर लेय'र वांरै देव सरूप रौ दरसण कर्‌यौ अर पीळे रंग रै संगमरमरी भाटे सूं वांरी मूरत बणायी। मूरत में करणीजी रौ मूंडो लांबो बतायो गयो है, माथै पर मुगट है, कानां मांय कुंडळ अर जीवणै हाथ मांय त्रिसूळ है, डांवे हाथ मांय अेक नरमुण्ड लटक रैयो है अर गळै मांय गैणा है।

इण बिचाळै मूरत बणवाया पछै माताजी पाछा देसनोक आयग्या अर विक्रमी संवत 1595 री चैत सुदी एकम नै देसनोक सूं गढ़जा तरा अर गड़ियालै नांव रै गांवां रै बिचाळै बण्यौड़ी धनेरू तळाब कांनी रवानगी लीनी। सागै उणां रौ बेटो पुस्पराज हौ। नौवमी रै दिन अे लोग तळाब पूग्या। तळाब सूं थोड़ी दूर पैलां ई वां रथ रूकाय दियौ अर आपरै बेटे नै कैयौ कै सिनान करसूं। रथ मांय जिका मटका पड़्या हा उणां में पाणी नहीं हौ जद करणीजी 'पुष्पराज' नै कैयौ कै तळाब सूं भरल्या। 'पुष्पराज' रै गया पाछे करणीजी अेक गुमास्ते नै पूछयौ किणी भी मटके में थोड़ो'क पाणी है कांई। गुमास्तो बतायौ अेक घड़े में पाणी है। करणीजी आपरै सरीर माथै पाणी ढोळण सारू गुमास्ते नै कैयो। इण रै बाद माताजी करणीजी पद्मासन लगाय'र बैठग्या अर सूरज भगवान सांमी देखण लाग्या। ज्यूं ही मटके मांय सूं पाणी रा टोपा उणा रै माथै पड़्या, अेक दिव्य जोत परगट हुई अर माताजी उण जोत मांय समायग्या। बेटो पाणी लेय'र आयौ जद गुमास्तौ वांनै सगळी बात बताई। में आकासवाणी हुयी कै थे लोग पाछा देसणोक चल्या जावौ, वठै अेक आंधो खाती बन्नो मिळैला उणरै कनै म्हारी मूरत हुवैला। उण मूरत नै म्हारी बणायोड़ी गुफा मांय थरप दीजौ। इण भांत करणीजी आपरै अवतार रूप रो कारज पूरौ कर'र दिव्य जोत मांय समायग्या।

आज देसनोक मांय जठै पक्को मिंदर बण्यौड़ो है वठै गुम्भारियै मांय माताजी री आ मूरत थरपिजयौड़ी है। मूरत सिंदूर सूं ढक्यौड़ी रैवे इण कारण पूरा दरसण नहीं हुय सकै। आ मूरत धरती सूं चार–पांच आंगळ इण इ'ई ऊंची है अर इण रै आगे–लारै काबा (ऊन्दरा) घूमता रैवे। कैई धोळै रंग रा काबा माताजी री जोत कनै घूमता रेवै अर भागीजन नै इ'ज वांरा दरसण हुवै। कालान्तर मांय बीकानेर रा नरेस सूरजसिंहजी माताजी री गुफा नै पक्की बणवाई अर पछै महाराजा गंगासिंहजी इण जागां धोळै संगमरम री भाठै रो मिंदर बणवाय दियौ।

मानख देह अवतार मांय करणीजी 151 बरस बिताया अर आपरौ सगळो जीवण लोक कल्याण रै कामां में लगाय दियौ। करणीजी रै चमत्कारां री गिणती कोनी, जितरा मूंडा चमत्कार। चमत्कारां सूं इ'ज आतताइयां रौ वध कर्‌यौ, गायां री रिक्षा करी, पीड़ितां रौ भलौ कर्‌यौ। करणीजी वनप्रेमी, दलितउधारक, न्याय करणवाळा लोक देवी है। राजस्थान रै अलावा सगळे हिन्दुस्तान में उणा री ख्याति है। करणीजी री भगती में अणगिणत रचनावां लिखीज्यौड़ी है जिकां में करणीजी रै चमत्कारां रो, उणा रै दिव्य रूप रौ, उणा रै विकराळ रूप रौ अर उणा रै लोक देवी रूप रौ वरणन कर्‌यौड़ौ है। अठै रै जनमानस में सदां सूं इ '***करनी हर करतार, जुदा कदै न जाणियै***' री भावना हिवड़े मांय बस्यौड़ी है। ओ लोक विस्वास है कै भलाई अड़सठ तीरथां री जातरा करल्यौ, पण वै देसणोक दरसण करियां सै अधूरी है। इण बाबत अेक दूहो कैही जैः–

परसै पुसकर प्रथम, जकै कवि गंगा जावै।

गया न्हाय गोमी, अवसर रामेसर आवै।
परसे बदरी पछै, हाड गाळै हेमाळै।
मथुरा कासी मांह उदक दे तपत ऊनाळै।
एतळा तीरथ करतां अबस, जकै पाप नह जाणरा।
दट जाय पाप करतां दरस, देसनोक दीवाण रा।।

4. आई माता

आई माता नवदुर्गा यानि देवी रौ अवतार मानीजै। आई माता मिनख जूण मांय जीजीबाई रै नांव सूं बीका नांव रै डाबी राजपूत रै घरां जलम लियौ। इणां रौ जलम काल विक्रमी संवत 1472 रै आसे–पासे मानीजै है। जीजीबाई जलम सूं ई देवी रा भगत हा अर अणूता फूटरा हा। वांरै रूप री चरचा सुण'र मांडू रौ बादसा महमूद खिलजी बीका डाबी नै बुलाय'र जीजी बाई रौ ब्याव उण सूं करण वास्तै कैयो अर धमकायौ कै राजीखुसी न्हीं करैला तो म्हूं वांनै उठा'र ले आवूंला। चिंता में पड़यौ बीको डाबी घरां आयौ अर सगळी बात बताई तो जीजी बाई बोल्या थे चिंता मत करौ, उण पापी नै म्हूं अपणे आप समझाय देसूं। वै आपरै बाप नै कैयो कै थे पाछा बादसा कनै जाओ अर उणनै कैवो कै म्हैं म्हारी बेटी रौ ब्याव थारै सागे हिन्दू रीत रै अनुसार करूंला, अर थांनै बरात लेय'र म्हारै गांव में आणो पड़सी। वां कैयो कै जो बो आपांनै गरीब समझ कीं देणो चावै तो आप मना कर दीजौ।

बीको डाबी जाय'र बादसा नै आ बात बताय दी। ब्याव री हुळक मांय हुळस्यौड़ो बादसा बात मान ली अर बरात लेय'र अंबापुर पूगग्यौ। जीजीबाई रै कैयां बीको डाबी बादसा री बरात नै तळाब रै किनारै ठैराय'र कुंवारै भात रौ न्यूंतो दियौ। जीजीबाई अेक छोटी सी झोंपड़ी मांय बैठा बरात री खातरदारी सारू परबंध कर रैया हा। बादसा रा आदमी आंवता अर जीमण रौ सामान लेय'र पूठा जांवता परा। बादसा हैरान हुयग्यौ कै अेक गरीब राजपूत कनै इत्तौ सामान कठै सूं आयौ। बो समझग्यौ कै ओ तो कोई देवी चमत्कार इ'ज है। आ सोच'र बो खुद झूंपड़ी कनै पूग्यौ। जीजीबाई उणनै समझावण सारू झोंपड़ी सूं बारै निकळया जद बादसा नै यूं लाग्यौ कै कोई सिंह सामै ऊभो है अर बौ डरग्यौ। बादसा अेकदम हाथ जोड़ दिया अर कैयौ कै माताजी म्हांसू गळती हुयगी, म्हूं थानै पिछाणग्यौ हूं म्हनै माफ कर दो। बादसा री अरदास सुण'र जीजीबाई उणनै छोड़ दियौ अर हिन्दुवां माथै थोप्योड़ा कैई कर अर लगान हटवा दिया। जीजीबाई जद तांई अंबापुर रैया हा, बादसा रोज वांरा दरसण करण सारू आंवतौ अर सदा ई जोत रो समान भेजावंतो।

थोड़े बखत मांय जीजीबाई रै चमत्कार अर बादसा री सेवा री चरचा च्यारूंमेर फैलगी अर घणी जनता उणां रा दरसण करण सारू आवंण लागी। आपरी तपस्या मांय विघन पड़तो देख'र जीजीबाई अंबापुर छोडण रौ निरणै कर्‌यौ अर आपरै मां–बाप सागै मेवाड़ रै गांव नारळाई आयग्या। केई दिन अठै रेय'र पछै वै डायलाणै गांव आया अर डायलाणे सूं सोजत आया। सोजत मांय वां रा दरसण करण सारू राणा कुंभा रौ बेटौ रायमल आयौ जिकै नै देस निकाळौ मिळयोड़ौ हौ। देवी वां नै आसीरवाद दियौ कै भविस में तूं मेवाड़ री राजगदी माथै बैठैला। क्यूं'कै देवी माता गुजरात सूं मेवाड़ आया हा इण कारण लोग वांनै जीजीबाई री 'आई मां' कैवण लाग्या अर इणी कारण उणां रौ नांव आई माता मानीज्यौ।

विक्रमी संवत 1521 मांय आई माता बिलाड़ा गांव पधार्‌या। बिलाड़ा रौ राजकाज उण बखत राव जोधा रौ बेटो भारमल देख रैयौ हौ। देवी माता उण बखत तांई घणी उमर ले ली ही इण कारण वै बिलाड़ा मांय ही बसण सारू निरणै कर्‌यौ अर वठै बै बिला सीरवी री ढाणी मांय रैवण लागा। भारमल रै कामदार जाणौजी रै बेटे माधवदास नै माताजी डोरो बांध्यौ अर आपरौ खास चेला बणायौ अर बाकी सगळां नै कैयो कै माधव थांरौ प्रधान है अर थै सगळा इं'री आग्या मानौला। माधवदास जीवण भर माताजी री सेवा करी। उणां रै देवलोकगमन हुयां पाछे वांरै बेटे गोविन्ददास नै माताजी आपरौ प्रधान चेला बणायौ। गोविंददास नै ओ पद विक्रमी संवत 1557 री माघ सुदी दूज नै मिळयौ इण कारण आज भी सीरवी समाज अर डोराबंध लोग इण दिन नै बड़े उच्छब सूं मनावै।

विक्रमी संवत 1561 मांय आई माता आपरै सगळा भगता अर चेलां नै भेळा कर्‌या कर कैयौ कै अब म्हारै पाछौ जावण रौ बखत आयग्यौ है अर अब म्हारी जोत गोविन्ददास मांय प्रगटसी। आ बात कैय'र माताजी गोविन्ददास नै आपरै थान कांनी लेयग्या अर वांनै वचन सिधि री सगती दीनी अर गुप्त योग री सीख दीवी। पछै आपरै थान रा फाटक बंद कर लिया अर गोविन्ददास सागै सात दिनां तांई बंद रैया। सातवें दिन फाटक खुल्यौ तद लोगां नै अेक तेज उजास दीसी अर बीं मांय सूं गोविन्ददासजी निकळ्या। सगळा जणां उणां रै पगां मां पड़ग्या। गोविन्ददासजी सगळा नै माताजी रा हुकम री जाणकारी कराई।

आई माता रौ सैंसूं चावौ स्थान बिलाड़ा इ'ज है। अठै वांरौ अेक मिंदर बणयौड़ौ है अर आज भी बिलाड़े मांय इणा री गादी अर दीयै री अखंड जोत रा दरसण करण सारू हजारूं मिनख आवै। अठै रा पुजारी दीवाण कहीजै अर इणां रा अनुयायी 'आईपंथ' रा 'डोराबंद' मानीजै। आईपंथी दारू–मांस रौ भोग नीं करै अर मर्‌या पछे धरती मांय गाडीजै। इण कारण सीरवी लोग आईजी रै मिंदर नै दरगाह भी कैवे।

5. जीण माता

जीण माता सेखावाटी अंचळ रा मानीज्या लोकदेवी है। इणां रै सागै ई आं रै भाई हर्ष रौ नांव भी लोकदवता रै रूप मांय मानीजै। आं रै जलम रै बाबत इतिहासकारां रै अेका मत कोनी अर ना ही कोई प्रमाणिक जाणकारी इतिहास आ कैवै कै सेखावाटी मांय घाघू चौहान नांव रो राजा हुयो जिकौ विक्रमी संवत 959 मांय चुरू जिले मांय धाधू गांव बसायो जिका आज बी मौजूद है। घाघू चौहान रै दो राणियां ही। अेक सूं 'हर्ष', हरकरण अर जीण पैदा व्हिया अर दूजी राणी सूं तीन बेटा हुया कान्ह, इन्द्र अर चन्द्र। वचन रै मुजब घाघू चौहाण रै देवलोक हुयां पाछै कान्ह राजा बणयौ। गोगाजी चौहान इणी वंस मांय जलम लियो।

'हर्ष' अर जीण भाई–बैन रै प्रेम री अेक अनूठी गाथा है अर सेखावाटी अंचळ में लोग आज भी ईं गाथा नै अलग–अलग तरै गावै। हर्ष रौ ब्यांव हुग्यौ हौ अर पिता मरती वेळा हर्ष नै कैयौ हो कै म्हारै मर्‌या पछै तूं जीण रौ पूरौ ख्याल राखीजै पण हर्ष री घरवाळी तेजतरार ही। वा बात–बात माथै जीण नै ताना मारती रैंवती। अेकर हर्ष परदेस गयोड़ो हौ अर लारै सूं बींरी घरवाळी जीण नै परेसान करण सारू कोई कसर नीं छोडी। तंग आय'र जीण घर छोड'र निकळगी। जोग सूं उणी बखत हर्ष पाछो आय रैयो हौ अर भाई–बैन मारग में ई मिलग्या। हर्ष जीण नै घर सूं बारै निकळण सारू पूछयौ जद बा रोंवती रोंवती सगळी बात बतादी। हर्ष उणनै पाछी घरै चालण सारू कैयौ पण वा नहीं मानी। जीण संन्यास लेवण रौ संकळप कर लियौ हो अर बींरै संकळप सूं हर्ष भी इत्तौ गळगळो हुग्यौ कै वौ बी उणी बखत बैन रै सागै इ'ज संन्यास लेण रो निरणै कर लीनो अर दोन्यूं भाई–बैन गांव सूं बारै निकळग्या।

गांव सूं निकळ दोन्यूं भाई–बैन अलग अलग पहाड़ां पर तपस्या करी। वांरै तप सूं पूरौ खेतर आळोकित हुग्यौ अर वांरां चमत्कारां सूं इलाके रा लोग–बाग वांरै दरसण सारू आवण लाग्या। जीण माता देवी रै अवतार रै रूप मांय पूजीजण लागी। वांरो मिंदर सीकर सूं 7 कोस दिखणा दमां यपहाड़ री घाटी मांय बण्यौड़ौ है अर आ पहाड़ी जीणमाता री पहाड़ी रै नांव सू मानीजै। इणी भांत हर्ष दूजी पहाड़ी माथै बैठ'र भगवार शंकर अर भैंरूं री तपस्या करी अर वां सूं वरदान लियौ। कालान्तर मांय बो हर्षनाथ भैरव रै नांव सूं पूजीज्यौ अर वा पहाड़ी हर्षनाथ री पहाड़ी रै नांव सूं पूजीजै। आज भी जन हर्षनाथ भैंरूं री पूजा घणै मान सूं करै।

सिलालेखां रै मुजब सीकर जिले रै राणोली गांव मांय विक्रमी संवत 1013 मांय अेक ब्राह्मण अल्लट हर्षदेव रौ मिंदर बणवायौ। अेक और सिलालेख रै मुजब विक्रमी संवत 1162 मांय जीण माता रौ पैलो मिंदर बणनै रौ प्रमाण मिळै है। हरेक बरस चैत अर आसोज महीने रै नौरतां मांय जीण माता रै मिंदर मांय बडौ मेळो लागै अर दूर दूर सूं लोग दरसण करण सारू आवै। जीणमाता इणी लोक री क्षत्राणी ही पण आपरी त्याग अर तपस्या सूं लोक देवी रूप मांय पूजीजी।

हर्ष अर जीण रै जीवण बाबत अेक मार्मिक लोकगीत चावो है जिकै मांय दोनूं भाई–बैना रै जीवण रौ अर वांरै त्याग अर तपस्या रौ वरणण कर्‌यौड़ौ है। इण गीत रै मुजब बैन जीण भाई नै कैवै कैः–

जे म्हारी होती जुग में माय

अकन कंवारी नै नांय बिडारती
कुण पूंछे नैणां हंदो नीर
कुण रे सैलावै जळतो हीवड़ौ
कुण फेरै सिर पर म्हारै हाथ।

अेक सवाळ रै जवाब मांय हर्ष बींनै कैवै :–

असी ए कळी रो सिमाद्यूं घाघरो
अर, मंगवाय द्यूं दिखणी चीर
मोत्यां जड़वाय देयूं ए थारी राखड़ी
हीरां जड़ांद्यूं थारो हार
बिछिया घड़ाद्यूं ए बाई तन्नै बाजणा।

जुग बीतग्या पण आं दोन्यूं भाई–बैना री कथा आज भी जन–जन री जबान पर है अर दोन्यूं री त्याग अर तपस्या रा प्रतीक है। जीणमाता अर हर्षनाथ मिंदर आज भी अरावळी पहाड़ां री घाटियां मांय मौजूद है।

लोक धारणा है कै ***'जिण न देखी जीण, जग में आय'र के कीण'*** इण रौ अरथाव ओ है कै जिकौ जीण माता रा दरसण नीं कर्‌या वौ दुनियां मांय आय'र काई कर्‌यौ।

14.5 लोक देवी–देवतावां री समाज अर संस्कृति नै देन

मरूधरा री सामाजिक व्यवस्था नै बणाय'र राखण में आं लोक देवी–देवतावां रौ महताऊ योगदान रैयो है। इण बात रौ सबसूं मोटो सबूत है'कै घणकरा लोक देवी देवता अेक जात–सम्प्रदाय विसेस सूं सम्बन्ध राखता हा, पण उणां रै जीवण सूं प्रेरणा लेवण मांय हरैक जात–धरम रा लोगबाग सैं सूं आगै रैंवता।

राजस्थान रै मध्य काळ खण्ड मांय घणकरां लोक देवी–देवता जलम लियो या फैर औतार लियौ। इण काळ खण्ड मांय लोक जीवण घणो सोरो नीं हौ। राजस्थान री घणकरी आबादी खेतीबाड़ी करती ही अर कम पढी लिखी ही। नीची जातियां री हालत तो औरूं बेसी खराब ही। राजस्थान री आ ई आबादी आं पुण्यात्मावां नै आपरा देवी–देवता मान'र इणां री पूजा करणी सरू कर दी। अेक खास बात आ कै ई पूजा मांय कोई खास विधी–विधान री जरूरत कोनी ही अर नां ई कोई करम–काण्डी नियमां री जरूरत ही। ओ तो भगती रौ बड़ौ ई सरल अर सहल रूप हो। भगतजन दीया बाती कर'र दूध, लापसी, चूरमे रौ भोग लगावता अर भगती रै रूप में भजन कीरतन करता जीवण बितावतां।

लोक देवी–देवता आपरै जीवण अर अवतार काल मांय जात–पांत रौ भेद खतम कर्‌यौ, सामाजिक कुरीतियां नै मिटावण सारू अलख जगाई अर पसु धन री रिक्षा करी। इणां री प्रेरणा सूं ई जनमानस मांय त्याग, सतकरम, बलिदान अर ईमानदारी री भावनावां चेती। इणां रै पुनपरताप सूं ई समाज रौ विघटण हुवण सूं बच्यौ अर समाज मांय अेक नुईं चेतना समरसता अर भाई चारो जाग्यौ।

समाज मांय इण बदळाव रौ मोटो कारण ओ रैयो कै आं लोक देवी–देवतावां री पूजा अर सेवा रो मारग सरल अर सहज हो। इण कारण आं रौ जुड़ाव आम आदमी सूं व्है ग्यो अर इणा रै जीवण रौ प्रभाव सीधै आम आदमी रै जीवण माथै पड़्यौ। इण कारण सूं अे लोक देवी–देवता समाज रै सुधार सारू जिकी कोसिस करी, उण रौ पूरो–पूरो असर हुयौ अर समाज में प्रेम अर भाईचारे री भावना रौ विकास तेजी सूं हुयौ।

14.6 इकाई रो सार

राजस्थान री धरती सन्तां, भक्तां, वीरा अर वीरांगनाओं री वसुन्धरा है। अठै कई देवी देवता जिणा म पाबूजी हड़बूजी रामदेव जी, महाजी, गोगा जी, तेजा जी जेड़ा प्रसिद्ध लोक देवता हुया है जिका मानव देह धारण कर मानव सेवा म लाग गया और खुद र तप अर साधना सू खुद रो नाम कमायो अर जसधारी कही जा। इणी भात कई देविया भी हुई जिणा म देसनोक रा करणी जी , सीकर रा जीणमाता अर कई सातिया, जुंझार, भोम्याजी इण धरा धाम म जणमया और खुद रा कीरत सूँ इण धरा न जग चावी करो। इन इकाई में आ लोकदेवी

देवती री जसगाथा है अर उणा र परोपकारी कामां री विगत है।

14.7 अभ्यास रा प्रस्न

1. राजस्थान री धरती इतियास मांय किण कारण जगचावी है ?
2. राजस्थान री धरती माथै थान, देवरा, समाध्यां कुण सी महताऊ बातां बतावै ?
3. राजस्थान में कुण कुण सा लोक देवता जग चावा हुया है अर उणां रौ कांईं योगदान रैयो है?
4. किंवदंतियां, बातां, पवाड़ा अर पड़ां रौ सार रूप में अरथ बतावौ।
5. गऊ, बिरामण अर नारी री रिछा सारू पाबूजी अर गोगाजी रौ कांईं योगदान रैयो।
6. मल्लीनाथजी कठैरा हा ? बां रौ समाज सारू कांई योगदान रैयो ?
7. पाबूजी अर गोगाजी रौ चमत्कार रा अेक–अेक उदाहरण लिखो।
8. देवजी (देवनारायणजी) रौ बालपणै रौ कांईं नांव हौ अर बां नै मारण सारू कुण योजना बणाई, अर आज किण खेतर मांय पूजीजै अर मानीजै।
9. देवजी देवलोकगमन करता थकां आपरी घरवाळी नै कांई मारग दरसण दिरायौ ?
10. करणी माता रौ मिंदर कुण सै जिलै रै कुण सै गांव मांय बण्योड़ो है ? मिंदर कांईं कारण जगचावौ है?
11. राजस्थान री धरती में घणकरी लोक देवियां अजै तांई पूजीजै। बां रौ नांव अर ठांव बतावौ ?

नीचै रा प्रस्नां रौ पडत्तर 500 सबदां मांय दिरावौ :–

1. रूणीचै रा राजा रामदेवजी रै जन हिताय सरूप रौ बखाण करौ ?
2. बाबा रामदेवजी उण बगत री जनता रै भय भंजन अर रूखाळी सारू कांईं कांईं काम कर्‌या जिण सूं उणारौ लौकिक रूप जगचावौ हुयौ ?
3. 'बाबा रामदेवजी समाज सुधारक संत हुया है' – आप इण बात नै आपरी भासा मांय बखाण करौ।
4. गोगाजी चौहान रौ जीवन चरित सार रूप मांय लिखो अर उणां रा चमत्कारां रौ सरूप बतळावौ।
5. गोगाजी री 'गोगामेड़ी' किण जागां बस्यौड़ी है, जठै गोगाजी जीवत समाधि लेय'र भगतां नै चमत्कार दरसायौ अर साम्प्रदायिक सदभावना रौ ग्यान दिरायौ।
6. 'तेजाजी' रौ सार रूप मांय परिचै दिरावौ।
7. आदि सगति हिंगळाज माता रो पूरौ परिचै अर उणां रै ठिकाणै री भौगोलिक स्थिति रौ बखाण करौ अर माता रै लोक रिछा रै भाव री जाणकारी करावो।
8. आवड़ माता रौ मिन्दर कठै बस्यौड़ो है, उणां रौ परिचै अर चमत्कार बतावो।
9. करणी माता रौ पूरौ परिचै दिरावौ । उणां रै जलम, ब्याव अर देवी हुवण रै चमत्कारां रै सागै–सागै उणां रै लोक रिछा सरूप नै उजागर करावौ ।
10. जोधपुर अर बीकानेर री थरपना मांय करणीजी रौ कांई योगदान रैयो, बतावौ।
11. नीचै लिखी लोक देवियां मांय सूं किणी अेक री जानकारी करावो –
    (1) आई माता (2) जीण माता (3) हिंगळाज माता (4) करणी माता

14.8 संदर्भ ग्रंथा री पानड़ी

1. पं. नानूराम संस्कृता – लोक साहित्य।
2. डॉ. मनोहर शर्मा – लोक साहित्य।
3. डॉ. कल्याण सिंह शेखावत – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का इतिहास।
4. डॉ. शक्तिदान कविया – संस्कृति री सौरम।
5. डॉ. मोतीलाल मेनारिया – राजस्थानी भाषा और साहित्य का इतिहास।
6. सागरमल्ल शर्मा – राजस्थान के लोकदेवता।
7. कैलाश दान उज्ज्वल – भगवती करणीजी महाराज।
8. डॉ. मूलसिंह भाटी – मां आवड़ माता।
9. राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर – पाबूजी री ख्यात।
10. डॉ. भंवरसिंह सामौर – राजस्थान री लोकदेवियां